दैनिक जागरण

धैर्य का अभाव कई उपलब्धियों से वंचित कर देता है

# स्टालिन का हिंदी विरोध

इस पर आश्चर्य नहीं कि तमिलनाडु में विधानसभा चुनाव निकट आते ही मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने हिंदी विरोध का पुराना और विभाजनकारी राग फिर छेड़ दिया। उन्होंने अपना यह पुराना आरोप फिर मढ़ा कि केंद्र सरकार नई शिक्षा नीति के तहत तमिलनाडु में हिंदी थोपना चाहती है। यह साफ है कि उन्होंने चुनाव के चलते लोगों की भावनाएं भड़काने के लिए हिंदी थोपने के आरोप को जानबूझकर उछाला है। इसे भांपते हुए शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने यह कहकर उन्हें उचित ही बेनकाब किया कि वे हिंदी थोपने का नैरेटिव अपनी राजनीतिक विफलताओं को छिपाने के लिए कर रहे हैं और जानबूझकर त्रिभाषा फार्मूले की गलत व्याख्या कर रहे हैं। स्टालिन सच में ऐसा ही कर रहे हैं, क्योंकि नई शिक्षा नीति के त्रिभाषा फार्मूले में तो हिंदी को अनिवार्य किया ही नहीं गया। तमिलनाडु में तमिल अस्मिता के नाम पर हिंदी विरोध की जड़ें बहुत पुरानी हैं। चूंकि संकीर्ण राजनीतिक कारणों से इन जड़ों को जानबूझकर सींचा गया, इसलिए एक समय वहां हिंदी विरोध के नाम पर हिंसा भी हुई।

हालांकि समय के साथ तमिलनाडु के लोगों में हिंदी के प्रति विरोध का भाव तिरोहित हो गया है, पर कुछ दल और विशेष रूप से डीएमके उसे संकीर्ण राजनीतिक स्वार्थों के चलते रह-रहकर उभारती रहती है। अब यह तमाशा चलने वाला नहीं है, क्योंकि तमिलनाडु के साथ अन्य अहिंदी भाषी राज्यों की जनता हिंदी की सामर्थ्य एवं उसकी उपयोगिता से भली तरह परिचित है और वह उसे स्वेच्छा से अपना भी रही है। इसका कारण हिंदी का देश की सबसे प्रभावी संपर्क भाषा के रूप में विकसित होना है। हिंदी वह धागा है, जिसमें सभी भारतीय भाषाएं गुंथी हुई हैं। हिंदी का किसी भाषा से बैर-विरोध नहीं। वह सब भारतीय भाषाओं की सखी-सहयोगी है। वह राष्ट्रीय एकता की वाहक भी है। देश के हर हिस्से और यहां तक कि तमिलनाडु के लोग भी हिंदी समझते हैं और उसकी महत्ता भी जान रहे हैं। स्टालिन वोट बैंक की सस्ती राजनीति के कारण अपने लोगों को कितना भी बरगलाएं, तथ्य यह है कि तमिलनाडु में बड़ी संख्या में हिंदी भाषी कामगार रहते हैं। उनके तमाम नियोक्ता उनसे हिंदी में संवाद करने की कोशिश करते हैं। कुछ ने उनसे वार्तालाप के लिए हिंदी बोलने वाले जानकार भी रख रखे हैं। स्टालिन का हिंदी विरोध इसलिए परवान नहीं चढ़ने वाला, क्योंकि तमिलनाडु की जनता इससे अवगत है कि केंद्र सरकार किस तरह तमिल भाषा को बढ़ावा देने वाले तमिल संगमम जैसे आयोजन कर रही है। यह देखना दुखद है कि जब केंद्र सरकार भाषाई एकता के लिए हरसंभव प्रयास कर रही है, तब डीएमके नेता हिंदी के प्रति वैमनस्य प्रदर्शित कर संवैधानिक मूल्यों और राष्ट्रीय एकता के खिलाफ काम कर रहे हैं।

# योजनाओं में तेजी लाएं

झारखंड में जलापूर्ति के लिए नई पाइप लाइन बिछाने की योजना बनाई जा रही है। पहले ही इसमें बिलंब हो चुका है। इससे करीब चार लाख नए घरों तक पानी नहीं पहुंच पा रहा है। राज्य और केंद्र सरकार ने लोगों को आसानी से शुद्ध पेयजल पहुंचाना अपनी प्राथमिकता में रखा है। जल जीवन मिशन के लिए अब केंद्र ने बकाया राशि जारी करने का निर्देश भी जारी कर दिया है। गर्मी से पहले बाकी बची योजना में तीव्रता लाते हुए लोगों को पेयजल पहुंचाने के लिए एजेंसियों को सक्रिय होना पड़ेगा। 60 लाख घरों तक सीधे पाइप से जल पहुंचाने की योजना अब पूर्ण होने की स्थिति में है। इसके साथ ही राज्य के कई हिस्सों में भूगर्भ का जल भी कई तरह के खतरनाक रसायनों से संक्रमित है। ग्रामीण इलाकों में लोग पेयजल आपूर्ति की पुख्ता व्यवस्था के अभाव में नदियों और तालाबों का जल भी कई बार सेवन करने लगते हैं। यह स्वास्थ्य की दृष्टि से खतरनाक है। हाल ही में देश के कई शहरों में सीवरेज का दूषित जल पेयजलापूर्ति लाइन में मिल गया। इससे कई लोगों की जान भी चली गई। राज्य में पुरानी जलापूर्ति योजनाओं को नए सिरे से तैयार करने के लिए सरकार ने संकल्प जाहिर किया है। सामाजिक स्तर पर भी जलस्रोतों को स्वच्छ रखने में सरकार का सहयोग करने की आवश्यकता है।

गर्मी बढ़ने के साथ ही पेयजलापूर्ति की समस्या बढ़ने वाली है। जल स्रोतों के पास स्वच्छता रखना भी सुनिश्चित करनी होगी

# बंगाल में अराजकता का साया

संजय गुप्त

आखिर ममता सरकार चुनाव आयोग को उसका संवैधानिक काम क्यों नहीं करने दे रही है और वह भी तब, जब सुप्रीम कोर्ट उसके काम में कोई खोट नहीं देख रहा है?

पिछले दिनों पश्चिम बंगाल के मालदा जिले में मतदाता सूचियों के विशेष गहन पुनरीक्षण यानी एसआइआर की प्रक्रिया में नियुक्त न्यायिक अधिकारियों को जिस तरह घेराव कर घंटों तक बंधक बनाए रखा गया, उससे कानून के शासन को अराजकता की सीधी चुनौती मिलती हुई दिखी। यह मामला इतना गंभीर था कि कलकत्ता उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के पत्र का संज्ञान लेते हुए सुप्रीम कोर्ट के प्रधान न्यायाधीश ने दखल दिया और देर रात घटना का जायजा लेने के साथ ही बंगाल सरकार के खिलाफ बहुत सख्त टिप्पणियां कीं। उन्होंने दो टूक कहा कि राज्य में कानून व्यवस्था चरमरा गई है। उन्होंने चुनाव आयोग से मामले की जांच किसी स्वतंत्र एजेंसी से कराने के निर्देश दिए। चुनाव आयोग ने जांच एनआइए को सौंप दी है। तीन महिला अफसरों समेत सात न्यायिक अधिकारियों को बंधक बनाने वाले कुछ राजनीतिक लोगों को गिरफ्तार भी किया गया है।

आश्चर्य इस पर है कि तृणमूल कांग्रेस के कुछ नेता सुप्रीम कोर्ट की ओर से तय की गई व्यवस्था को चुनौती देने वाली अराजकता का यह कहकर बचाव कर रहे हैं कि लोग इसलिए नाराज थे, क्योंकि कथित तौर पर वोटर लिस्ट से उनके नाम हटा दिए गए थे। यदि एक क्षण के लिए इसे सही मान लें तो क्या किसी का नाम वोटर लिस्ट से कट जाएगा तो वह खुली अराजकता करेगा? ममता बनर्जी ने मालदा की घटना से पल्ला झाड़ने की जो कोशिश की, उस पर हैरानी नहीं। वह हर बार ऐसा ही करती हैं। बंगाल में एसआइआर के खिलाफ अर्से से अराजक प्रदर्शन हो रहे हैं, क्योंकि तृणमूल कांग्रेस यह दुष्प्रचार कर रही है कि इस प्रक्रिया का उद्देश्य उसके समर्थकों के वोट काटना है। वे यह कुप्रचार तभी से कर रही हैं, जबसे बंगाल में एसआइआर शुरू हुआ। एसआइआर के खिलाफ उनकी ओर से बार-बार सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया गया और उलटे-सीधे आरोपों के साथ चुनाव आयोग को बदनाम किया गया। शीर्ष न्यायालय ने उनके आरोप निराधार पाकर एसआइआर जारी रखने के आदेश दिए। इसके बाद ममता प्रशासन ने चुनाव आयोग का असहयोग करना शुरू कर दिया। इस पर सुप्रीम कोर्ट ने एसआइआर प्रक्रिया न्यायिक अधिकारियों की निगरानी में कराने का अभूतपूर्व आदेश दिया। यह आदेश यही बताता है कि सुप्रीम कोर्ट का राज्य के शासन-प्रशासन पर भरोसा नहीं।

आखिर ममता सरकार चुनाव आयोग को उसका संवैधानिक काम क्यों नहीं करने दे रही है और वह भी तब जब सुप्रीम कोर्ट उसके काम में कोई खोट नहीं देख रहा है? चूंकि सुप्रीम कोर्ट एसआइआर को उचित मान रहा है, इसलिए तृणमूल कांग्रेस चुनाव आयोग को बदनाम करने के लिए यह भी माहौल बना रही है कि वह वही कर रहा है, जो केंद्र सरकार चाह रही है। यह वही आरोप है, जो बिहार में एसआइआर के समय खूब उछाला गया, पर इससे विपक्षी दलों का नुकसान ही हुआ। यदि एसआइआर पर सुप्रीम कोर्ट चुनाव आयोग को सही पा रहा है तो इसका यह अर्थ नहीं कि उस पर केंद्र सरकार हावी हो गई है। बिहार के बाद बंगाल समेत 12 राज्यों में एसआइआर की प्रक्रिया जारी है। इन सभी राज्यों में वोटरों के नाम कटे हैं, पर वे उनके हैं, जो अन्यत्र चले गए या फिर जिनका निधन हो गया अथवा जिनका नाम वोटर लिस्ट में दो-दो बार था। न जाने क्यों तृणमूल कांग्रेस और अन्य विपक्षी दल यह समझ नहीं पा रहे हैं कि यदि लंबे अंतराल बाद एसआइआर होगा तो वोटर लिस्ट में कुछ नाम जुड़ेंगे तो कुछ उससे कटेंगे? एसआइआर कई गैर-भाजपा शासित राज्यों में भी हो रहा है, पर उसका सबसे अधिक विरोध बंगाल में इसलिए हो रहा है, क्योंकि तृणमूल कांग्रेस और अन्य राजनीतिक तत्व उसके विरोध में हद से ज्यादा आगे चले गए हैं। लगता है तृणमूल कांग्रेस एसआइआर का विरोध इसलिए कर रही है, ताकि वह अपने 15 वर्षों के शासन के खिलाफ उभरी एंटी इनकंबेंसी से लोगों का ध्यान हटा सके।

ममता बनर्जी वाम दलों को परिवर्तन के नारे के साथ बेदखल कर सत्ता में आई थीं, पर धीरे-धीरे उन्होंने वही तौर-तरीके अपना लिए जो वाम दलों ने अपना रखे थे। यह एक विडंबना है कि बंगाल में जो भी सत्ता में आता है, वह अराजकता का सहारा लेने लगता है। इसके चलते अन्य दलों के बाहुबली सत्ताधारी दल में शामिल हो जाते हैं। चूंकि बंगाल के सत्तारूढ़ दल अराजकता का सहारा लेते हैं, इसलिए यहां चुनाव के पहले भी हिंसा होती है, चुनाव के दौरान भी और चुनाव के बाद भी। इस बार भी आशंका है कि पहले की तरह इस बार भी यहां हिंसा हो सकती है। ध्यान रहे कि पिछले चुनावों के बाद की हिंसा इतनी भयानक थी कि कलकत्ता उच्च न्यायालय ने उसकी जांच सीबीआइ से कराने का फैसला लिया था। इस बार चुनावी हिंसा की आशंका के चलते ही चुनाव आयोग ने यह असाधारण फैसला लिया कि राज्य में चुनाव बाद भी अर्धसैनिक बल तैनात रहेंगे।

चूंकि चुनावों के दौरान बंगाल में हिंसा होती ही है, इसलिए यहां के पुलिस प्रशासन पर भी सवाल उठते हैं। ये सवाल इसलिए अधिक उठते हैं, क्योंकि राज्य में नौकरशाही का राजनीतिकरण हो चुका है। इसी कारण चुनाव आयोग ने बंगाल के डीजीपी, गृह सचिव समेत तमाम अधिकारियों का तबादला किया। बंगाल की कानून व्यवस्था सदैव सवालों के घेरे में रहती है। इसका कारण यही है कि ममता बनर्जी ने उसे सुधारने के लिए आवश्यक कदम नहीं उठाए। भले ही सुप्रीम कोर्ट ने बंगाल की कानून व्यवस्था को लेकर सख्त टिप्पणियां की हों, पर यदि ममता फिर से सत्ता में लौटती हैं तो कानून व्यवस्था जस की तस रहने की ही आशंका है। इसमें संदेह है कि सुप्रीम कोर्ट की सख्त टिप्पणियों और चुनाव आयोग की सक्रियता से बंगाल पुलिस प्रशासन का रवैया बदलेगा। भारत के लोकतंत्र का यह एक स्याह पक्ष है कि राज्य सरकार के अधीन रहने वाली पुलिस कई बार सत्ताधारी दल के एजेंट की तरह काम करने लगती है और सत्तारूढ़ राजनीतिक मशीनरी का अंग सा बन जाती है। ऐसा तब और होता है, जब किसी राज्य में कोई दल लंबे समय तक शासन में रहता है। शासन-प्रशासन में स्वार्थ प्रेरित मिलीभगत से अराजकता के साथ भ्रष्टाचार को भी बल मिलता है। आखिर हमारे राजनीतिक दल कब यह समझेंगे कि नौकरशाही का राजनीतिकरण लोकतंत्र के लिए एक बहुत बड़ा खतरा है?

response@jagran.com

अवधेश राजपूत

# आपदा में दर्शनशास्त्र का सहारा

हास्य-व्यंग्य

सूर्यकुमार पांडेय

हमारा चिंतन होर्मुज जलडमरूमध्य तक सिमट गया है और डमरू बनी जिंदगी से बस विश्वयुद्ध का निनाद सुनाई दे रहा है

अभी लोग इतने आत्मनिर्भर नहीं हुए हैं कि अपने घरों में ही पेट्रोल और डीजल का उत्पादन करने लग जाएं। इस दौर में घर के आसपास पानी के कुएं तो मिलते नहीं हैं, तेल के कुएं क्या खाक मिलेंगे? अभी तक किसी स्वदेशी तेल उत्पादक ने भी यह दावा नहीं किया कि वह जल्द ही हमारे लिए बाजार में हर्बल पेट्रोल लेकर आने वाला है। निराशा की स्थितियां हैं। तेल की कीमतों में ट्रंप की जुबान और ईरान की मिसाइलों जैसी अनिश्चितता का माहौल बना हुआ है। मेरे एक क्रिकेट प्रेमी मित्र का कहना है कि अभी पेट्रोल वैभव सूर्यवंशी जैसा है। कल इसके रोहित और विराट होने के भरे-पूरे आसार हैं। मैं उनसे पूछता हूं कि मैं कुछ समझा नहीं। मित्र समझाते हैं, 'अभी पेट्रोल पंप की पिच पर यह नब्बे-सौ के बीच खेल रहा है। आप भविष्य में इससे एक नहीं, दो शतकीय पारी की शत-प्रतिशत आशा भी कर सकते हैं।' कक्षा में अध्यापक सवाल पूछता है, 'पेट्रोल ज्वलनशील पदार्थ है अथवा उड़नशील पदार्थ है!' एक छात्र बताता है, 'यह दोनों ही है। पेट्रोल एक ज्वलनशील पदार्थ है, क्योंकि हम देख रहे हैं कि इस समय इसके बाजार भाव में आग लगती रहती है। साथ ही, इसे हम उड़नशील भी कह सकते हैं। यदि ऐसा न होता तो इसके रेट आसमान की ऊंचाइयां छूने की प्रबल शंका भी न होती।' वह अध्यापक कन्फ्यूज है।

कल एक सज्जन पुलिस चौकी में चोरी की रपट लिखाने गए। उन्होंने दारोगा को बताया कि कोई उनकी पुरानी कार चुरा ले गया और अपनी नई साइकिल छोड़ गया है। दारोगा ने हंसते हुए कहा, 'यह तो आपके लिए फायदे का सौदा है। आप उस चोर को धन्यवाद दीजिए कि इस अभावग्रस्त और महंगे होते तेल की आशंका के दौर में उसने आप पर असीम अनुकंपा की कुछ बूंदें छिड़की हैं। अब आप खुशी-खुशी उसकी साइकिल को चलाइए। आपकी सेहत भी दुरुस्त रहेगी और जेब भी। अब वह सज्जन भी कन्फ्यूज हैं। कार के बदले ऐसे उप'कार' की आशा तो उन्होंने सपने में भी नहीं की थी।

दुनिया तरक्की कर रही है। लोग आत्मनिर्भर बन रहे हैं। अब रसोई में क्रांति आ गई है। पहले रोटियां गोल बनती थीं, अब तर्क गोल बनने लगे हैं। 'आज गैस बचाओ, कल भविष्य बनाओ।' घर की महिलाएं अब रेसिपी नहीं, 'ईंधन प्रबंधन' का पाठ पढ़ने लग गई हैं। रसोई ठंडी पड़ रही है और दिमाग धुआं-धुआं हो रहा है। एक नई डिश आई है, 'कच्ची सब्जी-सलाद', जिसमें पकाने का झंझट ही नहीं है। बच्चे पूछते हैं, 'मम्मी, आज खाना क्यों नहीं बना?' मां कहती है, 'बेटा, आज से हम पर्यावरण सुरक्षा सप्ताह मनाने जा रहे हैं। पति खाली गैस सिलिंडर उठाकर उसे पटक रहा है। शायद इसमें कुछ गैस बची हो। वह मन ही मन कह रहा है, हे ईंधन देव, कृपा कर दो! चमत्कार कर दो। एक कप चाय ही पिला दो।

अब हम एक ऐसे युग में प्रवेश कर रहे हैं जहां 'ईंधन बचाओ' केवल नारा नहीं, बल्कि जीवन-दर्शन बनने जा रहा है। हमारा चिंतन होर्मुज जलडमरूमध्य तक सिमट चुका है और जिंदगी डमरू होती जा रही है, जिससे निरंतर विश्वयुद्ध का निनाद सुनाई दे रहा है। अब हम धीरे-धीरे पैदल चलने की प्राचीन कला को पुनर्जीवित कर रहे हैं, साइकिल को फिर से राष्ट्रगौरव बना रहे हैं और रसोई में मजबूरी को सबसे बड़ा मसाला मान रहे हैं। शायद यही दर्शन हमारा सहारा बने और हम आने वाली पीढ़ियों को कहानियां सुना सकें कि हमने संकट में भी धैर्य नहीं छोड़ा।

response@jagran.com

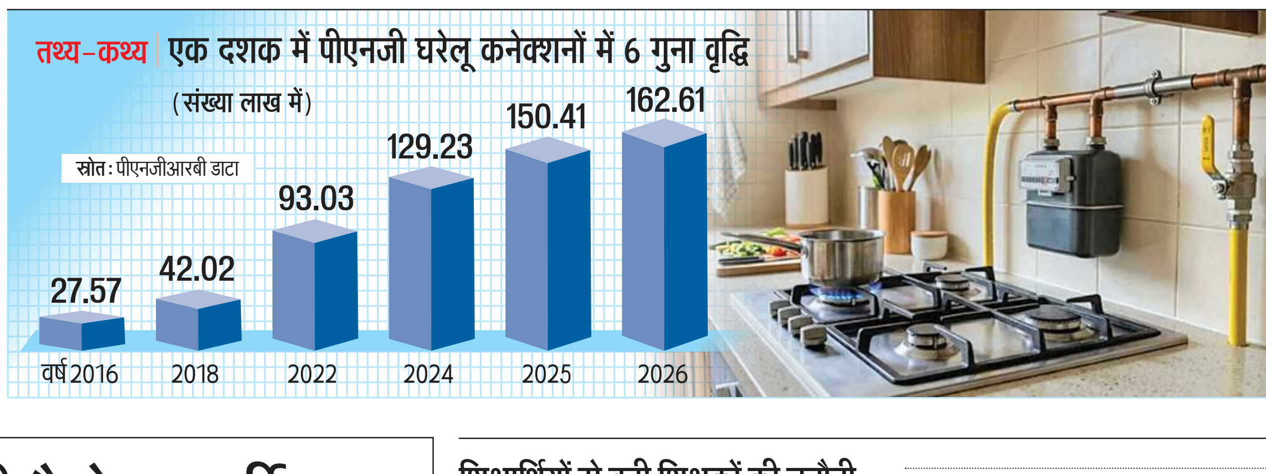


ऊर्जा

## स्वयं पर विजय

संसार की चुनौतियां उतनी विकराल नहीं होतीं, जितना दुरूह हमारा चंचल मन उन्हें बना देता है। इसलिए यथार्थ ही कहा गया है कि यदि मनुष्य स्वयं पर विजय प्राप्त कर ले तो उसके लिए कोई भी संघर्ष कठिन नहीं रह जाता। वास्तव में मन ही मनुष्य का मित्र भी है और शत्रु भी। जब मन संयमित और स्थिर होता है, तब बाहरी परिस्थितियां हमें विचलित नहीं कर पातीं, परंतु जब मन अस्थिर हो जाए तो छोटी सी बाधा भी पर्वत समान प्रतीत होती है। अतः जीवन का सबसे बड़ा युद्ध बाहर नहीं, अपने भीतर लड़ा जाता है। मनुष्य धन, पद, प्रतिष्ठा जैसी बाहरी सफलताओं को ही विजय समझ लेता है, किंतु यदि उसने क्रोध, अहंकार और वासनाओं पर नियंत्रण नहीं पाया तो सारी उपलब्धियां व्यर्थ हैं।

वस्तुतः, आत्मसंयम ही सच्ची साधना है। अपने विचारों को शुद्ध रखना, वाणी को मर्यादित रखना और व्यवहार को संतुलित रखना ही आत्मविजय का मार्ग है। स्वयं पर विजय का अर्थ भावनाओं का दमन नहीं, बल्कि उनका संतुलन है। भय को साहस में, ईर्ष्या को प्रेरणा में और असफलता को अनुभव में बदल देना ही आत्मविजय है। जब व्यक्ति अपने अंतर्मन की आवाज सुनता है और उसी के अनुसार आचरण करता है, तब उसका जीवन सहज, सुगम एवं सार्थक हो जाता है। यह आवश्यक है कि हम प्रतिदिन आत्मचिंतन कर अपने व्यवहार का परीक्षण करें और देखें कि कहीं हमारा मन ही तो हमें भटका नहीं रहा। अपने भीतर के दोषों को पहचानकर उन्हें सुधारें। स्वयं पर विजय ही वास्तविक स्वतंत्रता है। जब मनुष्य अपने मन का स्वामी बन जाता है, तब वह परिस्थितियों का खिलौना नहीं रहता। उसका जीवन संतुलन, शांति और आत्मबल से परिपूर्ण हो जाता है। यही जीवन की श्रेष्ठतम उपलब्धि है। जिसने स्वयं को साध लिया, उसके लिए संसार बाधा नहीं, साधना का क्षेत्र बन जाता है।

समराज चौहान

# जैविक उम्र बढ़ा सकती है तेज गर्मी

मुकुल व्यास

बहुत ज्यादा गर्मी डिहाइड्रेशन, हीट स्ट्रोक और थकावट के साथ उम्र बढ़ने की प्रक्रिया को भी तेज कर सकती है

बहुत ज्यादा गर्मी के स्पष्ट प्रभाव डिहाइड्रेशन, हीट स्ट्रोक और थकावट के रूप में दिखाई देते हैं, पर विज्ञानियों का दावा है कि तेज गर्मी उम्र बढ़ने की प्रक्रिया को भी तेज कर सकती है। सदर्न कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी का अध्ययन बताता है कि बहुत ज्यादा गर्मी जैविक स्तर पर उम्र बढ़ने की प्रक्रिया में तेजी ला सकती है। लंबे समय तक गर्मी में रहने से आयु-वृद्धि की प्रक्रिया तेज हो सकती है। किसी व्यक्ति की तारीख के अनुसार गिनी जाने वाली उम्र से भी ज्यादा महत्वपूर्ण उसकी जैविक उम्र होती है। यही स्वास्थ्य का असली पैमाना है। जैविक उम्र यह दिखाती है कि हमारी कोशिकाएं, ऊतक और अंग कितनी अच्छी तरह काम करते हैं। जब जैविक उम्र तिथि आधारित उम्र से ज्यादा होती है, तो बीमारी का खतरा बढ़ जाता है।

अध्ययन की लेखक जेनिफर एलशायर का कहना है कि गर्म इलाकों में रहने वाले लोगों में ठंडे इलाकों के लोगों की तुलना में जैविक उम्र बढ़ने की प्रक्रिया ज्यादा तेज होती है। गर्मी और उम्र बढ़ने के बीच संबंध की जांच करने के लिए शोधकर्ताओं ने 56 साल और उससे अधिक उम्र के 3,600 से ज्यादा लोगों के डाटा की जांच की। विज्ञानियों ने छह साल की अवधि में रक्त के नमूने लिए और जीन संबंधी बदलावों का पता लगाने के लिए उनका विश्लेषण किया। ये ऐसे रासायनिक परिवर्तन हैं, जो जीन के काम करने के तरीके पर असर डालते हैं। इस क्षेत्र में एक बड़ी प्रक्रिया 'डीएनए मिथाइलेशन' है जिसमें एक रसायन डीएनए में जुड़ता है। यह प्रक्रिया आनुवांशिक कोड में बदलाव किए बिना जीन को चालू या बंद कर सकती है। शोधकर्ताओं ने इन आणविक परिवर्तनों पर नजर रखने के लिए एक जैव-रासायनिक टूल (एपिजेनेटिक घड़ी) का इस्तेमाल किया। यह टूल मिथाइलेशन पैटर्न का पता लगा कर जैविक उम्र का अनुमान लगाता है। शोधकर्ताओं ने 2010 से 2016 तक के पुराने गर्मी सूचकांक डाटा के साथ जैविक उम्र बढ़ने की दरों की तुलना की, जिससे गर्मी और आयु-वृद्धि के बीच एक मजबूत संबंध का पता चला।

तापमान और आर्द्रता के मिश्रण से यह तय होता है कि गर्मी कितनी ज्यादा है। गर्मी को तीन श्रेणियों में बांटा गया है। सतर्कता स्तर 27-32 सेल्सियस तक होता है। बहुत ज्यादा सावधानी वाली श्रेणी 32-40 सेल्सियस तक होती है। सबसे खतरनाक स्तर 40 से 51 सेल्सियस तक जाता है। इस अध्ययन में यह देखा गया कि हर स्तर की गर्मी के बार-बार संपर्क में आने से जैविक उम्र पर कितना असर पड़ता है। बहुत ज्यादा गर्मी के ज्यादा दिनों का मतलब था कोशिका स्तर पर तेजी से उम्र बढ़ना। कुछ क्षेत्रों में लंबे समय तक भीषण तापमान बना रहता है, और इसका वहां के निवासियों की जैविक उम्र बढ़ने की प्रक्रिया पर प्रभाव चौंकाने वाला होता है।

(लेखक विज्ञान के जानकार हैं)

## शिक्षार्थियों से बड़ी शिक्षकों की चुनौती

स्कूलों में एआइ और कंप्यूटेशनल थिंकिंग को पढ़ाने की पहल की गई है। शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान और शिक्षा राज्य मंत्री जयन्त चौधरी ने पिछले दिनों इसे लेकर किताबें भी लांच की। इनमें बच्चों के साथ ही शिक्षकों के पढ़ने के लिए भी किताब लांच की गई। हालांकि इस दौरान छात्रों के लिए जो किताब लांच हुई, उससे कहीं ज्यादा मोटी शिक्षकों की किताब थी। इस पर जयन्त चौधरी ने चुटकी ली और कहा कि इन किताबों को देखकर लग रहा है कि किसे ज्यादा पढ़ने की जरूरत है। उनका इशारा शिक्षकों की ओर था। देखना दिलचस्प होगा कि स्कूलों में बच्चों को एआइ और कंप्यूटेशनल थिंकिंग पढ़ाने से पहले शिक्षक अपनी किताबों को कितना पढ़ते हैं?

## परीक्षा कराने वाले ही फेल

पेपर लीक से लेकर एंट्रेंस एक्जाम में भ्रांतियों को लेकर लंबे अर्से से सवालों के घेरे में रही नेशनल टेस्टिंग एजेंसी यानी एनटीए अब चाहे सब कुछ सुधरने का दावा करे, मगर सुधार होता दिख नहीं रहा। इस साल भी कई जगहों पर प्रवेश परीक्षा देने वाले अभ्यर्थियों की ओर से परीक्षा केंद्रों में आवश्यक सुविधाओं की शिकायत की जा रही हैं। जेई मेंस की परीक्षाओं का ही उदाहरण लें तो कई निजी कंप्यूटर संचालित परीक्षा केंद्र ऐसे रहे, जहां बैठने की इतनी कम जगह थी कि तीन घंटे बच्चों के लिए काफी असहज रहे। ऐसे कई सेंटरों पर पीने के पानी, शौचालय से लेकर बुनियादी चीजों के अभाव की भी शिकायतें आईं। राजधानी दिल्ली जैसी जगह पर कई ऐसे सेंटर बनाए गए, जहां सार्वजनिक परिवहन के साधन भी आसपास नहीं थे और परीक्षार्थियों को परीक्षा केंद्र तक पहुंचने के लिए घंटों मशक्कत करनी पड़ी। छात्रों ने अव्यवस्था वाले ऐसे परीक्षा केंद्रों को लेकर इंटरनेट मीडिया प्लेटफार्म पर पहले भी व्यथा साझा की थी, मगर इसका संज्ञान लेकर भी कोई सुधार नहीं किया गया।

राजरंग

## सहज अंदाज से भी विपक्षी असहज

राजनीति में आक्रामक अंदाज और ऊंची आवाज ही हमेशा कारगर नहीं होती। यदि तथ्य और कथ्य में दम हो तो सहज संवाद और प्रभावी अंदाज के दम पर भी प्रतिद्वंद्वी को असहज किया जा सकता है। कांग्रेस के राज्यसभा सदस्य राजीव शुक्ला ने बजट सत्र के दौरान कई मौकों पर इसका उदाहरण पेश किया। मृदुभाषी शुक्ला वैसे तो क्रिकेट, बालीवुड से लेकर विभिन्न दलों के नेताओं से रिश्तों के लिए जाने जाते हैं। जाहिर तौर पर आक्रामकता की परछाई से उनकी बनाई दूरी का इसमें योगदान रहा है, मगर संसद के इस सत्र में कई मौकों पर बिना उखड़े सहज अंदाज में सत्तापक्ष के खिलाफ की गई उनकी चुटीली टिप्पणियां इतनी वायरल हुईं कि सियासी गलियारों में कई दिनों तक उनकी खूब चर्चा हुई। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता अभिषेक सिंघवी के बीते हफ्ते डिनर में भी इसकी गूंज तब सुनाई पड़ी जब विपक्षी दलों के कई दिग्गजों ने 'विश्व गुरु का आश्रम खोलकर बैठे हैं, मगर कोई छात्र ही नहीं' से लेकर कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान पर वायरल उनके चुटीले तंजों की खूब चर्चा की। मुस्कुराते हुए शुक्ला ने तब कहा कि इंटरनेट मीडिया पर वे फूटी कौड़ी नहीं खर्च करते और उनकी टिप्पणियां तो स्वाभाविक रूप से वायरल हो रहीं हैं।

## कोविड वाले दौर की यादें ताजा

बीते दिनों अंतर-मंत्रालयी प्रेस कांफ्रेंस में लव अग्रवाल के रूप में एक चिरपरिचित चेहरा फिर सामने आया तो मीडिया में यह सुगबुगाहट हुई कि अरे, फिर क्या नई पाबंदियां सामने आने वाली हैं। ऐसा इसलिए, क्योंकि कोविड काल में यही लव अग्रवाल स्वास्थ्य मंत्रालय की ओर से रोज ब्रीफिंग करते थे। लाकडाउन के बाद मास्क, वैक्सीन, आवाजाही पर प्रतिबंध से लेकर लगभग हर गंभीर फैसले का एलान उन्होंने ही किया। उनकी छवि 'कोविड पर प्रवक्ता' की हो गई थी। वे वाणिज्य मंत्रालय में वरिष्ठ अधिकारी बने तो अब पश्चिम एशिया युद्ध के बीच निर्यातकों को राहत पैकेज, लाजिस्टिक्स सपोर्ट और नई राहत स्कीम की बात कर रहे हैं। एक ही अधिकारी, दो अलग संकट, मगर ब्रीफिंग स्टाइल वही पुरानी। यानी सरकार का यह आश्वासन कि चिंता की कोई बात नहीं।

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन. नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग,रफी मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा-201309 से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 * इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई/रेल शुल्क ₹-2 अतिरिक्त।

**84** हजार बच्चों को रेलवे सुरक्षा बल ने वर्ष 2018 से लेकर 2024 के बीच बचाया रेलवे परिसर से।



## आजकल

अनंत विजय

anant@nda.jagran.com

# सामाजिक सरोकार और सिनेमा

**फिल्में समाज के लिए संदेश देने का काम भी करती हैं। आज अगर फिल्म मर्दानी-3 में बालिकाओं की तस्करी का मुद्दा उठा है तो समाज को इस घृणित अपराध के बारे में गंभीरता से विचार करना चाहिए। सरकार और पुलिस तो अपने स्तर पर प्रयास करेंगी, अदालतों में सुनवाई होगी, आदेश पारित होंगे, लेकिन जब तक हमारा समाज इस अपराध के खिलाफ सजग होकर मुखर नहीं होगा, तब तक बेटियों की तस्करी पर लगाम लगा पाना संभव नहीं है। आज जब हमारा देश विकसित बनने की राह पर अग्रसर है, तब इस तरह के अपराध की समाज में कोई जगह नहीं होनी चाहिए**

पिछले दिनों रिलीज हुई फिल्म मर्दानी-3 का पोस्टर।

इस वर्ष जनवरी के आखिर में जब रानी मुखर्जी अभिनीत फिल्म मर्दानी-3 रिलीज हुई थी, तब दिल्ली से लापता हो रही बच्चियों का मुद्दा जोर-शोर से उठा था। एक रिपोर्ट के हवाले से यह समाचार चर्चा में आया था कि दिल्ली और आसपास के इलाकों से भारी संख्या में किशोरियां और महिलाएं गायब हो रही हैं। उस समय आए आंकड़े बेहद डराने वाले थे। तब भी यह कहा गया था कि जिस रिपोर्ट के हवाले से मुद्दा बनाया जा रहा था उसमें गायब हुई लड़कियों की बरामदगी के आंकड़े नहीं दिखाए गए थे। आंकड़ों को लेकर जब चर्चा बढ़ी तो दिल्ली पुलिस हरकत में आई। पुलिस ने एक्स पर एक पोस्ट किया। उसमें लिखा कि चंद संकेतों या प्रारंभिक जानकारी को जांचने के बाद यह सामने आया कि दिल्ली से गुमशुदा लड़कियों की संख्या पेड प्रमोशन का हिस्सा है। दिल्ली पुलिस ने स्पष्ट किया कि डर का माहौल बनाकर लाभ कमाने वालों को बख्शा नहीं जाएगा। इस तरह का वातावरण बनाने वालों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी। संयोग ऐसा था कि मर्दानी-3 में भी दिल्ली और इसके आसपास के इलाकों से बच्चियों के गायब होने की कहानी थी। दिल्ली पुलिस के पेड प्रमोशन वाले पोस्ट के बाद चर्चा कम जरूर हुई, लेकिन समाचार पत्रों में लड़कियों के गायब होने के बारे में कुछ न कुछ सामग्री प्रकाशित होती रही। गुमशुदा होने वाली लड़कियों की संख्या के साथ-साथ बरामदगी की संख्या भी प्रकाशित हुई। इससे इंटरनेट मीडिया से बना भ्रम कुछ कम हुआ और राजधानी और इसके आसपास के क्षेत्रों के निवासियों में भय भी कम हुआ।

फिल्म मर्दानी-3 में बच्चियों का अपहरण कर उनको विदेश भेजने और उन पर दवाओं के ट्रायल की बहुत मार्मिक और भयावह कहानी है। फिल्मकार ने यह दिखाने का प्रयास किया है कि मानव तस्करी सिर्फ देह व्यापार के लिए नहीं होती, बल्कि इसके अनेक रूप होते हैं। इस फिल्म में बच्चियों का अपहरण किया जाता है और जिनका ब्लड ग्रुप खास किस्म का होता है, उनको विदेश ले जाकर उस पर कैंसर की दवाई का टेस्ट किया जाता है। अगवा की गई जिन लड़कियों का ब्लड ग्रुप उस समूह का नहीं होता है, उनसे भीख मंगवाने से लेकर अन्य गैरकानूनी कार्य करवाए जाते हैं। कैंसर की दवाई का जिन लड़कियों पर टेस्ट किया जाता है, उनकी हालत बहुत खराब हो जाती है और कुछ समय बाद तड़प-तड़पकर उनकी मृत्यु होते दिखाया गया है। इस सिंडिकेट में लड़कियों के लिए काम करने वाली एक संस्था और उसके प्रमुख की संलिप्तता भी दिखाई गई है।

कहानी थोड़ी फिल्मी भी होती है। जांच कर रही पुलिस आफिसर को सस्पेंड कर दिया जाता है, लेकिन वह विभाग के अपने साथियों के साथ श्रीलंका जाकर इस गैंग का खात्मा करती है। फिल्म में कई टर्न और ट्विस्ट हैं, जो फिल्म को रोचक बनाने और दर्शकों को बांधने के लिए किए गए हैं, पर मूल कहानी तो लड़कियों का गिनी पिग की तरह इस्तेमाल करने की ही है। फिल्म की कहानी, संभव है काल्पनिक हो, लेकिन मानव तस्करी का जो पहलू इसमें दिखाया गया है, उसको देखकर गायब होने वाली लड़कियों को लेकर समाज को चिंतित होना चाहिए। यह अपराध बेहद संगठित और समाज के इज्जतदार लोगों की सरपरस्ती में चलता हुआ दिखाया गया है। वैसे लोग जो पैसे की खातिर किसी की जान को बेचने या जान लेने में नहीं हिचकते हैं।

फिल्म से वापस समाज में लौटते हैं। तीन-चार दिन पहले दिल्ली हाई कोर्ट ने बच्चों की तस्करी को लेकर एक याचिका पर सुनवाई के दौरान बेहद कठोर टिप्पणी की। अदालत ने कहा, मानक संचालन प्रक्रिया (स्टैंडर्ड आपरेटिंग प्रोसीजर) और न्यायिक आदेशों के बावजूद दिल्ली बच्चों की तस्करी की मंडी बन चुकी है। हाई कोर्ट ने दिल्ली पुलिस और राष्ट्रीय बाल संरक्षण आयोग से यह जानना चाहा कि बच्चों की तस्करी को रोकने के लिए क्या कदम उठाए गए हैं। सुनवाई के दौरान याचिकाकर्ता ने एक बेहद ही डराने और चौंकाने वाली बात कही। याचिकाकर्ता ने एक घटना का उल्लेख करते हुए बताया कि दिल्ली के आनंद विहार रेलवे स्टेशन से एक बच्ची को बचाकर पुलिस को सौंपा गया था। आरोप लगाया गया कि पुलिस ने बचाई गई बच्ची को बाल कल्याण समिति के सामने पेश करने के बजाय उसको वापस तस्करों को सौंप दिया। बाद में वही बच्ची फिर से तस्करों के पास से मिली। अगर यह आरोप सही है तो हमारे सिस्टम पर बहुत बड़ा प्रश्न चिह्न है। कोर्ट ने इस आरोप का संज्ञान लिया है। हालांकि सुनवाई के दौरान यह बात भी सामने आई कि 2018 से लेकर 2024 के बीच रेलवे सुरक्षा बल ने रेलवे परिसर से 84,000 बच्चों को बचाया भी। इस तरह से कई अन्य आंकड़े भी कोर्ट के समक्ष रखे गए। आज जब हमारी पुलिस व्यवस्था अत्याधुनिक तकनीकी उपकरणों और सुविधाओं से युक्त है, तब कोर्ट की तस्करी की मंडी बनने जैसी टिप्पणी भयावह है। आज भी अगर बच्चों की तस्करी हो रही है तो उसका किन अपराध में उपयोग हो रहा होगा, इस बारे में सोचकर सिहरन होती है।

कई बार यह कहा जाता है कि फिल्में समाज के लिए संदेश देने का काम करती हैं। मर्दानी-3 में कम उम्र की लड़कियों का अपहरण करके विदेश भेजने की बात हो या वेब सीरीज डेल्ही क्राइम-3 में कम उम्र की लड़कियों को विदेश में बेचने की कहानी, एक संकेत तो समाज को दिया ही जा रहा है। इस तरह की कहानियां फिल्मों में आ रही हों और उसी समय इस तरह के केस कोर्ट में भी सुनवाई के लिए आ रहे हों, तो यह प्रतीत होता है कि फिल्में कुछ तो कहने का प्रयास कर रही हैं। फिल्मों को बहुधा मनोरंजन कहकर खारिज कर दिया जाता है, लेकिन कई बार उनसे निकलने वाले संदेश को पकड़ने की आवश्यकता भी है। 1950 में व्ही शांताराम की एक फिल्म आई थी दहेज। स्वाधीन भारत में दहेज की समस्या को लेकर यह फिल्म बनी थी। इस बात की कई बार चर्चा होती है कि बिहार विधानसभा में दहेज की कुरीति पर चर्चा के दौरान इस फिल्म का नाम कई बार आया था। कहा तो यहां तक जाता है कि बिहार में दहेज उन्मूलन कानून बनने के पीछे इस फिल्म की प्रेरणा थी। इस बात में सच्चाई हो या न हो, लेकिन इतना तो तय है कि व्ही शांताराम ने अपनी फिल्म के माध्यम से इस कुरीति को चर्चा के केंद्र में ला दिया था। फिल्मों से ऐसे कई उदाहरण दिए जा सकते हैं। आज अगर मर्दानी-3 में बालिकाओं की तस्करी का मुद्दा उठा है तो समाज को इस घृणित अपराध के बारे में गंभीरता से विचार करना चाहिए। सरकार और पुलिस तो अपने स्तर पर प्रयास करेंगी, अदालतों में सुनवाई होगी, आदेश पारित होंगे, लेकिन जब तक हमारा समाज इस अपराध के खिलाफ सजग होकर नहीं उठेगा, तब तक बेटियों की तस्करी पर लगाम लगा पाना संभव नहीं है। आज जब हमारा देश विकसित बनने की राह पर अग्रसर है, तब इस तरह के अपराध की समाज में कोई जगह होनी नहीं चाहिए।

## मंथन

# दंड ही नहीं, सुधार का भी उद्देश्य

डा. महेश परिमल

अदालतों द्वारा कभी-कभी परंपरा से हटकर दी जाने वाली सजाएं सुखद आश्चर्य पैदा करती हैं। ऐसी सजाओं को देखकर यह महसूस होता है कि हमारे न्यायाधीश केवल कठोर निर्णय लेने वाले अधिकारी ही नहीं, बल्कि संवेदनशील भी हैं। वे समाज में घटित घटनाओं से प्रभावित होते हैं और दोषियों को ऐसी सजाएं देने का प्रयास करते हैं, जो न केवल दंडात्मक हों, बल्कि सुधारात्मक भी हों। इन सजाओं के पीछे मूल भावना यही होती है कि इंसानियत जीवित रहे, समाज में पारस्परिक विश्वास बना रहे और न्यायपालिका के प्रति सम्मान कायम रहे। हाल में राजस्थान हाई कोर्ट ने एटीएम चोरी के एक मामले में जनवरी से जेल में बंद दो आरोपियों को जमानत देते हुए यह शर्त रखी कि वे 30 दिनों तक प्रतिदिन कम से कम पांच पेड़ लगाएंगे और उनकी देखभाल भी करेंगे। न्यायमूर्ति चंद्र प्रकाश श्रीमाली ने वारिस उर्फ लहाकी और उस्मान उर्फ अंधा की जमानत याचिकाओं पर यह आदेश दिया। अदालत ने यह भी स्पष्ट किया कि नए आपराधिक कानूनों के तहत केवल सजा देने के बजाय सुधारात्मक दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है। इसी प्रकार पुणे में एक नाबालिग को जुवेनाइल जस्टिस बोर्ड ने निबंध लिखने की सजा देते हुए जमानत दी।

यह पहली बार नहीं है जब अदालतों ने इस तरह की अनोखी सजाएं सुनाई हों। इससे पहले भी कई मामलों में न्यायालयों ने ऐसे निर्णय दिए हैं, जिनसे अपराधियों को सबक मिले और समाज में सकारात्मक संदेश जाए। दिल्ली की एक अदालत ने झूठी गवाही देने वाले एक व्यक्ति को सजा के रूप में एक महीने तक प्रतिदिन दो घंटे राजघाट पर प्रार्थना करने और परिसर की सफाई करने का आदेश दिया। यह अलग बात है कि ऐसे उपाय किसी व्यक्ति के अंतर्मन को कितना बदलते हैं, लेकिन यह पारंपरिक दंड व्यवस्था के मुकाबले अधिक मानवीय और प्रयोगधर्मी दृष्टिकोण अवश्य प्रस्तुत करते हैं। कल्पना कीजिए कि यदि एक नेता को झोपड़पट्टियों में रहकर लोगों की समस्याएं समझने की सजा दी जाए, एक मंत्री को सामान्य दर्जे में यात्रा करनी पड़े या किसी अधिकारी को खेतों में श्रमिकों के साथ काम करना पड़े, तो यह केवल सजा नहीं, बल्कि सामाजिक संवेदनशीलता का प्रशिक्षण होगा। यह दृश्य भले ही अभी सामान्य न हो, पर न्यायपालिका यदि परंपरागत दंड से आगे बढ़े, तो ऐसी संभावनाएं साकार हो सकती हैं।

अतीत में भी कुछ ऐसे उदाहरण सामने आए हैं, जब एक विधायक को गांधी साहित्य पढ़ने और एक अभिनेत्री को अनाथालय में समय बिताने की सजा दी गई। ये निर्णय इस बात का संकेत देते हैं कि न्याय केवल दंड देने का माध्यम नहीं, बल्कि सुधार का साधन भी हो सकता है। न्याय व्यवस्था पर प्रश्न भी उठते रहे हैं-कभी भ्रष्टाचार के आरोप, कभी देरी और कभी असमानता को लेकर। ऐसे में आवश्यक है कि न्यायपालिका स्वयं भी पारदर्शिता का पालन करे। जब न्याय देने वाले भी उसी कसौटी पर खरे उतरेंगे, जिस पर वे दूसरों को कसते हैं, तभी न्याय व्यवस्था पर जनता का विश्वास और मजबूत होगा। समाज न्यायपालिका से उम्मीद लगाए बैठा है। भले ही समय के साथ न्याय की प्रकृति बदली हो, पर लोगों का विश्वास अभी भी बना हुआ है। यदि न्यायाधीश संवेदनशीलता और दूरदृष्टि के साथ निर्णय लें, तो वे न केवल अपराधियों को सुधार सकते हैं, समाज को भी नई दिशा दे सकते हैं।

(सामाजिक मामलों के जानकार)

## पोस्ट

अमेरिका में हालात को देखते हुए जेडी वेंस या मार्को रूबियो के लिए कभी राष्ट्रपति बनना आसान नहीं होगा। व्हाइट हाउस के लिए उनकी राह असंभव सी हो गई है।
किम@KimDotcom

ट्रंप ने तो कहा था कि उन्होंने ईरान की ऐसी कमर तोड़ दी है कि वह पलटवार करने में सक्षम ही नहीं बचा। फिर ईरान कैसे अमेरिकी लड़ाकू विमानों को गिरा रहा है।
तवलीन सिंह@tavleen_singh

पाकिस्तान हर तरफ से शर्मसार हो रहा है। भारत ने उसे दलाल देश कह दिया। ईरान ने उसके मध्यस्थता प्रस्ताव को खारिज कर दिया। संयुक्त अरब अमीरात ने उससे अपना कर्जा वापस मांगा है और अंतरराष्ट्रीय मीडिया ने अफगानिस्तान में उसके अत्याचारों की पोल खोली है।
रोशाना आसिया पोपल@PopalRoshana

भारत 30 वर्षों में पहली बार इंजीनियरिंग वस्तुओं का शुद्ध निर्यातक बन गया है। वित्त वर्ष 2012 में जहां इस मोर्चे पर 32 अरब डालर का घाटा होता था, उसी मोर्चे पर अब छह अरब डालर का लाभ दर्ज हुआ है।
अभिजीत चोकसी@stockifiabhijit

मौजूदा संकट में भी अगर भारत और बांग्लादेश जैसे देश पेट्रोल की कीमतों को यथावत बनाए रखने में सक्षम हैं तो फिर पाकिस्तानी सत्ताधीशों ने पेट्रोल के दाम इतने क्यों बढ़ा दिए और वह भी तब जब वे खाड़ी देशों से नजदीकी होने का दावा करते हैं?
जे. जफर@Jehad_Zafar

## जागरण जनमत

कल का परिणाम

**जन विश्वास विधेयक के कानून बनने से मुकदमों का बोझ घटाने में मदद मिलेगी?**

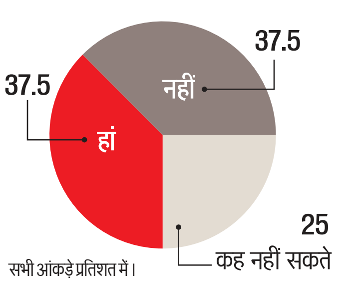


सभी आंकड़े प्रतिशत में।

**आज का सवाल**

क्या युद्ध के बीच शीर्ष सैन्य अधिकारियों को हटाना अमेरिका की परेशानी का परिचायक है?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है।

## जनपथ

नेता तो हैं बाद में वह हैं प्रथम दबंग,
अब तो सुप्रीम कोर्ट भी देख रहा यह रंग।
देख रहा यह रंग चल रहा बड़ा झमेला,
बड़के जज भी देख रहे दीदी का खेला।
यदि चुनाव आयोग समय रहते ना चेता,
लोकतंत्र को खत्म करेंगे बेढब नेता!
– ओमप्रकाश तिवारी

## रचनाकर्म

# भारतीय राजनीति के अजातशत्रु

ब्रजबिहारी

**यह काफी टेबल बुक अटल बिहारी वाजपेयी के व्यक्तित्व को अभिव्यक्त करती है और एक बालक से शीर्षस्थ राजनेता बनने की यात्रा में पाठक को सहयात्री बना लेती है...**

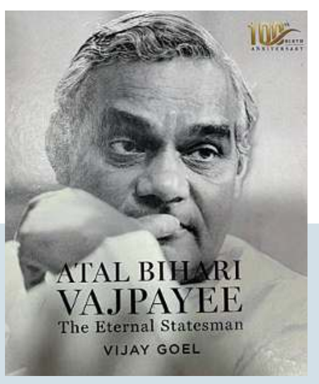


**पुस्तक** : अटल बिहारी वाजपेयीः दि इटर्नल स्टेट्समैन
**लेखक** : विजय गोयल
**प्रकाशक** : हेरिटेज इंडिया फाउंडेशन
**मूल्य** : 4000 रुपये

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय राजनीति के आकाश में जिन राजनेताओं ने अपनी चमक बिखेरी, उनमें अटल बिहारी वाजपेयी बेजोड़ थे। वे सिर्फ राजनीति के चतुर खिलाड़ी ही नहीं थे, बल्कि उन्होंने अपनी कलम की धार से भी अपने समय और भविष्य को गहरे तक प्रभावित किया। सबसे बढ़कर उनका चुंबकीय व्यक्तित्व था, जो सहज ही अपनी ओर आकर्षित कर लेता था। उनकी मुस्कुराहट के आगे हथियार डालने के अलावा कोई चारा नहीं रहता था। उनकी गर्मजोशी इतनी संक्रामक थी कि उनके विरोधी और शत्रु भी उससे परास्त हो जाते थे और उनके मुरीद बन जाते थे। ऐसे अजातशत्रु व्यक्तित्व के बारे में लिखने के लिए कुछ भी नहीं बचा है, लेकिन उनके मंत्रिमंडलीय सहयोगी और पारिवारिक मित्र रहे विजय गोयल की उन पर प्रकाशित की गई 'काफी टेबल बुक' पाठकों को कई मायनों में एक अलहदा अनुभव से गुजरने का अवसर देती है।

वस्तुतः किसी व्यक्तित्व के बारे में लिखा हुआ कुछ पढ़ना और उनके बारे में काफी टेबल बुक का रसास्वादन करना, भिन्न-भिन्न अनुभव संसार रचते हैं। पाठक जब कुछ पढ़ता है तो उसके साथ वह लिखे हुए को विजुअलाइज करता चलता है। इस मामले में हर पाठक का विजुअलाइजेशन पृथक होता है, लेकिन काफी टेबल बुक में पाठक संबंधित चरित्र के व्यक्तित्व को लिखे हुए शब्दों के बजाय तस्वीरों के माध्यम से गढ़ने का प्रयास करता है। अटल जी के बचपन और जवानी से लेकर उनकी संपूर्ण राजनीतिक यात्रा की छवियों को देखना पाठक को स्मृतियों के एक ऐसे गलियारे में ले जाता है, जहां राजनीतिक कालिमा का कोई स्थान नहीं है। पाठक जैसे-जैसे इस पुस्तक के पन्नों को पलटते जाएंगे, उन्हें मध्यमवर्गीय परिवार में जन्मे एक बालक के शीर्षस्थ राजनेता बनते हुए देखने का अनुभव प्राप्त होगा। यह अनुभव इतना शाश्वत है कि उसका न कोई आदि है, ना ही कोई अंत।

आज हम यह कल्पना भी नहीं कर सकते हैं कि कोई राजनेता यह कहेगा कि पार्टी तोड़कर सत्ता के लिए नया गठबंधन करके यदि सत्ता हाथ में आती है तो मैं ऐसी सत्ता को चिमटे से भी छूना पसंद नहीं करूंगा। यह अटल जी जैसा कोई राजनेता ही कह सकता है। वर्ष 1996 में 13 दिन और 1998 में 13 माह की केंद्र सरकार चलाने वाले अटल जी चाहते तो जोड़तोड़ करके सत्ता में बने रह सकते थे, लेकिन ऐसी सत्ता से वे विपक्ष में बैठना पसंद करते थे। यही वजह है कि अटल जी को अपनी पार्टी के अलावा विपक्ष के नेताओं से भी पूरा सम्मान मिला। उनके लिए राजनीति लड़ाई का मैदान नहीं, बल्कि देशवासियों के जीवन स्तर को ऊंचा उठाने का माध्यम थी।

अटल जी ने सदैव राष्ट्रीय हित को राजनीतिक लाभ से ऊपर रखा। पुस्तक में इसका एक उदाहरण भी दिया गया है, जो आज के राजनेताओं के लिए एक सीख है। उत्तर प्रदेश के सादुलपुर में दंगे के बाद उन्होंने एक पदयात्रा की थी और उसमें चंद्रशेखर और चरण सिंह को भी आमंत्रित किया था। जब लेखक ने उनसे पूछा कि उन्होंने इन दोनों नेताओं को क्यों बुलाया तो अटल जी ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया कि उनकी उपस्थिति से हमारे मुद्दे को मजबूती मिलेगी। इसके अलावा बाकी चीजों का कोई महत्व नहीं है। इस घटना ने लेखक को स्टेट्समैनशिप (राजनीतिज्ञता) का पहला पाठ पढ़ाया था। आज की संकीर्ण राजनीति के दौर में अटल जी जैसे उदार और दूरदर्शी राजनेता की कमी खलनी स्वाभाविक है।

अटल जी की स्मृति यात्रा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के साथ उनके संबंधों का उल्लेख किए बिना अधूरी है। मोदी ने यह स्वीकार किया है कि अटल जी की 'राष्ट्र प्रथम' की अवधारणा ही उनके 'विकसित भारत' के विचार का आधार है।

# साहित्य के सागर में गागर

प्रणव सिरोही

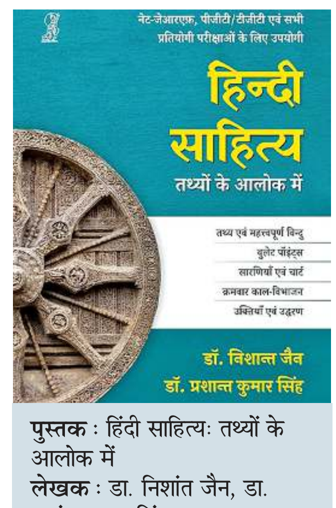


**पुस्तक** : हिंदी साहित्यः तथ्यों के आलोक में
**लेखक** : डा. निशांत जैन, डा. प्रशांत कुमार सिंह
**प्रकाशक** : वाणी प्रकाशन
**मूल्य** : 750 रुपये

साहित्य मनुष्य की अभिरुचि का एक प्रमुख माध्यम है। साहित्य का संसार भी व्यापक विस्तार लिए होता है, जो पाठक के लिए विकल्पों की भरमार देता है, लेकिन अध्ययन विषय के रूप में जब साहित्य के चयन की बारी आती है तो इसका विस्तार ही विद्यार्थी या अभ्यर्थी की चुनौतियां बढ़ा देता है। साहित्य रूपी सागर में विद्यार्थियों-अभ्यर्थियों की नैया पार लगाने में कुशल नौका और दिशा दिग्दर्शक यंत्र की उपयोगिता और बढ़ जाती है। डा. निशांत जैन और डा. प्रशांत कुमार सिंह की पुस्तक 'हिंदी साहित्य : तथ्यों के आलोक में' इन कसौटियों पर पूरी तरह खरी उतरती है।

लेखकद्वय ने विपुल जानकारियों से भरे साहित्यिक ग्रंथों से तथ्यपरक सामग्री को सारगर्भित स्वरूप में संकलित एवं प्रस्तुत किया है। काल विभाजन की दृष्टि से इसमें आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल और आधुनिक काल का स्पष्ट वर्गीकरण है। प्रमुख कवियों और लेखकों की महत्वपूर्ण रचनाओं की कालक्रमानुसार दी गई सूचियां भी बहुत उपयोगी हैं। उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध और आलोचना जैसी भिन्न-भिन्न साहित्यिक विधाओं पर भी इसमें संक्षिप्त रूप से प्रकाश डाला गया है। साहित्य के क्षेत्र में दिए जाने वाले पुरस्कारों, पुस्तकों एवं रचनाओं से भी सार्थक साक्षात्कार कराया गया है। हिंदी पत्र एवं पत्रिकाओं की विकास यात्रा का भी इसमें उल्लेख मिलता है।

छात्रों एवं शिक्षकों के लिए समान रूप से उपयोगी यह पुस्तक उन जिज्ञासु पाठकों को भी रुचिकर लगेगी, जो हिंदी साहित्य को समझने के लिए संक्षेप में सामग्री चाहते हैं। परीक्षा से पहले विषय की सामग्री को दोहराने की दृष्टि से यह पुस्तक बेजोड़ है, क्योंकि इसमें एक ही स्थान पर बहुत कुछ संकलित है। यह साहित्य के सागर में गागर के समान है।

# राजा मान सिंह का ऐतिहासिक पुनर्पाठ

यतीन्द्र मिश्र

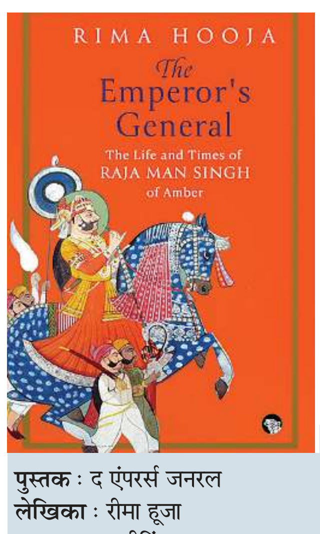


**पुस्तक** : द एंपरर्स जनरल
**लेखिका** : रीमा हूजा
**प्रकाशक** : स्पीकिंग टाइगर बुक्स
**मूल्य** : 599 रुपये

इतिहास अक्सर अपने सबसे निर्णायक पात्रों के साथ एक अजीब-सी विडंबना करता है, कभी उन्हें महिमामंडित कर देता है, तो कभी संदेह और तर्कों के ऐसे घेरे में बांध देता है कि उनका वास्तविक कद ओझल हो जाता है। समय के साथ ऐसे चरित्र या तो सरल व्याख्याओं में सिमट जाते हैं या फिर विवादों के धुंधलके में कहीं खो जाते हैं। रीमा हूजा की 'द एंपरर्स जनरल' इस विस्मृति और सरलीकरण के विरुद्ध एक गंभीर हस्तक्षेप है, जो इतिहास के छोर पर मौजूद एक महत्वपूर्ण व्यक्तित्व राजा मान सिंह (1550-1614) को उसकी समग्रता और यथार्थ में देखने का आग्रह करती है।

ढूंढाड़ राज्य (राजधानीः आमेर) के राजकुमार मान सिंह प्रतिष्ठित कछवाहा राजपूत परिवार में जन्मे, राजा भगवंत दास और रानी भगवती पंवार के ज्येष्ठ पुत्र थे। आठ अध्यायों में विन्यस्त यह जीवनी उनके प्रारंभिक जीवन, आमेर दरबार और कछवाहा वंश की ऐतिहासिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से आरंभ होती है। 16वीं शताब्दी का उभरता दौर, जब अकबर का मुगल साम्राज्य विस्तार पर था और मान सिंह शीघ्र ही उसकी सत्ता-संरचना में एक केंद्रीय उपस्थिति के रूप में स्थापित होते हैं। उनका व्यक्तित्व राजपूत युद्ध परंपरा और मुगल सत्ता की विस्तारशील आकांक्षाओं के बीच एक सेतु बनकर उभरता है।

हालांकि राजा मान सिंह की छवि ज्यादातर एकतरफा धारणाओं (कभी मुगल सत्ता से निकटता, तो कभी हल्दीघाटी में शूरवीर महाराणा प्रताप के विरोध के आधार पर) में सीमित रही, पर यह कृति उन्हें उनके समय की जटिलताओं के भीतर देखती है। यहां उस युग की व्यापक हलचलों की झलक मिलती है। राजा मान सिंह के अंतिम वर्षों, उनकी विरासत और ऐतिहासिक महत्व का समग्र मूल्यांकन शानदार है। वे युद्धभूमि से परे एक सृजनधर्मी संरक्षक के रूप में भी उभरते हैं, जिन्होंने वृंदावन और वाराणसी में भव्य मंदिरों की प्रतिष्ठा कराई और आमेर को कला एवं स्थापत्य की समृद्ध परंपरा में रूपांतरित किया। इतिहास-ग्रंथों, चारण-परंपराओं और स्थापत्य-साक्ष्यों पर आधारित इस लेखन में रीमा हूजा तथ्य और कथ्य को इस तरह साधती हैं कि गहन शोध के साथ कथानक का सहज, संतुलित और विश्वसनीय स्वर बरकरार रहता है।

# गजल के सांस्कृतिक राजदूत हरिहरन

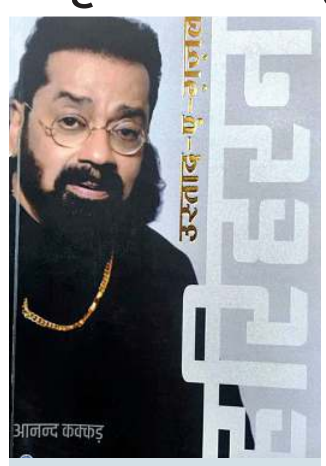


**पुस्तक** : उस्ताद-ए-गजलः हरिहरन
**लेखक** : आनंद कक्कड़
**प्रकाशकः** सर्व भाषा ट्रस्ट
**मूल्य** : 599 रुपये

भारतीय पार्श्वगायन और गजल गायकी में हरिहरन ऐसा नाम है, जिनकी रूहानी आवाज ने पांच दशकों में गजल की दुनिया को एक विशिष्ट गरिमा और व्यापक पहचान प्रदान की है। आनंद कक्कड़ की 'उस्ताद-ए-गजलः हरिहरन' इस दीर्घ और समृद्ध सांगीतिक यात्रा को आत्मीय पाठ में दर्ज करती है, जहां उनकी साधना, संवेदना और संगीत-बोध के साथ रचनात्मक उपलब्धियां और भीतर का कलाकार स्वाभाविक ढंग से उभरकर सामने आता है। हरिहरन अनंत सुब्रमणि का जन्म एक तमिल परिवार में शास्त्रीय संगीतकार अलामेलु मणि और एच. ए. एस. मणि के यहां हुआ। उन्होंने 1974 में गजल-यात्रा की शुरुआत की, जो आज एक स्वर्णिम मुकाम तक पहुंची है। पुस्तक की शुरुआत गजल के परिचय, संरचना और प्रमुख गायकों के योगदान से होती है। सीमित रिकार्डिंग संसाधनों के दौर से लेकर डिजिटल युग तक पहुंची गजल गायकी की यात्रा रेखांकित है। बेगम अख्तर, मेहदी हसन, गुलाम अली, फरीदा खानम और जगजीत सिंह जैसे कलाकारों की संगीत साधना, तकनीक और सुर-अभिव्यक्ति ने गजल गायकी पर गहरा प्रभाव छोड़ा है, जिन्हें प्रतिनिधि गजल घरानों के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

आशा भोसले, उस्ताद अमजद अली खान, पं. हरिप्रसाद चौरसिया, उस्ताद जाकिर हुसैन, पं. विश्व मोहन भट्ट, पं. साजन मिश्रा, ए. आर. रहमान, अनूप जलोटा, शंकर महादेवन और कविता कृष्णमूर्ति जैसे कई दिग्गज संगीत-मनीषियों की टिप्पणियों के माध्यम से हरिहरन का व्यक्तित्व और कला दोनों समान गहराई से उजागर होते हैं। वे ऐसे कलाकार के रूप में सामने आते हैं, जिनमें साधना, रियाज, विनम्रता, जिज्ञासा और निरंतर नवाचार का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। पुस्तक का महत्वपूर्ण पक्ष वह विस्तृत संवाद भी है, जिसके माध्यम से हरिहरन अपने जीवन, परिवार, संगीत-शिक्षण, उस्तादों और गजल के लंबे सफर पर खुलकर बात करते हैं। इनके जरिये पाठक उस व्यक्तित्व से भी रूबरू होता है, जिसने साधारण से असाधारण तक का सफर तय किया है। यहां उनके संघर्ष, अनुशासन, परिश्रम, धैर्य और सृजनात्मकता से जुड़ी अनेक परतें खुलती हैं। कुल 11 अध्यायों में विन्यस्त इस किताब में आगे उनकी 50 चुनिंदा गजलों का संकलन और इस स्वर्णिम यात्रा से जुड़ी चित्र-श्रृंखला से गुजरना एक विशेष अनुभव है। इसमें प्रयुक्त समकालीन बोलचाल की भाषा और संवादों की मौलिकता पाठक को एक परिचित संवाद का अनुभव कराती है।

### एचडीएफसी बैंक के कर्ज वितरण में 12% की वृद्धि

**नई दिल्ली :** बीते वित्त वर्ष की चौथी तिमाही (जनवरी–मार्च 2026) के दौरान एचडीएफसी बैंक के कर्ज वितरण में 12 प्रतिशत की वृद्धि हुई है और यह बढ़कर 29 .6 लाख करोड़ रुपये हो गया है। बैंक ने शनिवार को रेग्युलेटरी फाइलिंग में बताया कि 31 मार्च 2025 के अंत तक कुल अग्रिम 26 .43 लाख करोड़ रुपये था। बीती तिमाही में बैंक का जमा भी 14 .4 प्रतिशत बढ़कर 31.05 लाख करोड़ रुपये पर पहुंच गया है। (प्रेट्र)

मासिक बचत योजनाओं ने सोना खरीदने वालों के लिए एकमुश्त बोझ को कम कर दिया है। दुकानदारों को नकदी प्रवाह को स्थिर रखने में मदद मिली है।
— सुवंकर सेन, सीईओ, सेनको गोल्ड एंड डायमंड्स

# दुर्लभ खनिजों की खोज को मिलेगी और धार

## नीलामी में कंपनियों को आकर्षित करने के लिए मौजूदा नीति में आवश्यक संशोधन करेगी सरकार

**जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली :** दुर्लभ खनिजों (क्रिटिकल मिनरल्स) की घरेलू खोज व नीलामी को और तेज गति देने के लिए सरकार मौजूदा नीति में जरूरी संशोधन करने जा रही है। हाल में जारी निविदाओं पर मिली प्रतिक्रिया से सरकार बहुत खुश नहीं है। लिहाजा मौजूदा प्रक्रिया का विस्तृत अध्ययन किया जाएगा ताकि कंपनियों की रुचि बढ़ाई जा सके व नीलामी प्रक्रिया को और आकर्षक बनाया जा सके।

हालिया रिपोर्टों के मुताबिक, वर्ष 2023–24 में चार चरणों के तहत कुल 48 ब्लाकों को नीलाम करने की घोषणा की गई थी। इनमें लिथियम, निकल, कोबाल्ट और रेयर अर्थ एलिमेंट्स (आरईई) जैसे महत्वपूर्ण खनिज शामिल थे। लेकिन इनमें से केवल 24 ब्लाकों में ही सफल नीलामी हो पाई। यानी लगभग 50 प्रतिशत ब्लाकों में ही कंपनियों ने रुचि दिखाई। बाकी ब्लाकों में बोलीदाताओं की कमी रही। वर्ष 2026 में भी छठे दौर के तहत घोषित 11 ब्लाकों की नीलामी रद करनी पड़ी क्योंकि पर्याप्त योग्य बोलीदाता नहीं मिले। पांच ब्लाकों में तो कोई बोली ही नहीं आई, जबकि पांच अन्य में तीन से कम तकनीकी रूप से योग्य बोलीदाता थे।

अब तक छह दौर में कुल 46 क्रिटिकल मिनरल ब्लाकों की सफलतापूर्वक नीलामी हुई है और यह उम्मीद जगाने वाला है। इस बारे में सरकार की तरफ आधिकारिक तौर पर कोई जानकारी तो नहीं दी गई है, लेकिन कुछ उद्योग चैंबरों के विशेषज्ञों का कहना है कि घरेलू नीलामियों में कंपनियों की कम रुचि के पीछे पर्यावरणीय मंजूरी, बुनियादी ढांचे की कमी, उच्च लागत और वैश्विक बाजार में सस्ते आयात का विकल्प उपलब्ध होना प्रमुख कारण हैं। खनन मंत्रालय अब इन मुद्दों पर गहन समीक्षा कर नीति में संशोधन करने वाला है, ताकि नीलामी प्रक्रिया को सरल, पारदर्शी और निवेशकों के अनुकूल बनाया जा सके। नीति संशोधन के बाद कंपनियों को टैक्स छूट, आसान मंजूरी और बेहतर इंसेंटिव दिए जाने की संभावना है। इसी बीच सातवें चरण में 19 नए ब्लाकों की नीलामी प्रक्रिया भी शुरू हो गई है।

**48** में से कुल 24 ब्लाकों की ही सफल नीलामी हो पाई वित्त वर्ष 2023–24 के दौरान

**11** ब्लाकों की नीलामी रद करनी पड़ी है सरकार को छठे दौर के तहत वर्ष 2026 में

**कंपनियों के रुचि न लेने के प्रमुख कारण**

- पर्यावरणीय मंजूरी
- बुनियादी ढांचे की कमी
- उच्च लागत
- सस्ते आयात का विकल्प

**इलेक्ट्रिक वाहन–डिफेंस के लिए जरूरी हैं दुर्लभ खनिज**

वैसे दुनिया भर में दुर्लभ खनिजों की होड़ तेज हो गई है क्योंकि ये इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी), नवीकरणीय एनर्जी, डिफेंस और हाई–टेक उद्योगों के लिए जरूरी हैं। चीन वर्तमान में आरईई और कई क्रिटिकल मिनरल्स का 80–90 प्रतिशत उत्पादन और प्रसंस्करण नियंत्रित करता है। अमेरिका ने फरवरी 2026 में 54 देशों के साथ 'क्रिटिकल मिनरल्स मिनिस्टोरियल' आयोजित किया था, जिसमें भारत की ओर से विदेश मत्री एस जयशंकर ने भी हिस्सा लिया था। ट्रंप प्रशासन ने सहयोगी देशों के साथ सप्लाई चेन मजबूत करने और चीन पर निर्भरता कम करने के लिए व्यापार ब्लाक बनाने का प्रस्ताव रखा है। भारत अमेरिका के अलावा यूरोपीय संघ, आस्ट्रेलिया, ब्राजील, मैक्सिको जैसे देशों के साथ अलग से भी दुर्लभ खनिजों के क्षेत्र में सहयोग स्थापित कर रहा है।

## 2030 तक जीडीपी में एमएसएमई का 40 प्रतिशत योगदान होगा

**नई दिल्ली, आइएएनएस :** कंसल्टिंग फर्म बी2के एनालिटिक्स ने एक रिपोर्ट में शनिवार को कहा कि वर्ष 2030 तक देश के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम (एमएसएमई) का योगदान बढ़कर 40 प्रतिशत पर पहुंच जाएगा, जो अभी 30 प्रतिशत के करीब है।

रिपोर्ट के अनुसार, यदि वृद्धि का मौजूदा रुझान जारी रहता है तो 2030 तक भारतीय जीडीपी का आकार बढ़कर 537.96 लाख करोड़ रुपये पर पहुंच जाएगा और इसमें एमएसएमई का योगदान 215.18 लाख करोड़ रुपये हो सकता है। 2030 तक एमएसएमई सेक्टर को कुल 162.92 लाख करोड़ रुपये की जरूरत होगी। इसमें से 78.03 लाख करोड़ रुपये औपचारिक क्षेत्र से, 56,98 लाख करोड़ रुपये प्राथमिक क्षेत्र से, 18.57 लाख करोड़ रुपये अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों से 2.46 लाख करोड़ रुपये गैर–बैंकिंग वित्तीय कंपनियों से मिलने का अनुमान है।

# फाइनेंशियल समिट में हर स्पीकर कुछ बेचने आता है

हाल ही में एक फाइनेंशियल समिट से एक फंड मैनेजर की क्लिप इंटरनेट मीडिया पर प्रसारित हुई। लगभग थिएटर जैसे अंदाज में, वो बड़े जोश के साथ इस बात की वकालत कर रही थीं कि भारत अभी दुनिया में निवेश की सबसे बेहतरीन जगह है। इससे लाखों लोगों ने देखा। लेकिन कमेंट्स में बस छह शब्दों वाला सबसे तीखा जवाब था– 'नाई से कभी मत पूछो कि बाल कटवाने चाहिए या नहीं।'

धीरेंद्र कुमार, संपादक, हिंदी डाट वैल्यूरिसर्चआनलाइन डाट काम

**बोनस**

**वो एक** ऐसा फंड चलाती हैं जो सिर्फ भारतीय शेयरों में निवेश करता है। जाहिर है, उनका मानना है कि भारत निवेश के लिए सबसे अच्छी जगह है। उनकी रोजी–रोटी इसी पर निर्भर है। यह कोई नैतिक कमजोरी नहीं है। बस यही है कि इंसेंटिव कैसे काम करते हैं। लेकिन पुणे में बैठा वो दर्शक, जो फोन पर वो क्लिप देख रहा है, उसके पास यह जानने का कोई तरीका नहीं है कि यह जोशीली दलील असल में, बनावट में, एक 'बेचने का तरीका' भी है।

उसी समिट में एक और दिलचस्प पल आया। मार्केट के एक अनुभवी विशेषज्ञ ने सीधे कह दिया कि हाल के दिनों में घरेलू खुदरा निवेशकों के पैसे में जो तेज उछाल आया है, उसकी एक बड़ी वजह उन विदेशी संस्थागत निवेशकों को बाहर निकलने का रास्ता देना था, जो भारत से पैसा निकालना चाहते थे।

इसे जरा अलग तरह से समझें। जब 2022 और 2023 में विदेशी संस्थागत निवेशक (एफआइआइ) रिकार्ड स्तर पर भारतीय शेयर बेच रहे थे, तो कोई न कोई खरीद भी रहा था। वो खरीदार था भारतीय रिटेल निवेशक जिसे एसआइपी के जरिये चैनल किया गया, जिसे बताया गया कि बाजार हमेशा धैर्य का इनाम देता है और उनका पैसा उन प्रोडक्ट्स में लगाया गया जिनका तत्काल काम यह सप्लाई सोखना था। यह टाइमिंग नजरअंदाज करने वाली नहीं है। जिस दौर में एफआइआइ का पैसा सबसे तेजी से बाहर जा रहा था, ठीक उसी दौर में घरेलू एसआइपी योगदान सालाना 1.5 लाख करोड़ रुपये को पार कर गया। भारतीय बचत के 'फाइनेंशियलाइजेशन' का उत्सव उस इंडस्ट्री ने मनाया है जिसे इससे फायदा होता है। क्या यह बचत करने वालों के लिए भी उतना ही अच्छा रहा, यह सवाल इन समिट में शायद ही कभी उठता है।

नए निवेशक के पास यह सब देखने का कोई भरोसेमंद तरीका नहीं है। टीवी एक्सपर्ट हो, कान्फ्रेंस पैनलिस्ट हो, प्रसारित क्लिप हो या वाट्सएप फारवर्ड, किसी पर भी यह लेबल नहीं लगा होता कि यह किसके हित में है। तीन सवाल लगभग कभी नहीं पूछे जाते– क्या इस शख्स को यह कहने के लिए पैसे मिलते हैं? अगर मैं इनकी सलाह मानूं तो क्या इनकी कमाई बढ़ेगी? और अगर यह गलत निकले तो इन्हें क्या नुकसान होगा?

तो यहां एक काम का नियम है। जब कोई भरोसे के साथ निवेश की दलील दे, खासकर जोशीली दलील, तो कदम उठाने से पहले पूछें– यह शख्स कौन है और क्या बेच रहा है? जवाब हमेशा सलाह को नकारेगा नहीं। लेकिन जिस तरह से आप उसे सुनते हैं, उसे जरूर बदल देगा। अगर आप ऐसी सलाह चाहते हैं जो किसी और के बिक्री लक्ष्य से न बनी हो, तो सेबी–रजिस्टर्ड निवेश सलाहकार खोजें, जो फीस लेता हो और जो प्रोडक्ट सुझाए, उनसे कुछ कमाता न हो।

बिजनेस से जुड़ी खबरों और अपडेट के लिए स्कैन करें या विजिट करें jagran.com

# फरवरी तक फार्मा निर्यात 28 अरब डालर के पार

- पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि के मुकाबले इस बार पांच प्रतिशत बढ़ा निर्यात
- 2030 तक भारत के फार्मा निर्यात को 65 अरब डालर तक पहुंचाने का लक्ष्य

**हैदराबाद, प्रेट्र :** चालू वित्त वर्ष में अब तक (अप्रैल 2025 से फरवरी 2026) तक भारत का फार्मास्यूटिकल्स निर्यात 28 अरब डालर को पार कर गया है। फार्मास्यूटिकल्स एक्सपोर्ट प्रमोशन काउंसिल आफ इंडिया (फार्मेक्सिल) के महानिदेशक के. राजा भानु ने शनिवार को बताया कि इसमें पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि के मुकाबले पांच प्रतिशत की वृद्धि रही है।

भानु ने बताया कि इस क्षेत्र का वर्तमान मूल्य लगभग 60 अरब डालर है और 2030 तक इसके 130 अरब डालर तक बढ़ने का अनुमान है। उन्होंने कहा कि वैश्विक चुनौतियों के बावजूद फार्मास्यूटिकल निर्यात उन कुछ क्षेत्रों में से एक रहा है जो वृद्धि की गति बनाए रखने में सफल रहे हैं। वित्त वर्ष 2024–25 के दौरान भारत का फार्मा निर्यात 30.47 अरब डालर रहा था और इसमें वार्षिक आधार पर 9.4 प्रतिशत की वृद्धि रही थी। फार्मेक्सिल के चेयरमैन नमित जोशी ने कहा कि बीते वित्त वर्ष का फार्मा निर्यात वित्त वर्ष 2024–25 के समान स्तर पर समाप्त होने की संभावना है।

भानु ने कहा कि फार्मेक्सिल का लक्ष्य 2030 तक निर्यात को 65 अरब डालर तक पहुंचाना है। भारत वैश्विक स्तर पर मात्रा के हिसाब से फार्मास्यूटिकल उत्पादन में तीसरे स्थान पर है और निर्यात 200 से अधिक बाजारों में पहुंच चुका है। भारत के फार्मा निर्यात में अमेरिका की 34 प्रतिशत और यूरोप की 19 प्रतिशत हिस्सेदारी है।

**मार्च के निर्यात पर दिख सकता है बाहरी कारकों का प्रभाव**

**नई दिल्ली, एएनआइ :** वाणिज्य सचिव राजेश अग्रवाल का कहना है कि मार्च के दौरान भारतीय निर्यात ने बाहरी कारकों की चुनौतियों का सामना किया है। लेकिन सरकार इस महीने में आधिकारिक आंकड़े जारी होने पर समग्र प्रभाव के बारे में स्पष्ट डाटा प्राप्त करेगी। वाणिज्य सचिव ने कहा कि 15 अप्रैल को हमारे पास निर्यात के स्पष्ट आंकड़े होंगे। ऐसे में अनुमान लगाने के बजाय हमारे पास वास्तविक आंकड़े होंगे जिन पर चर्चा की जा सकेगी। हालांकि, उन्होंने भरोसा जताया कि अल्पकालिक अनिश्चितताओं के बावजूद भारत की निर्यात वृद्धि की दिशा सकारात्मक बनी हुई है। अप्रैल की शुरुआत में केंद्र ने पश्चिम एशिया में चल रहे संघर्ष से प्रभावित भारतीय निर्यातकों का समर्थन करने के लिए प्रोत्साहन योजना की घोषणा की है। इसका उद्देश्य निर्यात प्रवाह स्थिर करना है।

## पीली मटर के शुल्क–मुक्त आयात की समयसीमा बढ़ाई

**नई दिल्ली, रायटर :** केंद्र सरकार ने पीली मटर के आयात शुल्क की समयसीमा को एक वर्ष के लिए बढ़ा दिया है। वाणिज्य मंत्रालय की ओर से शनिवार को जारी एक अधिसूचना के अनुसार, अब 31 मार्च 2027 तक पीली मटर का शुल्क मुक्त आयात किया जा सकेगा। सरकार ने कहा कि इस तरह के आयात से जुड़े अन्य सभी नियम और शर्तें अपरिवर्तित रहेंगी।

सरकार ने इससे पहले पीली मटर के शुल्क–मुक्त आयात की अनुमति 31 मार्च, 2026 तक दी थी। भारत पीली मटर का दुनिया का सबसे बड़ा आयातक है। मुख्य रूप से कनाडा और रूस से इसका आयात किया जाता है। वहीं, शनिवार को जारी एक आधिकारिक फैक्टशीट के अनुसार, कृषि वर्ष 2024–25 के दौरान भारत का खाद्यान्न उत्पादन 35.77 करोड़ टन रहा है, जो पिछले वर्ष की तुलना में 2.54 करोड़ टन अधिक है।

# वायदा बाजार में रिकार्ड स्तर से 26 % नीचे बना है सोना

**जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली :** भले ही पश्चिम एशिया में चल रहे संघर्ष का पांचवां सप्ताह शुरू होने के साथ भू–राजनीतिक तनाव बढ़ रहा है, लेकिन भारत के वायदा बाजार में सोने की कीमतें अभी भी अपने रिकार्ड उच्च स्तर से लगभग 26.27 प्रतिशत नीचे बनी हुई हैं। सोने की कीमतों ने सप्ताह का समापन सकारात्मक रुख के साथ किया है, लेकिन व्यापक रुझान की बात करें तो कीमती धातुओं पर दबाव बना हुआ है।

वायदा बाजार में सोने की कीमतें अपने अब तक के सबसे उच्च स्तर 2,02,984 रुपये प्रति 10 ग्राम से लगभग 53 हजार रुपये नीचे आ गई हैं। शुक्रवार को मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) पर सोने का भाव 1,49,650 रुपये प्रति 10 ग्राम रहा है। बाजार विशेषज्ञों का कहना है कि मौजूदा भू–राजनीतिक अनिश्चितता ने शुरुआत में सोने को एक 'सुरक्षित निवेश' के तौर पर और अधिक आकर्षक बना दिया था। हालांकि, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के संबोधन के बाद बाजार का रुख बदल गया, क्योंकि उनके भाषण से अमेरिका–ईरान संघर्ष में युद्धविराम की उम्मीदें टूट गईं। एक विश्लेषक ने कहा कि बाजारों का ध्यान अब अमेरिका के कुछ प्रमुख आर्थिक आंकड़ों पर केंद्रित हो गया है।

- व्यापक स्तर पर कीमती धातुओं पर बना हुआ है दबाव
- एमसीएक्स पर 1,49,650 रुपये प्रति 10 ग्राम है सोना

## राष्ट्रीय फलक

# हिमाचल में ट्रैवलर के खाई में गिरने से दिल्ली के चार पर्यटकों की मौत, 18 घायल

जागरण संवाददाता, कुल्लू

हिमाचल प्रदेश में कुल्लू जिले के औट–लुहरी–सैंज राष्ट्रीय राजमार्ग–305 पर सोझा के पास पर्यटकों को ले जा रहा एक टेंपो ट्रैवलर (डीएल 1वीसी–4958) खाई में लुढ़क गया। शनिवार देर शाम हुए हादसे में चार लोगों की मौत हो गई, जबकि 18 घायल हो गए। वाहन में करीब 22 पर्यटक सवार थे, जो जलोड़ी जोत से घूमकर लौट रहे थे। सभी पर्यटक दिल्ली के रहने वाले बताए जा रहे हैं। घटना की सूचना मिलते ही प्रशासन व बंजार थाना प्रभारी मौके पर पहुंचे और घायलों को खाई से बाहर निकाला।

मौसम प्रतिकूल होने व सड़क पर फिसलन के कारण चालक वाहन से नियंत्रण खो बैठा, जिससे ट्रैवलर गहरी खाई में जा गिरा। हादसा इतना भयावह था कि वाहन के परखच्चे उड़ गए। पुलिस अधीक्षक कुल्लू मदन लाल कौशल ने बताया कि हादसे के कारणों की जांच की जाएगी।

**22** लोग सवार थे वाहन में, सड़क पर फिसलन के कारण चालक खो बैठा नियंत्रण

राष्ट्रीय राजमार्ग–305 पर सोझा के पास हादसे में घायल पर्यटक। सौजन्य पाठक

- हादसा इतना भयावह था कि टेंपो ट्रैवलर के परखच्चे उड़ गए, राहत एवं बचाव कार्य देर रात तक जारी रहा

**रेस्क्यू अभियान में आस पास के लोगों ने मदद की**

सभी घायलों को बंजार अस्पताल पहुंचाया गया है। सभी का उपचार चल रहा है। बंजार के एसडीएम पंकज शर्मा ने बताया कि राहत एवं बचाव कार्य देर रात तक जारी रहा। घायलों को प्राथमिक उपचार देने के बाद उनकी हालत के अनुसार आगे रेफर किया जा रहा है। इस रेस्क्यू अभियान में आस पास के लोगों ने भी मदद की।

## मदरसे में बालक को पीटने वाले दो आरोपित शिक्षक गिरफ्तार

**जासं, सहारनपुर :** मदरसे में बालक को पीटने का मामला सामने आया है, जिसका वीडियो इंटरनेट मीडिया पर भी प्रसारित हो रहा है। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर दो आरोपित शिक्षकों को गिरफ्तार कर लिया है।

एक मदरसे का शुक्रवार को वीडियो इंटरनेट मीडिया पर प्रसारित हुआ। वीडियो में एक आरोपित ने बालक को पकड़ रखा है और दूसरा निर्दयता से उसकी पिटाई कर रहा है। मामले में कारी साजिद हसन ने आरोपितों के विरुद्ध कोतवाली में रिपोर्ट दर्ज कराई है, जिसमें कहा गया है कि उनके गांव के रास्ते पर मदरसा दारूल उलूम जकरिया है। मदरसे में आसपास के बच्चे पढ़ते हैं। साजिद ने इसी मदरसे का एक वीडियो पर देखा। वीडियो में मदरसे का शिक्षक जुनैद मदरसे में पढ़ने वाले एक बच्चे को पीटता हुआ दिखाई दे रहा है।

# बिहार में पुलिस की आभूषण लुटेरों से आठ घंटे की मुठभेड़, छह गिरफ्तार

जागरण टीम, पटना

- एक अपराधी के पैर में लगी गोली, पिस्तौल, कट्टा एवं कारतूस के साथ चांदी के आभूषण बरामद
- तीन मार्च को दरभंगा से लूटा था 700 ग्राम सोना, 20 से 25 किलोग्राम चांदी और 10 लाख रुपये नकद

बिहार में दरभंगा शहर के प्रेम ज्वेलर्स लूटकांड के आरोपितों के साथ शनिवार को पुलिस की बेगूसराय जिले के मंसूरचक में मुठभेड़ हो गई। मुठभेड़ करीब आठ घंटे तक चली। बिहार एसटीएफ के डीजी कुंदन कृष्णन के अनुसार, मुठभेड़ के बाद छह अपराधियों को गिरफ्तार किया गया है। एक अपराधी के पैर में गोली लगी है, जिसे सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया है। अपराधियों के पास से देसी पिस्टल, देसी कट्टा, पांच कारतूस, चार मोबाइल और चांदी के गहने बरामद किए गए हैं। गिरफ्तार अपराधी एक्सिस बैंक लूटकांड में भी आरोपित रहे हैं।

जानकारी के अनुसार, तीन अप्रैल को दरभंगा ज्वेलर्स से गिरोह ने हथियार के बल पर करीब 700 ग्राम सोना, करीब 20 से 25 किलोग्राम चांदी, करीब 10 लाख रुपये नकद तथा आठ मोबाइल की लूट की थी। शनिवार सुबह करीब 10 बजे सृष्टि फास्ट फूड दुकान पर कुछ युवक नाश्ता कर रहे थे। इसी दौरान एसटीएफ के जवान आम लोगों की तरह वहां पहुंचे और चाय पीने के बहाने रेकी की। अपराधियों की जानकारी कंफर्म होते ही लोकेशन के आधार पर दरभंगा नगर थाना पुलिस और एसटीएफ के द्वारा स्थानीय मंसूर चक थाना से समन्वय किया गया। पुलिस टीम नारायणपुर चौक के पास जैसे ही पहुंची, वहां से अपराधी मकई के खेत में भाग गए।

## सुप्रीम कोर्ट ने बरकरार रखी बैंक मैनेजर की बर्खास्तगी

**नई दिल्ली, प्रेट्र :** सुप्रीम कोर्ट ने एक बैंक के सीनियर मैनेजर की बर्खास्तगी को बरकार रखते हुए कहा कि अधिकार बढ़ने के साथ–साथ जिम्मेदारी भी बढ़ जाती है। ऊंचे पद पर बैठा कोई भी दोषी अधिकारी उसी गलत काम के लिए अपने से नीचे के रैंक वाले कर्मचारियों जैसी सजा की मांग नहीं कर सकता।

इसी के साथ जस्टिस दीपांकर दत्ता और जस्टिस सतीश चंद्र शर्मा की पीठ ने दिल्ली हाई कोर्ट के उस आदेश को रद कर दिया, जिसमें उसकी बर्खास्तगी की सजा को अनिवार्य सेवानिवृत्ति में बदल दिया गया था।

शीर्ष अदालत ने उन आरोपों पर गौर किया कि सीनियर मैनेजर ने एक अन्य बैंक अधिकारी और एक गनमैन के साथ मिलकर ग्राहकों के पैसे का निजी लाभ के लिए गबन किया और बैंक रिकार्ड चुरा लिए।

## 'आरएसएस ने देश की राष्ट्रीय चेतना को जगाने में उल्लेखनीय क्षमता दिखाई'

**नई दिल्ली, प्रेट्र :** राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) से जुड़ी साप्ताहिक पत्रिका आर्गनाइजर ने अपने नवीनतम संपादकीय में कहा है कि समाज में खाई पैदा करने के प्रयासों के बावजूद संघ ने भारत की राष्ट्रीय चेतना को जागृत और विस्तारित करने की 'अद्भुत क्षमता' दिखाई है।

संपादकीय के अनुसार, संघ की निर्णय लेने वाली सर्वोच्च इकाई अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा (एबीपीएस) ने पिछले साल बेंगलुरु में हुई बैठक के दौरान 'पंच परिवर्तन' के एजेंडे के साथ समाज के वंचित वर्गों तक पहुंचने के अपने संकल्प को दोहराया। इसमें कहा गया कि इस वर्ष हरियाणा के पानीपत जिले के समालखा में आयोजित एबीपीएस की बैठक संघ के शताब्दी वर्ष समारोह के लिए निर्धारित लक्ष्यों की समीक्षा का अवसर था। 'पंच परिवर्तन' का उद्देश्य भारतीय मूल्यों के साथ ही 'स्व' (आत्मबोध) की भावना को विकसित करना, उचित पारिवारिक मूल्यों को आत्मसात करना शामिल है।

# रेलवे में संरक्षा व सुरक्षा से खिलवाड़, अफसर करा रहे ट्रैकमैनों से बेगार

प्रेम नारायण द्विवेदी • जागरण

- आफिस ड्यूटी या स्पेशल ड्यूटी दिखाकर संरक्षा से जुड़े कर्मियों से लिया जाता है अलग काम
- सीपी ग्राम पोर्टल पर प्रधानमंत्री को संबोधित गोपनीय पत्र का रेलवे बोर्ड ने लिया संज्ञान

**गोरखपुर :** रेलवे में संरक्षा और सुरक्षा व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े हो गए हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को भेजी गई शिकायत में दावा किया गया है कि ट्रैकमेंटेनर (ट्रैकमैन) व पेट्रोलिंग जैसे संरक्षा से जुड़े रेलवे कर्मचारियों को उनके मूल दायित्वों से हटाकर घरेलू कार्य, वाहन संचालन और अन्य निजी कामों में लगाया जा रहा है। फील्ड में कार्यरत कर्मचारियों पर अतिरिक्त बोझ पड़ रहा है। ट्रैक निरीक्षण, सिग्नलिंग और अन्य संरक्षा व सुरक्षा से जुड़े कार्य प्रभावित होने से यात्रियों की जान भी जोखिम में पड़ रही है। यह सब अधिकारियों के दबाव में हो रहा है।

केंद्रीकृत लोक शिकायत निवारण और निगरानी प्रणाली (सीपीजीआरएएमएस) पोर्टल पर प्रधानमंत्री को संबोधित शिकायती पत्र पर रेलवे बोर्ड ने संज्ञान लिया है। रेलवे बोर्ड के कार्यकारी निदेशक/संरक्षा (सिविल) राहुल श्रीवास्तव ने भारतीय रेलवे के सभी जोनल महाप्रबंधकों को शिकायती पत्र की प्रति भेजते हुए इस संबंध में अपने स्तर पर जांच कराने तथा कृत कार्रवाई से अवगत कराने को कहा है। बोर्ड निदेशक का कहना है कि रेल हादसों और सामने आ रही लापरवाहियों के बीच आई इस शिकायत ने रेलवे तंत्र की कार्यप्रणाली पर बड़ा सवाल खड़ा कर दिया है। शिकायत मिली है कि छोटे हादसों जैसे ट्रैक फेलियर, सिग्नल गड़बड़ी और पेट्रोलिंग स्टाफ की मौत को अक्सर दबा दिया जाता है। केवल बड़े हादसे ही सामने आते हैं, जिससे असल स्थिति छिपी रहती है। गंभीर बात यह है कि रिकार्ड में हेरफेर कर कर्मचारियों को 'आफिस ड्यूटी' या 'स्पेशल ड्यूटी' में दिखा दिया जाता है, जबकि वास्तव में उनसे अलग काम कराया जाता है।

## साप्ताहिक राशिफल

रविवार, 5 अप्रैल, 2026 से शनिवार 11 अप्रैल, 2026 तक

पं. बी. बी. शास्त्री 'देवेश'

**मेष (चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, आ)**
एकाएक कार्य में सफलता, धनागम में प्रगति, निजी संबंधों में सुधार, पारिवारिकजन का सहयोग, विदेश कार्य में अवरोध, साधनों की पूर्ति, शिक्षा में अवरोध, चयन में देरी, मित्रों से लाभ, सिर, पैर दर्द का योग, प्रणय में मधुरता, राज्यपक्ष से सावधान, व्यय अधिक, शुभ अंक 1

**वृष (इ, ऊ, ए, ओ, पा, वी, वू, वे, वो)**
अर्थ साधन में प्रयास, पूंजी निवेश में सावधानी, प्रयास से सफलता, रचनात्मक कार्य का योग, भवन साजसज्जा का योग, सन्तान से सहयोग, अध्ययन में रुचि, क्रोध पर नियन्त्रण, वाणी पर संयम, ससुराल से सहयोग, वाहन में सावधानी, व्यय अधिक, शुभ अंक 2

**मिथुन (का, की, कू, घ, ड, छ, के, को, हा)**
कार्य क्षेत्र मे श्रम से सफलता, धनागम में अवरोध, स्वास्थ्य के प्रति सजगता, परिस्थिति के अनुरुप निर्णय करें, भूमि, भवन कार्य में अवरोध, शिक्षा में प्रयास, शत्रुपक्ष प्रभावी, खानपान पर नियन्त्रण, दाम्पत्य में सुख, नौकरी में प्रगति, अधिकारी से सहयोग, शुभ अंक 4

**कर्क (ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो)**
धन के आवागमन में सावधानी, प्रतिस्पर्धा से चिन्ता, महिला से सहयोग, विदेश कार्य में अवरोध, लक्ष्य के प्रति सजगता, अध्ययन में रुचि, अतिकल्पना विश्वास से बचें, मित्रों से सावधान, वाद में विजय, जीवन साथी का मिलन, अनुबन्ध की प्राप्ति, स्थान पद परिवर्तन योग, शुभ अंक 5

**सिंह (मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे)**
धनागम में सफलता, कार्य क्षेत्र में प्रयास से सफलता, साहस तथा धैर्य रखे, निजी संबंधों में कटुता, स्व :सम्पत्ति की वृद्धि, संतान से अनबन, रक्त विकार, त्वचा विकार योग, ससुराल से सहयोग, धर्म में रुचि, आय में सुधार, शुभ अंक 6

**कन्या (टो, पा, पी, पू, ष, ण, उ, पे, पो)**
अर्थ साधन में प्रगति, कार्य क्षेत्र में ध्यान दें, नकरात्मक कार्य करने वालों से सावधान, लक्ष्य के प्रति सजगता, बुद्धि एवं अनुभव से कार्य में प्रगति, चयन में देरी, शिक्षा में एकाग्रता, त्वचा, वायु विकार प्रभावी, दांपत्य में सुख, धर्म में रुचि, व्यय अधिक, शुभ अंक 7

**तुला (रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते)**
आत्मविश्वास से सफलता, नवीन विधि और विचारों का सहयोग, कार्य क्षेत्र में विस्तार से बचें, विदेश कार्य में अवरोध, अध्ययन में रुचि, परीक्षा में सफलता, शत्रुपक्ष परास्त, वाद में विजय, जीवनसाथी का मिलन, रक्षा साधन कार्य में प्रगति, पद स्थान परिवर्तन, आय में सुधार, शुभ अंक 8

**वृश्चिक (तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू)**
धनागम में प्रयास, व्यवसाय में सफलता, स्व :कौशल से सफलता, अतिकल्पना से बचें, निजी संबंधों में सुधार, चिन्ता का समाधान, स्व :सम्पत्ति की वृद्धि, शिक्षा में रुचि, ईर्ष्या, क्रोध से बचें, प्रणय में अनबन, यात्रा में सावधानी, साधनों की पूर्ति, व्यय अधिक, शुभ अंक 9

**धनु (ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढा, भे)**
अर्थ साधन में सफलता, साझेदारी में सावधानी, कार्य क्षेत्र में विस्तार से बचें, नये विचारों का समावेश करें, माता–पिता का ध्यान रखें, भूमि, भवन कार्य में अवरोध, सन्तान के लिये योजना, परीक्षा में सफलता, मित्रों से सहयोग, दाम्पत्य में सुख, धर्म में रुचि, शुभ अंक 2

**मकर (भो, जा, ज, खी, खू, खे, खो, गा, गी)**
अधिक विचारों से मन अशान्त, कार्य क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा, सामाजिक कार्य में यश, अतिविश्वास से बचे, निजी मतभेद, वाहन, आभूषण योग, भूमि कार्य में अवरोध, वायु, रक्त विकार प्रभावी, अनुबंध की प्राप्ति, स्थान परिवर्तन, व्यय अधिक, शुभ अंक 4

**कुम्भ (गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सा, दा)**
कार्य में सलाह से लाभ, अनुभव एवं युक्ति से सफलता, धन के आवागमन में सावधानी, आत्मविश्वास की वृद्धि, शिक्षा में उन्नति, एकाएक सफलता, पारिवारिक जीवन में शांति, मित्रों से लाभ, वाद में विजय, विशेष व्यक्ति से सहयोग, आय में सुधार, शुभ अंक 5

**मीन (दी, दू, थ, झ, दे, दो, चा, ची)**
अर्थ साधन में सुधार, व्यापारिक कार्य में विस्तार से बचें, आपसी संबंधों में सुधार, प्रयास अनुभव से सफलता, सामाजिक कार्य में यश, साधनों में प्रयास, व्यर्थ के कार्य से बचे, संतान की चिंता, दाम्पत्य में सुख, धर्म में रुचि, एकाएक स्थान परिवर्तन, शुभ अंक 6

चिंतन

# अंतर्विरोधों को दूर करे आम आदमी पार्टी

अरविंद केजरीवाल के नेतृत्व में उभरी आम आदमी पार्टी (आप) ने भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन से जन्म लेकर जनता के बीच विश्वास का मजबूत आधार बनाया, लेकिन हाल के घटनाक्रम, विशेषकर राघव चड्ढा को राज्यसभा के उपनेता पद से हटाए जाने के बाद, यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि क्या पार्टी के भीतर सब कुछ ठीक चल रहा है। पहले स्वाति मालिवाल, योगेंद्र यादव, कुमार विश्वास और प्रशांत भूषण सरीखे नेताओं के बाद अब राघव पर कार्रवाई इस बात का संकेत है कि पार्टी में अंदरूनी कलह चल रही है। किसी भी राजनीतिक दल की मजबूती उसकी आंतरिक एकजुटता और अनुशासन पर निर्भर करती है। आप ने हमेशा खुद को अन्य दलों से अलग, अधिक पारदर्शी और लोकतांत्रिक संगठन के रूप में प्रस्तुत किया, लेकिन राघव चड्ढा प्रकरण ने इस छवि को कहीं न कहीं धक्का पहुंचाया है। यदि पार्टी के वरिष्ठ नेता ही पार्टी लाइन से अलग चलते दिखें या उनके खिलाफ कठोर कार्रवाई की जाए, तो यह संकेत देता है कि अंदरूनी स्तर पर मतभेद गहरे हो चुके हैं। राघव चड्ढा कभी आप के उभरते सितारे माने जाते थे। विशेषकर पंजाब विधानसभा चुनाव में उन्हें जीत का हीरो माना गया था, लेकिन अब वही नेता पार्टी नेतृत्व के निशाने पर हैं। यह बदलाव केवल व्यक्तिगत मतभेद का परिणाम नहीं लगता, बल्कि यह संगठनात्मक असंतुलन की ओर इशारा करता है। राघव का यह कहना कि उन्हें खामोश कराया गया है, पार्टी के भीतर अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को लेकर भी सवाल खड़े करता है। लोकतंत्र में असहमति को स्थान देना किसी भी संगठन की मजबूती का संकेत होता है, न कि कमजोरी का। यदि पार्टी के भीतर ही असहमति को दबाने का प्रयास होगा तो यह धीरे-धीरे संगठन को कमजोर कर सकता है। दूसरी ओर, पार्टी के प्रवक्ताओं और नेताओं द्वारा राघव चड्ढा पर लगाए गए आरोप भी कम गंभीर नहीं हैं। उनका कहना है कि जब पार्टी को राघव की सबसे ज्यादा जरूरत थी, उस समय वे पार्टी लाइन से अलग दिखे और अपने हितों को ऊपर रखा। यदि यह सही है कि उन्होंने महत्वपूर्ण मौकों पर पार्टी का साथ नहीं दिया या पार्टी के प्रस्तावों से दूरी बनाई, तो यह अनुशासनहीनता का मामला बनता है। लेकिन सवाल यह है कि क्या इन मतभेदों को बातचीत और समन्वय के जरिए सुलझाने की कोशिश की गई? आप का उदय अण्णा हजारे के आंदोलन से हुआ था, जो पारदर्शिता, जवाबदेही और जनभागीदारी की बात करते थे। ऐसे में पार्टी के भीतर उभरते अंतर्विरोध उन मूल सिद्धांतों के विपरीत प्रतीत होते हैं। यदि यह स्थिति लंबे समय तक बनी रहती है, तो इसका असर न केवल पार्टी की छवि पर पड़ेगा, बल्कि उसके जनाधार पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। आज आवश्यकता इस बात की है कि आप नेतृत्व आत्ममंथन करे। व्यक्तिगत आरोप-प्रत्यारोप से ऊपर उठकर संगठन के हित को प्राथमिकता दे। पार्टी को चाहिए कि वह अपने नेताओं के बीच संवाद स्थापित करे, मतभेदों को खुले मंच पर सुलझाए और एक स्पष्ट दिशा तय करे। इससे न केवल आंतरिक एकजुटता मजबूत होगी, बल्कि जनता के बीच भी सकारात्मक संदेश जाएगा। अंततः, राजनीति में केवल बाहरी चुनौतियां ही नहीं, बल्कि आंतरिक संतुलन भी उतना ही महत्वपूर्ण होता है। यदि आम आदमी पार्टी अपने अंतर्विरोधों को समय रहते दूर कर लेती है, तो वह एक बार फिर अपनी साख को मजबूत कर सकती है। अन्यथा, ये मतभेद धीरे-धीरे उसकी राजनीतिक ताकत को कमजोर कर सकते हैं।

# सुरक्षा, विकास और विश्वास की त्रिवेणी से बदलता बस्तर

विचार
केदार कश्यप

इस ऐतिहासिक परिवर्तन के पीछे केंद्र में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व और राज्य में मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय की संवेदनशील और जमीनी नीतियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। विशेष रूप से साय का आदिवासी समाज से जुड़ाव इस पूरे परिवर्तन में एक मजबूत कड़ी बना है, जिससे शासन और जनता के बीच विश्वास का सेतु मजबूत हुआ है। बस्तर में बुनियादी ढांचे के क्षेत्र में अभूतपूर्व सुधार देखने को मिले हैं। जहां कभी सड़कें नहीं थीं, वहां अब संपर्क मार्गों का जाल बिछ चुका है। इन सड़कों ने गांवों को शहरों से जोड़ा, बाजारों तक पहुंच आसान बनाई और प्रशासनिक सेवाओं को सुदूर इलाकों तक पहुंचाया। इससे न केवल जीवन स्तर सुधरा, बल्कि आर्थिक गतिविधियों को भी गति मिली।

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह द्वारा 30 मार्च को लोकसभा में नक्सलवाद के लगभग समाप्त होने की घोषणा केवल एक प्रशासनिक उपलब्धि नहीं, बल्कि एक आत्मविश्वासी और निर्णायक भारत की तस्वीर प्रस्तुत करती है। यह वह क्षण है, जब दशकों से संघर्ष और असुरक्षा के साए में जी रहे क्षेत्रों में स्थायी शांति और विकास की नई उम्मीद जगी है। बस्तर , जो कभी नक्सल गतिविधियों का गढ़ माना जाता था, आज परिवर्तन, विश्वास और प्रगति की एक सशक्त मिसाल बनकर उभर रहा है। यह बदलाव केवल बंदूक की आवाज़ थमने का संकेत नहीं है, बल्कि यह सामाजिक, आर्थिक और मानसिक स्तर पर आए व्यापक परिवर्तन का प्रतीक है। वर्षों तक उपेक्षा, गरीबी और संसाधनों की कमी ने जिस क्षेत्र को पीछे रखा, आज वही क्षेत्र योजनाबद्ध प्रयासों से आगे बढ़ रहा है।

इस ऐतिहासिक परिवर्तन के पीछे केंद्र में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व और राज्य में मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय की संवेदनशील और जमीनी नीतियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। विशेष रूप से साय का आदिवासी समाज से जुड़ाव इस पूरे परिवर्तन में एक मजबूत कड़ी बना है, जिससे शासन और जनता के बीच विश्वास का सेतु मजबूत हुआ है। बस्तर में बुनियादी ढांचे के क्षेत्र में अभूतपूर्व सुधार देखने को मिले हैं। जहां कभी सड़कें नहीं थीं, वहां अब संपर्क मार्गों का जाल बिछ चुका है। इन सड़कों ने गांवों को शहरों से जोड़ा, बाजारों तक पहुंच आसान बनाई और प्रशासनिक सेवाओं को सुदूर इलाकों तक पहुंचाया। इससे न केवल जीवन स्तर सुधरा, बल्कि आर्थिक गतिविधियों को भी गति मिली।

बिजली और डिजिटल कनेक्टिविटी के विस्तार ने बस्तर के जीवन को नई दिशा दी है। सोलर ऊर्जा और ग्रामीण विद्युतीकरण योजनाओं ने अंधेरे गांवों को रोशनी दी, वहीं मोबाइल नेटवर्क और इंटरनेट ने शिक्षा, स्वास्थ्य और सरकारी सेवाओं को लोगों के दरवाजे तक पहुंचाया। डिजिटल सेवाओं के बढ़ने से पारदर्शिता आई और लोगों की भागीदारी भी बढ़ी। शिक्षा के क्षेत्र में हुए सुधार बस्तर के भविष्य की नींव मजबूत कर रहे हैं। एकलव्य मॉडल रेजिडेंशियल स्कूल, आश्रम शालाएं और पोटा केबिन स्कूलों ने बच्चों को सुरक्षित और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का वातावरण दिया है। इससे नई पीढ़ी को हिंसा के रास्ते से दूर रखते हुए उन्हें बेहतर भविष्य की ओर अग्रसर किया जा रहा है।

स्वास्थ्य सेवाओं में भी उल्लेखनीय प्रगति हुई है। दूरस्थ क्षेत्रों में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, मोबाइल मेडिकल यूनिट्स और टेलीमेडिसिन सुविधाओं ने लोगों को बेहतर इलाज उपलब्ध कराया है। मातृ एवं

*यह केवल नक्सलवाद के अंत की कहानी नहीं, बल्कि एक नए युग की शुरुआत है- जहां बस्तर शांति, आत्मनिर्भरता, सम्मान और समृद्धि के साथ भारत के विकास में अपनी नई पहचान बना रहा है।*

शिशु स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान, टीकाकरण अभियान और पोषण योजनाओं ने जीवन स्तर को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आर्थिक क्षेत्र में आया परिवर्तन इस पूरे बदलाव का सबसे मजबूत आधार बनकर उभरा है। मनरेगा जैसी योजनाओं ने ग्रामीणों को स्थानीय स्तर पर रोजगार उपलब्ध कराया, जिससे उनकी आय में स्थिरता आई और पलायन में कमी आई। इससे गांवों की अर्थव्यवस्था मजबूत हुई और लोगों का जीवन स्तर सुधरा है। बस्तर की वन संपदा को आर्थिक शक्ति में बदलने की दिशा में भी महत्वपूर्ण कार्य हुए हैं। तेंदूपत्ता, महुआ, साल बीज और अन्य लघु वनोपज के संग्रह और समर्थन मूल्य पर खरीदी ने आदिवासियों को उनकी मेहनत का उचित मूल्य दिलाया है। इससे उनकी आय में वृद्धि हुई और बिचौलियों पर निर्भरता कम हुई। महिला स्वयं सहायता समूहों ने बस्तर में आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन की नई कहानी लिखी है। छोटे-छोटे व्यवसायों—जैसे खाद्य प्रसंस्करण, हस्तशिल्प, बकरी पालन और मशरूम उत्पादन—ने महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाया है। इससे न केवल परिवारों की आर्थिक स्थिति मजबूत हुई है, बल्कि महिलाओं का सामाजिक सम्मान और आत्मविश्वास भी बढ़ा है। युवाओं के लिए कौशल विकास और स्वरोजगार के अवसरों ने नई संभावनाओं के द्वार खोले हैं। तकनीकी प्रशिक्षण और रोजगारोन्मुखी कार्यक्रमों के माध्यम से युवा अब नई दिशाओं में आगे बढ़ रहे हैं। इससे उनकी आय बढ़ी है और वे समाज के विकास में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं।

इन सभी आर्थिक और सामाजिक सुधारों का सीधा प्रभाव नक्सलवाद पर पड़ा है। जब लोगों को रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य और सम्मानजनक जीवन के अवसर मिलते हैं, तो वे हिंसा और भटकाव के रास्ते से दूर रहते हैं। यही कारण है कि सरकारी योजनाएं नक्सलवाद की जड़ों को कमजोर करने में अत्यंत प्रभावी साबित हुई हैं।

'सिविक एक्शन प्रोग्राम' जैसे प्रयासों ने सुरक्षा बलों और जनता के बीच विश्वास को मजबूत किया है। गांवों में आयोजित चिकित्सा शिविर, खेलकूद और जागरूकता कार्यक्रमों ने यह संदेश दिया है कि सरकार और सुरक्षा बल जनता के सहयोगी हैं, न कि केवल व्यवस्था लागू करने वाले, सरेंडर करने वाले पूर्व नक्सलियों के पुनर्वास की दिशा में भी सकारात्मक कदम उठाए गए हैं। उन्हें शिक्षा, रोजगार और आर्थिक सहायता प्रदान कर मुख्यधारा में शामिल किया जा रहा है, जिससे वे एक सम्मानजनक जीवन जी सकें और समाज के निर्माण में योगदान दे सकें। बस्तर का यह परिवर्तन केवल एक क्षेत्र की कहानी नहीं, बल्कि पूरे देश के लिए एक प्रेरणादायक मॉडल है। यह साबित करता है कि जब सुरक्षा, विकास, विश्वास और आर्थिक सशक्तिकरण को एक साथ आगे बढ़ाया जाता है, तो सबसे जटिल समस्याओं का भी स्थायी समाधान संभव है। आगे की राह में यह आवश्यक है कि विकास के इस मॉडल को और मजबूत किया जाए, जिसमें पर्यावरण संरक्षण और आदिवासी संस्कृति का सम्मान भी शामिल हो। बस्तर के जंगल, परंपराएं और जीवनशैली उसकी पहचान हैं, जिन्हें सुरक्षित रखते हुए ही समृद्धि का मार्ग तय करना होगा।

मंत्री, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग, छत्तीसगढ़ शासन

ईरान-इजराइल तनाव
मुकेश प्रजापति

# यूएन की प्रासंगिकता, सीमाएं और पुनर्संरचना की जरूरत

पश्चिम एशिया में ईरान और इजराइल के बीच गहराता तनाव समकालीन वैश्विक राजनीति के सबसे जटिल और संवेदनशील प्रश्नों में से एक बन चुका है। यह संघर्ष केवल द्विपक्षीय विरोधाभास तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें वैचारिक टकराव, क्षेत्रीय शक्ति-संतुलन, गैर-राज्य कारकों की सक्रियता और महाशक्तियों की रणनीतिक प्रतिस्पर्धा भी अंतर्निहित है। विशेष रूप से इस संघर्ष में इजराइल को अमेरिका का स्पष्ट और संरचनात्मक समर्थन प्राप्त है, जो इसे एक क्षेत्रीय विवाद से आगे बढ़ाकर वैश्विक भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा का हिस्सा बना देता है। ऐसे बहुस्तरीय संकट में संयुक्त राष्ट्र संघ (यूएन) की भूमिका, उसकी प्रासंगिकता और संस्थागत सीमाओं का आलोचनात्मक विश्लेषण अनिवार्य हो जाता है। संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना 1945 में उदार अंतरराष्ट्रीयतावाद की उस धारणा पर आधारित थी, जिसमें यह विश्वास निहित था कि बहुपक्षीय संस्थाएं, नियम-आधारित व्यवस्था और सामूहिक सुरक्षा तंत्र विश्व शांति को सुनिश्चित कर सकते हैं। 21वीं सदी के जटिल भू-राजनीतिक यथार्थ में यह आदर्श बार-बार यथार्थवादी शक्तियों की राजनीति से टकराता दिखाई देता है। ईरान-इजराइल संबंधों में अंतर्निहित शत्रुता वैचारिक, सामरिक और राजनीतिक स्तरों पर निर्मित हुई है। इजराइल जहां पश्चिमी खेमे का महत्वपूर्ण सहयोगी है, वहीं ईरान स्वयं को क्षेत्रीय प्रतिरोध की धुरी के रूप में प्रस्तुत करता है और इजराइल के अस्तित्व को चुनौती देता है। ईरान का परमाणु कार्यक्रम, इजराइल की सुरक्षा चिंताओं और क्षेत्रीय प्रभुत्व की आकांक्षाओं के साथ मिलकर एक स्थायी तनाव का आधार तैयार करता है। अमेरिका द्वारा इजराइल को प्रदान किया जाने वाला सैन्य, कूटनीतिक और आर्थिक संरक्षण इस समीकरण को और अधिक असंतुलित बनाता है, जिससे यह संघर्ष व्यापक शक्ति-राजनीति का प्रतिबिंब बन जाता है। संयुक्त राष्ट्र की भूमिका को यदि संस्थागत दृष्टि से देखा जाए, तो इसके पास शांति स्थापना, प्रतिबंध, मध्यस्थता और मानवीय हस्तक्षेप जैसे अनेक उपकरण उपलब्ध हैं। संयुक्त राष्ट्र की सबसे बड़ी संरचनात्मक बाधा उसकी सुरक्षा परिषद की संरचना है, विशेषकर स्थायी सदस्यों को प्राप्त वीटो शक्ति। यह व्यवस्था द्वितीय विश्व युद्ध के बाद की शक्ति-संतुलन की उपज है, जो वर्तमान बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में असंगत प्रतीत होती है। इजराइल से जुड़े मामलों में अमेरिका का निरंतर समर्थन और वीटो का संभावित प्रयोग संयुक्त राष्ट्र की निष्पक्षता और प्रभावशीलता पर प्रश्नचिह्न लगाता है। वहीं रूस और चीन का दृष्टिकोण कई बार संतुलन स्थापित करने के बजाय शक्ति-राजनीति का ही विस्तार प्रतीत होता है। संयुक्त राष्ट्र की सीमाओं को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में समझना भी आवश्यक है। वर्ष 2003 में इराक पर अमेरिकी नेतृत्व में हुआ आक्रमण संयुक्त राष्ट्र की स्वीकृति के बिना संपन्न हुआ, जिसने सामूहिक सुरक्षा की अवधारणा को गंभीर रूप से कमजोर किया। इसी प्रकार, अफगानिस्तान में अमेरिका के दीर्घकालिक सैन्य हस्तक्षेप के दौरान संयुक्त राष्ट्र की भूमिका अपेक्षाकृत गौण रही, जो इसकी संस्थागत निर्बलता को रेखांकित करता है। ये उदाहरण दर्शाते हैं कि जब महाशक्तियों के रणनीतिक हित दांव पर होते हैं, तब अंतरराष्ट्रीय संस्थाएं अक्सर निष्क्रिय या अप्रभावी हो जाती हैं। इसके विपरीत, संयुक्त राष्ट्र ने 'लो-पॉलिटिक्स' के क्षेत्रों विशेषकर मानवीय सहायता और वैश्विक स्वास्थ्य में उल्लेखनीय सफलता अर्जित की है। इस प्रकार, संयुक्त राष्ट्र की प्रासंगिकता को एक द्वंद्वात्मक परिप्रेक्ष्य में समझा जाना चाहिए, जहां एक ओर यह वैश्विक संवाद, वैधता और सहयोग का मंच प्रदान करता है, वहीं दूसरी ओर इसकी संरचनात्मक सीमाएं इसे निर्णायक हस्तक्षेप से रोकती हैं। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में संयुक्त राष्ट्र के पुनर्संरचना की आवश्यकता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। सुरक्षा परिषद का विस्तार, वीटो शक्ति के प्रयोग पर पुनर्विचार तथा विकासशील देशों की अधिक भागीदारी सुनिश्चित करना, ये सभी कदम इसे अधिक प्रतिनिधिक और प्रभावी बना सकते हैं। भारत जैसे उभरते राष्ट्र लंबे समय से इस दिशा में सुधार की मांग करते रहे हैं। अंततः संयुक्त राष्ट्र संघ न तो पूर्णतः अप्रासंगिक हुआ है और न ही सर्वशक्तिमान है। यह एक ऐसी संस्था है, जिसकी प्रभावशीलता वैश्विक शक्ति-संतुलन और सदस्य देशों की राजनीतिक इच्छाशक्ति पर निर्भर करती है। ईरान-इजराइल संघर्ष के संदर्भ में यह स्पष्ट है कि संयुक्त राष्ट्र की भूमिका सीमित होते हुए भी अनिवार्य बनी हुई है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि इसे समकालीन वैश्विक यथार्थ के अनुरूप पुनर्गठित किया जाए, ताकि यह वास्तव में "विश्व शांति" के अपने मूल उद्देश्य को साकार कर सके।

(लेखक प्राध्यापक हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

## हमारा वास्तविक स्वभाव क्या है?

संकलित
दर्शन

जीवन क्या है? इसका उद्देश्य क्या है? ये प्रश्न जितने सरल लगते हैं, उतने ही रहस्यमय भी हैं। इन्हें जितना समझने की कोशिश करते हैं, वे उतने ही उलझते जाते हैं। दरअसल, जानना हृदय का विषय नहीं है, जीना हृदय का विषय है। रहस्य समझने के लिए नहीं, बल्कि जीने के लिए हैं। जीवन के रहस्य को जीना ही आनंद है। ज्ञान प्राप्त होने से पहले लगता है कि हममें अज्ञान नहीं है। लेकिन जैसे-जैसे ज्ञान बढ़ता है, तो लगता है हममें काफी अज्ञान है। एक कहावत है, आत्मज्ञान होने से पहले लकड़ी काटो और पानी भर कर लाओ। आत्मज्ञान के बाद भी, लकड़ी काटो और पानी भर कर लाओ। अंतर इतना है कि पहले हम दुखी रहकर काम करते थे। लेकिन आत्मज्ञान के बाद वही कार्य आनंद से करते हैं। हमारा जीवन कितना उत्तम है, यह हमारे मन की अवस्था पर निर्भर करता है। हम वही सुनना पसंद करते हैं, जिसमें हमारी रुचि होती है। जब हमारा जीवन प्रेम में केंद्रित होता है, तो हम प्रेम के बारे में जानना चाहते हैं। जब जीवन बच्चों के इर्द-गिर्द घूमता है, तो हम बच्चों के बारे में ही सुनना चाहते हैं। जो हमारी इच्छा हो, हमें वही सुनना पसंद है और हमारी इच्छाओं का कभी अंत ही नहीं होता।

## मृत्यु के बाद के साथी

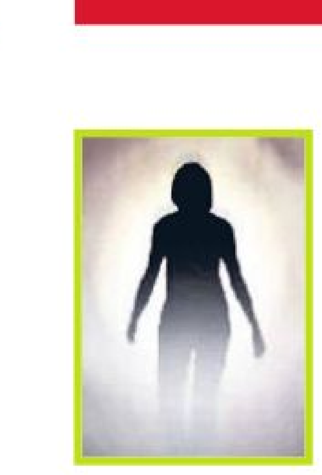

संकलित
प्रेरणा

एक व्यक्ति के तीन घनिष्ठ मित्र थे। उन्होंने जीवन भर उसका साथ निभाया। जब वह मरने की अवस्था के निकट पहुँचा तो अपने मित्रों को पास बुलाकर बोला- अब मेरा अंतिम समय आ गया है। तुम लोगों ने आजीवन मेरा साथ दिया है। मृत्यु के बाद भी क्या तुम लोग मेरा साथ दोगे? पहला मित्र बोला- मैंने जीवन भर तुम्हारा साथ निभाया। लेकिन अब मैं बेबस हूँ। इससे आगे अब मैं तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकता हूँ। दूसरा मित्र बोला- मैं मृत्यु को नहीं रोक सकता। मैंने आजीवन तुम्हारा हर परिस्थिति में साथ दिया है। तुम्हारे जाने के बाद, मैं यह सुनिश्चित करूँगा कि तुम्हारी अंतिम संस्कार की प्रक्रिया यथावत संपन्न हो। तीसरा मित्र बोला- मित्र! तुम तनिक भी चिंता मत करो, मैं मृत्यु के बाद भी तुम्हारा साथ दूँगा, तुम जहाँ भी जाओगे, मैं तुम्हारे साथ रहूँगा। मनुष्य के ये तीन घनिष्ट मित्र हैं- धन, परिवार एवं कर्म। इन तीनों में से मनुष्य के कर्म ही मृत्यु के बाद भी उसका साथ निभाते हैं। धन समय को साथ यहां छूट जाता है। उसे मनुष्य मृत्यु के बाद अपने साथ नहीं ले जा सकता। यही स्थिति परिवार की होती है। मृत्यु के बाद व्यक्ति के साथ उसका परिवार भी नहीं जाता। सिर्फ इस संसार में किए गए अच्छे कर्म ही मृत्यु के उपरान्त उसके साथ जाते हैं।

# भय से विश्वास तकः एक युगांतकारी परिवर्तन

विचार
बृजमोहन अग्रवाल

छह दशकों तक भारत की आंतरिक सुरक्षा, लोकतांत्रिक व्यवस्था और विकास यात्रा को चुनौती देता रहा नक्सलवाद आज अपने निर्णायक अवसान की अवस्था में पहुँच चुका है। यह केवल एक सुरक्षा सफलता नहीं, बल्कि उस राष्ट्रीय संकल्प की विजय है, जिसमें स्पष्ट नीति, अटूट राजनीतिक इच्छाशक्ति और केंद्र-राज्य के अभूतपूर्व समन्वय ने मिलकर एक जटिल और दीर्घकालिक समस्या का समाधान किया है। नक्सलवाद का यह अवसान इस सत्य को पुनः स्थापित करता है कि भारत में बंदूक की शक्ति अंततः लोकतंत्र की सामूहिक शक्ति के आगे टिक नहीं सकती। यह परिवर्तन अचानक नहीं आया-इसके पीछे दशकों का संघर्ष, अनगिनत बलिदान और एक ऐसी रणनीतिक निरंतरता रही है, जिसने अंततः इस चुनौती को निर्णायक रूप से परास्त किया।

इस ऐतिहासिक क्षण पर मैं उन सभी वीर जवानों को श्रद्धापूर्वक नमन करता हूँ-केंद्रीय अर्धसैनिक बलों, कोबरा कमांडो, छत्तीसगढ़ पुलिस और स्थानीय सुरक्षाबलों के उन रणबाँकुरों को-जिन्होंने अपने सर्वोच्च बलिदान से इस संघर्ष को निर्णायक मुकाम तक पहुँचाया। यह विजय उनके अदम्य साहस और राष्ट्र के प्रति अटूट समर्पण की अमिट गाथा है।

**नक्सलबाड़ी से रेड कॉरिडोर तकः एक वैचारिक आंदोलन का हिंसक विस्तार** : भारत में नक्सलवाद का उदय वर्ष 1967 में पश्चिम बंगाल के नक्सलबाड़ी से हुआ, जिसकी वैचारिक जड़ें तत्कालीन सोवियत संघ और चीन की उग्र वामपंथी विचारधारा में थीं। अपनी विकास विरोधी छवि के कारण जब बंगाल में इस विचारधारा के प्रति विरोध पनपने लगा तो अपने विस्तार के लिए नक्सलवाद ने "सॉफ्ट टारगेट्स" की तलाश शुरू की—ऐसे क्षेत्र जहाँ शासन की पहुँच सीमित हो, सामाजिक-आर्थिक चुनौतियाँ अधिक हों और जनजागरूकता कम हो। देश के वनांचल, आदिवासी और खनिज संपदा से समृद्ध क्षेत्र इस दृष्टि से सबसे आसान लक्ष्य थे। नक्सलवाद विस्तार की इसी रणनीति के तहत तथाकथित "रेड कॉरिडोर" विकसित हुआ, जो तिरुपति से पशुपति तक फैले विशाल भूभाग में फैल गया। तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, ओडिशा, झारखंड, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों से घिरा छत्तीसगढ़, जिसका लगभग 42 प्रतिशत क्षेत्र वनाच्छादित है, इस रेड कॉरिडोर का रणनीतिक केंद्र बन गया। पड़ोसी राज्यों से अपनी गतिविधियाँ सीमित रखने का अघोषित समझौता कर नक्सली अबूझमाड़ क्षेत्र में संगठित होते चले गए। अपनी दुर्गम भौगोलिक स्थिति के कारण दशकों तक प्रशासनिक सर्वेक्षण से दूर रहा अबूझमाड़ नक्सलियों का सुरक्षित शेल्टर बन गया।

**विचारधारा से विचलनः माओवाद से मनीवाद तकः** समय के साथ नक्सलवाद ने अपनी मूल वैचारिक पहचान खो दी और एक हिंसक आर्थिक उगाही तंत्र में परिवर्तित हो गया। बस्तर और सरगुजा जैसे वनाच्छादित जनजातीय क्षेत्रों में नक्सलियों ने समानांतर सत्ता संरचना स्थापित कर दी, जहाँ तथाकथित "जन अदालतों" के माध्यम से भय आधारित नियंत्रण कायम किया गया।

छत्तीसगढ़ के खनिज सम्पन्न क्षेत्रों की खदानें, विद्युत परियोजनाएँ, तेंदूपत्ता व्यापार-सभी उनके लिए उगाही के स्रोत बन गए। सरकारी कर्मचारियों, व्यापारियों, ठेकेदारों और यहाँ तक कि पुलिस बलों से भी जबरन वसूली की जाने लगी । यह उगाही धीरे-धीरे इतनी बढ़ी कि छत्तीसगढ़ में इसका वार्षिक आंकड़ा हजारों करोड़ रुपये तक पहुँचने की चर्चा होने लगी। सोवियत संघ के विघटन के बाद रूस में

यह विचारधारा समाप्त हो गई। चीन ने भी माओवाद की सशस्त्र संरचना को छोड़कर आर्थिक सुधारों पर आधारित पूंजीवादी कम्युनिज्म मॉडल को अपना लिया, लेकिन भारत में नक्सलवाद अपने मूल उद्देश्यों से भटककर लेवी वसूली और हिंसा फैलाने का टूल बन गया। नक्सलवाद के झंडाबरदारों ने विचारधारा को त्यागकर इसे अपने आर्थिक हितों की पूर्ति और आतंक फैलाने का साधन बना लिया।

**नक्सलवाद के वैचारिक समर्थन की राजनीतिक पृष्ठभूमिः** दुर्भाग्य से, कांग्रेस-नीत सरकारों के लंबे शासनकाल में नक्सलवाद के प्रति स्पष्ट और कठोर नीति का अभाव रहा क्योंकि उस दौर में केंद्र और कई राज्यों में भी वामपंथी पार्टियां कांग्रेस के सहयोगी की भूमिका में थीं। सत्ता के लिए वामपंथ के साथ कांग्रेस की राजनीतिक निकटता का परिणाम यह हुआ कि नक्सलवाद पर निर्णायक प्रहार करने की बजाय इसे सामाजिक-आर्थिक संघर्ष के रूप में प्रस्तुत कर वैधता प्रदान करने की नीति हावी हो गई।

उस दौर में प्रशासनिक तंत्र के भीतर भी यह वैचारिक भ्रम दिखाई देता था। नक्सलवाद को सामाजिक समता पाने का वर्ग संघर्ष ठहराने के दृष्टिकोण से प्रशिक्षित किए गए आईएएस और आईपीएस अधिकारियों की नीतियाँ भी नक्सलवाद के विरुद्ध कठोर होने के बजाय सहानुभूतिपूर्ण हो गई थीं। इस ढुलमुल नीति का परिणाम यह हुआ कि नक्सलवाद देश के 12 राज्यों के लगभग 180 जिलों में फैल गया और छत्तीसगढ़ के गठन के बाद से ही प्रदेश के समग्र विकास की राह में सबसे बड़ा रोड़ा बन गया।

**जब हुई छत्तीसगढ़ विधानसभा की गोपनीय बैठकः** वर्ष 2003 से 2006 के बीच, जब मुझे मुख्यमंत्री डॉ रमन सिंह जी की सरकार में छत्तीसगढ़ के गृहमंत्री के रूप में कार्य करने का उत्तरदायित्व मिला, तब प्रदेश में पहली बार नक्सलवाद के विरुद्ध एक ठोस, नीतिगत और समन्वित अभियान प्रारंभ किया गया। "ज्वाइंट एफर्ट, ज्वाइंट कमांड और ज्वाइंट पॉलिसी" के सिद्धांत पर केंद्र और राज्य के बीच समन्वय स्थापित करने के प्रयास किए गए। तात्कालीन केंद्रीय गृहमंत्री शिवराज पाटील जी के साथ इस विषय पर मेरी कई गंभीर और विस्तृत मंत्रणाएँ हुई थीं। उस दौर में इस विषय की संवेदनशीलता को देखते हुए देश के इतिहास में पहली बार विधानसभा में गोपनीय बैठकों का आयोजन किया गया, ताकि लोग बिना किसी भय के खुलकर अपनी बात रख सकें। तात्कालीन स्पीकर प्रेम प्रकाश पांडेय जी की अध्यक्षता में आयोजित की जाने वाली इन बैठकों से अधिकारियों और पत्रकार साथियों को भी दूर रखना जरूरी हो गया था। इन मंत्रणाओं के परिणामस्वरूप बनी रणनीति के तहत तात्कालीन डीजीपी ओपी राठौड़ के नेतृत्व में कई अभियान चलाए गए और इसी क्रम में सलवा जुडूम जैसे जनअभियान की शुरुआत हुई।

**सलवा जुडूमः जनभागीदारी का ऐतिहासिक अध्यायः** हमारे समक्ष सबसे बड़ी चुनौती यह थी कि अशिक्षा, अज्ञानता और दुष्प्रचार के कारण स्थानीय समाज का एक बड़ा हिस्सा नक्सलवाद के प्रति सहानुभूति रखता था। इस स्थिति को बदलने के लिए व्यापक जनजागरण अभियान चलाया गया। स्कूलों, महाविद्यालयों और छात्रावासों में पर्चे और साहित्य वितरित किए गए। घर-घर जाकर नक्सलवाद की वास्तविकता को उजागर किया गया। इस अभियान में दिल्ली विश्वविद्यालय और जेएनयू जैसे संस्थानों से जुड़े राष्ट्रवादी विचारकों और छात्रों का भी सहयोग लिया गया। जनजातीय समाज को यह समझाया गया कि नक्सल नेतृत्व में स्थानीय छत्तीसगढ़ी आदिवासियों की भागीदारी शून्य है। जल जंगल जमीन के नारों की आड़ में हमारे भोले-भाले आदिवासियों का उपयोग केवल एक साधन के रूप में किया जा रहा था। यह भी सामने आया कि नक्सलियों के द्वारा आदिवासी युवतियों के साथ अमानवीय व्यवहार किया जाता था, उन्हें शोषण का शिकार बनाया जाता था, उन्हें विवाह तक नहीं करने दिया जाता और सामान्य सामाजिक जीवन जीने तक से वंचित रखा जाता था। इन सभी कड़वी सच्चाइयों के उजागर होने से आई जनजागृति का परिणाम यह हुआ कि नक्सलवाद को मिलने वाला सामाजिक समर्थन कमजोर पड़ने लगा।

जब नेता प्रतिपक्ष महेंद्र कर्मा बने सलवा जुडूम के अगुआ 'सलवा जुडूम' केवल एक सरकारी पहल नहीं थी, बल्कि आदिवासी समाज के भीतर से उठा एक स्वाभाविक जनआंदोलन था, जिसने पहली बार सही मायने में नक्सलवाद को चुनौती दी। तात्कालीन नेता प्रतिपक्ष महेंद्र कर्मा जी ने न केवल इस अभियान को पुरजोर समर्थन दिया बल्कि इसे जमीन पर उतारने में महत्वपूर्ण भूमिका भी निभाई। इस संघर्ष से जुड़े रहने के कारण अंततः उन्हें अपने प्राणों की आहुति तक देनी पड़ी—जो इस आंदोलन की गंभीरता और बलिदान की पराकाष्ठा का साक्षात प्रमाण है। नक्सलवाद ने हमें झीरम जैसे दंश दिए जिसमें प्रदेश के अग्रणी नेता काल कलवित हो गए। सलवा जुडूम जनआंदोलन को अगर व्यापक संस्थागत समर्थन मिला होता, तो निश्चित ही नक्सलवाद का उन्मूलन उसी दौर में हो जाता, पर वैधानिक संस्थानों में काम करने वाले कई लोगों की सलवा जुडूम के खिलाफ लामबंदी, अर्बन नक्सली बुद्धिजीवियों के वैचारिक विरोध और केंद्र सरकार के नीतिगत असमंजस के कारण यह अवसर पूर्ण रूप से साकार नहीं हो सका।

**समन्वित नेतृत्व से निर्णायक परिवर्तन** : वास्तविक परिवर्तन तब आया जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी, केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह जी और मुख्यमंत्री विष्णु देव साय जी के नेतृत्व में नक्सलवाद के विरुद्ध स्पष्ट, कठोर और समन्वित नीति अपनाई गई। नक्सलवाद को महज कानून-व्यवस्था की समस्या न मानकर, राष्ट्र की एकता, विकास और लोकतांत्रिक ढांचे के लिए गंभीर चुनौती मानते हुए नक्सलवाद के उन्मूलन के लिए समयबद्ध रणनीति तैयार की गई।

केंद्र और राज्य सरकारों के सशक्त समन्वय के परिणामस्वरूप दिसंबर 2023 से मार्च 2026 के बीच सुरक्षा बलों ने लगातार सटीक और प्रभावी कार्रवाई करते हुए सैकड़ों कुख्यात नक्सलियों को निष्क्रिय किया, हजारों को आत्मसमर्पण के लिए प्रेरित किया और बड़ी संख्या में गिरफ्तारियाँ सुनिश्चित कीं। लैंड माइंस का व्यापक निष्क्रियकरण हुआ और भारी मात्रा में हथियार बरामद किए गए। केंद्र और राज्य के समन्वित दृष्टिकोण और साझे प्रयासों से छह दशक पुराने नक्सलवाद के नासूर को जड़ से समाप्त करने का मार्ग प्रशस्त हुआ

**बुलेट पर बैलेट की निर्णायक विजयः** नक्सलवाद पर यह विजय केवल एक आंतरिक सुरक्षा अभियान की सफलता नहीं है, बल्कि यह भारत के लोकतांत्रिक आत्मविश्वास की पुनर्स्थापना का प्रतीक है। यह उस निर्णायक परिवर्तन का संकेत है, जहाँ भय की राजनीति को विश्वास की शक्ति ने प्रतिस्थापित किया है और जहाँ बंदूक के साये में जी रहे समाज ने विकास और सहभागिता के मार्ग को अपनाया है। जो लोग बंदूक और गोलियों के दम पर भय के माध्यम से छत्तीसगढ़ में छद्म राज्य की कल्पना करते थे उनका अंत हुआ और लोकतंत्र की विजय हुई। बुलेट पर बैलेट की जीत हुई। देश की जनता, छत्तीसगढ़ की जनता और विशेषकर बस्तर की जनता को इस ऐतिहासिक विजय की हृदय से शुभकामनाएं।

(लेखक छत्तीसगढ़ के पूर्व गृहमंत्री एवं वर्तमान में रायपुर लोकसभा से सांसद हैं)

एक्स से

जब हमारा मन स्वार्थ से ग्रसित होता है, तब भय, क्रोध, ईर्ष्या व अविश्वास स्वाभाविक रूप से पैदा होते हैं, लेकिन जब हम दूसरों के कल्याण की चिंता करते हैं, तब हृदय खुल जाता है। हमारा मन अधिक पारदर्शी, ईमानदार और शांत हो जाता है- दलाई लामा /बौद्ध धर्मगुरु



# सैद्धांतिक संघर्ष के चुनावी औजार

वामपंथ, दक्षिण पंथ और मध्यमार्गी विचारों की यह सीधी लड़ाई चुनाव को खासा दिलचस्प बना रहा है।... तय मानिए। इस चुनाव के नतीजों में जरा-सी हेरफेर समूचे देश की राजनीति की दशा-दिशा प्रभावित कर सकती है। मैं विनम्रतापूर्वक दोहराना चाहता हूं, यह हार-जीत से परे दो राजनीतिक सिद्धांतों की सीधी जंग है।

आजकल स्तंभ के तहत प्रकाशित आलेखों के लिए

**शशि शेखर**

**आजकल**

समूची दुनिया को दहलाती जंग के बीच हम भारतीय इस महीने एक विचार-युद्ध लड़ने जा रहे हैं। देश के पांच सीमावर्ती राज्य विधानसभा चुनावों के बहाने इस लड़ाई को नया आधार देंगे। ये चुनाव भारतीय राजनीति में बरसों से पोसे गए सिद्धांतों और नई उभरती सियासी सोच की दशा-दिशा का इम्तिहान भी साबित होंगे।

तमिलनाडु से शुरुआत करते हैं।

सन् 1967 में जिन नौ सूबों में पहली बार गैर-कांग्रेसी सरकारें बनी थीं, उनमें तमिलनाडु अकेला है, जहां कांग्रेस दोबारा सत्ता में नहीं लौट सकी। फिलवक्त कांग्रेस स्टालिन की अगुवाई वाले द्रमुक गठबंधन की साझेदार है। लंबी साझेदारी के बावजूद सीटों और सत्ता में भागीदारी के लिए दोनों दलों में खूब खींचतान चली। कांग्रेस ज्यादा सीटों के साथ सत्ता में सहयोगी बनने को बेताब थी। स्टालिन को सत्ता में साझेदारी मंजूर नहीं थी, लेकिन कांग्रेस इस जोर-आजमाइश में कुछ अधिक सीटें हथियाने में कामयाब अवश्य हो गई।

बरसों से तमिलनाडु में पैर फैलाने को बेताब भारतीय जनता पार्टी ने भी सिने स्टार विजय की तमिलगा वेट्री कषगम (टीवीके) से पींगे बढ़ाने की कोशिश की थी। विजय ने एकला चलो की राह चुनी है। वह कितने दमदार साबित होंगे? जोसेफ विजय अगर प्रशांत किशोर की तरह वोटकटवा साबित हो गए, तो विपक्षी वोट बिखर सकते हैं। इसका लाभ स्टालिन को मिल सकता है। वैसे, विजय की लोकप्रियता और वैचारिक ताजगी से उनके समर्थकों को खासी उम्मीद है। ईसाई होने के नाते अल्पसंख्यक मत भी उनके साथ एकजुट हो सकते हैं। यही वजह है कि स्टालिन उन्हें 'संघी' बता रहे हैं।

जहां तक स्टालिन का सवाल है, वह इस समय 'एंटी इनकम्बेंसी' का सामना कर रहे हैं। राज्य में कानून-व्यवस्था और भ्रष्टाचार को लेकर विपक्ष बेहद आक्रामक है। जब से उन्होंने अपने पुत्र उदयनिधि को उप-मुख्यमंत्री बनाया है, तब से असंतोष के स्वर उनकी पार्टी में भी खदबदा रहे हैं। हालांकि, स्टालिन ने थेवर समुदाय के कद्दावर नेता ओ पन्नीरसेल्वम के अलावा वी मैत्रेयन, अनवर राजा जैसे अन्नाद्रमुक के कई पूर्व दिग्गजों को द्रमुक से जोड़कर मजबूती का परिचय दिया है।

दूसरी तरफ, जयललिता के देहावसान के बाद से अपना खोया आधार वापस पाने के लिए अन्नाद्रमुक पार्टी एडप्पाडी करप्पा पलानीस्वामी (ईपीएस) के नेतृत्व में एड़ी-चोटी का जोर लगा रही है। भारतीय जनता पार्टी ने भी उससे हाथ मिला लिया है, लेकिन अन्नाद्रमुक का शशिकला गुट अपनी अलग बिसात बिछाकर इस अधबने गढ़ में सेंध लगाने का प्रयास कर रहा है। इसके बावजूद यह गठबंधन जोश-खरोश के साथ मैदान में है। भाजपा इस गठबंधन को वैसी ही ताकत प्रदान कर सकती है, जैसी कांग्रेस द्रमुक को प्रदान करती है। पिछले चुनाव में कांग्रेस ने गिरावट के बावजूद 4.3 प्रतिशत मत हासिल किए थे। भाजपा कुछ सुधार के साथ 2.6 फीसदी पर थी, लेकिन उसने चार विधायक जिता लिए थे।

कहने की जरूरत नहीं कि कांटे की लड़ाई में ऐसे योगदान महत्वपूर्ण साबित होते हैं।

अब पश्चिम बंगाल की बात। ममता बनर्जी यहां लगभग 15 सालों से राज कर रही हैं। वह हर चुनाव को भारतीय जनता पार्टी की तरह जीवन-मरण का प्रश्न बनाकर लड़ती हैं। उनकी 'लक्ष्मी भंडार योजना' ने महिलाओं की बड़ी आबादी को तृणमूल कांग्रेस के वफादार वोट-बैंक के तौर पर खड़ा किया है। पिछले चुनाव में भारतीय जनता पार्टी बांग्लादेशी घुसपैठियों के नाम पर जब ध्रुवीकरण कर रही थी, तब ये महिलाएं ही ममता की ढाल बनी थीं। इस प्रदेश की 294 में से करीब 70 सीटें ऐसी हैं, जहां महिलाएं फैसलाकुन हैं। इधर पार्टी के वरिष्ठ नेताओं में खींचतान, एंटी इनकम्बेंसी और भ्रष्टाचार की खबरें सुर्खियों में आई हैं। विपक्ष इन मुद्दों को अपने लिए संजीवनी बनाने का प्रयास कर रहा है।

कभी सत्तारूढ़ रहे वाम दलों के साथ जुगलबंदी करने वाली कांग्रेस इस बार अकेले लड़ रही है। वाम दल भी अपना खोया गौरव पाने के लिए एड़ी-चोटी का जोर लगा रहे हैं। यह देखना दिलचस्प होगा कि ये पार्टियां कोई सम्मानजनक स्थिति अर्जित करने में कामयाब होती हैं या इनकी भूमिका ममता-विरोधी मतों में सेंधमारी तक सीमित रहेगी?

तमिलनाडु में अगर द्रविड़ राजनीति की परीक्षा है, तो बंगाल में 'मां, माटी, मानुष' के नारे का अस्तित्व दांव पर लगा है।

वामपंथ केरल के आखिरी दुर्ग को बचाने के लिए इस रण में अपने सभी आयुध इस्तेमाल कर रहा है। इस सूबे से कांग्रेस को भी आस है, क्योंकि राहुल गांधी लोकसभा में इसका प्रतिनिधित्व करते थे। अब प्रियंका गांधी उस जिम्मेदारी को सम्हाल रही हैं। नेहरू-गांधी परिवार के बाद पार्टी में सबसे कद्दावर माने जाने वाले संगठन महासचिव के सी वेणुगोपाल यहीं से आते हैं। उधर, नगर निकाय चुनावों में बेहतरीन प्रदर्शन के बाद भारतीय जनता पार्टी भी खासी उत्साहित है। वामपंथ, दक्षिण पंथ और मध्यमार्गी विचारों की यह सीधी लड़ाई चुनाव को खासा दिलचस्प बना रही है।

अंत में असम की चर्चा। भारतीय जनता पार्टी ने यहां हिमंत बिस्व सरमा को कांग्रेस से उधार लिया था। यह प्रयोग बेहद सफल रहा। हिमंत पूर्वोत्तर भारत के सर्वाधिक लोकप्रिय नेताओं में एक हैं। वह दृढ़ व्यक्तित्व के धनी हैं और उन्होंने भाजपा में आते ही कट्टर हिंदुत्व का चोला धारण कर लिया है। बांग्लादेशियों के बहाने वह 'मियां' लोगों पर तीर साधते रहते हैं। आपको वह वीडियो तो याद ही होगा, जिसमें उनके हाथ में बंदूक है और वह दाढ़ी वाले गोल टोपीधारी को गोली मार रहे हैं। हिमंत की 'ओरुनोदोई' योजना महिलाओं में काफी लोकप्रिय है। असम की 126 में से एक तिहाई सीटों पर महिला मतदाता निर्णायक भूमिका में हैं और वे भारतीय जनता पार्टी का जबरदस्त समर्थन करती हैं।

पिछले दिनों प्रदेश कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष भूपेन बोरा और नौगांव से सांसद प्रद्युत बोरदोलोई को भाजपा में शामिल कर इसके नेतृत्व ने देश की सबसे पुरानी पार्टी को नई चुनौती दी है। भाजपा की यह पुरानी रणनीति है। चुनाव से पहले वह विपक्षियों की बिसात बिखेरने की कोशिश हर हाल में करती है।

इस राज्य में मुस्लिम मतदाताओं की संख्या 40 फीसदी के करीब है। मौलाना बदरुद्दीन अजमल और ऑल इंडिया यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट (एआईयूडीएफ) पिछले 21 सालों से इन्हीं के बूते पर राजनीति कर रहे हैं। पिछला चुनाव मौलाना और कांग्रेस ने मिलकर लड़ा था। इस बार दोनों अलग लड़ रहे हैं। कांग्रेस खुद को 'मियांपरस्त' के तमगे से बचाना चाहती है, लेकिन इनके मतों पर अपनी स्वाभाविक दावेदारी भी समझती है। बदरुद्दीन और उनका समर्थन कर रही असदुद्दीन ओवैसी की पार्टी उसकी राह का रोड़ा बन सकती हैं।

आप सोच रहे होंगे कि मैंने केंद्रशासित पुडुचेरी की चर्चा क्यों नहीं की? पुडुचेरी अभी भी तमिलनाडु के 'एक्सटेंशन' की तरह काम करता है। यह बात अलग है कि वहां पर भाजपा ने जोड़-तोड़कर सरकार बना रखी है, लेकिन यहां बाकी अन्य प्रदेशों जैसी जीवन-मरण की लड़ाई नहीं देखी जा रही।

तय मानिए। इस चुनाव के नतीजों में जरा-सी हेरफेर समूचे देश की राजनीति की दशा-दिशा प्रभावित कर सकती है। मैं विनम्रतापूर्वक दोहराना चाहता हूं, यह हार-जीत से परे दो राजनीतिक सिद्धांतों की सीधी जंग है।

@shekharkahin
@shashishekhar.journalist

---

**जीना इसी का नाम है**

**क्विलेन ब्लैकवेल**
सामाजिक उद्यमी

# उजड़ी हुई बस्ती को उसका वैभव लौटाते ब्लैकवेल

**पुरस्कार में मिली रकम से शायद कुछ और गरीब बच्चों की तकदीर संवर जाएगी। अपने काम से इस दुनिया को सुंदर बनाने वाले लोग ही असली हीरो हैं। बकौल ब्लैकवेल, उजड़ी हुई जिंदगी भला किसको अच्छी लगती है? फूल हमें यही तो सिखाते हैं- दिखते हुए सुख बांटिए, मिटते हुए खुशबू!**

वह 6 दिसंबर, 2025 की शाम थी। प्रतिष्ठित मीडिया घराने *सीएनएन* का मंच सज चुका था। वहां से 'हीरो ऑफ द ईयर' के नाम का एलान होने वाला था। यह सम्मान दुनिया भर से अनुशंसित उन हजारों नामों में से किसी एक को मिलता है, जिसके काम को इंसानियत की खिदमत के हवाले से नायाब माना गया हो। मंच पर अंतिम पांच दावेदार खड़े थे। पांचों दावेदारों के काम अपने-अपने क्षेत्र में वाकई अनूठे हैं, मगर विजेता तो किसी एक को ही बनना था। कार्यक्रम की होस्ट लाउरा कोट्स ने जैसे ही क्विलेन ब्लैकवेल का नाम लिया, हॉल तालियों से गूंज उठा। ब्लैकवेल का काम ही ऐसा है।

आज से करीब 40 साल पहले अमेरिका के मैडिसन शहर में आंखें खोलने वाले ब्लैकवेल की परवरिश एक उच्च मध्यवर्गीय परिवेश में हुई है। उनके बचपन को किसी अभाव ने कभी नहीं स्पर्श किया। ब्लैकवेल जब मिडिल स्कूल में पढ़ रहे थे, तब सामुदायिक सेवा कार्यक्रम के तहत उन्हें दक्षिण-पूर्व एशियाई शरणार्थियों की मदद करने का मौका मिला। ब्लैकवेल को पहली बार एहसास हुआ कि उनसे अलग भी एक दुनिया है, जिसके बच्चे उन सुख-सुविधाओं और अवसरों से वंचित हैं, जो उन्हें अपने बचपन में मिले थे। किशोर ब्लैकवेल ने तभी सोच लिया था कि जिंदगी में मौका मिला, तो वह ऐसे बच्चों की दुनिया बदलने के लिए जरूर कुछ करेंगे।

ब्लैकवेन ने इस सोच को कभी धुंधला नहीं पड़ने दिया। हाई स्कूल में पहुंचते ही उन्होंने स्कूल प्रशासन से मांग की कि उन्हें एक सेवा संगठन शुरू करने की अनुमति दी जाए। इजाजत मिलते ही कुछ हमख्याल दोस्त साथ खड़े हुए और 'अदर्स फर्स्ट' नामक स्वयंसेवी संगठन वजूद में आया। देखते-देखते इस समूह से 25 छात्र जुड़ गए थे। मौका मिलते ही ब्लैकवेल और उनके साथी वृद्धाश्रमों व खाद्य भंडारों पर बतौर स्वयंसेवक काम करने पहुंच जाते। इस काम से उन्हें आत्मनिर्भर बनने का आत्मविश्वास तो मिला ही, वह सामुदायिक सेवा की बारीकियां भी समझ सके।

कॉलेज की पढ़ाई पूरी करने के बाद ब्लैकवेल संघीय एजेंसी 'पीस कोर' में शामिल हो गए थे। यह एजेंसी विश्व शांति और भाईचारे को बढ़ावा देने के लिए पीड़ित देशों के विकास कार्यों के लिए अपने स्वयंसेवक भेजती है। ब्लैकवेल को थाइलैंड के ग्रामीण इलाकों में सेवा करने का मौका मिला।

इसके बाद उनका नया ठिकाना शिकागो बना, जहां वह धार्मिक शिक्षा के लिए आए थे। इस दौरान उन्होंने एक हाई स्कूल में छात्रों को पढ़ाया। यह शिकागो के सबसे खतरनाक इलाकों में से एक था। ब्लैकवेल को धीरे-धीरे अपने छात्रों की चुनौतियां समझ में आईं। कई बच्चों को देखकर वह बार-बार यही सोचते कि मैं भी इनमें से एक हो सकता था। ये सभी भी तो बेहतर भविष्य की तलाश में कभी रहे होंगे?

इसी दौरान ब्लैकवेल की मुलाकात हन्ना बोनहम से हुई,

जो उन्हीं की तरह रहमदिल हैं। मुलाकातें बढ़ीं, तो उन्होंने बोनहम से अपने दिल की बात कही कि वह शिकागो के गरीब, लावारिस बच्चों के लिए कुछ करना चाहते हैं। बोनहम भी एक परोपकारी जिंदगी के सपने देख रही थीं, लिहाजा साल 2015 में दोनों ने शादी कर ली। ब्लैकवेल और बोनहम ने एंगलवुड में एक घर खरीदा और अपने गैर-लाभकारी संगठन इको हाउस की नींव रखी। इसका मकसद रोजगार सृजन करना और पर्यावरण के अनुकूल गरीबी दूर करने के रास्ते निकालना था। एंगलवुड एक जमाने में समृद्ध व्यावसायिक क्षेत्र हुआ करता था, पर स्थानीय उद्योगों के पतन ने इसकी किस्मत ऐसी पलटी कि यहां के 40 फीसदी बाशिंदे गरीबी की जिंदगी जीने को मजबूर हो गए। मकानों, दुकानों और खेतों को वीरान छोड़कर अनेक लोग दूसरी जगह चले गए थे।

ब्लैकवेल ने कभी नहीं सोचा था कि वह खेती या बागवानी में अपना करियर बनाएंगे, लेकिन पर्यावरण के अनुकूल रोजगार सृजन के तरीकों पर रिसर्च करते हुए उन्हें यह जानकर हैरानी हुई कि अमेरिका फूलों पर अरबों डॉलर खर्च करता है और उनमें से 70 प्रतिशत से भी ज्यादा फूल आयात किए जाते हैं। रास्ता दिख गया था, संसाधन सामने थे, तो शुरुआत करने में देरी नहीं की गई और 'साउथसाइड ब्लूम' संगठन वजूद में आया। साल 2014 से एंगलवुड के खाली भूखंडों को सौर ऊर्जा से संचालित कृषि क्षेत्र में बदलने का काम शुरू हो गया। इस संगठन की विशेषता यही रही कि यह अपने बागों में 16 से 24 साल के उन युवाओं को काम पर रखता है, जो बेघर, लावारिस या आर्थिक रूप से हाशिये पर हैं।

ब्लैकवेल अपने हाईस्कूल के दिनों में ही समझ गए थे कि किसी भी समाज में हिंसा रोकने का सबसे कारगर रास्ता है, नौजवानों को रोजगार देना। यही वह उम्र है, जिसमें उन्हें सबसे अधिक मदद, निगरानी और मौके की दरकार होती है, वरना वे भी कुम्हला जाते हैं। एंगलवुड में एक समय हिंसा का बोलबाला था। आज इसमें काफी कमी आई है। ब्लैकवेल के पास आज पर्यावरण के अनुकूल फूलों के बड़े-बड़े बाग हैं, जिनकी उपज और दान से उनके संगठन को सालाना 20 लाख डॉलर, यानी 185 करोड़ रुपये से अधिक की आमदनी होती है। अपने तीन बच्चों के साथ-साथ वह 25 नौजवानों के भी अभिभावक हैं। अब तक 440 से अधिक किशोरों को उनकी संस्था इको-फ्रेंडली बागवानी का प्रशिक्षण दे चुकी है।

**यह शिकागो के सबसे खतरनाक इलाकों में से एक था। ब्लैकवेल को धीरे-धीरे अपने छात्रों की चुनौतियां समझ में आने लगी थीं। कई बच्चों को देखकर वह बार-बार यही सोचते कि मैं भी इनमें से एक हो सकता था। ये सब भी तो कभी बेहतर भविष्य की तलाश में रहे होंगे?**

सीएनएन सम्मान के साथ इस 40 वर्षीय युवा को डेढ़ लाख डॉलर की धनराशि भी मिली है। जाहिर है, इस रकम से फूलों के खिलने का दायरा कुछ और पसर जाएगा। कुछ और लावारिश बच्चों की तकदीर संवर जाएगी। ऐसे जमीनी काम से इस दुनिया को सुंदर बनाने वाले लोग ही असली हीरो हैं। बकौल क्विलेन ब्लैकवेल, उजड़ी हुई जिंदगी भला किसको अच्छी लगती है? फूल हमें यही तो सिखाते हैं- दिखते हुए सुख बांटिए, मिटते हुए खुशबू!

**प्रस्तुति : चंद्रकांत सिंह**

---

**वो लम्हा**

**जगजीवन राम**
पूर्व उप-प्रधानमंत्री

# मानवीय स्नेह से उपजे महापुरुष

**बेलगाम लहरों ने निचले इलाकों में बने दलितों के घर बहाए, तो ब्राह्मणों के घरों को भी नहीं बख्शा। उसी बाढ़ में एक मेधावी दलित छात्र का कच्चा घर भी घुल गया। नीचे कमर भर पानी बह रहा था और ऊपर बादल पांव में बेड़ियां डाले बरस रहे थे। ठंड और भय से तन कांप रहा था।**

उस साल बारिश जरूरत से ज्यादा हो रही थी। एक ओर से सोन नदी, तो दूसरी ओर से गंगाजी पुरजोर उमड़ आई थीं। इंसान भले भेद करते हों, पर नदियों ने कोई भेद नहीं किया। उनकी बेलगाम लहरों ने निचले इलाकों में बने दलितों के घर बहाए, तो ब्राह्मणों के घरों को भी नहीं बख्शा। उसी बाढ़ में एक मेधावी दलित छात्र का कच्चा घर भी घुल गया। नीचे कमर भर पानी बह रहा था और ऊपर बादल पांव में बेड़ियां डाले बरस रहे थे। ठंड और भय से तन कांप रहा था। ऐसे में, पिता होते, तो कोई उपाय करते, पर कुछ ही दिन पहले बीमारी उन्हें छीन ले गई थी। अकेली मां ने आंचल तले चार बच्चों को छिपाए रखा था कि कहां जाएं, कौन रखेगा?

उन दिनों दलितों से बहुत भेदभाव होता था और सक्षम दलित भी जल्दी किसी को सहारा नहीं देते थे। मुसीबत में कोई उपाय नहीं सूझ रहा था। वह मेधावी बार-बार प्रार्थना में डूबी मां का चेहरा निहार रहा था कि अब क्या होगा? तभी एक शिक्षक सामने आ खड़े हुए। उन्हें अपने मेधावी विद्यार्थी की चिंता खींच लाई। शिक्षक हाल ही में मुखिया-हीन हुए इस परिवार का हाल जानते थे। जाति से ब्राह्मण शिक्षक ने तमाम भेद भुला दिए और छात्र के परिवार को अपने नए पक्के मकान में बेहिचक ले आए।

शिक्षक के लिए मानवीयता सर्वोपरि थी और इस मानवीयता ने उस मेधावी छात्र के हृदय को पूरी गर्मजोशी से सींचा। छात्र अपने शिक्षक के प्रति गहरे आभार से भर गया। समझ गया कि हर सवर्ण बुरा नहीं होता। खैर, सोन का ज्वार उतरा और गंगा जी भी अपनी मूल धारा में लौट गईं। लोग फिर तिनके जोड़कर घर बनाने लगे, पर शिक्षक ने उस परिवार से कहा कि आप लोग पहले अपनी जमीन पर रहने लायक घर बना लें, तभी यहां से जाएं।

यही हुआ, मेधावी छात्र का परिवार छह महीने शिक्षक के यहां रह गया। शिक्षक से मिले श्रेष्ठ स्नेह-व्यवहार ने ही एक महापुरुष की रचना की और बाल्यकाल में ही विलक्षण प्रतिभा का प्रदर्शन प्रारंभ हो गया। वह पढ़ाई में अव्वल आए, तो पांचवीं कक्षा से आगे की पढ़ाई के लिए आरा शहर आ गए। वहां भी पढ़ाई के बल पर पहचान निखरी। उन दिनों भी दलित छात्रों को छात्रवृत्ति मिलती थी, पर उन्होंने लेने से इनकार कर दिया। प्रधानाध्यापक ने पूछा कि तुम छात्रवृत्ति क्यों नहीं लेते हो, तब उन्हें विनम्रतापूर्वक उत्तर मिला, 'मेरे परिवार के पास अच्छी उपज वाली भूमि है। मेरे बड़े भाई कलकत्ता में सरकारी नौकरी करते हैं और परिवार की आर्थिक मदद करते हैं। मुझे शुल्क में छूट या छात्रवृत्ति की जरूरत नहीं है। यदि संभव हो, तो मेरे हिस्से की छात्रवृत्ति किसी उच्च जाति के गरीब बच्चे को दे दीजिए।'

उनकी मां और उनका व्यवहार इतना श्रेष्ठ था कि कोई भी जानने वाला उनसे रत्ती भर भी भेदभाव नहीं बरत पाता था। अच्छी पढ़ाई ने भी उन्हें बार-बार आगे ला खड़ा किया। एक बार स्कूल में महान नेता मदन मोहन मालवीय पधारे, तो इन्हीं दलित मेधावी छात्र को स्वागत भाषण का मौका दिया गया। मालवीय जी छात्र की भाषा और प्रस्तुति से इतने प्रभावित हुए कि पास बुलाकर नाम पूछा। उत्तर मिला, 'गुरुजी, मेरा नाम जगजीवन राम है। आप मेरी प्रशंसा कर रहे हैं, पर यह मेरे शिक्षकों की ही प्रशंसा है।' प्रसन्न मालवीय जी ने कहा, 'हे मेधावी, आगे की पढ़ाई के लिए मेरे बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में तुम्हारा स्वागत है।'

यह खबर पूरे आरा में फैल गई कि जिले के एक दलित मेधावी छात्र को मालवीय जी बनारस विश्वविद्यालय में पढ़ने का न्योता दे गए हैं। इस मेधावी टॉपर की पढ़ाई-रहने-खाने का पूरा खर्च उठाने के लिए ईसाई मिशनरी भी सामने आए, पर मां ने साफ इनकार कर दिया और बेटे को लेकर बनारस आ गईं।

जगजीवन राम ने उच्च शिक्षा बनारस और कलकत्ता में पूरी की। वह बगैर भेदभाव देश व समाज सेवा के लिए कूद पड़े। स्वतंत्रता संग्राम में शामिल हो गए। जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में जब देश की पहली अंतरिम सरकार बनी, तब 37 की उम्र में सबसे युवा मंत्री के रूप में उन्हें पूरा देश जान गया। उनकी योग्यता का कमाल था कि वह लगातार तीस साल केंद्र में मंत्री रहे।

उन्होंने जातिगत भेदभाव के खिलाफ खूब संघर्ष किए, लेकिन उनके मन में किसी धर्म या जाति के प्रति एक बूंद भी वैर भाव न आया। वह न अपने प्राथमिक स्कूल के शिक्षक लाल मुनि तिवारी को भूल सके और न मदन मोहन मालवीय को।

5 अप्रैल को जन्मे जगजीवन राम (1909-1986) देश के पहले दलित उप-प्रधानमंत्री बनाए गए। उनकी प्रशंसा में कभी गांधीजी ने कहा था, 'जगजीवन राम अग्नि से शुद्ध स्वर्ण बनकर उभरे हैं।' उन्हें लंबे समय तक करीब से देखने वाले अटल बिहारी वाजपेयी ने कहा था, 'जगजीवन राम को जीवन में बहुत कष्ट सहने पड़े, किंतु उन्होंने केवल सद्भावना का अमृत ही बांटा।'

**प्रस्तुति : ज्ञानेश उपाध्याय**

---

# एक गरीब कविता की तलाश

**तिरछी नजर**

**सुधीश पचौरी** हिंदी साहित्यकार

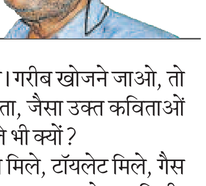

जब से यह खबर आई है कि भारत में अधिकांश लोग 'गरीबी-रेखा' से ऊपर आ गए हैं, तब से मेरी साहित्यिक चिंता बढ़ गई है कि अब प्रगतिशील कविता-कहानी और मेरी प्रगतिशील आलोचना का क्या होगा? गरीब न रहे और गरीबी भी न रही, तो प्रगतिशील कवि क्या करेंगे? अकाल, भुखमरी, शोषण, उत्पीड़न, दमन का वर्णन कोई कैसे करेगा? कवि जन-प्रगतिशील और क्रांतिकारी कैसे बनेंगे?

पंडित बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' की तरह कौन ललकारेगा- *लपक चाटते जूठी पत्तल जिस दिन मैंने देखा नर को/ उस दिन सोचा क्यों न लगा दूं आग आज इस दुनिया भर को/ यह भी सोचा क्यों न टेंटुआ घोटा जाए स्वयं जगपति का/ जिसने अपने ही स्वरूप को रूप दिया इस घृणित विकृति का।* कौन 'इकबाल' की तरह ऐसी क्रांतिकारी लाइनें देगा- *जिस खेत के दहकां को मयस्सर नहीं रोजी/ उस खेत के हर खोशा-ए-गंदुम को जला दो।* 'साहिर' की तरह कौन लिखेगा- *ये महलों ये तख्तों ये ताजों की दुनिया/ ये दुनिया अगर मिल भी जाए तो क्या है?* कौन पंतजी सा गाएगा- *भारतमाता ग्रामवासिनी... तीस कोटि संतान नग्न तन/ अर्द्ध क्षुधित, शोषित, निरस्त्र जन/ मूढ़, असभ्य, अशिक्षित, निर्धन/ नत मस्तक/ तरु तल निवासिनी।*

एक वक्त ऐसा भी रहा कि जब तक कविता में गरीब या गरीबी का जिक्र नहीं आता, तब तक कविता कविता न मानी जाती। गरीबी वह देवी रही, जिसके आगे धोक लगाते ही कुकवि भी सुकवि बन जाता, मुंह से आग झरती, कविता से गोली निकलती, वर्गशत्रु वहीं ढेर हो जाता- वाम वाम वाम दिशा समय साम्यवादी की धुन पर कविजन मार्चपास्ट करते। वो सुबह कभी तो आएगी गाते, लेकिन वह सुबह कभी न आती!

यूं तो एक दफा 'गरीबी हटाओ' भी हुआ, लेकिन पिछले दिनों से 'गरीबी की रेखा' वाकई लापता नजर आती है। गरीब खोजने जाओ, तो वैसा गरीब नहीं मिलता, जैसा उक्त कविताओं में मिलता है और मिले भी क्यों?

गरीबों को मकान मिले, टॉयलेट मिले, गैस मिली, बिजली मिली, जन-धन योजना मिली, फ्री इलाज मिला, कैश मिला, राशन मिला, महिलाओं को लाडली बहना योजना, बेटी योजना, सुकन्या योजना, लाडकी बहना योजना आदि मिली, महिलाओं के 'सेल्फ हेल्प ग्रुप' बने, बहुत सी बहनें लखपति दीदी बनीं, तरह-तरह के बीमे और गारंटियां अलग से।

इन दिनों तो 'गरीबी हटाने' के मामले में ऐसा 'खुला कंपटीशन' है कि कोई महिलाओं को दो हजार रुपये देने, कोई ढाई हजार रुपये महीने देने और कोई दस हजार देने की बात कर रहा है। कोई फ्रिज दे रहा है, तो कोई टेबलेट व स्कूटी दे रहा है। सोना, टीवी, कुकर तो पहले ही दिए जा चुके हैं, गरीब के दिन भी फिर गए हैं।

फ्री-फ्री की इस फ्रीडम में कोई गरीब अपनी गरीबी के साथ जिए भी तो भला कैसे? कभी समाजवाद बहुत कुछ फ्री देता था, मगर फ्रीडम (आजादी) ले लेता था। अब यही सब थोक में 'विद फ्रीडम' मिल रहा है। अब मेरी समझ में आया है कि अगर सोशल मीडिया में कुछ कवियों के मुख से इतनी गालियां झरती हैं, तो इसीलिए कि उनकी प्रिय गरीबी को उनसे दूर कर दिया गया है और गरीब को सर्वहारा बनाने के अवसर से और *वो सुबह कभी तो आएगी* वाला गाना गाने से भी वंचित कर दिया है।

यह क्या किया रे दुनिया वाले? एक ओर तूने जनतंत्र में ही समाजवाद ला दिया, लेकिन दूसरी ओर गरीबों की गरीबी को दूर कर कवियों को प्रगतिशील व क्रांतिकारी होने से वंचित कर दिया! गजब की 'डाइलेक्टिक्स' रही। गरीबी है, तो कविता प्रगतिशील है, 'फासिज्म' है, तो जनतंत्र है। धर्म है, तो सेकूलरिज्म है।

हे प्रभो! यह आपका अन्याय नहीं तो क्या है कि पहले आपने गरीबी चुराई, फिर मेरे प्यारे कवियों को प्रगतिशील होने से वंचित किया। बताइए, वे आपको शाप न दें, तो क्या दें?

---

**कटाक्ष**

**राजेंद्र धोड़पकर**

स्त्री-अस्मिता और उसके अधिकारों की पैरोकार कमल कुमार की रचनाओं का फलक विस्तृत है। इनके लेखन के केंद्र में 'अपराजेय भाव' से सामाजिक-धार्मिक रूढ़ियों, विसंगतियों और विषमताओं पर निरंतर प्रहार करते हुए शोषितों की मुखर आवाज बनना है। 'बयान', 'गवाह', 'साक्षी हैं हम', 'सूर्य देता है मंत्र', 'अपार्थ', 'आवर्तन', 'हैमबरगर', 'वेलेंटाइन डे', 'पासवर्ड', 'कथा-अंतर्कथा' और 'अज्ञेय की काव्य संवेदना' आदि प्रमुख कृतियां। अनेक पुरस्कारों से सम्मानित प्रसिद्ध कवयित्री-कथाकार कमल कुमार के यात्रा-संस्मरण 'सिंगापुर : खाओ, खरीदो और खेलो' से संपादित अंश...

# सिंगापुर : अलग तहजीब का देश

**अद्भुत यात्रा संस्मरण -48**

**कमल कुमार**

जन्म : 07 अक्तूबर, 1946

इस समय सिंगापुर में हूं। घर के सदस्य अपने काम पर सुबह ही निकल गए हैं। उनकी हिदायत न मानकर टैक्सी लेकर 'रैफल स्ट्रीट' पर आ गई हूं। 'बोट की' पर घूम रही हूं। यह दुनिया अलग है। लिखा था- 'ईट, शॉप एंड प्ले' मतलब 'खाओ, खरीदो और खेलो।' मैं घूम रही थी बड़े-बड़े मॉल, शॉपिंग सेंटर, 30-50 मंजिलोंवाली आकाश को बेधती इमारतें। खाने के लिए रेस्तरां और कपड़ों की दुकानें। मैं कॉफी हाउस के कोने में बैठी थी। देखा, लिखा था- 'फूड रिपब्लिक।' मैं हंसी थी, पर देखा तो फूड रिपब्लिक ही था। सभी देशों की सभी तरह के खाने की दुकानें थीं। इतालवी, स्पेनिश, थाई, इंडियन। सभी में उतनी ही भीड़ पर 'हाउस फुल' नहीं होते यहां।

मैं आगे आ गई थी- 'अरे यह क्या? 'क्लीनिक', यह रेस्तरां का नाम।' मैं रुककर देख रही थी, हंस रही थी। यहां इस तरह अकेले घूमना अप्रत्याशित नहीं। लोग कुर्सियों की अपेक्षा व्हील चेयर पर बैठे थे। इंजेक्शन वाली सुई और सिरिंज से अपनी ड्रिंक पी रहे थे। सर्जरी के उपकरणों से खाना खा रहे थे। पहले हंसी, फिर लगा क्रेजी लोग! मैं आगे आ गई थी। बीच की थोड़ी-सी जगह में एक लड़की बैले डांस कर रही थी। उसने राजस्थानी शैली में लाल चोली और घाघरा या लंबी स्कर्ट पहन रखी थी। यह लड़की थाई हो, पर हो सकता है कोरियन भी हो। कुछ खड़े, कुछ बैठे, लोगों की भीड़ उसे देख रही थी, मैं भी दर्शकों में थी। मनोरंजन तो था ही, पर रेस्तरां की बिक्री बढ़ाने के लिए भी तो होगा।

मैं अब सिंगा रिवर के साथ-साथ चलने लगी थी। यहां भी दोनों किनारों पर रेस्तरां हैं। सभी रेस्तरां में भीड़ है। लगता है, इनके घर में किचन हैं ही नहीं। सुबह-शाम, दोपहर-रात ये रेस्तरां भरे ही रहते हैं। यह यहां की संस्कृति है। मैं रुकी थी, रेस्तरां का नाम था 'हूटर्स।' वहां का माहौल भी नाम के अनुरूप था। बहुत छोटे कपड़ों में, खुले गलेवाली टीशर्ट में लड़कियां सर्विस कर रही थीं। घर के सदस्य आ गए थे। हम सबने साथ बैठकर खाना खाया और घर आ गए थे।

मेरा भी रूटीन था। सब अपने काम पर चले जाते। मैं मेट्रो से या टैक्सी लेकर कहीं भी घूमने निकल जाती। आज मैं यहां 'इंटीग्रेटिड रिजॉर्ट' में आ गई थी। मैंने देखा, यहां पर्यटकों की सुविधा के लिए गैंबलिंग (जुआ खेलने) की सुविधा दी गई है, परंतु सिंगापोरियन न खेलें। इसके लिए उनसे बहुत अधिक फीस ली जाती।

शाम को हम सब 'आइवरी' होटल में बैठे थे। वहां के भारतीय खाने का आनंद लिया। लोग यहां वाइन का गिलास लिए घंटों आमने-सामने बैठे रहते हैं, बतियाते हुए। न इनको पीने की जल्दी होती है, न खाने की त्वरा, न घर जाने की फिक्र। कुछ विशेष या सोचा हुआ करने को नहीं, इसलिए एक मजे की स्वतंत्र घुमंतू मानसिक स्थिति में हूं। यों ही जहां चाहूं निकल जाती हूं। छोटा-सा देश, हमारी दिल्ली से भी छोटा। विश्व का बहुत बड़ा इकोनॉमिक सेंटर है। यहां बड़े-बड़े नामोंवाली बहुराष्ट्रीय कंपनियां हैं। ऊंचे पदों पर काम

> **शाम को हम सब 'आइवरी' होटल में बैठे थे। वहां के भारतीय खाने का आनंद लिया। लोग यहां वाइन का गिलास लिए घंटों आमने-सामने बैठे रहते हैं, बतियाते हुए। न इन्हें पीने की जल्दी होती है, न खाने की, न घर जाने की फिक्र।**

करनेवाले देशी-विदेशी लोग हैं। जो एक महीने में भारतीय मुद्रा में दस से पंद्रह लाख तक तनख्वाह पाते हैं, तो भी देश की नीतियां आम लोगों के हित में हैं। उनका स्वास्थ्य, सुरक्षा, शिक्षा सभी की व्यवस्था है। सबसे बड़ी बात है कि सब अपना दिया गया काम कर रहे हैं- घास काटनेवाला, सड़क बनानेवाला हो या मल्टीनेशनल का कार्यकर्ता हो। काम के बाद सब समान हैं।

ये मेरे सामने 'बे शोर' के कॉन्डोमिनियम हैं। 20 मंजिला ऊंचे कॉलम हैं। नीचे सभी तरह की सुविधाएं हैं। मैं स्वीमिंग पूल के किनारे बैठी हूं। साथ ही यहां टेनिस कोर्ट है, फुटबॉल ग्राउंड, बॉलिंग, बिलियर्ड हैं। ये यहां कॉन्डोमिनियम में रहनेवालों के जीवन का हिस्सा है। दूसरी तरफ जिम है। साथ ही बच्चों की देखभाल के लिए 'डे केयर सेंटर' है। मैंने सौना बाथ लिया। जकूजी में बैठी। बाहर निकली, तो तरोताजा महसूस कर रही थी। घड़ी देखी, मैं बाहर आ गई थी। टैक्सी ने 'ड्रॉप प्वाइंट' पर उतारा। मैं अंदर आई, खुली जगह थी वहां। एक ऑरकेस्ट्रा ग्रुप था, जो अपने संगीत में मग्न था।

'स्ट्रीट सिंगर' और 'स्ट्रीट ऑरकेस्ट्रा ग्रुप' सड़क किनारे बैठकर परफॉर्म करते हैं। यूरोपीय संस्कृति का भी यह अहम हिस्सा है। लोग रुके थे, सुनते थे, जाते हुए बैगनुमा झोले में कुछ डॉलर डाल जाते थे। 'बडोक' में छोटी-छोटी खुली दुकानें थीं। हमारे यहां की मार्केट की तरह। जहां हर तरह की इस्तेमाल की चीजें थीं। कपड़ों की दुकानें थीं। हर तरह के रंगों में, साइज में टी-शर्ट, शर्ट, स्पोर्ट्स टी शर्ट, ट्रैक पैंट, पैंट, हॉफ पैंट, जींस आदि टंगी थीं। इनकी कीमत, मॉल से और 'लिटिल इंडिया' मुस्तफा से भी सस्ती थीं। मैंने यहां से जरूरत के लिए, देने और पहनने के लिए टी शर्ट, ट्रैक पैंट वगैरह खरीदीं। वहीं बडोक का मॉल भी था। दूसरे बड़े मॉल से यहां आना-घूमना मेरे लिए आसान था।

भारत के और यहां के मॉल में कोई ऐसा अंतर नहीं था। डिजाइनर भी लगभग वही थे। देखा वहां एक पुस्तकालय था। मैं भीतर गई, पर देखा पुस्तकालय की अवधारणा बदल गई थी। कंप्यूटर और सी.डी. का इस्तेमाल था। कुछ पत्र-पत्रिकाएं थीं, पर मेरे मतलब की नहीं! देखा वहां एक कॉफी कैफे था। वहां एक भारतीय मूल की लड़की ने मेरा स्वागत किया। मुझे आइस-टी, शहद और अदरक के साथ पिलाई।

मैंने देखा, मेरी टेबल के सामने एक किशोरी-सी बैठी थी। कुछ सोचती, उदास-सी। वह उठी और बाहर की तरफ जा रही थी। मैं स्तब्ध थी; दुबारा देखा, ध्यान से देखा, वह प्रेगनेंसी की एडवांस स्टेज में थी। उसने लंबी स्कर्ट पहन रखी थी। देखा, टेबल पर अपना मोबाइल भूल गई थी। मैंने उसका मोबाइल उठाया, उसके पीछे गई। उसे मोबाइल दिया और पूछा, 'आप बहुत छोटी हैं, इतनी जल्दी शादी कैसे हुई?' 'नहीं, मेरी शादी नहीं हुई, मैं बिन ब्याही मां हूं।'

पश्चिम देशों की तरह यहां भी शायद खुला समाज हो। अमेरिका में जॉर्जिया अटलांटा में भी घूमते हुए देखा था, वहां सिंगल मदर होम हैं। 'अनवेड मदर' के लिए सारी सुविधाएं हैं। उनके बच्चों को अगर परिवार न अपनाए, तो स्टेट देखभाल करती है। उनकी परवरिश करती है। वहां सबसे ज्यादा किशोरी मांएं हैं। छोटी उम्र में ही संबंध बन जाते हैं।

इलस्ट्रेशन : यशवंत नामदेव

समाज स्वीकारता है, पर समस्याएं तो कम नहीं होतीं। कुछ बच्चियां इतनी छोटी होती हैं कि बच्चे की देखभाल नहीं कर सकतीं। उनके लिए स्टेट नर्स होती हैं। जो बच्चों को संभालती हैं। लंदन में 'हिंदुस्तानी प्रचार सभा' में मेरी मुलाकात 'एमली' से हुई थी, जो 20 साल की थी और उसकी बच्ची 6 साल की थी। दोनों एक ही स्कूल में पढ़ती थीं। एमली, 11वीं की छात्रा थी और बच्ची पहली कक्षा की। घूमते-घूमते मेरी मुलाकात एक पब में ऐसी बच्चियों से हुईं, जो 13, 14, 16 वर्ष की उम्र में मां थीं। उनके बच्चे थे। वे अपने अकेलेपन और उदासी को दूर करने यहां बच्चों के साथ आती थीं। उन्होंने बताया, 'बच्चों के साथ पब में नहीं आना चाहिए, पर क्या करें?'

भीतर से त्रस्त भी हुई थी। घर लौट रही थी। सोच रही थी, यहां सब कुछ सुचारू रूप से होता है। ट्रांसपोर्ट, स्वास्थ्य सेवाएं, सफाई, सड़कें, कॉन्डोमिनियम, बाग-बगीचों, ड्रेनेज सिस्टम सबका उत्तम प्रबंधन। तो भी, क्या यह विकास की विकृति तो नहीं? सिंगापुर में संतोषा आइलैंड, लिटिल इंडिया, आर्चेड रोड, सभी विशेष रूप से दर्शनीय जगह हैं। मैं गई भी, घूमी भी। अब सिंगापुर को विदा करते हुए टैक्सी में घर लौट रही हूं।

(साभार : कादम्बनी, मई 2017)

## पुस्तकें आई हैं

**सम्मुख**
(कविता-संग्रह)

**लेखिका :** रश्मि भारद्वाज
**प्रकाशक :** सेतु प्रकाशन, नोएडा
**मूल्य :** ₹200

'**उसके** तलवों से रिसते हैं अब भी/अनगिनत अधूरी यात्राओं के घाव/कंधे पर टंगी हैं उसकी मांओ की असंख्य सलीबें/हंसी उस स्त्री का कवच है...।' एक स्त्री होना न केवल मुश्किल है, बल्कि पीड़ादायक भी है। उसके जीवन का संघर्ष जन्म लेते ही शुरू हो जाता है। इसके बावजूद वह अपनी तमाम पीड़ा को अपने धैर्य और मुस्कराहट के कवच के पीछे छिपाए रखती है। स्त्री के जीवन-संघर्ष और उसके हौसले को बयां करती हैं कविता-संग्रह 'सम्मुख' की कविताएं। संग्रह की कविताओं में अंधेरे से भागने का भाव नहीं है, बल्कि वे उसका सामना करती हैं। उसकी बात करती हैं। कविताओं में इंतजार है, प्रेम है, साथ ही अच्छी कविता होने की आश्वस्ति भी है।

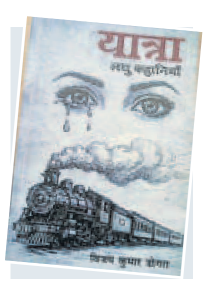

**यात्रा**
(कहानी-संग्रह)

**लेखक :** विजय कुमार डोगरा
**प्रकाशक :** संजना बुक्स, दिल्ली
**मूल्य :** ₹150

**इंसान** की यात्रा का सिलसिला उसके जन्म से ही शुरू हो जाता है। अज्ञात लोक से ज्ञात लोक में आने की यात्रा। बचपन से लेकर जवानी, फिर बुढ़ापा और अंत में इसी ज्ञात लोक से अज्ञात लोक की यात्रा। इंसान जीवन भर यात्रा में ही रहता है। कभी यह यात्रा समय की होती है, तो कभी इंसान अपनी बाहरी यात्राओं पर रहता है। ऐसी और इस जैसी अन्य अनेक यात्राओं की साक्षी है कहानी-संग्रह 'यात्रा' की कहानियां। संग्रह में कुल जमा दस कहानियां हैं। संग्रह की कहानियां आकार में भले ही छोटी हैं, लेकिन अपने कहन में बड़ी हैं। मध्यवर्गीय विडंबना, स्त्री-विमर्श, दलित-विमर्श, युवा-विमर्श जैसे तमाम विमर्श इस संग्रह की कहानियों में मौजूद हैं।

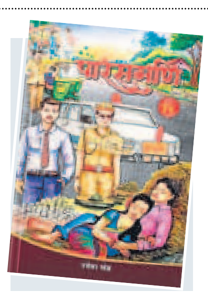

**पारसमणि**
(कहानी-संग्रह)

**लेखक :** रमेश चंद्र
**प्रकाशक :** युवा हिंदी, नई दिल्ली
**मूल्य :** ₹300

**पारसमणि** कहानी-संग्रह में सत्रह कहानियां हैं। ग्रामीण परिवेश के शोषित तबके और यथार्थ के धरातल पर लिखी गई इन कहानियों में कल्पना की ऊंची उड़ान नहीं है। ये कहानियां अपने आसपास के परिवेश और विषयों को उठाती हैं। शिल्पगत कौशल के चमत्कार से दूर ये कहानियां सहज और सरल हैं, इसलिए मन को छूती हैं। कहानी 'गुरुदक्षिणा' में बाल-विवाह और स्त्री-शिक्षा जैसे विषय को संवेदनशीलता से उठाया गया है। गुरुदक्षिणा के रूप में 'जिउती' का अपने गुरु रामबढ़ाई बाबू को आंखों के ऑपरेशन के लिए शहर ले जाना दिल को छूता है। 'बक्कन का नगाड़ा', 'दानेदार', 'बहुरूपिया', 'चुन्नी चांद पर जाएगी' और शीर्षक कहानी 'पारसमणि' इस संग्रह की उल्लेखनीय कहानियां हैं।

# बाढ़ और सूखे के कारणों पर एक नजर

**बिहार देश का ऐसा राज्य है, जो प्राय: हर साल बाढ़ या सूखे के कारण और कभी-कभी दोनों कारणों से चर्चा में बना रहता है। उत्तर बिहार में जहां सहायक धाराओं समेत नदियों की संख्या अधिक होने के कारण बाढ़ का क्षेत्र बना रहता है, तो कभी कुछ फासले पर जहां बाढ़ का पानी नहीं पहुंचता, वहां सूखे का साम्राज्य रहता है। पुस्तक- 'पानी का शाप : बिहार में बाढ़-सुखाड़' में 1947-56 के बीच राज्य में बाढ़ और सूखे के हालात के बीच पानी की उपलब्धता और उसके उपयोग पर विशद रूप से चर्चा की है।**

**पुस्तक समीक्षा**

'**हां,** पानी में आग लगाओ, नदियां बदला ले ही लेंगी...' साल 1980 में बाबा नागार्जुन की लिखी यह पंक्ति अनायास याद आती है, जब दिनेश कुमार मिश्र की किताब 'पानी का शाप' से आप गुजरते हैं।

एक वक्त था, जब बाढ़ ढाई दिनों की होती थी और प्यासी पथराई जमीनों को जरूरी पोषण देकर अपने रास्ते निकल जाती थी। तब इसे 'वरदान' की हैसियत हासिल थी, क्योंकि खेती-किसानी को इससे खूब फायदा होता था। मगर बदलते काल-खंड में शासन-व्यवस्था ने नदियों को बांधने की नीति अपनाई। नतीजतन, बांध तोड़ता सैलाब कस्बों-गांवों में ठहरने लगा और बाढ़ धीरे-धीरे 'शाप' में ढलती चली गई। यह किताब पानी की इस पूरी यात्रा का ही शाब्दिक चित्रण है, जिसमें बिहार की बाढ़-सूखाड़ के दस साल के काल-खंड का अध्ययन किया गया है।

यह समाज और शासन-व्यवस्था के अंतर्संबंधों का एक ऐतिहासिक दस्तावेज है। आजादी के तुरंत बाद की 1948 की बाढ़ हो या 1950, 51 और 52 के सूखे की चर्चा या फिर 1953, 54, 55 और 56 का सैलाब- इसमें तथ्यों के साथ बताया गया है कि राज्य में पानी किस कदर उपलब्ध था और उसके उपयोग को लेकर हमारी नीतियां कैसी रहीं? बिना अपनी राय रखे लेखक यथार्थ को सामने रख देते हैं। जैसे- बाढ़ और सूखे के घटनाक्रम को जानने के लिए जब वह सिंचाई विभाग के पास पहुंचे, तो उनको बताया गया कि विभाग के पास जो कुछ था, वह तो 1975 की बाढ़ में गल चुका है। लिहाजा, लेखक ने अखबारों को अपना स्रोत बनाया, पर उसकी दरयाफ्त करने के लिए संबंधित इलाकों में भी गए और वहां के बुजुर्गों से बात की। उन सबकी यादें हुबहू इसमें शामिल की गई हैं।

इस क्रम में कई दिलचस्प खुलासे भी होते हैं। मसलन, 1954 की बाढ़ तो कई उम्रदराजों को याद है, लेकिन शायद उन्हें यह नहीं पता कि उस साल हथिया नक्षत्र में बारिश हुई ही नहीं थी, जिस कारण रबी की फसलें कमोबेश खेतों में ही झुलस गई थीं। इसी तरह, 1956 एक ऐसा साल था, जिसमें बिहार ने बाढ़ और सूखा, दोनों एक साथ झेला था। बाद के वर्षों में तो आंधी और पानी का उपद्रव अप्रैल-मई महीने में भी देखा गया, जबकि नदियों में नवंबर महीने तक बाढ़ की प्रवृत्ति बनी रही। बिहार की यह विडंबना ही है कि नेपाल में अच्छी-खासी वर्षा इस राज्य को डुबोने लगती है, लेकिन स्थानीय स्तर पर बारिश न होने पर नदियों के एकाध किलोमीटर पीछे के इलाके भी सूखे से तपते दिखते हैं। संदर्भों की यह जमीनी पड़ताल इस किताब को संग्रहणीय बनाती है। वैसे भी, दिनेश कुमार मिश्र उन चंद जहीनों में गिने जाते हैं, जिन्होंने पानी पर गंभीरता से काम किया है।

बिहार नदियों के मामले में खासा संपन्न रहा है। यह पुस्तक भी बताती है कि आजादी के शुरुआती वर्षों में यहां के उत्तरी और दक्षिणी हिस्से में 115 से अधिक नदियां कलकल बहा करती थीं। ऐसे में, यह सवाल अर्थपूर्ण बन जाता है कि नदियों को लेकर क्या किया गया? कालांतर में सदानीराएं आखिर सूखने क्यों लगीं? बेशक, विकल्प के रूप में तटबंध बनाए गए, लेकिन जैसे-जैसे बांधों की लंबाई बढ़ती गई, बाढ़ प्रवण क्षेत्रों में इजाफा भी होता गया।

सवाल सिर्फ बाढ़ का नहीं, सुखाड़ का भी है, जिनकी वजहों की पड़ताल यह किताब करती है और यह बताती है कि हमसे कहां-कहां नीतिगत चूकें हुईं। प्रकृति जब अतिवृष्टि और अनावृष्टि की आंख-मिचौली ज्यादा खेलने लगी हो, तब इस तरह के संतुलन की दरकार है भी।

- हेमेन्द्र मिश्र

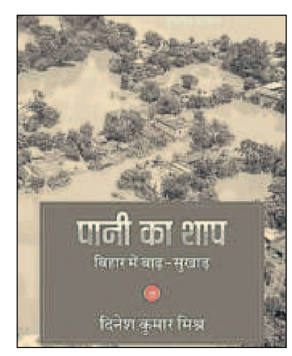

**पानी का शाप**
**बिहार में बाढ़-सुखाड़**
**लेखक :** दिनेश कुमार मिश्र
**प्रकाशक :** राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
**मूल्य :** ₹599

## रोजनामचा

### साप्ताहिक भविष्यफल
(05 अप्रैल से 11 अप्रैल 2026)

पं. राघवेन्द्र शर्मा
ज्योतिषाचार्य

स्कैन करें
भविष्यफल और व्रत-त्योहार जानने के लिए

**मेष (21 मार्च-20 अप्रैल)**
आत्मविश्वास में कमी रहेगी। मन में उतार-चढ़ाव भी हो सकते हैं। दांपत्य सुख में वृद्धि होगी। वस्त्रों व संगीत के प्रति रुझान बढ़ सकता है। परिवार के साथ यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। सेहत का ध्यान रखें।

**वृष (21 अप्रैल-20 मई)**
मन परेशान रहेगा। आत्मविश्वास में कमी रहेगी। आत्मसंयत रहें। धैर्यशीलता बनाए रखने का प्रयास करें। सेहत के प्रति सचेत रहें। नौकरी में अफसरों का सहयोग मिलेगा।

**मिथुन (21 मई-21 जून)**
आत्मविश्वास भरपूर रहेगा, परंतु मन में उतार-चढ़ाव हो सकते हैं। पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। कारोबार में वृद्धि होगी। कारोबार के लिए किसी दूसरे स्थान पर भी जा सकते हैं।

**कर्क (22 जून-23 जुलाई)**
आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। नौकरी में अफसरों का सहयोग मिलेगा। कार्यक्षेत्र में बदलाव के साथ कार्यभार बढ़ सकता है। परिश्रम अधिक रहेगा।

**सिंह (24 जुलाई-22 अगस्त)**
मन परेशान रहेगा। आत्मविश्वास में कमी रहेगी। परिवार की सेहत का ध्यान रखें। भागदौड़ अधिक रहेगी। रहन-सहन कष्टमय हो सकता है। पिता का साथ मिलेगा। कारोबार में वृद्धि होगी।

**कन्या (23 अगस्त-22 सितंबर)**
आत्मविश्वास में कमी रहेगी। मन भी परेशान रहेगा। आत्मसंयत रहें। नौकरी में बदलाव के योग बन रहे हैं। कार्यक्षेत्र में भी बदलाव के साथ कार्यभार बढ़ सकता है। परिश्रम अधिक रहेगा।

**तुला (23 सितंबर-23 अक्तूबर)**
आत्मविश्वास भरपूर रहेगा, परंतु मन में उतार-चढ़ाव हो सकते हैं। शैक्षिक कार्यों में सफलता मिलेगी। किसी मित्र के सहयोग से किसी नए कारोबार की शुरुआत हो सकती है।

**वृश्चिक (24 अक्तूबर-21 नवंबर)**
आत्मविश्वास भरपूर रहेगा, परंतु मन परेशान हो सकता है। संयत रहें। परिवार के साथ किसी धार्मिक स्थान पर जा सकते हैं। मित्रों का सहयोग मिल सकता है। कारोबार में वृद्धि होगी।

**धनु (22 नवंबर-21 दिसंबर)**
मन प्रसन्न रहेगा। आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। लेखनादि-बौद्धिक कार्यों में व्यस्तता बढ़ सकती है। आय में वृद्धि होगी। मान-सम्मान की प्राप्ति भी हो सकती है। नौकरी में बदलाव के योग बन रहे हैं।

**मकर (22 दिसंबर-19 जनवरी)**
आत्मविश्वास से परिपूर्ण रहेंगे। परिवार में धार्मिक कार्य हो सकते हैं। भागदौड़ अधिक रहेगी। शैक्षिक कार्यों में कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। सचेत रहें। वाणी के प्रभाव में वृद्धि होगी।

**कुंभ (20 जनवरी-18 फरवरी)**
मन में उतार-चढ़ाव रहेंगे। संतान सुख में वृद्धि होगी। शैक्षिक कार्यों में सफलता मिलेगी। बौद्धिक कार्यों से आय में वृद्धि हो सकती है। कारोबारी कार्यों में रुझान बढ़ सकता है।

**मीन (19 फरवरी-20 मार्च)**
आत्मविश्वास भरपूर रहेगा, परंतु मन परेशान भी हो सकता है। आत्मसंयत रहें। क्रोध के अतिरेक से बचें। परिवार में शांति बनाए रखने का प्रयास करें। नौकरी में अफसरों का सहयोग मिलेगा। आय में वृद्धि होगी।

### वर्ग पहेली : 8289

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | | 2 | | ■ | 3 | ■ | 4 | ■ |
| | ■ | | ■ | 5 | | | | |
| 6 | | | | | | ■ | | ■ |
| | ■ | | ■ | | ■ | 7 | ■ | 8 |
| 9 | | | | ■ | 10 | | | |
| | ■ | | ■ | 11 | ■ | | ■ | |
| ■ | 12 | ■ | 13 | | | | | |
| 14 | | | | | ■ | | ■ | |
| ■ | | ■ | | ■ | 15 | | | |

**बाएं से दाएं**

1. अनुमान; कल्पना; कयास; तखमीना (4)
5. रक्षा के लिए तैनात रहना; रखवाली करना; निगरानी करना (3,2)
6. सोचना; संकल्प करना; ध्यान करना; मनन करना (3,3)
9. जाना; प्रस्थान करना; गमन करना; रवाना होना; मरना (4)
10. निरंतर; दन दन शब्द सहित (4)
13. झेलना; बर्दाश्त करना; सहना (3,3)
14. चर्चा करना; वार्तालाप करना; संवाद करना; शुरुआत करना (2,3)
15. कपड़े की बुनावट के धागे; बुनाई में सूत के धागे (2,2)

**ऊपर से नीचे**

1. जिसका विकास कम हुआ हो; कम उन्नत; कम खिला हुआ (6)
2. समझौता करना; वायदा करना (3,3)
3. झेलना; बर्दाश्त करना; सहन करना; फल भोगना (3)
4. ज्योतिष में ग्रह नक्षत्र की स्थिति का फल; व्याकरण में अक्षर परिवर्तन; हिदायत; हुक्म (3)
5. तह; पपड़ी; सतह; स्तर (3)
7. खराबी करना; नष्ट करना; हानि करना (3,3)
8. अन्यमनस्कता दिखाना; उदास होना; खिन्न होना (4,2)
11. बोलना; प्रकट करना; सूचना देना; सुनाना; आदेश (3)
12. कृशकाय; क्षीणकाय; बारीक (3)
13. निष्कपट; सच्चा; सहज; सुगम; आसान (3)

**हरीश चन्द्र सन्सी, विविधा विधा, दिल्ली**
(उत्तर अगले अंक में)

**वर्ग पहेली 8288 का उत्तर**

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 ब | खा | 2 न | क | 3 र | ना | ■ | 4 ग | ■ |
| र | ■ | म | ■ | सा | ■ | 5 स | त | ह |
| 6 स | ह | न | शी | ल | ता | ■ | ब | ■ |
| ना | ■ | क | ■ | य | ■ | 7 भ | न | क |
| ■ | 8 हा | र | ना | ■ | 9 ज | ला | ना | ■ |
| 10 म | थ | ना | ■ | 11 घ | ■ | ई | ■ | 12 आ |
| ■ | म | ■ | 13 स | र | ल | क | र | ना |
| 14 च | ल | ना | ■ | वा | ■ | र | ■ | जा |
| ■ | ना | ■ | 15 उ | ला | ह | ना | दे | ना |

### सुडोकू : 8271
*मध्यम

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 3 | | | | 8 | | | | |
| | 8 | | | | | 5 | 9 | |
| | | 6 | 5 | | | 8 | | 7 |
| 2 | | 3 | | | | | 1 | |
| | | | 4 | 7 | 3 | | | |
| | 6 | | | | | 3 | | 4 |
| 5 | | 9 | | | 7 | 1 | | |
| | 7 | 8 | | | | | 2 | |
| | | | | 2 | | | | 9 |

खेलने का तरीका : दिमागी खेल और नंबरों की पहेली है यह। तर्क से इसे हल कर सकते हैं। ऊपर नौ-नौ खानों के नौ खाने दिए गए हैं। आपको 1 से 9 की संख्याएं इस तरह लिखनी हैं कि खड़ी और पड़ी लाइनों के हरेक खाने में 1 से 9 की सभी संख्याएं आएं। साथ ही 3×3 के हरेक बक्से में भी 1 से 9 तक की संख्याएं हों। पहेली का हल हम कल देंगे।

**हल : सुडोकू नं. 8270**

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 8 | 1 | 2 | 6 | 3 | 9 | 7 | 5 | 4 |
| 7 | 5 | 3 | 4 | 2 | 1 | 8 | 9 | 6 |
| 9 | 4 | 6 | 8 | 7 | 5 | 2 | 1 | 3 |
| 3 | 6 | 7 | 1 | 8 | 2 | 9 | 4 | 5 |
| 4 | 9 | 8 | 3 | 5 | 7 | 6 | 2 | 1 |
| 1 | 2 | 5 | 9 | 6 | 4 | 3 | 8 | 7 |
| 6 | 8 | 1 | 5 | 9 | 3 | 4 | 7 | 2 |
| 2 | 3 | 4 | 7 | 1 | 8 | 5 | 6 | 9 |
| 5 | 7 | 9 | 2 | 4 | 6 | 1 | 3 | 8 |

### व्रत और त्योहार | पंचांग | पं. ऋभुकांत गोस्वामी

**05 अप्रैल**, रविवार, **शक संवत्** : 15 चैत्र (सौर) 1948, **पंजाब पंचांग** : 23 चैत्र मास प्रविष्टे 2083, **इस्लाम** : 16 शव्वाल, 1447, **विक्रमी संवत्** : वैशाख कृष्ण तृतीया तिथि दोपहर 12 बजे तक। सिद्धि योग, विष्टि (भद्रा) करण दोपहर 12 बजे तक। चंद्रमा तुला राशि में सायं 05.28 मिनट तक उपरांत वृश्चिक राशि में।

**सूर्य उत्तरायण।** सायं 04.30 मिनट से सायं 06 बजे तक राहुकालम्। भद्रा दोपहर 12 बजे तक। संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत। ब्रह्मावर्त (बिठूर) में सिद्ध गणेश मंदिर में अभिषेक।

### वास्तु सलाह | आचार्य मुकुल रस्तोगी

**मेरा घर पश्चिम मुखी है। कृपया पश्चिम दिशा के द्वार वाले घर से संबंधित वास्तु नियमों की जानकारी दें।**
**-गति गर्ग, मेरठ**

- ऐसा घर शनि ग्रह की ऊर्जा पर चलता है।
- इस घर के अंदर एक कमरे में हल्का स्लेटी तथा बाकी घर का हल्का क्रीम रंग ठीक होता है।
- मुख्य द्वार पर शाम के समय सरसों के तेल का दीया जलाना शुभ होता है।
- ऐसा घर धीरे-धीरे, लेकिन लंबी सफलता देता है।
- ऐसे घर में यदि मुख्य द्वार शुभ पद में हो, तो धन संचय भी अच्छा होता है।
- ऐसे घर में धातु, लोहे या स्टील का गेट शुभ होता है।

जनसत्ता सरोकार | सम-सामयिक | एक
जनसत्ता | 5 अप्रैल, 2026

# अस्थिर नीति के अग्रदूत बन चुके हैं डोनाल्ड ट्रंप
## 'अमेरिका प्रथम' से 'अमेरिका अकेला' तक का सफर

डोनाल्ड ट्रंप के राष्ट्र के नाम संबोधन के बाद वाशिंगटन के गलियारों में एक ही सवाल है- क्या अमेरिका अब भी दुनिया का नेतृत्व कर रहा है, या हमारी शक्ति अब सिर्फ हमारा भ्रम है। डोनाल्ड ट्रंप का 'अमेरिका प्रथम' का नारा अब 'अमेरिका अकेला' में तब्दील होता दिख रहा है। शांति के नोबेल के तलबगार अब अशांति के अग्रदूत बन गए हैं। भ्रम फैलाए रखना ट्रंप की शैली बन गई है। जो अस्थिरता उनके व्यक्तित्व में है, अब वह अमेरिकी विदेश नीति की पहचान बन गई है। ट्रंप और उनके हथियार 'भ्रम' पर सरोकार की पड़ताल।

# अहं भ्रम

जनसत्ता सरोकार

**आपरेशन** एपिक फ्यूरी के 33 दिन बाद एक अप्रैल 2026 की रात डोनाल्ड ट्रंप ने अमेरिका को संबोधित किया। करीब 20 मिनट का भाषण था। चार बातें कहीं- ईरान युद्ध जरूरी था, जीत गए, जारी रहेगा, जल्द खत्म होगा। यही बातें वे हर रोज कहते हैं। कुछ नया नहीं था। जानकारों ने कहा-लोगों को किसी बड़ी घोषणा की उम्मीद थी। मिली वही पुरानी बयानबाजी।

***राष्ट्र के नाम संबोधन : जो नहीं बोला वह अहम***

जब ट्रंप माइक के सामने आए, अमेरिकी जनता को उम्मीद थी कि या तो युद्ध खत्म होने की घोषणा होगी या कोई बड़ा रणनीतिक एलान। 20 मिनट बाद लोगों को अहसास हुआ कि यह भाषण नहीं प्रचार था। हमारी सेना ने अभूतपूर्व जीत हासिल की है। ईरान की नौसेना गई। वायुसेना खत्म है। ये वही बातें थीं जो ट्रंप ट्रुथ सोशल पर रोज लिखते हैं।

इसमें एक वह विरोधाभास है, जो भाषण को बेनकाब करता है। 28 फरवरी को युद्ध शुरू करते हुए ट्रंप ने कहा था-जब हम युद्ध खत्म करें, ईरानी जनता अपनी सरकार खुद बना ले। एक अप्रैल को उन्होंने कहा-सत्ता बदलना हमारा लक्ष्य कभी नहीं था, लेकिन सत्ता बदल गई क्योंकि सब मारे गए। एक महीने में उन्होंने अपना ही बयान पलट दिया और इसे जीत बताया।

इस भाषण की एक और विडंबना थी। ट्रंप ने कहा- अमेरिका ऊर्जा में पूरी तरह स्वतंत्र है, मध्य-पूर्व पर निर्भर नहीं। लेकिन उसी दिन अमेरिका में पेट्रोल का औसत दाम चार अमेरिकी डालर प्रति गैलन पार कर गया। एक महीने में 30 फीसद की वृद्धि। ट्रंप की अर्थव्यवस्था पर अनुमोदन दर गिरकर 31 फीसद पर आ गई। यह उनके दूसरे कार्यकाल की सबसे निम्न दर है।

***अनुमोदन : हर चुनाव एक नई गिरावट***

यूनिवर्सिटी आफ मैसाचुसेट्स एमहर्स्ट के 31 मार्च के सर्वेक्षण में ट्रंप का अनुमोदन 33 फीसद था।। रायटर्स/इपसास में 36 फीसद यानी एक हफ्ते में 40 से 36 की गिरावट। सिल्वर बुलेटिन के अनुसार शुद्ध अनुमोदन -16.7 था जो दूसरे कार्यकाल का निम्न रिकार्ड है। तुलनात्मक रूप से देखें तो जो बाइडेन अपने कार्यकाल के इसी बिंदु पर -11.7 के अंक पर थे। फाक्स न्यूज जैसे ट्रंप समर्थक चैनल के सर्वेक्षण में भी 80 फीसद अमेरिकी पेट्रोल दाम को लेकर चिंतित थे। कई सर्वेक्षणों में मार्च-अप्रैल 2026 में 61 फीसद अमेरिकी ईरान युद्ध के विरोध में हैं। एक महीने में 18 फीसद की वृद्धि। 62 फीसद कहते हैं, देश गलत दिशा में जा रहा है। एनपीआर के अनुसार, इराक युद्ध को साल 2003 के शुरू में 70 फीसद समर्थन था। लेकिन मौजूदा युद्ध शुरू से ही अलोकप्रिय था। जनता इसकी आदी नहीं हो पाई।

***अपहरण बनाम वेनेजुएला का सत्ता हस्तांतरण***

तीन जनवरी 2026 की सुबह दुनिया चौंक गई। अमेरिकी सेना ने 'आपरेशन एब्सोल्यूट रिजाल्व' के तहत वेनेजुएला पर हमला किया। राष्ट्रपति निकोलास मादुरो और उनकी पत्नी को मादक पदार्थों की तस्करी के आरोप में अपहृत कर न्यूयार्क लाया गया। ट्रंप ने कहा-अमेरिका सत्ता हस्तांतरण तक वेनेजुएला को चलाएगा। ट्रुथ सोशल पर उन्होंने खुद को वेनेजुएला का कार्यकारी राष्ट्रपति बताने वाला स्क्रीनशाट पोस्ट किया।

इसके बाद ट्रंप ने अपनी इस नीति को नाम दिया - डान-रो डाक्ट्रिन जो 19वीं सदी के मोनरो डाक्ट्रिन का आधुनिक संस्करण है। उन्होंने कहा-'पश्चिमी गोलार्द्ध में अमेरिकी प्रभुत्व पर कभी सवाल नहीं उठाया जाएगा। मार्च 2026 में वर्ल्ड बेसबाल क्लासिक में वेनेजुएला के जीतने के बाद ट्रंप ने दो बार कहा-वेनेजुएला को 51वां राज्य बनाया जाए। इससे पहले वे कनाडा, ग्रीनलैंड और पनामा के लिए भी यही कह चुके थे।

***ग्रीनलैंड और कनाडा- हम बिक्री के लिए नहीं***

जनवरी 2026 में ट्रंप ने डेनमार्क सहित आठ यूरोपीय देशों फ्रांस, जर्मनी, ब्रिटेन, नार्वे, स्वीडन, फिनलैंड, नीदरलैंड को धमकी दी कि ग्रीनलैंड के समर्थन में तैनात उनकी सेनाओं को वापस न बुलाने पर 10 फीसद (जून तक 25 फीसद) शुल्क लगाया जाएगा। आठों देशों ने संयुक्त बयान जारी किया-यह नाटो संबंधों के लिए खतरनाक पतन है। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री स्टार्मर ने कहा- सहयोगियों पर शुल्क की धमकी पूरी तरह गलत है।

इक्कीस जनवरी को दावोस में नाटो प्रमुख मार्क रूते से मुलाकात के बाद ट्रंप ने पलटी मारी। कहा, 'हम आर्कटिक पर एक सौदे पर पहुंच गए हैं।' शुल्क की धमकी वापस ली। लेकिन ग्रीनलैंड की संप्रभुता पर कोई स्पष्टता नहीं। डेनमार्क और ग्रीनलैंड के नेताओं ने कहा कि ग्रीनलैंड बिक्री के लिए नहीं है। कनाडा पर उन्होंने 35 फीसद शुल्क लगाया और प्रधानमंत्री मार्क कार्नी को गवर्नर कार्नी कहकर बुलाया।

***नाटो : अप्रासंगिक या अस्तित्व का सवाल?***

ईरान युद्ध में जब यूरोपीय देशों ने होर्मुज जलसंधि खोलने के लिए अमेरिका के नौसेना गठबंधन में शामिल होने से मना किया, तो ट्रंप ने कहा- वे नाटो छोड़ने पर विचार कर रहे हैं। जर्मनी ने कहा- यह हमारा युद्ध नहीं है। फ्रांस, ब्रिटेन, स्पेन ने भी सैन्य भागीदारी से इनकार किया। नाटो महासचिव रूते बोले- नाटो के सदस्य होर्मुज जलमार्ग खोलने के सबसे अच्छे तरीके पर चर्चा कर रहे हैं।

टिप्पणीकारों के मुताबिक ट्रंप ने अपने पूर्व नाटो राजदूत इवो डाल्डर की टिप्पणी को सही साबित कर दिया कि ट्रंप के नेतृत्व में नियम-आधारित विश्व व्यवस्था व्यावहारिक रूप से समाप्त हो गई है। यूरोप पहली बार अपनी सुरक्षा की जिम्मेदारी खुद लेने की बात कर रहा है। जर्मनी ने रक्षा बजट रिकार्ड स्तर तक बढ़ाया। फ्रांस ने ईयू की स्वायत्त सुरक्षा नीति की मांग की।

***भारतीय तटस्थता पसंद नहीं***

ट्रंप की डान-रो डाक्ट्रिन भारत के लिए एक बड़ा संदेश है। पश्चिमी गोलार्द्ध हमारा है, यह वही सोच है जो हिंद-प्रशांत क्षेत्र तक फैल सकती है। भारत-अमेरिका व्यापार में तनाव है। ट्रंप ने भारत पर भी शुल्क की धमकियां दी हैं। ईरान युद्ध में भारत की तटस्थता ट्रंप को पसंद नहीं। होर्मुज बंद होने से भारत को भारी नुकसान हुआ। 22 जहाज फंसे। दूसरी तरफ कनाडा, यूरोप, जापान, दक्षिण कोरिया सब ट्रंप की नीतियों से त्रस्त हैं। उनके खिलाफ एक नया वैश्विक गठबंधन बन रहा है। कनाडा के मार्क कार्नी के शब्दों में, जो मेज पर नहीं हैं, वे मेनू में हैं। एक सबसे अहम कोण की भारत में सबसे कम चर्चा है, वह है ट्रंप का अपने ही देश में अलगाव। 'एमएजीए' आंदोलन के भीतर दरार पड़ रही है। कुछ समर्थक जो विदेश में युद्ध के खिलाफ थे, इस ईरान युद्ध को लेकर असहज हैं। अमेरिकी कांग्रेस में द्विदलीय आवाजें उठी हैं। ट्रंप ने संसदीय अनुमोदन के बिना युद्ध छेड़ा। यह संवैधानिक प्रश्न अभी तक अनुत्तरित है। इस बीच, अमेरिका के सेना प्रमुख को पद छोड़ने का आदेश देने पर अमेरिकी जानकार भौंचक्के हैं।

> **आपरेशन** एपिक फ्यूरी में अमेरिका अकेला खड़ा है। इजराइल साथ है, पर यूरोप ने किनारा कर लिया। नाटो का रुख इसके 75 साल पुराने इतिहास में पन्ने पलटने को तैयार है। उसका रवैया इस सबसे पुराने मजबूत सैन्य गठबंधन की भाषा नहीं है।

***पलटते रहे बयान***

ट्रंप का बयानों से पलटना वैश्विक अनिश्चितता का द्योतक है। जब दुनिया के सबसे शक्तिशाली देश का नेता एक दिन कुछ कहे और अगले दिन कुछ और तो सहयोगी देश भी नीति नहीं बना पाते। यूरोपीय देश अब ट्रंप के बयानों की आधिकारिक नीति के रूप में व्याख्या करना बंद कर चुके हैं और सिर्फ लिखित संधियों को मानते हैं।

आपरेशन एपिक फ्यूरी में अमेरिका अकेला खड़ा है। इजराइल साथ है, पर यूरोप ने किनारा कर लिया। नाटो का रुख इसके 75 साल पुराने इतिहास में पन्ने पलटने को तैयार है। उसका रवैया इस सबसे पुराने मजबूत सैन्य गठबंधन की भाषा नहीं है। और इस कड़ी को आगे बढ़ाते हुए ब्रिटेन की पहल पर 60 देशों ने होर्मुज खुलवाने के लिए गहन मंथन किया है, जो अमेरिका से परे एक नए समीकरण का संकेत है। इसमें एशिया भी शामिल था तो यूरोप भी। इराक युद्ध (2003) में भी अमेरिका ने अंतरराष्ट्रीय समर्थन के बिना हमला किया था। पर तब इच्छुक देशों का गठबंधन था। ईरान में केवल इजराइल का साथ था। यह बदलाव ट्रंप के ग्रीनलैंड, कनाडा, वेनेजुएला के बयानों से शुरू हुआ था। सहयोगियों को डराना कोई रणनीति नहीं, विरोधाभास है।

*-प्रस्तुति : संजय शर्मा*

## लेन-देन पर टिकी नीति

***1. वादों का कब्रिस्तान : वेनेजुएला से ग्रीनलैंड तक***

ट्रंप की विदेश नीति लेन-देन पर टिकी है, मूल्यों पर नहीं।

-वेनेजुएला : मादुरो सरकार को गिराने का दावा खोखला साबित हुआ। रूस और चीन की मौजूदगी ने ट्रंप की अधिकतम दबाव रणनीति की हवा निकाल दी।

-ग्रीनलैंड का विवाद : एक संप्रभु राष्ट्र (डेनमार्क के हिस्से) को खरीदने की जिद ने नार्डिक देशों और यूरोप में अमेरिका की हंसी उड़वाई।

**-ईरान और मध्य पूर्व** : परमाणु समझौते (जेसीपीओए) से बाहर निकलकर ट्रंप ने जो हासिल करना चाहा, वह आज भी कोसों दूर है। ईरान अब अधिक आक्रामक है और खाड़ी देशों में असुरक्षा बढ़ी है। क्या सुलेमानी की हत्या से अमेरिका सुरक्षित हुआ? विशेषज्ञों का मानना है कि इससे सिर्फ अराजकता का विस्तार हुआ है।

***2. नाटो और यूरोप का दरकता हुआ साथ***

यूरोपीय देशों का अमेरिका को आंख दिखाना अब आम बात हो गई है। ट्रंप ने नाटो को पुराना और बेकार बताकर दशकों पुराने गठबंधन की नींव हिला दी।

**-जर्मनी और फ्रांस का रुख** : मैक्रों का यह कहना कि नाटो 'ब्रेन डेड' हो चुका है, ट्रंप की नीतियों का ही परिणाम है।

**-आर्थिक नुकसान** : शुल्क युद्ध ने केवल चीन को ही नहीं, बल्कि कनाडा, मेक्सिको और यूरोपीय संघ जैसे सहयोगियों को भी जख्म दिए हैं। अमेरिका के विनिर्माण क्षेत्र में वह उछाल नहीं आया, जिसका वादा किया गया था। उल्टा कच्चे माल की कीमतें बढ़ने से स्थानीय उद्योगों को नुकसान हुआ।

***3. अमेरिका की विश्वसनीयता इतिहास के सबसे निचले चरण पर***

भारत में अक्सर ट्रंप के बयानों की चर्चा होती है, लेकिन जो बात कम पता है वह है प्रशासनिक खोखलापन। ट्रंप ने 'अमेरिकी डीप स्टेट' या संस्थागत ढांचे (विदेश विभाग, सीआइए) पर सीधा हमला किया है। आज अमेरिका के पास कई देशों में राजदूत तक नहीं हैं। पेशेवर राजनयिकों की जगह वफादारों को दी जा रही है। इससे अमेरिका की नीतियों के जरिए दुनिया को चलाने की शक्ति खत्म हो रही है। थिंक-टैंक ब्रूकिंग्स इंस्टीट्यूशन के अनुसार, अमेरिका की विश्वसनीयता इतिहास के सबसे निचले स्तर पर है।

***वैचारिक विभाजन के जिम्मेदार***

ट्रंप का सबसे बड़ा हथियार अस्थिरता है। वे दोस्त और दुश्मन दोनों को भ्रम में रखते हैं। इसे 'मैडमैन थ्योरी' कहा जाता है, लेकिन यह सिद्धांत अब अमेरिका के खिलाफ जा रहा है।

**लोकप्रियता का ग्राफ** : आर्थिक आंकड़ों के बावजूद, ट्रंप की व्यक्तिगत स्वीकार्यता गिरी है। अमेरिका वैचारिक रूप से दो हिस्सों में बंट चुका है-रेड और ब्लू अमेरिका। यह विखंडित मानसिकता समाज के भीतर तक धंस गई है।

***दुश्मन को असमंजस में रखो***

निक्सन के दौर के इस सिद्धांत को ट्रंप ने नए स्तर पर पहुंचाया है। इसमें नेता जानबूझकर खुद को तर्कहीन और अस्थिर दिखाता है ताकि दुश्मन डरकर समझौता कर ले। ट्रंप ने उत्तर कोरिया के किम जोंग-उन के साथ यही किया, लेकिन परिणाम क्या रहा? उत्तर कोरिया ने परमाणु हथियार नहीं छोड़े, बस ट्रंप को तस्वीर खिंचवाने का ही मौका मिला।

***भारत के लिए क्या सबक?***

भारत के लिए ट्रंप एक दोधारी तलवार हैं। वे 'हाउडी मोदी' में गले तो मिलते हैं, लेकिन व्यापारिक शुल्कों (जीएसपी हटाना) पर कोई रियायत नहीं देते। अमेरिका अब एक भरोसेमंद रणनीतिक साझेदार की जगह अब एक व्यापारी की तरह व्यवहार कर रहा है।

## क्या यह महाशक्ति के पतन की शुरुआत है?

जनसत्ता सरोकार

अमेरिकी जानकार एकमत हैं कि डोनाल्ड ट्रंप की नीतियां इस महाशक्ति के पतन की शुरुआत का कारण बन रही हैं। वास्तव में ट्रंप की अस्थिरता चीन के लिए रणनीतिक उपहार है।

**1. साख का संकट** : जब राष्ट्रपति हर 24 घंटे में अपना बयान बदलते हैं, तो मित्र राष्ट्र उन पर भरोसा करना बंद कर देते हैं।

**2. सैन्य थकान** : अमेरिका की हमेशा चलने वाले युद्धों को खत्म करने की चाहत, ट्रंप के नए मोर्चे खोलने के फैसलों से टकरा रही है। देखा जाए तो उनके दूसरे कार्यकाल में ईरान युद्ध अमेरिका के लिए सबसे बड़ा नासूर बन गया है।

**3. ईरान युद्ध की विफलता और आर्थिक चोट**

ईरान के साथ बढ़ते तनाव और हालिया सैन्य झड़पों ने अमेरिका के रणनीतिक आधार को हिला दिया है।

***-अड्डों का विनाश*** : मध्य-पूर्व (इराक और सीरिया) में अमेरिकी सैन्य अड्डों पर हमलों ने वाशिंगटन के सुरक्षा कवच के मिथक को तोड़ दिया है। इन अड्डों की मरम्मत और सुरक्षा बढ़ाने में अरबों डालर का अतिरिक्त बोझ अमेरिकी खजाने पर पड़ा है।

***- रणनीतिक गतिरोध*** : न्यूयार्क टाइम्स के अनुसार, ट्रंप की अधिकतम दबाव नीति ने ईरान को झुकने के बजाय और अधिक आक्रामक बना दिया है। अमेरिका अब एक ऐसे युद्ध में फंस गया है, जिसकी कोई स्पष्ट निकासी योजना नहीं है।

**4. रूस का तेल और 30 दिन की मोहलत : एक जुआ**

ट्रंप ने हाल ही में रूसी तेल पर कड़े प्रतिबंध लगाने और सहयोगियों को इससे बाहर निकलने के लिए 30 दिन की मोहलत दी है। 'द इकोनामिस्ट' ने इसे एक खतरनाक आर्थिक जुआ कहा है।

***- वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में दरार:*** रूस दुनिया के सबसे बड़े तेल और गैस उत्पादकों में से एक है। आपूर्ति अचानक बंद करने से वैश्विक ऊर्जा बाजार में अस्थिरता आ गई है।

***-यूरोप का संकट*** : नाटो सहयोगी और यूरोपीय देश इस फैसले से नाराज हैं। वे अपनी ऊर्जा जरूरतों के लिए रूस पर निर्भर हैं। ट्रंप की इस समयसीमा ने अमेरिका और यूरोप के बीच की खाई को और चौड़ा कर दिया है।

**5. व्यापार शुल्क और युद्ध की छाया**

ट्रंप की व्यापार नीति अब आर्थिक राष्ट्रवाद से बढ़कर आर्थिक युद्ध में तब्दील हो गई है।

***-शुल्क की मार*** : चीन और यूरोपीय देशों पर लगाए गए शुल्कों ने अमेरिकी उपभोक्ताओं के लिए वस्तुओं को महंगा कर दिया है। व्यापार युद्ध के कारण अमेरिकी सोयाबीन किसानों और विनिर्माण क्षेत्र को भारी सबसिडी की जरूरत पड़ रही है।

***-डालर की साख*** : युद्ध जैसी स्थितियों और मनमाने प्रतिबंधों के कारण दुनिया अब व्यापार के लिए डालर के विकल्प खोजने लगी है, जो लंबे समय में अमेरिका के लिए सबसे बड़ी आर्थिक क्षति साबित होगी।

**कितनी महंगी है एक मिसाइल?**

एक मध्यम दूरी की अमेरिकी मिसाइल की कीमत लगभग 1.5 मिलियन से 2 मिलियन डालर के बीच होती है। वास्तव में डोनाल्ड ट्रंप का कार्ड अब अमेरिका के अपने ही वैश्विक नेटवर्क को खंडित कर रहा है। रूस के साथ ऊर्जा युद्ध और ईरान के साथ सैन्य तनाव ने अमेरिका को एक ऐसी स्थिति में ला खड़ा किया है जहां वह आर्थिक रूप से कमजोर और कूटनीतिक रूप से अलग-थलग पड़ता जा रहा है। जैसा कि 'द इकोनामिस्ट' ने चेतावनी दी है- एक महाशक्ति की शक्ति उसके प्रक्षेपास्त्रों में नहीं, बल्कि उसकी विश्वसनीयता में होती है, और ट्रंप उसी का सौदा कर रहे हैं।

## सबसे बड़े युद्ध डेमोक्रेटिक राष्ट्रपतियों के कार्यकाल में

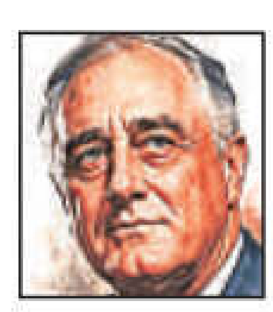

फ्रैंकलिन डी रूजबेल्ट

***1. लोकतंत्र के नाम पर*** : इतिहास गवाह है कि अमेरिका के सबसे बड़े और सबसे भयावह अंतरराष्ट्रीय युद्ध डेमोक्रेटिक पार्टी के राष्ट्रपतियों के कार्यकाल में शुरू हुए या लड़े गए:

***- प्रथम विश्व युद्ध*** : वुड्रो विल्सन (डेमोक्रेटिक)

**- द्वितीय विश्व युद्ध** : फ्रैंकलिन डी रूजवेल्ट (डेमोक्रेटिक)

**-कोरियाई युद्ध** : हैरी ट्रूमैन (डेमोक्रेटिक)

**-वियतनाम युद्ध** (शुरुआत) : जान एफ कैनेडी और लिंडन बी जानसन (दोनों डेमोक्रेटिक)

जान एफ कैनेडी

**निष्कर्ष** : डेमोक्रेटिक पार्टी को ऐतिहासिक रूप से उदारवादी हस्तक्षेपवादी माना जाता रहा है, जो दुनिया में लोकतंत्र बचाने के नाम पर युद्ध में कूदे।

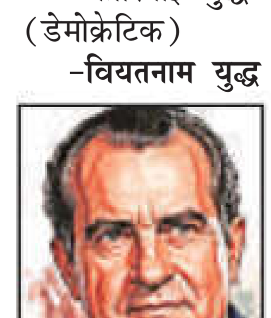

रिचर्ड निक्सन

***2. आधुनिक और अंतहीन युद्ध*** : रिपब्लिकन का पलड़ा भारी। 20वीं सदी के अंत और 21वीं सदी की शुरुआत में रिपब्लिकन राष्ट्रपतियों ने अधिक आक्रामक सैन्य नीतियां अपनाईं।

**-खाड़ी युद्ध** : जार्ज एच डब्ल्यू बुश (रिपब्लिकन)

जार्ज एच बुश

**-अफगानिस्तान युद्ध** : जार्ज डब्ल्यू बुश (रिपब्लिकन)

**-इराक युद्ध** : जार्ज डब्ल्यू बुश (रिपब्लिकन)

**निष्कर्ष** : रिपब्लिकन पार्टी को हाल के दशकों में युद्ध-समर्थक माना गया, जिन्होंने आतंकवाद के खिलाफ युद्ध के नाम पर दूसरे देशों में शासन बदलने की कोशिश की।

इतिहास में जहां डेमोक्रेटिक पार्टी ने दुनिया में लोकतंत्र को बचाने के लिए युद्ध लड़े और रिपब्लिकन ने दुश्मन को खत्म करने के लिए, वहीं ट्रंप एक नई श्रेणी के राष्ट्रपति हैं जो युद्ध के मैदान से तो भागते हैं, लेकिन आर्थिक और कूटनीतिक मोर्चों पर इतनी अस्थिरता पैदा कर देते हैं कि अमेरिका के पुराने साथी भी अब उन्हें युद्ध-दूत मानने लगे हैं।

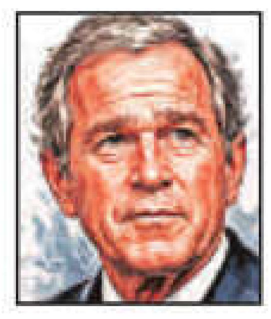

जार्ज डब्ल्यू बुश

***एक खास बात*** : अगर केवल सैन्य दखल की संख्या गिनें, तो डेमोक्रेटिक राष्ट्रपतियों का रिकार्ड थोड़ा ऊपर रहता है, लेकिन रक्षा बजट और हथियारों की होड़ देखें, तो रिपब्लिकन हमेशा आगे रहे हैं।

# अप्रैल के चुनावी फूल

## दूसरी नजर

पी चिदंबरम

**केरल, तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल में चुनौती देने वाली पार्टी भाजपा है, जिसने वैचारिक रूप से खुद को दक्षिणपंथी खेमे में स्थापित किया है। मैं दक्षिणपंथी विचारधारा में आरएसएस को इससे आगे मान सकता हूं, लेकिन उसका दावा है कि वह एक राजनीतिक दल नहीं है। हालांकि, आरएसएस अनिच्छा से स्वीकार करता है कि उसके प्रमुख नेता भाजपा संगठन में महत्त्वपूर्ण पदों पर रहे हैं और अभी भी हैं, इसके अलावा भाजपा सरकारों के कई मंत्री प्रचारक रहे हैं और स्वयंसेवक बने हुए हैं।**

मुझे नहीं पता कि कौन-से ग्रह एक साथ आएंगे या कौन-सा ग्रह वक्री होगा, लेकिन भारत के राजनीतिक परिदृश्य को देखते हुए मैं कह सकता हूं कि 'हम रोचक दौर से गुजर रहे हैं'।

### विपरीत विचारधारा

असम, केरल, पुदुचेरी (केंद्रशासित प्रदेश), तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल में विधानसभा चुनाव 9, 23 और 30 अप्रैल को होंगे। हाल के वर्षों में पहली बार भाजपा केरल, तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल में स्थापित वाम-उदारवादी राजनीतिक दलों को चुनौती दे रही है। वैचारिक दृष्टि से केरल में यूडीएफ यानी यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट और एलडीएफ यानी लेफ्ट डेमोक्रेटिक फ्रंट, दोनों ही वाम केंद्रित हैं। तमिलनाडु में द्रमुक के नेतृत्व वाला गठबंधन (जिसमें कांग्रेस भी शामिल है) और पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस स्पष्ट रूप से वाम-उदारवादी दल हैं। ये सभी संविधान, संघवाद, संसद या विधानमंडल की सर्वोच्चता, धर्मनिरपेक्षता, सामाजिक न्याय, समान विकास, कल्याणकारी उपाय, मीडिया की स्वतंत्रता और उदार अर्थव्यवस्था के समर्थक हैं। एलडीएफ, द्रमुक और तृणमूल कांग्रेस अपने-अपने राज्य में सरकार चला रहे हैं।

चुनौती देने वाली पार्टी भाजपा है, जिसने वैचारिक रूप से खुद को दक्षिणपंथी खेमे में स्थापित किया है। मैं दक्षिणपंथी विचारधारा में केवल आरएसएस को इससे आगे मान सकता हूं, लेकिन उसका दावा है कि वह एक राजनीतिक दल नहीं है। हालांकि, आरएसएस अनिच्छा से स्वीकार करता है कि उसके प्रमुख नेता भाजपा संगठन में महत्त्वपूर्ण पदों पर रहे हैं और अभी भी हैं, इसके अलावा भाजपा सरकारों के कई मंत्री प्रचारक रहे हैं और स्वयंसेवक बने हुए हैं। आम नागरिक आरएसएस को जनक और भाजपा को उसकी संतान के रूप में देखता है। भाजपा की नीतियां तथा उसकी सरकार के कानून हिंदू वर्चस्व (हिंदुत्व), वैदिक ग्रंथों और प्रथाओं में आस्था, आर्य सभ्यता या संस्कृति, केंद्रीकरण, कार्यपालिका की प्रधानता, एक साझा भाषा (हिंदी), शाकाहार, एक राष्ट्र-एक सरकार और कोरियाई चैबोल जैसे व्यापारिक घरानों से मैत्रीपूर्ण संबंधों के विचारों पर आधारित हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा ने वर्ष 2014 तक चले आ रहे आम सहमति के दौर से जानबूझकर नाता तोड़ लिया है।

इन तीनों राज्यों में चुनावी मुकाबला वाम-उदारवादी और दक्षिणपंथी राजनीतिक दलों के बीच होगा।

### केरल

यहां कांग्रेस के नेतृत्व वाले यूडीएफ और माकपा के नेतृत्व वाले एलडीएफ का पिछले पचास वर्षों से दबदबा रहा है। छोटे दल इनमें से किसी एक गुट की ओर आकर्षित होते रहे हैं। केरल के मतदाता कभी यूडीएफ तो कभी एलडीएफ को समर्थन देते रहे, लेकिन वर्ष 2021 में उन्होंने इस परंपरा को तोड़ते हुए एलडीएफ को फिर से चुना, जिसने वर्ष 2016 में भी जीत हासिल की थी। दोनों मोर्चे मजबूत हैं और उन्होंने अपनी चुनावी रणनीतियों को और भी प्रभावी बना लिया है। आम राय यह है कि एलडीएफ ने उम्रदराज नेता पिनरई विजयन के नेतृत्व में दो कार्यकाल पूरे कर लिए हैं और अब बदलाव का समय आ गया है। वर्ष 2018 की बाढ़ और 2024 में वायनाड भूस्खलन की घटना के प्रति एलडीएफ सरकार की अकुशल प्रतिक्रिया ने उसकी छवि को गंभीर नुकसान पहुंचाया है। कांग्रेस के पास कई सक्षम और अपेक्षाकृत युवा नेता हैं तथा उसे यूडीएफ की बहुमत से आसान जीत का पूरा भरोसा है।

भाजपा केरल की जनता की नब्ज को समझ नहीं पा रही है। कयास इस बात पर लगाए जा रहे हैं कि भाजपा यहां कितनी सीटें जीत पाएगी, माना जा रहा है कि यह आंकड़ा एक अंक तक ही सीमित रह जाएगा।

### तमिलनाडु

वर्ष 2021 और 2024 का द्रमुक नेतृत्व वाला गठबंधन बरकरार है और एमके स्टालिन ने छोटे दलों को द्रमुक के चुनाव चिह्न पर मैदान में उतरने के लिए राजी कर लिया है। इस रणनीति से वोटों का नुकसान नहीं होगा। वर्ष 2021 (विधानसभा) और 2024 (लोकसभा) के चुनावों के बाद से अन्नाद्रमुक के नेतृत्व वाले गठबंधन के वोटों में गिरावट आई है, लेकिन उसे अन्नाद्रमुक से अलग हुए गुट एएमएमके का समर्थन प्राप्त हो गया है। हालांकि, एक महीने पहले ही एएमएमके ने ई पलानीस्वामी को अन्नाद्रमुक के नेता या गठबंधन के मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार के रूप में कभी स्वीकार न करने की कसम खाई थी!

अन्नाद्रमुक के लिए भाजपा क्या लेकर आती है? निश्चित रूप से केंद्र सरकार की शक्ति, संसाधन, चुनाव आयोग का परोक्ष समर्थन और अपने राष्ट्रीय नेताओं की ध्रुवीकरण वाली बयानबाजी। ये कारक वर्ष 2021 और 2024 में काम नहीं आए थे और शायद 2026 में भी काम न करें। भाजपा 234 में से 27 सीटों पर चुनाव लड़ रही है और वह कितनी सीटें जीतेगी, इस पर अटकलें निचले एक अंक से लेकर दस तक के बीच हैं।

जोसेफ विजय द्वारा स्थापित टीवीके तथा एनटीके की उपस्थिति और वोटों को विभाजित करने की उनकी क्षमता के कारण, प्रत्येक निर्वाचन क्षेत्र में चुनाव कांटे की टक्कर का होगा, लेकिन कुल मिलाकर परिणाम एक ही गठबंधन के पक्ष में रहेगा। चुनाव पर्यवेक्षकों और अनुभवी पत्रकारों का मानना है कि द्रमुक के नेतृत्व वाला गठबंधन सत्ता में वापसी करेगा।

### पश्चिम बंगाल

यहां सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस और चुनौती देने वाली भाजपा के बीच सीधा मुकाबला है। पूर्व सत्ताधारी दल- कांग्रेस और माकपा भाजपा पर निशाना साधेंगे, लेकिन इससे अंतिम परिणाम पर कोई खास असर पड़ने की संभावना नहीं है। यह लड़ाई चिर-योद्धा ममता बनर्जी तथा लगातार चुनौती देने वाले नरेंद्र मोदी और अमित शाह के बीच है। यह मुकाबला सिर्फ राजनीतिक नहीं रहा, बल्कि आक्रामक और तीखा रूप ले चुका है। इसने पश्चिम बंगाल के लोगों में अपनी संस्कृति, साहित्य, भाषा, लोकाचार, सांप्रदायिक सद्भाव, देशभक्ति तथा स्वामी विवेकानंद, रवींद्रनाथ टैगोर, बंकिम चंद्र चटर्जी और अमर्त्य सेन जैसे आदर्शों के प्रति श्रद्धा की रक्षा करने की भावना को जागृत किया है। यदि बंगाली गौरव और स्वाभिमान प्रबल होता है, तो ममता बनर्जी और उनकी पार्टी लगातार चौथी बार विजयी होंगी।

ये तीनों राज्य हिंदी भाषी क्षेत्रों से बाहर हैं। यहां प्रत्येक पार्टी का प्रदर्शन उसके भविष्य पर गहरा प्रभाव डालेगा। खासकर भाजपा के लिए यह ज्यादा महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि इन क्षेत्रों के राजनीतिक और सामाजिक लोकाचार में उसे बाहरी पार्टी माना जाता है।

# युद्ध का दलदल

## वक्त की नब्ज

तवलीन सिंह

**पिछले सप्ताह मैंने जब ट्रंप का भाषण सुना ईरान के बारे में, तो मुझे लगा कि वर्तमान दौर में कोई दूसरा राजनेता नहीं होगा, जिसको इतिहास, सभ्यता, संस्कारों को लेकर इतनी अज्ञानता होगी। हैरान रह गई दुनिया के सबसे ताकतवर नेता से यह सुनते हुए कि ईरान को वह तब तक नहीं बख्शेंगे, जब तक उसको 'पाषाण युग' में नहीं पहुंचाते हैं जहां उसकी 'असली जगह है'।**

अमेरिका के बारे में कभी कहा जाता था कि इतना खास देश है यह कि सारी दुनिया के लिए एक मिसाल है। राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन ने इन शब्दों में इस भावना को बयान किया था, 'एक चमकता शहर किसी ऊंचे पहाड़ पर बसा हुआ'। उन्होंने अपने देश के बारे में ऐसा कहा था इसलिए कि उनको यकीन था कि दुनिया के लोग अमेरिका आना चाहते थे, उसकी विचारधारा की वजह से और इस विचारधारा के खंबे हैं बोलने, सोचने, लिखने की आजादी और यह आशा कि यहां कोई भी आगे बढ़ सकता है और रोजगार के इतने अवसर कि बेरोजगार कोई न रहे।

अपनी बात कहूं, तो कहना होगा कि मैं जब भी गई हूं अमेरिका, मुझे वास्तव में इसकी खासियत दिखी है। अटलांटिक महासागर पार करके जब अमेरिका दिखता है विमान की खिड़की से, तो इतना विशाल नजारा है कि ऐसा लगता है कि कुदरत ने जो बाकी देशों को दिया है, उसको दुगना कर अमेरिका को दिया है, इसलिए विमान से भी अमेरिकी भूमि बहुत बड़ी दिखती है। जमीन पर उतरने से पहले ही लगने लगता है कि कहीं बहुत ही खास जगह पहुंच रहे हैं हम, जहां जमीन-आसमान भी बाकी दुनिया के देशों से कहीं ज्यादा बड़ा है।

अक्सर जब गई हूं, तो उतरी हूं न्यूयार्क में। जहां जब भी मैनहैटन दिखता है ब्रुकलिन पुल से, तो उसकी ऊंची इमारतों को देख कर थोड़ी देर के लिए सांसें रुक जाती हैं। अब दुबई और सऊदी अरब जैसे देशों में भी आसमान छूने वाली इमारतें दिखती हैं, लेकिन जिस पैमाने पर न्यूयार्क बना है, उस पैमाने पर किसी और महानगर को अभी तक नहीं बनाया गया है। मेरे कई अमेरिकी दोस्त हैं और यकीन मानिए कि मेरे विदेशी दोस्तों में यह सबसे खास हैं इसलिए कि दिल खोल के दोस्ती जताते हैं ऐसे, जैसे मेरे किसी यूरोपीय दोस्त नहीं कर पाते हैं, तो मेरे लिए वास्तव में शुरू से अमेरिका खास रहा है, लेकिन जबसे डोनाल्ड ट्रंप दूसरी बार राष्ट्रपति बने हैं, मुझे लगने लगा है कि जिस देश के लोगों ने ऐसे व्यक्ति को सबसे ऊंचे ओहदे पर बिठाया है, वे खास नहीं हो सकते हैं।

पिछले सप्ताह मैंने जब ट्रंप का भाषण सुना ईरान के बारे में, मुझे लगा कि वर्तमान दौर में कोई दूसरा राजनेता नहीं होगा, जिसको इतिहास, सभ्यता, संस्कारों को लेकर इतनी अज्ञानता होगी। हैरान रह गई दुनिया के सबसे ताकतवर नेता से सुनते हुए कि ईरान को वह तब तक नहीं बख्शेंगे, जब तक उसको 'पाषाण युग' में नहीं पहुंचाते हैं जहां उसकी 'असली जगह है।' यानी इतनी तबाही करके दिखाएंगे ईरान की कि वह दोबारा पत्थरों से आग जलाना सीखने पर मजबूर होगा और पत्थरों के अलावा उसके पास वार करने के लिए कोई हथियार नहीं रहेगा।

ट्रंप इतनी कम जानकारी नहीं रख रहे होते, तो शायद उनको किसी इतिहास की किताब से मालूम हो गया होता कि जिस देश की बात कर रहे हैं, जिस सभ्यता की बात कर रहे हैं, वह सात हजार वर्ष पुरानी है। जब ट्रंप के पूर्वज यूरोप में पेड़ों पर रहते थे और जंगली घास खाते थे, तब ईरान की सभ्यता इतनी विकसित थी कि यूनान, मिस्र और भारत ही थे उस दौर में, जो ईरान का मुकाबला कर सकते थे। इतिहास बताता है कि जब यूनान का महारथी अलेक्जेंडर ईरान पहुंचा, तो इतना प्रभावित हुआ कि आगे जाना नहीं चाहता था।

माना कि जिस युद्ध को ट्रंप ने गलती से शुरू किया है और जिसमें वे फिलहाल हारते दिख रहे हैं, उसकी तकलीफ तो ट्रंप को होती होगी। फिर भी इतना अज्ञान हैरान कर देता है, ऐसा कहने के बाद, लेकिन मैं यह भी कहना चाहती हूं कि अपने देश के जो मुसलमान इन दिनों ईरान के लिए आंसू बहा रहे हैं, वे शायद भूल रहे हैं कि वर्तमान दौर में ईरान को तबाह किया है उसके अपने शासकों ने ईरान की प्राचीन सभ्यता पर कट्टरता थोप कर।

निजी तौर पर मुझे मुसलमानों से कोई समस्या नहीं है, लेकिन इस्लाम से है, वह इसलिए कि इसमें मालूम नहीं क्या चीज है जो सिखाती है अपने अनुयायियों को कि जो इस्लाम को नहीं मानता, वह नरक में पहुंचेगा। उसमें यह भी माना जाता है हमारे देश के करोड़ों मुसलमानों के बीच कि इस्लाम के आने के पहले भारत में न संस्कृति थी, न सभ्यता। हैरान करने वाली बात है कि कश्मीर के लोग बिल्कुल भूल चुके हैं कि यह वह घाटी थी, जहां कभी सबसे पुराना केंद्र था शिव भक्ति का। यहां लिखी गई थी भारत की सबसे पुरानी इतिहास की किताब। यहां बने थे कभी बेमिसाल मंदिर ऊंची पहाड़ियों पर। इस्लाम के आने के बाद इस प्राचीन सभ्यता को ऐसे भुला दिया गया है कश्मीर में कि जैसे कभी थी ही नहीं।

मेरे कई अच्छे मुसलिम दोस्त हैं जो इन दिनों ईरान की प्राचीन सभ्यता को लेकर आंसू बहा रहे हैं, लेकिन इनसे आज तक मैंने यह नहीं सुना है कि इस संस्कृति को करीबन पूरी तरह तबाह कर दिया गया है पिछले 47 वर्षों में जब अयातुल्ला खामेनेई इस्लामी क्रांति की नींव डालने वापस ईरान लौटे थे। इन सारी बातों को ध्यान में रखते हुए कहना चाहती हूं कि जो ट्रंप ने कहा है ईरान के बारे में, वह सिर्फ उनकी अज्ञानता दर्शाता है। उनकी अज्ञानता ही असली कारण है कि विश्व की सबसे शक्तिशाली सेना फंसती दिख रही है युद्ध के दलदल में। ट्रंप इसको देख कर भागना तो चाहते हैं, लेकिन दलदल में डूबते जा रहे हैं इतनी तेजी से कि पश्चिम के सारे बड़े राजनेता उनका साथ देने से इनकार करते दिख रहे हैं। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री कीर स्टार्मर ने तो कह दिया है- 'यह हमारा युद्ध नहीं है।'

# सरोकार का विस्तार

## संदर्भ

राकेश सिन्हा

**रूस में बोल्शेविक क्रांति (1917) या उससे पूर्व फ्रांस की क्रांति (1789) आदि में क्रांतिकारी और प्रतिक्रांतिकारी, दोनों ताकतों के पास मजबूत बौद्धिक जमात थी। पर भारत की तस्वीर थोड़ी भिन्न है। हालांकि भाजपा क्रांति की बात न करती थी, न करती है, फिर भी इसकी बढ़त किसी रक्तहीन क्रांति से कम नहीं है। इसने राजनीतिक- वैचारिक दुर्गों को गिराने का काम किया है। राजनीतिक क्षितिज पर ऐसे कम नेता रहे हैं, जो धारणाओं के सृजन की क्षमता रखते हैं।**

डेढ़ दशक पूर्व भारतीय जनता पार्टी के लिए विश्लेषकों द्वारा दो विशेषणों का प्रयोग किया जाता था- 'हिंदी क्षेत्र' और 'काउ बेल्ट' की पार्टी। दरअसल, पार्टी का मूल आधार उत्तर भारत के राज्यों तक सीमित था। दक्षिण भारत में कर्नाटक को छोड़कर इसकी उपस्थिति सांकेतिक थी, तो पूर्वोत्तर के राज्यों में शून्य। केरल, जहां राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की उपस्थिति रही है, पार्टी इसका लाभ लेने में असमर्थ थी और इसका वोट वामपंथी पार्टियों या कांग्रेस को हराने में अधिक उपयोगी समझा जाता था। आज स्थिति बदली है। केरल में भाजपा सड़क पर ही नहीं, संसदीय राजनीति में वास्तविक चुनौती बनती जा रही है। तमिलनाडु में सांकेतिकता का युग खत्म हो गया है। भाजपा ने अपने समर्थन आधार और वैचारिक पकड़ को कई गुना बढ़ा लिया है। जनसंघ के संस्थापक डा श्यामा प्रसाद मुखर्जी पश्चिम बंगाल से थे और यहां 'दीया के नीचे ही अंधेरा' की कहावत साबित हो रही थी। पर आज बंगाल में भाजपा सत्ता की प्रमुख दावेदारी के साथ चुनाव लड़ रही है। मगर सबसे गौरतलब इसकी पूर्वोत्तर के राज्यों में पहचान और प्रभाव हैं। इन तथ्यात्मक बातों से किसी की न असहमति हो सकती है, न अनभिज्ञता।

सबसे महत्त्वपूर्ण प्रश्न है कि आखिर यह बदलाव संभव कैसे हो पाया? यह मानना कि कांग्रेस की रिक्तता ने भाजपा को आगे बढ़ा दिया, एक सतही विश्लेषण है, क्योंकि भाजपा सिर्फ नाम से आगे नहीं बढ़ी है। यह एक शुद्ध वैचारिक पार्टी है। आगे बढ़ने में विचारधारा से इसने न तो समझौता किया है, न ही अपराधबोध दिखाया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का भाषण, भाजपा सरकार की नीति और कार्यक्रम इसके गवाह हैं। बल्कि यह वैचारिक आक्रामकता के साथ आगे बढ़ रही है। वे दिन बीत गए, जब पार्टी समान नागरिक कानून, धारा 370, गोहत्या निषेध, राम मंदिर या मुसलिम तुष्टिकरण जैसे प्रश्नों पर रक्षात्मक रहती थी और जब भी 'न्यूनतम साझा कार्यक्रम' बनाने की बात मित्र दलों के साथ होती थी, तब उन्हें ठंडे बस्ते में स्वेच्छा या बाध्यता में रख देती थी। वैसी 'स्वेच्छा' और 'बाध्यता' दोनों अब खत्म हो गई है।

जिन विचारों, प्रशिक्षण और मिशन के साथ यह हिंदी प्रदेशों की पार्टी थी, अब उन्हीं विचारों, प्रशिक्षण और मिशन के साथ यह कश्मीर से कन्याकुमारी तक की पार्टी बन गई है। इसलिए 'हिंदी क्षेत्र' या 'काउ बेल्ट' जैसे विशेषण पूर्व जन्म की कहानी जैसा हो गए हैं। इस विस्तार में नेतृत्व की अहम भूमिका है, क्योंकि प्रकारांतर से कांग्रेस-कम्युनिस्ट भले ही देश की राजनीति में कमजोर हो गए, पर शासन तंत्र, बौद्धिक जगत और विश्लेषकों की जमात में उनका मनोभाव आज भी विद्यमान है।

रूस में बोल्शेविक क्रांति (1917) या उससे पूर्व फ्रांस की क्रांति (1789) आदि में क्रांतिकारी और प्रतिक्रांतिकारी, दोनों ताकतों के पास मजबूत बौद्धिक जमात थी। पर भारत की तस्वीर थोड़ी भिन्न है। हालांकि भाजपा क्रांति की बात न करती थी, न करती है, फिर भी इसकी बढ़त किसी रक्तहीन क्रांति से कम नहीं है। इसने राजनीतिक-वैचारिक दुर्गों को गिराने का काम किया है। राजनीतिक क्षितिज पर ऐसे कम नेता रहे हैं, जो धारणाओं के सृजन की क्षमता रखते हैं। इस दृष्टि से समकालीन वैश्विक पटल पर नरेंद्र मोदी अपवाद की तरह हैं, लेकिन इस बढ़त का एक और निर्णायक आयाम है, जो साधारणतया विश्लेषणों से नजरअंदाज होता रहा है। भारत की दलीय व्यवस्था संवैधानिक व्यवस्था के अंतर्गत है, पर विचारधाराएं जातीय व्यवस्था की तरह संकीर्णता का शिकार होती गईं। 'सेकुलर गोत्र' और 'भगवा गोत्र'- दो विभाजन के साथ-साथ वैचारिक, क्षेत्रीय भाषायी और दलीय संकेतों तथा पहचान के प्रति आग्रह ने कार्यकर्ताओं की सोच तथा दृष्टि के फलक को छोटा बना दिया। सभी पार्टियां कमोबेश इसका शिकार रही हैं। यह दलीय व्यवस्था की स्वाभाविक कमजोरी होती है। नरेंद्र मोदी ने एक राजनीतिक सुधार को सहज तरीके से अंजाम दिया है। भाजपा के कार्यकर्ताओं को गणतंत्र से जुड़े सभी संकेतों, चाहे राष्ट्रगीत हो या तिरंगा झंडा या संविधान, सबको जनभावना से जोड़ने के लिए एक जीवंत उदाहरण बना दिया। संविधान सभा में भले ही 'हम भारत के लोग' के नाम पर सब कुछ किया गया और लोगों ने उसे स्वीकार भी किया, पर उस पर लोक भावना का प्रकटीकरण, लोक विमर्श और लोक अभियान नहीं हुआ था।

वर्ष 2014 के बाद से लगातार तिरंगा यात्रा, संविधान दिवस जैसे कार्यक्रमों ने वह किया, जिसे 1950-60 के दशकों में किया जाना चाहिए था। इसी क्रम में मोदी ने जन कल्याण से जुड़े सरकारी कार्यक्रमों से सामान्य कार्यकर्ताओं को जोड़ दिया। पार्टी इकाइयां जनधन, आयुष्मान, किसानों को मिलने वाली सहायता या गरीबों को मिल रहे अनाज का सर्वेक्षण करने, उसकी सफलता सुनिश्चित करने में लग गई पंडित नेहरू के आसपास स्वतंत्रता सेनानियों की बड़ी जमात थी। वे प्रशिक्षित भी थे, संघर्ष से उपजे आदर्शवादी भी। अगर उनका उपयोग होता, तो भारतीय राष्ट्रवाद और नेहरू का प्रशासन, दोनों लाभान्वित होते।

आज भाजपा की बढ़त सात समुद्र पार करने वाली 'हनुमान कूद' की तरह है। इस कूद ने पार्टी के विचार के क्षितिज का विस्तार कर कार्यकर्ताओं को बड़ी वैश्विक दृष्टि का हिस्सा बनाया, तो दूसरी तरफ गैरदलीय उपेक्षित नागरिकों को भाजपा के विचार और संगठन के अनुकूल बनाने का काम किया है। पर इसकी निरंतरता और मजबूती के लिए वैचारिक योद्धाओं की कमी दूर करना जितना आवश्यक है, उतना ही आवश्यक राजनीतिक गतिविधियों में जन सरोकार के आयाम को सुदृढ़ करना है।

# डरना और डराना

## बाखबर

सुधीश पचौरी

**सबसे अधिक बोलने वाले व्यक्ति हैं 'अंकल सैम'। हर दिन, हर पल अंकल सैम ही बोलते हैं और बोल-बोल कर दुनिया को हिलाते रहते हैं। एक दिन कहते हैं कि हम युद्ध जीत चुके हैं... फिर कहते हैं, मैं चाहूं तो दो सेकंड में युद्ध बंद कर दूं! एक दिन कहते हैं कि ईरान को बर्बाद कर चुका हूं!**

एक चैनल पर अर्थशास्त्री जेफरी : यह युद्ध तुरंत रुकना चाहिए। यह सारी दुनिया के लिए खतरनाक है। ट्रंप 'अस्थिर चित्त' आदमी हैं। जैसी बातें वे बोलते हैं, ऐसी बातें कोई अमेरिकी राष्ट्रपति आज तक नहीं बोला। दुनिया युद्ध का 'तमाशा' देख रही है।

एक अन्य चैनल की चर्चा का विषयः इस युद्ध के केंद्र में 'धार्मिक पदावली' है। वीडियो में एक महिला बाइबिल पढ़ती हुई, उसका गुणगान करती हुई दिखती कि बाइबिल का 'शेर' गरज रहा है। साथ में 'टाम हाक' मिसाइल का इस्तेमाल करने का आह्वान करती हुई कहती है कि फरिश्ते आसमान से उतर रहे हैं।

एक चैनल : ईरान भी धार्मिक प्रतीकों का जम कर उपयोग कर रहा है। यह युद्ध यहूदी धर्म बरक्स इस्लाम धर्म के बीच भी है। कैथोलिक पोप- 'शांति शांति'... यह बमबारी बंद हो। समझौता हो। शांति स्थापित हो। मगर शांति कहीं नजर नहीं आ रही।

एक चैनल बताता है कि 'अंकल सैम' की लोकप्रियता कम होती जा रही है। अमेरिका के कई शहरों में 'नो किंग' के पोस्टर के साथ बड़े-बड़े प्रदर्शन हुए हैं। एक प्रदर्शन में हालीवुड के सितारे 'राबर्ट डी नीरो' भी दिखते हैं। कहा गया कि अंकल सैम खर्ग द्वीप पर अमेरिकी सैनिक उतारेंगे। द्वीप को ध्वस्त करेंगे। ईरान का जवाब- 'वेलकम टू हेल', यानी आइए जहन्नुम में, स्वागत है।

विशेषज्ञ एक सुर में कहते हैं कि क्या अमेरिका अपने सैनिकों को मरने के लिए भेजेगा... कि अमेरिका ने ईरान की 'युद्ध क्षमता' को कम करके आंका... कि अब वह अपनी ही चाल में फंस गया है और किसी तरह निकल भागना चाहता है। मगर ईरान निकलने देगा तब न! वह कह रहा है कि युद्ध अमेरिका ने शुरू किया, लेकिन खत्म हम करेंगे... कि जब तक अमेरिका माफी नहीं मांगता, नुकसान की भरपाई नहीं करता, तब तक लड़ेंगे।

युद्ध विशेषज्ञ डगलस मैकग्रेगर इस युद्ध की 'कीमत' बताते हैं कि जिस रास्ते युद्ध जा रहा है, उससे मंदी आ सकती है और यह अमेरिका को भी चोट पहुंचाएगा। फिर चैनलों पर खुसर-पुसर कि बातचीत शुरू है... कि नहीं है... कि पाक बात कर रहा है... कि ईरान के अनुसार पाक कहीं नहीं है। पाकिस्तान का नाम आते ही अपना विपक्ष सत्ता पक्ष पर ताना मारने लगता है कि पाकिस्तान के मुकाबले विश्व गुरु कहां हैं... जबकि विदेश मंत्री संसद में दो टूक कह चुके हैं कि हम 'दलाल राष्ट्र' नहीं हैं।

फिर एक दिन गृहमंत्री का संसद में बयान कि नक्सलवाद खत्म। कोई 123 जिलों में माओवादियों का राज था अब कुछ जिलों में बचा है। वह भी खत्म होना है और अब 'अर्बन नक्सलों' की नकेल कसी जानी है... आश्चर्य कि इस बार नक्सलवाद के पक्ष में बहुत चीख-पुकार नहीं मची।

तेल रुका, तो सभी चैनल 'होर्मुज-होर्मुज' करने लगे। होर्मुज न खुला तो दुनिया बर्बाद... इसलिए होर्मुज खोला जाए। कभी एक-दो तेल टैंकर बमुश्किल होर्मुज से भारत के लिए निकलते, तो चैनल कहने लगते कि दो आ रहे हैं, दो आने वाले हैं, लेकिन चर्चा में यह डर रहता कि अगर होर्मुज न खुला, तो फिर क्या होगा!

उधर, विपक्ष चैनलों पर इस डर को बढ़ाने में हर समय व्यस्त कि रसोई गैस के लिए लोगों की कतार लगी हैं। रेस्तरां बंद हैं। कोविड वाली पूर्णबंदी की स्थिति है कि रुपया गिर रहा है 'अर्थव्यवस्था मृत'... प्रलय आने वाला है। चैनलों में डर बेचने वाले, डर बेचते रहते है... आश्वस्त करने वाले आश्वासन देते रहते हैं कि न तेल की कमी है, न गैस की... लेकिन डर बेचने वाले डर बेचते रहते हैं। फिर एक दिन सरकार 'वाणिज्यिक रसोई गैस' की कीमतें बढ़ा देती है। सत्ता प्रवक्ता कहते हैं कि डरो नहीं, लेकिन डराने वाले कहते हैं कि डरते रहो, डराते रहो।

सबसे अधिक बोलने वाले व्यक्ति हैं 'अंकल सैम'। हर दिन, हर पल अंकल सैम ही बोलते हैं। एक दिन कहते हैं, हम युद्ध जीत चुके हैं... फिर कहते हैं, मैं चाहूं तो दो सेकंड में युद्ध बंद कर दूं। एक दिन कहते हैं कि ईरान को बर्बाद कर चुका हूं, फिर कहते हैं कि जो बचा है, उसे भी बर्बाद कर दूंगा... ईरान को पाषाण युग में पहुंचा दूंगा। फिर एक दिन वादा करते हैं कि होर्मुज हम खोलेंगे, फिर कह देते हैं जिनके टैंकर अटके हैं, वे खुद खुलवाएं। अंकल सैम की किसी बात का भरोसा नहीं। ऐसे ही एक दिन अंकल सैम कह दिए कि जल्द ही अमेरिका ईरान युद्ध को छोड़ देगा, इसे देख एक चैनल ने लाइन लगाईः ट्रंप 'रण छोड़... रण छोड़...!'

अंत में, बंगाल के मालदा में 'एसआइआर' की निगरानी करने वाले 'न्यायिक अधिकारियों' को बड़ी भीड़ द्वारा नौ घंटे तक बिना 'खाना पानी' बंद रखना और कहने पर भी पुलिस द्वारा जरूरी 'हस्तक्षेप' न करना। फिर सुप्रीम कोर्ट द्वारा इस स्थिति का स्वयं संज्ञान लेना और 'कानून व्यवस्था' की बिगड़ती स्थिति पर राज्य सरकार को फटकारना। यह बंगाल की 'कानून व्यवस्था' की स्थिति के बारे में बहुत कुछ कहता है।

जनसत्ता सरोकार
इंडियन एक्सप्रेस समूह

साहित्य

तीन

जनसत्ता | 5 अप्रैल, 2026

# शबरी का इंतजार

कुसुम भट्ट

कहानी

बकरी मिमियायी, शबरी की नींद उचट गई। बिस्तर गीला था, मारे घिन के शबरी की जीभ से गाली फूटी। उसने चिमनी जलाई, बकरी दयनीय दृष्टि से उसे ताक रही थी। शबरी ने उसे अलग कर गद्दा पलटा और खिड़की से बाहर देखने लगी। बाहर घुप्प अंधेरा था, सहसा कुत्तों के भौंकने का स्वर सुनाई दिया। शबरी थर-थर कांपने लगी। अक्सर कुत्ते तभी भौंकते हैं जब कोई गंध महसूस करते हैं। शबरी को अपने बैल व बकरियों की चिंता होने लगी। गोठ के द्वार कच्चे थे, बाघ कभी भी जानवर पकड़ने घुस सकता था, तभी गोठ में छिड़-छिड़ होने लगी। शबरी डंडा बजाती, हो हल्ला मचाती, सीढ़ियां उतरी। बैल खूंटे से खुल गया था, वह बकरी वाले गोठ में घुस गया था। बकरियां मिमियाने लगीं। बैल को बांधकर शबरी दरवाजे पर लकड़ी फट्टी जमाकर सीढ़ियां चढ़ने लगी तो एकाएक उसे लगा कि उसके साथ कोई साया चल रहा है। कांपते हाथों से उसने दरवाजा बंद कर सांकल चढ़ाई और बकरी के बच्चे के पास लेट गई। बकरी को उसने अपने अकेलेपन से डर कर अपने साथ रखा था।

चिमनी की मरियल पीली रोशनी में बकरी की आंखें चमकने लगी। शबरी को लगा, बकरी के रूप में कोई प्रेतात्मा उसके साथ रह रही है। शबरी का मन हुआ जोर से चिल्लाए, ताकि गांव वालों की नींद में खलल पड़े, वे उसके पास आकर कहें कि तुम इस सूने घर में अकेली नहीं रह सकती। शबरी सोचने लगी, वह कैसी अभागिन है। पांच बेटे-बेटियों के होते अकेले रहने को अभिशप्त है। बेटियां तो एक-एक कर अपने घर चली गईं, पर बेटा उसका अपना क्यों न हुआ? वह अपने घर से दूर...वहां क्यों चला गया? बेटे की याद आते ही वह छटपटाने लगी। उसके मन की करुण पुकार निचाट शून्य में भरने लगी, 'प्रभु! इतनी क्रूर सजा मेरे लिए ही क्यों तय की गई? सभी लोग अपने बाल-बच्चों के साथ सुख की नींद सो रहे हैं, मैं ही एक अभागी जागने पर विवश क्यों?'

आज सुबह जग्गू ने उसे उसके दीपू की लाठी से कोंचा था। क्या कहा था उसने जग्गू को? यही न कि वो उसके ही खेतों में सबसे आखिर में हल जोतता है। इसलिए फसल भी देर से पकती है। जग्गू ने कैसा तीर उसके कलेजे में चुभोया था, 'बौजी! रे! कितना चाहिए तेरे अकेले पेट को? कुलदीपक तो तेरा आने से रहा, उसे तो लूट का माल और जेल की रोटी खाने का चस्का लग चुका है। तेरी मेहनत की कमाई कौन खाएगा अब?' जग्गू के पिचके चेहरे पर विद्रूप मुस्कान थी। जग्गू क्या समझेगा, जिस कुलदीपक के लिए खुद को तिल-तिल मारा, कमलेश्वर के मंदिर में हथेली में जलता दिया थामे वह पूरी रात खड़ी रही थी। संतान के लिए सारे व्रत-अनुष्ठान किए।

गदेरे में पत्थर डालने के बहाने उठी थी वह और पत्थर पर सिर मारकर रो पड़ी। वहां पेड़ों पर बैठे पंछियों ने उसका विलाप सुनकर सहानुभूति जताई होगी, पर जग्गू, वह तो उसकी डबडबायी आंखों में झांक कर कोई मौका नहीं चूकता,

उस दिन जब दीपू के बारे में खबर आई थी तो उसे लगा था कि धरती फट जाए और वो उसमें समा जाए। पर न धरती फटी और न वह उसमें समा पाई, उल्टे जेवर बेच उसे छुड़ाने निकली

'बौजी! देख तो समय की लीला। चाचा कितने भले आदमी हुए। भाई भी भला ही ठहरा। एक ये दीपू कंबख्त किसके पापों का फल हुआ? मरता भी...'। शबरी फफक पड़ती, 'मुझे कुछ भी बोल दे। पर मेरे दीपू को मारना नहीं। अभी उसके बुरे दिन चल रहे। उसका भी समय पलटेगा'। समय ने अपनी केंचुली उतारी जाने कैसे? उसके पति की उतरन पहनने वाले जग्गू की अब कितनी लंबी जीभ हो गई। बेबसी में उसकी आंखें छलकने लगी, 'बचपन क्रूर पिता के आंतक के साये में बीता। तेरह वर्ष की होने पर ससुराल आ गई, तब से पति की सेवा करती रही और सासू का हुक्म बजाती रही। पति के सिवा कोई मेरे ध्यान में भी नहीं आया। गांव के जवान देवरों की हंसी-ठिठोली छोटा सा मजाक भी पाप लगा। कभी किसी का बुरा किया हो मुझे याद नहीं, चोरी से किसी के खेतों की घास काटी हो, याद नहीं। एक बार सासू के साथ झगड़ा जरूर हुआ था, सासू ने इल्जाम ही ऐसा लगाया था, ससुर जी को लेकर! ससुर जी मेरा दुख समझते रहे, मेरे पीछे खेत में हाथ बंटाने आ जाते भले मानुष! मैंने कहा था, सासू तुम्हारी जीभ में कीड़े पड़ें। बस, खुद तो छज्जे की चौधरी बनी बैठी रहेगी और ससुर जी दया न करें तो कौन करेगा। इतनी बड़ी खेती, ढोर डंगर अलग, मैं एक जान! तुम तो सिर्फ दो समय का खाना भर बनाने में थक जाती हो'।

सासू का बेटा जब देश से आता तो उसे एक सेर का गिलास भर मलाईदार दूध पिलाती और मुझे कभी दूध की कटोरी भी नहीं देती जबकि मैं ही घास लाती। बासमती मैंने रोपे, काटे, मंडाई कर थैलों में भरे, ओखल में कूटे, खुशबू जरूर सूंघी लेकिन स्वाद मुझे नहीं मालूम! धान की रोपनी लगाती, गीली मिट्टी में पांव सूज जाते, मंडाई करते खेतों में रात हो जाती।

सासू मुझे दो महीने बेटे के साथ भेजती, कुलदीपक की उम्मीद में, पर बेचारी की उम्मीदों पर हर बार पानी फिरता रहा, जब कन्या जन्मती। अब सासू ने बेटियों के पैदा होने पर नमक चटाने को कहा तो मेरी रुह कांप गई। अंत में उन्होंने बेटे को दूसरे विवाह के लिए कहा, पर तुम्हारी भी क्या लीला हुई भगवान कि मां बेटे की योजना पर पानी फेर दिया। जब बेटे के सिर पर सेहरा बंधने का विचार पक्का हो रहा था तभी मेरी कोख से दीपू ने जन्म लिया। सासू ने सात गांवों को जीमने का न्योता दिया। सासू तो कुलदीपक को दो साल खिलाने के बाद चली गई। मैं ही अभागी रही सजा पाने को। पिता तो जाने कहां लापता हो गए, उनसे देखा नहीं गया, शायद मर-खप गए हों, कहीं कुछ पता नहीं चला।'

उस दिन जब दीपू के बारे में खबर आई थी तो उसे लगा था कि धरती फट जाए और वो उसमें समा जाए। पर न धरती फटी और न वह उसमें समा पाई, उल्टे अपने जेवर बेच उसे छुड़ाने निकल पड़ी थी। सोचा था एक बार छुड़वा लेगी, फिर उसका मुंह भी नहीं देखेगी। पुरखों के नाम पर कीचड़ पोत गया। मुसलमान की लड़की लेकर भागा। सुनने में आया था लड़की ही लेकर भागी थी छोकरे को। बाद में डर के कारण मुकर गई। मेरे दीपू पर कलंक लगा गई। दीपू को लंबी सजा हुई। लड़की के बाप ने दीपू पर चोरी का इल्जाम भी लगा दिया। लड़की तो बेदाग छूट गई प्रभु! वह भी तो तुम्हारी बेइंसाफी हुई, सजा सिर्फ मेरे बच्चे को मिली। इधर गांव वालों ने जीना दूभर कर दिया था।

उसके भीतर से दर्द की लहर उठने लगी, उसने बकरी को आलिंगन में बांध लिया और बुक्का फाड़कर रोने लगी। उसे लगा बकरी उसकी पीड़ा समझ रही है, सहसा दरवाजा पीटने की आवाज उसके कानों में पड़ी, 'बौजी हे! कान बहरे हुए क्या? देखती नहीं।' शबरी ने देखा, अंधेरा तेजी से भाग रहा है। पौ फटने वाली है। वह सोचने लगी, 'प्रत्येक रात की सुबह होती है। इस रात की सुबह कब होगी'? गीली आंखें धोती के पल्लू से पोंछती हुई वह जग्गू के लिए खाना बनाने लगी, 'जब तक देह में प्राण हैं कर्मों से मुंह नहीं मोड़ना चाहिए। शायद रात की सुबह होने का यही नियम हो। है न प्रभु'।

समय सूचक

# जनता के मुद्दों को सुर देने वाला गायक

जनसत्ता सरोकार

'मायाविनी रातिर बुकुत...देखा पालु तोमर छवि।' एक गहरी अंधेरी रात के सीने में प्रेमिका की छवि देखने वाले गायक ने कहा था कि मेरी मौत के बाद यही गाना बजाया जाए। उस वक्त उनके प्रशंसकों को अंदाजा नहीं रहा होगा कि महज 52 साल की उम्र में दुनिया छोड़ गए अपने जुबिन दा की अंतिम यात्रा में उन्हें यह गाना बजाना पड़ेगा। असम विधानसभा चुनाव में राजनीतिक दलों के वादों और इरादों के बीच एक गायक को 'इंसाफ' दिलवाना भी मुद्दा बना। यह है एक कलाकार की ताकत, जिसके आगे राजनीति नतमस्तक है।

जुबिन गर्ग असम के ऐसे कलाकार थे, जो न सिर्फ असमिया पहचान और संस्कृति के प्रतीक बने बल्कि उनके प्रशंसक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर थे। वे गायक के साथ संगीतकार, गीतकार, अभिनेता और फिल्म निर्देशक भी थे। जुबिन गर्ग का जन्म 18 नवंबर 1972 को हुआ था। उनके पिता का नाम मोहन बोरठाकुर और माता का नाम इली बोरठाकुर था। उनके पिता भी प्रसिद्ध गीतकार थे। घर में संगीत का माहौल होने के कारण बचपन से ही उनकी कला की नींव मजबूत हुई। उन्होंने गायकी में बहुत तरह के प्रयोग किए। 1992 में अपने पहले अलबम 'अनामिका' के साथ संगीत जगत में आगाज कर वे युवाओं की मनपसंद आवाज बन गए। उन्होंने अपने गीतों में असमिया लोगों के सुख-दुख, सत्ता से शिकायतें, बदलाव की जरूरत जैसे विषयों को आवाज दी। जुबिन गर्ग इस बात पर जोर देते थे कि मेरी कोई जाति और मजहब नहीं है। जब क्षेत्रवाद हर तरफ पांव पसार रहा था, जुबिन हर तरह की संकीर्णताओं के खिलाफ खुल कर गा रहे थे। एक समय में उन्होंने मुंबई का भी रुख किया, बालीवुड के लिए गाने गाए, लेकिन जल्द ही असम लौट गए। 19 सितंबर 2025 को सिंगापुर में हुए एक हादसे में उनका निधन हो गया।

जुबिन गर्ग

# परी ने की मदद

ललित शौर्य

बाल कथा

उस दिन बहुत तेज हवा चल रही थी। बारिश भी लगातार हो रही थी। पहाड़ों पर बर्फ पड़ने के आसार थे। ठंड से इंसान, जानवर ,पक्षी और पेड़-पौधे सभी का बुरा हाल था। 'मम्मी क्या मैं बाहर जा सकती हूं।', पहाड़ों में रहने वाली प्यारी सी लड़की प्रियांशी ने कहा। 'बेटा बाहर बहुत ठंड है। शायद कुछ ही देर में बर्फ भी पड़ जाएगी। ऐसे में बाहर जाना जोखिम भरा है। तुम्हें ऐसे मौसम में बाहर नहीं जाना चाहिए। तुम अंदर रजाई में लेट जाओ। गर्म दूध पियो।', प्रियांशी की मम्मी ने कहा।

'मुझे बाहर जाना है। जरूरी काम है। प्लीज मम्मी।', प्रियांशी ने जिद करते हुए कहा। 'इतनी भयंकर ठंड में बाहर क्यों जाना चाहती हो। बीमार पड़ जाओगी। तुमसे कहा न रजाई में लेट जाओ। तुम कहना क्यों नहीं मान लेती।', मम्मी थोड़ा सख्त लहजे में बोली। 'अगर मैं रजाई में लेट गई तो उसका क्या होगा।', प्रियांशी के मुंह से अचानक ये बात निकल पड़ी। 'किसका क्या होगा। तुम्हें इस ठंड में किसकी फिक्र सता रही है। बताओ मुझे।', मम्मी ने कहा। 'नहीं मम्मी, कुछ नहीं।', प्रियांशी ने बात बदलने की कोशिश करते हुए कहा।

'बताओ कुछ तो बात है।', मम्मी बोली। 'पिछले दिनों मुझे कुत्ते का एक छोटा सा पिल्ला मिला था। जो शायद अपनी मां से बिछुड़ गया था। दो-तीन दिन से उसे मैं खाना खिला रही थी। वह घर के पास वाले पीपल के पेड़ के नीचे सोता है। जब से बारिश और हवा चल रही है मैं उसके पास नहीं जा पा रही। वह भूखा भी होगा। उसे ठंड भी लग रही होगी। उसके पास रहने के लिए कोई घर नहीं है। अगर ऐसे में बर्फ पड़ गई तो उसका क्या हाल होगा।', प्रियांशी रुआंसी होते हुए बोली।

'अच्छा तो ये बात है। तुम्हें उस पिल्ले की चिंता सता रही है। यह तो अच्छी बात है। तुम उसे ला सकती हो। लेकिन ध्यान से अपनी टोपी और मोजे पहन कर ही बाहर निकलना। उसे लेकर सीधे घर आ जाना। इधर-उधर न चली जाना।', मम्मी ने हिदायत देते हुए कहा। ये सुनते ही प्रियांशी उछल पड़ी। वह तुरंत अपने कमरे से निकली और पीपल के पेड़ के नीचे जा पहुंची। वहां वह छोटा पिल्ला ठंठ से ठिठुर रहा था। प्रियांशी को देखते ही वह अपनी दुम हिलाने लगा। वह प्रियांशी की गोद में आ जाना चाहता था।

'मेरे प्यारे छोटू, अब तुम यहां नहीं रहोगे। मेरे साथ घर चलोगे। यहां बहुत ठंड है न।', प्रियांशी ने उस पिल्ले को गोद में उठाकर पुचकारते हुए कहा। उसी समय सामने की पहाड़ी से एक परी यह सब कुछ देख रही थी। उस परी का नाम था, पिंकू। वह बहुत दयालु थी। वह परिस्तान से अक्सर पहाड़ों में घूमने आया करती थी। पिंकू परी को प्रियांशी का उस पिल्ले को पुचकारना बहुत अच्छा लगा।

प्रियांशी पिल्ले को लेकर घर आ गई। उसने लकड़ी की पेटी में गर्म कपड़े बिछाए। उसमें उस पिल्ले के रहने का इंतजाम कर दिया। उसे खाना भी खिलाया। गर्माहट पाकर वह पिल्ला सो गया। प्रियांशी भी थक गई थी। बाहर अंधेरा हो चुका था। 'बेटा चलो अब खाना खा लो। छोटू पिल्ले को सोने दो।', मम्मी ने आवाज देते हुए कहा।

प्रियांशी खाना खाने चली गई। खाना खाने के बाद वह छोटू को देखने आई। छोटू सो गया था। वह भी सोने चली गई। रात गहराने लगी। ठंड बढ़ने लगी थी। आधी रात होते ही भारी बर्फबारी होने लगी। बर्फबारी ऐसी थी जैसी इससे पहले कभी हुई ही नहीं। पेड़ की टहनियां बर्फ का भार सहन नहीं कर पा रही थी। उनके चटकने की आवाजें सुनाई दे रही थी। इन आवाजों से प्रियांशी और उसकी मम्मी की नींद खुल गई। ऐसी आवाजों से वे डर गईं। उन्होंने हिम्मत कर के खिड़की खोली। खिड़की के पास तक बर्फ जमा हो चुकी थी।

'ऐसी बर्फबारी मैंने पहले कभी नहीं देखी।', प्रियांशी ने सहमते हुए मम्मी से कहा। 'बेटा मैंने भी इतनी भयंकर बर्फबारी पहले नहीं देखी। चलो अब सो जाते हैं। सुबह देखेंगे क्या होता है।', मम्मी ने कहा। दोनों सो गए थे। उधर छोटू भी गहरी नींद में था। सुबह होते ही प्रियांशी की मम्मी उठी। उन्होंने दरवाजा खोलने का प्रयास किया। दरवाजा न खुल पाया। आधे दरवाजे तक बर्फ जम चुकी थी। 'बेटा जल्दी उठो दरवाजा नहीं खुल रहा।' मम्मी ने आवाज देते हुए कहा।

प्रियांशी दौड़ कर मम्मी के पास आई। दोनों ने दरवाजे पर धक्का दिया। लेकिन दरवाजा टस से मस नहीं हुआ। बाहर बहुत बर्फ जम चुकी थी। प्रियांशी और उसकी मम्मी मदद के लिए चिल्लाने लगीं। लेकिन उनकी आवाज किसी ने नहीं सुनी। पिंकू परी वहां से गुजर रही थी। उसने देखा प्रियांशी के घर के बाहर बहुत बर्फ जमी हुई है।

प्रियांशी दौड़ कर मम्मी के पास आई। दोनों ने दरवाजे पर धक्का दिया। लेकिन दरवाजा टस से मस नहीं हुआ। बाहर बहुत बर्फ जम चुकी थी। प्रियांशी और उसकी मम्मी मदद के लिए चिल्लाने लगीं। लेकिन उनकी आवाज किसी ने नहीं सुनी। सुबह-सुबह पिंकू परी वहां से गुजर रही थी। उसने देखा प्रियांशी के घर के बाहर बहुत बर्फ जमी हुई है। वह प्रियांशी के घर के बाहर खड़ी हो गई। उसने अपनी छड़ी घुमाई और देखते ही देखते सारी बर्फ साफ हो गई। दरवाजा खुल गया। यह देखकर प्रियांशी और उसकी मम्मी बड़ी खुश हुईं। लेकिन यह चमत्कार कैसे हुआ उनकी समझ में नहीं आ रहा था।

पिंकू परी वहां से जा चुकी थी। यह सब प्रियांशी का छोटू पर किए गए उपकार का परिणाम था। 'यह सब कैसे हुआ मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा है।', प्रियांशी बोली। 'शायद भगवान ने हमारी मदद की होगी।', प्रियांशी की मम्मी ने हाथ जोड़ते हुए कहा। छोटू पेटी से बाहर निकल कर प्रियांशी के पैरों से खेलने लगा। बाहर अब चटक धूप खिलने लगी थी।

# स्त्री की जगह पर जिरह

जनसत्ता सरोकार

मार्गदर्शन

दिल्ली मेट्रो रेल कारपोरेशन की सेवा बहुत से मामलों में विश्वस्तरीय हैं। साफ-सफाई, रख-रखाव में यह अन्य कई उपक्रमों से बेहतर है। दिल्ली मेट्रो की खासियत है कि अगर आप इसमें पहली बार सफर कर रहे हैं, और किसी से कुछ पूछना नहीं चाहते तो आपको इसकी जरूरत भी नहीं पड़ेगी। बोर्ड पर सारी दिशाएं और प्लेटफार्म-संख्या तो लिखे हुए ही हैं, हर लाइन और दिशा के लिए निशान भी बनाए हुए हैं ताकि निरक्षर व्यक्तियों से लेकर वैसे लोगों को भी कोई दिक्कत नहीं हो, जो हिंदी व अंग्रेजी नहीं समझते। दिल्ली देश की राजधानी है तो यहां विभिन्न राज्यों से लेकर विभिन्न देशों के लोग आते रहते हैं। ऐसी गुणवत्ता वाली जगहों की त्रासदी है कि हम सामान्य नागरिक गुणों को बरकरार नहीं रख पाते हैं।

मेट्रो में अशोभनीय रील बनने लगे थे, कुछ रील बनाने वाले तो सारी सुरक्षा व्यवस्था को ही ताक पर रख देते थे। आम लोगों से मिली शिकायतों के बाद मेट्रो ने इसके खिलाफ कदम उठाया। पिछले दिनों खबर आई कि दिल्ली मेट्रो ने पिछले छह महीनों में हंगामा और मारपीट करने वाले 2468 यात्रियों पर जुर्माना लगाया है। दिल्ली मेट्रो प्रशासन दस प्रावधानों के तहत जुर्माना लगाता है। इनमें से एक प्रावधान के तहत महिला कोच में घुसने वाले पुरुष यात्रियों पर 250 रुपए का जुर्माना लगाया जाता है। ध्यान देने की बात है कि सिर्फ पुरुषों के महिला कोच में घुसने पर ही 2312 लोगों पर कार्रवाई की गई। दिल्ली मेट्रो परिसर में पूरे समय घोषणा होती रहती है कि गाड़ी की गति की दिशा में पहला डिब्बा महिलाओं के लिए आरक्षित है। गति की दिशा की तरफ प्लेटफार्म पर बड़े से गुलाबी बोर्ड में महिला कोच लिखा भी होता है। मेट्रो के कर्मचारी महिला कोच के सामने इंतजार कर रहे पुरुष कर्मचारियों को आगाह करते रहते हैं कि इस कोच में पुरुष प्रवेश नहीं कर सकते हैं। इसके बावजूद महिला कोच में घुसने और सफर करने की जिद क्यों? क्या वजह है कि महिलाओं के लिए आरक्षित कोच की सूचना पुरुषों की श्रवण शक्ति अनसुना कर देती है। कई महिला यात्रियों की शिकायत होती है कि आरक्षित कोच में खड़े पुरुषों को वहां से चले जाने और जुर्माने के बारे में आगाह करती हैं तो वे गुस्से से देखने लगते हैं। कई पुरुष कहते हैं कि जब कोच खाली पड़ा है तो हमारे खड़े होने से क्या दिक्कत है?

मेट्रो में सिर्फ एक कोच महिलाओं के लिए आरक्षित है, लेकिन आम मर्दवादी मानसिकता उसे भी अपने अधिकारों के हनन के जैसा मानती है। स्त्री कोच में सफर करना सिर्फ एक गलती नहीं, बल्कि मर्दवादी सनक भी होती है, कि हम इसी में खड़े रहेंगे, चाहे जुर्माना क्यों न देना पड़े। इसी मानसिकता के पुरुष सामान्य कोच में प्रवेश करने वाली महिलाओं पर ताना मारना नहीं चूकते कि जब इनके लिए पूरा एक कोच आरक्षित है तो फिर पुरुषों के कोच में क्यों आती हैं?

मेट्रो के जुर्माना लगाने के आंकड़े बताते हैं कि स्त्री अधिकारों को लेकर संवेदनशील होने में दिल्ली अभी दूर है।

# वासु और अप्पू का घर एक है

जनसत्ता सरोकार

अमर किरदार

राष्ट्रीय पुरस्कार ग्रहण करते कलिदास।

मलयालम साहित्य के साथ सिनेमा भी बहुत समृद्ध रहा है। मलयालम फिल्में बाल कलाकारों को लेकर काफी संवेदनशील रही हैं। बाल किरदारों को लेकर कई ऐसी फिल्में बनी हैं जिन्होंने सिनेमा प्रेमियों और कला समीक्षकों का ध्यान आकर्षित किया है। ऐसी ही फिल्म है 'एंडे वीडु अप्पुविन्तेयुम'। हिंदी में इसका अर्थ होता है-मेरा घर अप्पू का भी।

2003 में प्रदर्शित 143 मिनट की इस फिल्म के निर्देशक सिबी मलयिल हैं। सिबी अपनी फिल्मों में भावनात्मक कहानी का ताना-बाना बुनते हैं। मलयालम में इस फिल्म के लोकप्रिय हो जाने के बाद तमिल भाषा में 'कन्नाडि पूकल' नाम से इसका पुनर्निमाण किया गया।

फिल्म की कहानी विश्वनाथन, उनकी पत्नी मीरा और दंपति के बेटे वासुदेव पर केंद्रित है। वासुदेव की भूमिका कलिदास जयराम ने निभाई है। मीरा वासुदेव की सौतेली मां है, लेकिन दोनों के बीच मां-बेटे का सहज व प्यारा संबंध है। वासुदेव को इस बात का अहसास नहीं होता है कि मीरा उसकी सगी मां नहीं है। मीरा एक बेटे को जन्म देती है। भाई पाकर वासु बहुत खुश होता है, और वह उसका नाम अप्पू रखता है। वह अप्पू को बहुत प्यार करता है। अब विश्वनाथन और मीरा का सारा ध्यान नवजात की तरफ चला जाता है, और वासु खुद को अकेला महसूस करने लगता है। उसे लगता है कि अप्पू के कारण उसके मां-बाप उसकी उपेक्षा कर रहे हैं। तभी अप्पू का जन्मदिन आने वाला होता है। वासु अपने छोटे भाई के जन्मदिन को लेकर बहुत रोमांचित होता है। वह अपने बचाए पैसों से अप्पू को जन्मदिन पर देने के लिए तोहफा भी खरीद लेता है।

मेहमानों के महंगे तोहफों को देख कर वासु निराश हो जाता है। वह अपना लाया तोहफा छुपा देता है। इसके बाद से वह यह बात और गहराई से महसूस करने लगता है कि अप्पू के कारण अब उसे अपने मां-बाप का प्यार नहीं मिल रहा है।

अप्पू के जन्मदिन के समारोह में मेहमानों के महंगे तोहफों को देख कर वासु निराश हो जाता है। निराशा में वह अपना लाया तोहफा छुपा देता है। इसके बाद से वह यह बात और गहराई से महसूस करने लगता है कि अप्पू के कारण अब उसे अपने मां-बाप का प्यार नहीं मिल रहा है। यह निराशा उसके व्यवहार में दिखने लगती है। एक दिन परेशान होकर विश्वानाथन वासु को थप्पड़ मार देते हैं। वासु को लगता है कि यह सब अप्पू की वजह से हो रहा है। ऐसे ही भावनात्मक उथल-पुथल में वासु के हाथों दुर्घटनावश अप्पू की मौत हो जाती है। वासु को बाल-सुधार गृह भेज दिया जाता है।

रिहाई के बाद वासु जब घर लौटता है तो मीरा एक और बच्चे को जन्म दे चुकी होती है। वासु इस बच्चे का नाम भी अप्पू रखता है। वह अपना छुपाया हुआ तोहफा बच्चे को लाकर देता है। वासु का लौटना, मां-बाप के साथ फिर से रिश्ता बनना, इन सब चीजों को निर्देशक ने ऐसे दिखाया है कि यह फिल्म बाल-मनोविज्ञान के संदर्भ में भी एक मिसाल बन जाती है। वासुदेव के रूप में कलिदास जयराम ने यादगार अभिनय किया है। इसमें अभिनय के लिए कलिदास को सर्वश्रेष्ठ बाल किरदार का राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिला।

# सेहत की साथी गुणकारी अलसी

भूरे-पीले रंग की अलसी के बीजों पर आमतौर पर लोग ध्यान नहीं देते। मगर इसका इस्तेमाल सेहत के लिए सदियों से किया जाता रहा है। भारत के पूर्वी राज्यों में अलसी का एक नाम तीसी भी है। पोषक तत्त्वों से भरपूर होने के कारण इसका आयुर्वेद में भी महत्त्व बताया गया है। अपने खास गुणों के कारण इसे 'सुपरफूड' भी कहा जाता है। आज जब लोग अपनी सेहत बनाए रखने के लिए सभी विकल्पों पर विचार कर रहे हैं, तो उन्हें अलसी के बीजों को भी एक बार जरूर आजमाना चाहिए। ये कैंसर से लेकर हृदयरोग और मधुमेह जैसे जटिल रोगों को भी काबू में करने में मदद करते हैं। इसका इस्तेमाल संतुलित मात्रा में हो, तो यह फायदा ही करता है।

### पोषक तत्वों का खजाना

अलसी के बीजों में कई पोषक तत्त्व हैं। इसमें कई विटामिन और खनिज के साथ ओमेगा-3 फैटी एसिड और फाइबर खास तौर से पाया जाता है। यही वजह है कि यह कई बीमारियों को शुरुआती दौर में ही ठीक करने के अलावा पोषण की कमी के कारण होने वाले रोगों को भी नियंत्रित करता है। अलसी के बीज कैंसररोधी भी हैं। इनमें एंटीआक्सीडेंट भी पाया जाता है। कई खूबियों के कारण अलसी को पाचन दुरुस्त रखने और कब्ज दूर करने के लिए एक नुस्खे के रूप में आजमाया जाता है। यों साबुत और पिसी हुई अलसी तथा इसका तेल, ये तीन रूप हैं, जिनका सामान्यतः अलग-अलग मर्ज के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

### दर्द-सूजन से बचाव

अलसी के बीजों का कई तरीकों से उपयोग होता है। मगर इस बात पर कम ही ध्यान दिया जाता है कि ये दर्द और सूजन को कम करने में भी मदद करते हैं। इसे नुस्खे के रूप में आजमा सकते हैं। अलसी को पानी में उबाल कर थोड़ा सुखा लें। ध्यान रखें कि पानी गाढ़ा नहीं होना चाहिए। फिर इसे सूजन या दर्द वाली जगह पर तेल की तरह लगाएं। इससे आराम मिलेगा। कान में सूजन होने पर भी यह फायदा करता है। आजकल लोगों को सिरदर्द की समस्या बहुत रहती है। इसे दूर करने का एक आसान नुस्खा है। अलसी के बीजों को ठंडे पानी के साथ पीस कर इसका लेप माथे पर लगाएं। इससे आराम मिलेगा।

### जुकाम-खांसी करे दूर

अलसी रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाती है। अगर बार-बार जुकाम होता हो, तो इसके बीजों को धीमी आंच पर भूनें। जब गंध आने लगे, तो इसे पीस लें। फिर इसमें बराबर मात्रा में मिसरी मिला लें। अब इसे सुबह-शाम गुनगुने पानी में आधा चम्मच इस चूर्ण को लें। मौसम बदलने पर खांसी और दमे की समस्या में भी इसे आजमाया जा सकता है। अलसी

**नुस्खे**

के बीजों का काढ़ा बना लें और इसमें मिसरी मिला लें। सर्दियों में शहद मिलाएं। इसे सुबह-शाम लें, खांसी और अस्थमा में आराम मिलेगा। एक सामान्य नुस्खा यह है कि पांच ग्राम अलसी को पानी भरे एक बड़े गिलास में भिगो दें। अगर सुबह अलसी भिगोई है, तो इस पानी को शाम को पियें। रात में भिगोई हैं, तो इस पानी को सुबह लें। यह खांसी और दमे में फायदा करता है।

# बदलता परिदृश्य

**पुस्तक-संस्कृति**

मो अजहर आलम अंसारी

कुछ दशक पहले तक हमारे शहरों और कस्बों की पहचान केवल उनकी इमारतों, बाजारों या ऐतिहासिक स्थलों से नहीं होती थी, बल्कि पुस्तकों की छोटी-छोटी दुकानों से भी होती थी, जो बस स्टैंड, रेलवे स्टेशन, गली-नुक्कड़ों और चौराहों पर सजी रहती थीं। वहां रंग-बिरंगी पत्रिकाएं, ताजा अखबार, लोकप्रिय उपन्यास, प्रतियोगी परीक्षाओं की किताबें और बच्चों की कामिक्स एक साथ रहती थीं। वे दुकानें केवल किताब बेचने की जगह नहीं थीं, बल्कि समाज के बौद्धिक संवाद के छोटे-छोटे केंद्र हुआ करती थीं।

बस की लंबी यात्रा हो या गर्मियों की दोपहर, पुस्तक हाथ में होते ही समय पंख लगाकर उड़ जाता था। पुस्तक की खुशबू, पन्ने पलटने की आवाज और शब्दों के बीच डूब जाने का अनुभव आज भी स्मृतियों में जीवित है। किसी खास पत्रिका के लिए बार-बार किताब की दुकान के चक्कर लगाना और उसके आते ही उसे सबसे पहले खरीद लेने की लालसा, यह एक ऐसी मासूम खुशी थी, जिसे शब्दों में बांध पाना कठिन है। पर वही बस स्टैंड, वही रेलवे स्टेशन अब पहले जैसे नहीं दिखते। पुस्तक स्टालों की जगह मोबाइल रिचार्ज या डिब्बाबंद नमकीन की दुकानें या खाली स्थान नजर आते हैं। लोग अब भी प्रतीक्षा करते हैं, पर उनके हाथ में पुस्तक नहीं, स्मार्टफोन होता है। सिर झुके होते हैं, अंगुलियां स्क्रीन पर चलती रहती हैं और आसपास की दुनिया जैसे धुंधली हो जाती है। कई बार उन्हें यह भी एहसास नहीं होता कि वे कहां खड़े हैं या उनके पास कौन बैठा है।

### डिजिटल छाया

दरअसल, डिजिटल क्रांति ने हमारे जीवन को जिस गति से बदला है, उसने पढ़ने की आदतों को भी गहराई से प्रभावित किया है। इंटरनेट, सोशल मीडिया, वीडियो मंच और त्वरित संदेशों की दुनिया ने सूचना को अत्यंत सुलभ बना दिया है। आज ज्ञान जेब में है, एक क्लिक पर उपलब्ध। ई-पुस्तकें, आडियोबुक, आनलाइन लेख- सब कुछ स्क्रीन पर सिमट आया है। यह सुविधा निस्संदेह अद्भुत है, पर इसके साथ एक चुनौती भी जुड़ी है- गहराई का अभाव। कागज की पुस्तक हमें ठहरना सिखाती थीं। एक पन्ना पढ़ते हुए हम रुकते, सोचते, कल्पना करते। डिजिटल माध्यम में पढ़ना अक्सर 'स्क्रालिंग' बनकर रह जाता है। शब्दों के बीच ठहराव कम हो गया है। हमारी एकाग्रता का दायरा सिकुड़ रहा है। त्वरित सूचना की आदत ने धैर्यपूर्ण अध्ययन को पीछे धकेल दिया है।

### सुविधा बनाम लत

हालांकि आज भी अनेक लेखक नई-नई कृतियां लिख रहे हैं, प्रकाशन उद्योग सक्रिय है और पुस्तक मेले पहले की तरह ही भीड़ आकर्षित करते हैं। पर पुस्तक संस्कृति का सामाजिक रूप बदल गया है। पहले पढ़ना एक सामूहिक अनुभव था, परिवार में, मित्रों के बीच, स्कूलों में चर्चा का विषय बनता था। अब पढ़ना अधिकतर निजी स्क्रीन तक सीमित हो गया है। प्रश्न उठता है कि क्या डिजिटल युग ने पुस्तक संस्कृति को समाप्त कर दिया है? शायद नहीं। उसने उसका रूप बदला है। ई-पुस्तकों और आनलाइन पुस्तकालय ने दूरदराज क्षेत्रों तक साहित्य पहुंचाया है। जो लोग कभी किसी बड़े पुस्तकालय तक नहीं पहुंच सकते थे, वे अब मोबाइल पर विश्व साहित्य पढ़ सकते हैं। दृष्टिबाधित पाठकों के लिए 'आडियोबुक' एक वरदान सिद्ध हुई है।

समस्या तब उत्पन्न होती है जब सुविधा लत में बदल जाती है। जब मोबाइल केवल पढ़ने का साधन नहीं, बल्कि निरंतर मनोरंजन और विचलन का माध्यम बन जाता है। स्क्रीन पर पढ़ते-पढ़ते एक सूचना दूसरी को ढक देती है, एक लिंक हमें दूसरे लिंक तक ले जाता है और हम गहराई से अधिक सतही जानकारी में उलझ जाते हैं। पुस्तक हमें एकाग्र करती थी, स्क्रीन हमें भटकाती है।

किताब के स्टालों का लुप्त होना केवल व्यापारिक नहीं, सामाजिक परिवर्तन का भी संकेत है। जिन स्थानों पर लोग नए विचारों से परिचित होते थे, अब कम हो रहे हैं। पुस्तक संस्कृति केवल पठन की आदत नहीं, बल्कि विचारों के आदान-प्रदान की परंपरा भी थी। अगर हम चाहते हैं कि पुस्तक संस्कृति जीवित रहे, तो हमें उसे आधुनिक संदर्भ में पुनर्स्थापित करना होगा। स्कूलों में पठन-पाठन को केवल परीक्षा तक सीमित न रखकर आनंद से जोड़ना होगा। परिवारों में बच्चों को कहानी सुनाने और पुस्तक उपहार में देने की परंपरा को पुनर्जीवित करना होगा। सार्वजनिक स्थानों पर छोटे-छोटे पाठक कोना, चलंत पुस्तकालय की व्यवस्था की जा सकती है।

> **समय के साथ माध्यम बदलते हैं, पर मूल्य स्थायी रहते हैं। ज्ञान, कल्पना, संवेदनशीलता और चिंतन- ये चारों तत्त्व पुस्तक संस्कृति की आत्मा हैं। मगर हम केवल त्वरित मनोरंजन तक सीमित रह जाएं, तो यह आत्मा क्षीण हो जाएगी। पुराने दिनों की स्मृतियां केवल 'नास्टेल्जिया' नहीं हैं, वे हमें यह याद दिलाती हैं कि पढ़ना केवल सूचना ग्रहण करना नहीं, बल्कि आत्मा का विस्तार है।**

### शब्दों की शक्ति

समय के साथ माध्यम बदलते हैं, पर मूल्य स्थायी रहते हैं। ज्ञान, कल्पना, संवेदनशीलता और चिंतन- ये चारों तत्त्व पुस्तक संस्कृति की आत्मा हैं। मगर हम केवल त्वरित मनोरंजन तक सीमित रह जाएं, तो यह आत्मा क्षीण हो जाएगी। पुराने दिनों की स्मृतियां केवल 'नास्टेल्जिया' यानी अतीत के प्रति मोह नहीं हैं, वे हमें यह याद दिलाती हैं कि पढ़ना केवल सूचना ग्रहण करना नहीं, बल्कि आत्मा का विस्तार है। जब हम किसी उपन्यास के पात्र के साथ हंसते या रोते हैं, तो हमारी संवेदनशीलता बढ़ती है। जब हम किसी विचारोत्तेजक लेख को पढ़ते हैं, तो हमारा दृष्टिकोण व्यापक होता है। यह अनुभव आज भी संभव है, बस हमें उसके लिए समय निकालना होगा। प्रश्न यह नहीं है कि किताबों के स्टाल क्यों गायब हो गए, बल्कि यह है कि क्या हम अपने भीतर के पाठक को भी गायब होने दे रहे हैं! उत्तर 'नहीं' है, तो हमें छोटे-छोटे प्रयासों से शुरुआत करनी होगी। सप्ताह में एक दिन बिना मोबाइल के पढ़ने का संकल्प, बच्चों के साथ पुस्तकालय जाना, मित्रों के बीच पुस्तकों पर चर्चा, ये छोटे कदम बड़ी संस्कृति को पुनर्जीवित कर सकते हैं। महान चिंतक फ्रांसिस बेकन ने कहा था- 'पढ़ना मनुष्य को पूर्ण बनाता है।' अगर समाज को संवेदनशील, विचारशील और संतुलित बनाना है, तो पुस्तक संस्कृति को स्मृति से निकालकर वर्तमान में पुनर्स्थापित करना होगा।

कागज की खुशबू और स्क्रीन की चमक, दोनों का अपना महत्त्व है। अगर हमें गहराई, संवेदनशीलता और विचार की परंपरा को बचाए रखना है, तो पुस्तक संस्कृति को वर्तमान का हिस्सा बनाएं। आखिर वही समाज आगे बढ़ता है, जो पढ़ता है, सोचता है और शब्दों की शक्ति को समझता है।

# सामंजस्य की कमजोर होती कड़ियां

**जीवन शैली**

सामंजस्य व्यक्तिगत, व्यावसायिक और सामाजिक जीवन में शांति, उत्पादकता एवं मजबूत रिश्तों के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। यह संघर्षों को कम करने, आपसी समझ एवं सहानुभूति बढ़ाने और लक्ष्य आसानी से हासिल करने में मदद करता है। मगर आज के दौर में व्यक्तिगत स्वार्थ, डिजिटल निर्भरता और तात्कालिक संतुष्टि की संस्कृति के कारण आपसी सामंजस्य और सामाजिक संबंध कमजोर हो रहे हैं। तकनीक ने लोगों को जोड़ कर भी भावनात्मक रूप से दूर कर दिया है, जिससे मानसिक कमजोरी, आत्मविश्वास की कमी और आपसी समझ का अभाव बढ़ रहा है। जबकि, सामंजस्यपूर्ण माहौल में एक-दूसरे की कमजोरियों को नजरअंदाज करके और साझा भावनाओं का सम्मान करके एक साथ मिलकर समस्याओं का हल ढूंढ़ा जा सकता है।

### बेहतर तालमेल

सहिष्णुता के साथ आपसी समझ कायम करने से परिवार, समाज और कार्यस्थल में कलह या संघर्ष की गुंजाइश कम हो जाती है और सौहार्दपूर्ण माहौल बनता है। संबंधों में अगर सामंजस्य कायम रहे, तो कठिन हालात में भी मिलकर परेशानियों का सामना किया जा सकता है। बेहतर तालमेल तनाव कम करने और जीवन में स्थिरता एवं सफलता पाने में मदद करता है। विचारों और व्यवहार में सामंजस्य होने से बात को समझना और समझाना आसान हो जाता है, जो किसी भी कार्य के लिए आवश्यक है।

### अनुकूलन क्षमता

दूसरों की भावनाओं को समझना और उनसे जुड़ने की क्षमता ही सामंजस्य है। जिस तरह हम चीजों को देखने के लिए अपनी आंखों का और आवाज को सुनने के लिए अपने कानों का उपयोग करते हैं, उसी प्रकार हम अपने आसपास के लोगों की भावनाओं को महसूस करने के लिए सामंजस्य का उपयोग करते हैं। जब हम किसी के साथ सामंजस्य स्थापित कर लेते हैं, तो हम उनकी जरूरतों को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं और यह जान सकते हैं कि हम उनकी मदद कैसे कर सकते हैं। इससे हमें बदलती परिस्थितियों और चुनौतियों के अनुसार खुद को ढालने की शक्ति मिलती है।

> ***संबंधों में सामंजस्य कायम रहे, तो कठिन हालात में भी परेशानियों का सामना किया जा सकता है। बेहतर तालमेल तनाव कम करने और जीवन में सफलता पाने में मदद करता है।***

### लक्ष्य पर ध्यान

परिस्थितियों के अनुसार विचारों में बदलाव आना स्वाभाविक है, लेकिन ऐसा नहीं है कि बदले विचारों के साथ सामंजस्य स्थापित नहीं किया जा सकता। समस्या यह है कि व्यक्ति अपने लक्ष्य से ज्यादा दूसरों की बातों और आलोचनाओं में उलझ जाता है। जबकि जो व्यक्ति आपसी समझ विकसित कर अपने लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करता है, वही जीवन में वास्तविक परिवर्तन ला पाता है। मानव-जीवन संघर्षपूर्ण प्रक्रिया है, मगर अधिकतर लोग संघर्ष से बचने की कोशिश करते हैं। जबकि संघर्ष ही मनुष्य के जीवन में विकास एवं सफलता का सूत्र होता है। मगर इसके लिए जरूरी है कि दूसरों के प्रति सजग रहें और उनकी भावनाओं एवं मनोस्थिति को समझकर सामंजस्यपूर्ण वातावरण बनाया जाए।

# तनाव का घेरा बीमारियों का जाल

**सेहत**

आज की भागदौड़ की जिंदगी में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं, जो किसी न किसी वजह से तनाव का शिकार न हो। जीवन की आपाधापी में ज्यादातर लोग अब इसकी चपेट में हैं। दूसरों से आगे निकलने की होड़ ने तनाव बढ़ा दिया है। संवाद की कमी और रिश्ते बिखरने से भी स्थितियां जटिल हो रही हैं। यह वस्तुतः ऐसी मानसिक स्थिति है जो बच्चों से लेकर बड़ों तक में देखी जा रही है। तनाव होने पर कोर्टिसोल नाम का हार्मोन पूरे शरीर में फैल जाता है। यह स्थिति कई समस्याओं की भी वजह है। काम के दबाव से भी समस्या बढ़ी है। स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं और कड़वे अनुभवों ने महिलाओं में तनाव के स्तर को कई गुना बढ़ाया है। दरअसल, आजकल लोग दुख साझा नहीं करते। इससे भी लोगों में तनाव बढ़ा है।

### लक्षणों की पहचान

सच यही है कि तनाव एकदम खामोशी से आता है। कितना भी कोई छिपाए, यह चेहरे पर दिख ही जाता है। मगर कई ऐसे लोग हैं जो अपना तनाव जाहिर नहीं होने देते। उनमें तनाव की कई परतें जमा होती रहती हैं। इससे वे कई बीमारियां के शिकार हो जाते हैं। इसलिए चिकित्सकों की यही सलाह होती है कि तनाव के लक्षणों को नजरअंदाज न करें और इसके निदान के उपाय करें। अमूमन तनाव रहने पर व्यक्ति उदास रहने लगता है। रात में नींद नहीं आती। पीड़ित को अक्सर थकान महसूस होती है। एकाग्रता कम होने लगती है। यहां तक कि पाचन संबंधी दिक्कतें भी शुरू हो जाती हैं। तनाव की वजह से ही रोग प्रतिरक्षा क्षमता कमजोर होने लगती है। कई बार तो सिरदर्द के साथ शुरू हुई समस्या बाद में कई बीमारियों को जन्म देती है। यह तनाव ही है जो उच्च रक्तचाप और हृदयरोग के साथ मधुमेह की वजह बन जाता है।

### खतरे में मानसिक सेहत

जब तनाव बहुत बढ़ जाता है, तो यह हमारी मानसिक सेहत पर प्रतिकूल असर डालता है। दिल की धड़कनें बढ़ जाती है। घबराहट होने लगती है। नतीजा यह कि इसका असर पूरे शरीर पर ही नहीं, पूरी चेतना पर पड़ता है। व्यक्ति चिड़चिड़ा रहने लगता है। बेवजह उसे गुस्सा आने लगता है। यह स्थिति धीरे-धीरे अवसाद की ओर ले जाती है। एक शोध के मुताबिक तनाव से घिरे 51 फीसद लोग गहरे अवसाद में डूब जाते हैं। इनमें 16 फीसद लोग खुदकुशी कर लेते हैं। जबकि 32 फीसद लोग आत्महत्या की कोशिश करते हैं। शोध का निष्कर्ष यह भी है कि तनाव की वजह से ज्यादातर लोग अकेलापन महसूस करने लगते हैं। यह चिंताजनक स्थिति होती है।

### निदान की राह

तनाव से बचने के लिए स्वस्थ जीवन शैली ही प्रभावी तरीका है। इससे बचाव के कई रास्ते निकलते हैं। इसलिए जरूरी है कि उन परिस्थितियों से बचें, जिनसे तनाव बढ़ता है। नकारात्मक विचारों से भी गहरी निराशा पैदा होती है जो अंततः तनाव की ओर ले जाती है। सोशल मीडिया से किसी वजह से कोई तनाव हो रहा हो, तो इससे कुछ समय के लिए दूरी बनाई जा सकती है। खुद को इस तरह संभालें कि धीरे-धीरे तनाव कम होता जाए। ध्यान, योग और प्राणायाम से भी राहत मिलती है। वहीं पूरी नींद लेने से भी आराम मिलता है। सोते समय समय नकारात्मक विचार न आने दें। अनुलोम-विलोम जैसे व्यायाम तनाव को कम करते हैं।

कैफीनयुक्त पेय, खासकर शराब से बचें। पर्याप्त पानी और फलों का रस लें। ताजा फल और हरी सब्जियों का सेवन करें। संगीत भी तनाव का उपचार करता है। सोने से पहले अपनी पसंद का कोई भी गीत-संगीत अवश्य सुनें। इससे ध्यान बंटता है और मन को शांति मिलती है। धूम्रपान से यथासंभव दूर रहें। गुनगुने पानी से हाथ धोने से भी तनाव कम होता है। परिवार और मित्रों से संवाद बनाए रखें। अगर तनाव दूर करने में कोई मदद कर सकता है, तो उससे अवश्य बात करें। तनाव दूर न होता हो, तो किसी विशेषज्ञ से परामर्श करने में संकोच नहीं करना चाहिए।

*(यह लेख सिर्फ सामान्य जानकारी और जागरूकता के लिए है। उपचार या स्वास्थ्य संबंधी सलाह के लिए विशेषज्ञ की मदद लें।)*

# चटपटा स्वाद, पौष्टिकता के साथ

**रसोई**

## कुल्थी तड़का दाल

उत्तर भारत में कुल्थी दाल की पैदावार तो होती है, लेकिन शहरों क्षेत्रों में इसकी दाल थाली में कम ही देखने को मिलती है। हालांकि, ग्रामीण इलाकों में आज भी कुल्थी दाल को काफी पसंद किया जाता है। इसमें आयुर्वेदिक गुण भी हैं और इसे सेहत के लिए लाभदायक माना जाता है। इसकी तासीर थोड़ी गरम होती है, इसलिए गांवों में सर्दियों में इसका सेवन ज्यादा किया जाता है।

### सामग्री

कुल्थी दालः 200-250 ग्राम, प्याजः एक, लहसुनः चार-पांच कलियां, अदरकः एक इंच, मेथी दानाः एक चम्मच, जीराः एक चम्मच, टमाटरः तीन, हींगः एक चुटकी, गरम मसाला पाउडरः एक चम्मच, कसूरी मेथीः एक चम्मच, मिर्च और नमकः स्वादानुसार।

### विधि

कुल्थी की दाल को पांच-छह घटे तक भिगो लें। इसके बाद कुकर में तेल गरम करें और उसमें जीरा व हींग का छौंक लगाकर भिगोई हुई कुल्थी डाल दें। इसे अच्छी तरह मिला लें और फिर जरूरत के अनुसार पानी डालें तथा ढक्कन लगाकर इसे 12-15 मिनट तक पकाएं। अब कुकर को ठंडा होने के लिए छोड़ दें, ताकि इसमें से भाप अपने आप बाहर आ जाए। इस बीच, लहसुन और अदरक का पेस्ट तैयार कर लें। इसके उपरांत एक कड़ाही में देसी घी गरम करें और उसमें धनिया बीज, मेथी दाना और जीरा भून लें। फिर बारीक कटा हुआ प्याज डाल दें। जब प्याज का रंग हल्का सुनहरा हो जाए, तो इसमें कटे हुए टमाटर, गरम मसाला पाउडर, हल्दी, हीग और मिर्च पाउडर डालें। टमाटर गल जाने पर इसमें उबली हुई कल्थी दाल डाल दें, साथ ही जरूरत के मुताबिक नमक और पानी मिलाएं। कड़ाही पर ढक्कन लगाकर इसे आठ-दस मिनट तक धीमी आंच पर पकाएं। इसके बाद इसमें कसूरी मेथी और बारीक कटा हुआ हरा धनिया डाल दें। अब कुल्थी की तड़का दाल बनकर तैयार है। इसे चपाती, ब्रेड या चावल के साथ परोसा जा सकता है।

## मिर्ची वड़ा

अगर कुछ चटपटा और तीखा खाने का मन हो, तो मिर्ची वड़ा एक बेहतरीन विकल्प है। उत्तर भारत में यह व्यंजन काफी लोकप्रिय है। दरअसल, ये हरी मिर्च से बने पकौड़े होते हैं, जिनमें आलू या अरबी की भराई की जाती है। इनका स्वाद आम पकौड़े से काफी अलग होता है। युवाओं और महिलाओं को ये काफी पसंद आते हैं।

### सामग्री

बड़े आकार वाली हरी मिर्चः 200-250 ग्राम, आलूः तीन-चार, जीरा पाउडरः एक चम्मच, बारीक कटा हरा धनियाः आधी कटोरी, धनिया पाउडरः आधा चम्मच, अमचूर पाउडरः आधा चम्मच, बेसनः 100 ग्राम, लाल मिर्च पाउडरः आधा चम्मच, नमकः स्वादानुसार।

### विधि

सबसे पहले आलू को धोकर कुकर में उबाल लें और फिर ठंडा होने के लिए रख दें। इस बीच बड़े आकार वाली हरी मिर्च को पानी में अच्छी तरह धो लें। फिर एक साफ कपड़े से उन्हें सुखा लें। चाकू की मदद से प्रत्येक मिर्च को एक तरफ से चीरा लगाकर भरावन के लिए जगह बनाएं। साथ ही मिर्च के अंदर से बीज को निकाल दें। अब उबले हुए आलू के छिलके उतार कर उन्हें हाथ से अच्छी तरह मसल लें। इसमें नमक, जीरा पाउडर, बारीक कटा हुआ हरा धनिया और गरम मसाला पाउडर मिलाएं। अब आलू के इस मिश्रण को एक-एक करके हरी मिर्च में समान रूप से भर दें। फिर एक कटोरे में बेसन लें, उसमें आधा चम्मच लाल मिर्च पाउडर और एक चुटकी हींग मिलाएं। चाहें तो एक चुटकी बेकिंग सोडा भी डाल सकते हैं। इसमें आधा कप पानी डालकर गाढ़ा घोल बना लें। साथ ही आवश्यकतानुसार नमक भी डालें। इसे अच्छी तरह से मिलाएं, ताकि घोल में कोई गांठ न रहे। अब भरी हुई हरी मिर्च को एक-एक करके घोल में डुबोएं और तेल में हल्का सुनहरा होने तक तलें। मिर्ची वड़ा को कुछ देर छननी पर रखें, ताकि इसमें से अतिरिक्त तेल निकल जाए। इसे चाय और अपनी मन पसंद चटनी के साथ परोसें।

युद्ध प्रभावित क्षेत्रों में बच्चों के सामने हर दिन एक ही जंग होती है - जिंदा रहने की जंग। यह उनसे उनका बचपन छीन लेती है।
-कैथरीन रसेल, एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर, यूनिसेफ

दैनिक भास्कर
अब आप रसरंग के सभी आर्टिकल DB एप पर हर रविवार पढ़ सकते हैं। डाउनलोड करें DB एप

कवर स्टोरी

डॉ. दमन आहूजा
बाल अधिकार विशेषज्ञ

# युद्धों में राख होते बच्चों के अधिकार!

**पोषण, शिक्षा, स्वास्थ्य और सुरक्षित आवास; यूएन जैसी संस्थाएं सभी बच्चों के इन अधिकारों की पैरवी करती हैं।** मगर जंग के मौजूदा हालात में कैसे रौंदे जा रहे हैं ये अधिकार, इसी का एक विश्लेषण...

**40,000**
तक बच्चे मारे गए हैं पिछले 5 साल के दौरान युद्धों की वजह से दुनियाभर में।

तस्वीर प्रतीकात्मक।

**ईरान** के मिनाब की प्राथमिक स्कूल में पढ़ने वालीं उन छह से बारह साल की बच्चियों को क्या मालूम था कि सुबह अपनी अम्मी और अब्बू को वे जो टाटा बाय-बाय बोलकर जा रही हैं, वह उनकी अंतिम टाटा बाय-बाय होगी! इसी साल 28 फरवरी को इस स्कूल पर हुए हमले की तस्वीरों ने पूरी दुनिया को झकझोर दिया था। इसमें 168 मासूम छात्राओं की मौत हो गई थी। आखिर इन बच्चियों का कसूर क्या था? सिर्फ इतना कि वे उस दौर में पैदा हुईं, जहां बेवजह भी युद्ध लड़ना बड़े लोगों की फितरत बन गई है!

युद्ध बड़े देशों या गुटों के बीच होते हैं, लेकिन इसकी कीमत उन मासूम बच्चों को चुकानी पड़ती है, जिनका उस युद्ध से सीधे कोई लेना-देना नहीं होता है। यूनिसेफ की रिपोर्ट कहती है कि इस समय 47.3 करोड़ से अधिक बच्चे, यानी दुनिया के हर छह में से एक बच्चा संघर्ष प्रभावित क्षेत्रों में रह रहा है। युद्धग्रस्त क्षेत्रों में रहने वाले बच्चों का आंकड़ा 1990 के दशक में लगभग 10 प्रतिशत था, जो अब बढ़कर करीब 19 प्रतिशत हो गया है। यूनिसेफ की एक अन्य रिपोर्ट के अनुसार युद्धों के मामले में 2024 का साल द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद सबसे भयावह वर्ष साबित हुआ है।

20 नवंबर, 1989 को संयुक्त राष्ट्र सभा द्वारा बाल अधिकारों की घोषणा के बाद 196 देशों ने इन पर सहमति जताई थी। बच्चों के लिए सभी मुख्य अधिकारों को 54 अनुच्छेदों के तहत रखा गया है। लेकिन आज दुनिया में मुख्यतया तीन बड़े संघर्षों (ईरान बनाम अमेरिका, रूस बनाम यूक्रेन और फिलीस्तीन बनाम इजराइल) में बच्चों के इन्हीं अधिकारों का जमकर उल्लंघन हो रहा है।

**(लेखक राष्ट्रीय किशोर स्वास्थ्य कार्यक्रम के अलावा कई संस्थाओं के साथ बतौर रिसोर्स पर्सन जुड़े रहे हैं।)**

## बच्चों के इन 4 मुख्य अधिकारों का हो रहा है हनन

जहां भी युद्ध होता है, वहां बच्चों के मुख्य तौर पर चार मौलिक अधिकारों (पोषण, शिक्षा, स्वास्थ्य और सुरक्षित आवास) का सबसे अधिक हनन होता है। जानते हैं, कैसे :

### 1. पोषण का अधिकार : 6.3 करोड़ बच्चे भुखमरी के कगार पर पहुंचे

ग्लोबल हंगर इंडेक्स के अनुसार युद्धग्रस्त देशों में भुखमरी का स्तर शांतिपूर्ण देशों की तुलना में 40% तक अधिक होता है। चूंकि दुनिया का एक बड़ा हिस्सा युद्ध की चपेट में आ गया है। इस वजह से भुखमरी से ग्रस्त बच्चों की संख्या भी लगातार बढ़ती जा रही है। वर्ल्ड फूड डे 2025 की एक रिपोर्ट कहती है कि युद्ध प्रभावित क्षेत्रों में करीब 6.3 करोड़ बच्चे भुखमरी के कगार पर पहुंच गए हैं।

### 2. स्वास्थ्य का अधिकार : 40% बच्चों को वैक्सीन नहीं लग पा रही

यूनिसेफ के मुताबिक युद्धग्रस्त क्षेत्रों के करीब 40 फीसदी बच्चे ऐसे हैं, जिन्हें वैक्सीन या तो लगी नहीं या डोज पूरे नहीं हो पाए। इससे ये बच्चे खसरा और पोलियो जैसी बीमारियों के प्रकोप के प्रति अधिक संवेदनशील हो गए हैं। इम्युनिटी कमजोर होने की वजह से युद्ध प्रभावित क्षेत्रों में 5 वर्ष से कम उम्र के बच्चों की मृत्यु दर सामान्य क्षेत्रों की तुलना में दोगुनी तक पहुंच गई है।

### 3. शिक्षा का अधिकार : 7.80 करोड़ से अधिक बच्चे स्कूल नहीं जा पा रहे

युद्धरत क्षेत्रों में शिक्षा की स्थिति और भी गंभीर है। यूनेस्को के अनुसार ऐसे देशों में 7.8 करोड़ बच्चे स्कूलों से बाहर हैं। फिलीस्तीनी शिक्षा मंत्रालय के अनुसार मार्च 2025 तक गाजा के 87.5% स्कूल ध्वस्त हो गए हैं या उन्हें नुकसान पहुंचा है। इससे वहां के सभी 6.25 लाख बच्चे स्कूल नहीं जा पा रहे। यूक्रेन में 3,370 शिक्षा संस्थानों को पूर्ण या आंशिक तौर पर नुकसान पहुंचा है।

### 4. घर का अधिकार : 4.72 करोड़ बच्चे अपनी जगहों से विस्थापित

यूएन की एक रिपोर्ट के अनुसार 2024 के अंत तक 4.72 करोड़ बच्चे युद्ध और हिंसा के कारण विस्थापित हो चुके थे। फिलीस्तीन (विशेषकर गाजा क्षेत्र), लेबनान, म्यान्मार, सूडान और यूक्रेन जैसे क्षेत्रों में संघर्ष तेज होने के कारण विस्थापन और बढ़ा है। यूएन रेफ्यूजी एजेंसी की रिपोर्ट कहती है कि अकेले यूक्रेन में 50 लाख बच्चे अपने घरों से विस्थापित हो चुके हैं।

## रसरंग नॉलेज एंड रिसर्च

### यूक्रेन... 20 हजार बच्चों और किशोरों का अपहरण, ब्रेनवॉश की कोशिश

'टाइम' में प्रकाशित एक रिपोर्ट में यूक्रेन के अधिकारियों के हवाले से बताया गया है कि रूस 20 हजार से भी अधिक यूक्रेनी बच्चों का अपहरण कर अपने देश ले गया है। यूक्रेन सिक्योरिटी सर्विस के दावानुसार रूस अपहृत बच्चों का सुनियोजित ढंग से ब्रेनवॉश कर उन्हें यूक्रेन के खिलाफ ही खड़ा कर रहा है।

### गाजा... 18 हजार बच्चों की मौत, जख्मी अंगों में दर्द से भी गंवाई जान

यूनिसेफ के अनुसार हालिया संघर्ष में अकेले गाजा में 18 हजार से अधिक बच्चे मारे गए हैं। यूएन रिलीफ एजेंसी के मुताबिक एनेस्थीसिया की आपूर्ति नहीं होने की वजह से अनेक बच्चों ने दर्द की वजह से भी जान गंवा दी। वहां हर दिन कम से कम 10 बच्चों के जख्मी एक या दोनों पैर काटने पड़े हैं।

## मेंटल इम्पैक्ट : दुनिया से उठ जाता है भरोसा

**डॉ. अचल भगत**
सीनि. कंसलटेंट साइकेट्रिस्ट एंड साइकोथेरेपिस्ट, अपोलो हॉस्पिटल्स, दिल्ली

**युद्धों** या युद्ध जैसी परिस्थितियों का बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य पर भी अत्यंत गहरा असर पड़ता है। ऐसे बच्चे इन तीन समस्याओं से ग्रस्त हो सकते हैं :

**टॉक्सिक स्ट्रेसः** हार्वर्ड सेंटर ऑन द डेवलपिंग चाइल्ड की एक रिसर्च कहती है कि युद्ध जैसी स्थितियों में लंबे समय तक रहने से बच्चों के मस्तिष्क में 'टॉक्सिक स्ट्रेस' पैदा होता है। यह तनाव मस्तिष्क के 'प्रीफ्रंटल कॉर्टेक्स' (निर्णय लेने का केंद्र) और 'हिप्पोकैम्पस' (याददाश्त का केंद्र) के बीच के न्यूरल कनेक्शन को कमजोर कर देता है। इससे बच्चों की सीखने की क्षमता और भावनाओं को नियंत्रित करने की शक्ति स्थायी रूप से प्रभावित हो सकती है।

**पोस्ट ट्रॉमेटिक स्ट्रेस डिसऑर्डरः** अध्ययनों में पाया गया कि युद्धग्रस्त क्षेत्रों में रहने वाले बच्चों में 'पोस्ट ट्रॉमेटिक स्ट्रेस डिसऑर्डर' के लक्षण बढ़ जाते हैं। जैसे, गाजा में लैंसेट की स्टडी के अनुसार वहां के 65% बच्चे-किशोर और यूक्रेन में JAMA पीडियाट्रिक्स की स्टडी के अनुसार 35% किशोर इस समस्या से ग्रस्त पाए गए। ये बच्चे 'हाइपरविजिलेंस' (लगातार खतरे का अहसास) की स्थिति में रहते हैं, जिससे डर, बुरे सपने, नींद की समस्या बढ़ जाती है।

**इनसिक्योर अटैचमेंट डिसऑर्डरः** अनेक साइकोलॉजिकल रिसर्च से पता चलता है कि युद्ध बच्चों के 'सुरक्षित दुनिया के प्रति भरोसे' को तोड़ देता है। बेथलेहम यूनिवर्सिटी द्वारा किए गए शोध में पाया गया कि जिन बच्चों ने अपने माता-पिता को खो दिया, उनमें 'इनसिक्योर अटैचमेंट डिसऑर्डर' की दर 60% तक अधिक देखी गई। यह रिसर्च साबित करती है कि परिवार का साथ छूटने से बच्चों में डिप्रेशन का जोखिम अन्य बच्चों की तुलना में कहीं अधिक होता है।

## हर हफ्ते खेलिए भास्कर फैमिली क्विज

हर रविवार **रसरंग** में खेलिए भास्कर फैमिली क्विज। इसमें भाग लेने के लिए यहां दिए गए **क्यूआर कोड** को स्कैन करें। वहां आपको मिलेंगे पांच सवाल।

या आप **8770592563** नंबर पर QUIZ टाइप करके वॉट्सअप भी भेज सकते हैं। इस पर मिले लिंक को ओपन करके दीजिए सवालों के जवाब। पांचों सवालों के सही जवाब देकर आप बन सकते हैं लकी विनर और जीत सकते हैं 2100 रु. तक के उपहार।

**अब आप क्विज में आज रात 12 बजे तक शामिल हो सकते हैं।**

### भास्कर फैमिली क्विज-176 के सवाल

**Q-1.** इनमें से किस पर्वत को नेपाल में 'सागरमाथा' के नाम से जाना जाता है?
(A) माउंट मकालू (B) माउंट एवरेस्ट
(C) लोत्से (D) कंचनजंगा

**Q-2.** गुरुद्वारा पंजा साहिब इनमें से किस देश में स्थित है?
(A) पाकिस्तान (B) भारत
(C) कनाडा (D) श्रीलंका

**Q-3.** भारत रत्न सर्वप्रथम इनमें से किस खिलाड़ी को प्रदान किया गया था?
(A) सुनील गावस्कर
(B) सचिन तेंदुलकर
(C) मिल्खा सिंह (D) दारा सिंह

**Q-4.** टर्म 'विटिकल्चर' इनमें से किस चीज के उत्पादन से संबंधित है?
(A) सिल्क (B) केंचुए
(C) अंगूर (D) शहद

**Q-5.** राजा दशरथ की कौन-सी रानी उनके साथ युद्ध में भाग लिया करती थीं?
(A) कैकेयी (B) कौशल्या
(C) सुमित्रा (D) तीनों

### भास्कर फैमिली क्विज-175 के जवाब

प्रश्न 1 - सही जवाब : (A) न्यूटन, प्रश्न 2: (B) सम्राट अशोक, प्रश्न 3: (A) बांग्लादेश, प्रश्न 4: (D) गोविंद मिश्र, 5: (C) कर्नाटक।

### ... और लकी विनर्स

अवलिन (XXXXX62832)
चिरंजू गुर्जर (XXXXX52627)
डॉ. रजनी ठाकुर (XXXXX70882)
कालूलाल मीणा (XXXXX89884)
मनोहर शर्मा (XXXXX24636)
मुनीष बंसल (XXXXX06755)
नेहा गोयल (XXXXX34541)
प्रशांत बख्शी (XXXXX63990)
राजेश कुमार सोलंकी (XXXXX86890)
सीमा शर्मा (XXXXX81595)।

(लकी विनर्स से दैनिक भास्कर की टीम संपर्क करेगी।)

# पाषाण युग से शास्त्रीय परंपरा तक ऐसे प्रचलन में आई देवी-पूजा

मायथोलॉजी

देवदत्त पट्टनायक

**भा**रत में देवी पूजा की शुरुआत कब हुई, यह निर्धारित करना काफी कठिन है। संभव है कि इसकी शुरुआत पाषाण युग में हुई हो। यह वह समय था, जब मनुष्य धरती को देवी या किसी महिला के गर्भाशय से जोड़कर देखने लगा था। इसी दौर में पेड़ों और नदियों को भी देवी के रूप में मानने की प्रवृत्ति विकसित हुई।

मध्य प्रदेश की सोन नदी घाटी क्षेत्र में बाघोर गांव के पास एक पत्थर मिला है, जिस पर त्रिकोणीय चिह्न बने हैं। लगभग 10,000 वर्ष पुराना यह बाघोर पत्थर पूजा में प्रयुक्त भारत की सबसे प्राचीन वस्तु माना जाता है। त्रिकोणीय चिह्न को इस देवता के लिंग से जोड़ा गया है, लेकिन यह निष्कर्ष तांत्रिक ज्यामिति के आधार पर निकाला गया है, जो उस पत्थर के निर्माण के लगभग 9,000 वर्ष बाद प्रचलित हुई।

प्रारंभिक देवी पूजक मनुष्यों की अभिव्यक्तियों को आज समझ पाना संभव नहीं है। इसलिए उनके बारे में न तो कोई धर्मग्रंथीय प्रमाण उपलब्ध हैं और न ही ठोस भौतिक साक्ष्य। संभवतः उन्होंने चट्टानों, मिट्टी, पत्तों और टहनियों जैसी नैसर्गिक वस्तुओं से देवियों की कल्पना की हो। ऐसे अनुष्ठानों में प्राकृतिक वस्तुओं का उपयोग आज भी भारत में देखा जा सकता है। लंबी कालावधि के कारण इन प्रारंभिक देवियों के भौतिक प्रमाण नष्ट हो गए। इन्हें ही आगे चलकर कुलदेवी और ग्रामदेवी के रूप में जाना गया, जिनकी पूजा आज भी हमारे यहां प्रचलित है।

प्राचीन मंदिरों में देवी को अक्सर हल्दी, कुमकुम या नारंगी रंग से लिप्त एक चट्टान के रूप में दर्शाया गया है, जिसके ऊपरी भाग पर चांदी जैसी आंखें अंकित होती हैं। यही भारत की प्रारंभिक देवियां थीं। लेकिन उनकी पूजा कब शुरू हुई, यह कहना आज असंभव है।

जम्मू-कश्मीर में पाई गई देवी की करीब 1200 वर्ष पुरानी प्रतिमा। इसे देवी की प्राचीन प्रतिमाओं में से एक माना गया है।

ग्रंथों में देवियों का प्रारंभिक उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है, जो 3,000 वर्ष से भी अधिक पुराना है। इसमें भोर की देवी 'उषा', वन की देवी 'अरण्यानि' और वाणी की देवी 'वाच' (वाक्) का उल्लेख है। इसी ग्रंथ में शक्ति की देवी 'दुर्गा' और समृद्धि की देवी 'श्री' का भी जिक्र मिलता है। हालांकि, इन सभी संदर्भों में देवियों के शारीरिक रूप का वर्णन नहीं है, बल्कि उनके वैचारिक स्वरूप की ही चर्चा है।

देवी-सदृश सबसे प्राचीन प्रतिमा एक स्तूप में मिली है, जिसे संभवतः लोककथाओं में वर्णित यक्षी नामक एक उग्र आत्मा से जोड़ा जाता है। हालांकि, यह केवल एक अनुमान है, क्योंकि स्तूपों के मुहरों पर क्या छपा है, हम निश्चित रूप से नहीं जानते हैं।

हड़प्पा की सभ्यता के लगभग 2,000 वर्ष बाद और ऋग्वेद के समयकाल के करीब 1,000 वर्ष पश्चात गुप्त राजवंश और भारतीय-यूनानी कुषाण राजवंश के सिक्कों पर देवियों की प्रतिमाएं अंकित होने लगीं। इन सिक्कों पर देवी को सोने से भरे पात्र के साथ दर्शाया गया है, जो आगे चलकर लक्ष्मी की प्रतिमा के रूप में विकसित हुई। ऐसी प्रतिमाएं सांची और भरहुत के बौद्ध स्तूपों में भी मिलती हैं। सरस्वती की प्रारंभिक प्रतिमा मथुरा के कंकाली टीला से प्राप्त हुई है, जो जैन परंपरा से जुड़ी है। इन सभी देवियों को दो भुजाओं के साथ दर्शाया गया है। चार भुजाओं वाली देवी की प्रतिमा उत्तरकालीन कुषाण कला में मिलती है, जहां वह एक महिष का वध करती दिखाई देती हैं। यही रूप आगे चलकर दुर्गा के रूप में विकसित हुआ। 7वीं सदी में पल्लव और चालुक्य काल की कला के माध्यम से यह स्वरूप व्यापक रूप से लोकप्रिय हुआ।

लगभग 1500 वर्ष पहले, गुप्त काल तक आते-आते देवियों की स्वतंत्र पहचान बनने लगी थी। बौद्ध धर्म में तारा और महामयूरी को बुद्ध की सहचरी के रूप में, जबकि हिंदू परंपरा में देवियों को विष्णु और शिव की पत्नियों के रूप में दिखाया जाने लगा। उदाहरणार्थ, ओडिशा के 7वीं सदी के परशुरामेश्वर मंदिर में देवी को शिव के पास बैठकर उन्हें भोजन कराते हुए दर्शाया गया है। इसी प्रकार की प्रतिमाएं मुंबई के निकट एलिफेंटा गुफाओं में भी मिलती हैं। इसी कालावधि में वे देवियां उभरीं, जिनसे हम आज परिचित हैं, विशेष रूप से लक्ष्मी, दुर्गा, सरस्वती और पार्वती। ये सौम्य एवं दो-भुजाओं वाली देवियां अधिक भव्य और बहु-भुजाओं वाले शिव, विष्णु और ब्रह्मा की सहचरियों के रूप में प्रस्तुत की गईं।

अगले सप्ताह के लेख में हम समझेंगे कि बहु-भुजाओं वाली देवियों के और कौन-कौन से रूप विकसित हुए, वे राजसत्ता से कैसे जुड़ीं और स्वतंत्रता संग्राम में उनकी क्या भूमिका रही।

**• devdutthindi@gmail.com**

इस कॉलम को मोबाइल पर सुनने के लिए **QR कोड** को स्कैन करें।

# छोटी नदियों का खत्म होना किसी सांस्कृतिक संकट से कम नहीं

हिन्दवी से खास

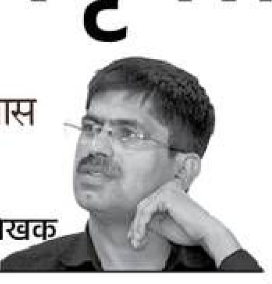

**रमाशंकर सिंह**
नई पीढ़ी के कवि एवं लेखक

**य**दि कविता, साहित्य की प्राचीनतम विधा है तो यह भी सही है कि शायद ही ऐसा कोई कवि होगा जो अपने साहित्यिक जीवन में नदी पर कविता न लिखे। ऋग्वेद तो कविता की सबसे प्राचीनतम किताब है और उसमें नदियों के विवरण भरे पड़े हैं। लेकिन आज भारत में नदियों का जाल विशृंखल हो रहा है।

भारत में बड़ी नदियों पर तो संकट थे ही, अब छोटी नदियां उनकी जद में आ गई हैं। आधुनिक भारत में विकास की कहानी बड़ी नदियों पर बांध बनाने और उनसे नहर निकाले जाने से सीधे जुड़ी हैं। उनमें बढ़ते प्रदूषण और बांध विरोधी आंदोलनों के कारण भी बड़ी नदियों पर पर्याप्त बहस होती रहती है, लेकिन छोटी नदियों का मुद्दा गायब ही रहता है। परंतु इसे लंबे समय तक उपेक्षित रखना घातक है। भारत की बड़ी नदियों की सहायक नदियां धीरे-धीरे सूख रही हैं और इन सहायक नदियों को पोषित करने वाली अत्यंत छोटी पहाड़ी व मैदानी सरिताएं संकट में आ गई हैं। इन नदियों में प्रदूषण और अतिक्रमण ने इस संकट को और गहरा कर दिया है। एक रिपोर्ट के मुताबिक पृथ्वी पर 640 लाख किलोमीटर की नदियों और धाराओं में से 51 से 60 फीसदी ने समय-समय पर बहना बंद कर दिया है। यह वे नदियां हैं जो साल भर नहीं बहती हैं या बारहमासी नहीं हैं, लेकिन दूसरी नदियों को जीवित रखती हैं। भारत में इन नदियों से लोगों का ध्यान हट जाना किसी सामाजिक-सांस्कृतिक त्रासदी से कम नहीं है।

पिछले 15 वर्षों से मैं गंगा और यमुना के किनारे बसे नगरों और समुदायों की जिंदगानी पर लिखता-पढ़ता रहा हूं। इन नदियों के किनारे गुजरते हुए कोई भी इस बात को अनुभवमूलक तरीके से देख सकता है। यह एक सामान्य बात है कि भारत

में कोई नदी चाहे छोटी हो या बड़ी, वह लोगों के सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक जीवन का आधार है। ये नदियां स्थानीय समुदायों को पीने का पानी, सिंचाई, मछली पालन और विभिन्न किस्म से आजीविका प्रदान करती हैं। निषाद, मछुआरे, किसान और विभिन्न प्रकार के पशुपालक समुदाय इन नदियों पर निर्भर हैं। इन नदियों के साथ इन समुदायों की एक गहरी सांस्कृतिक संलग्नता भी है। इसके बिना उनकी पहचान संकट में पड़ जाती है और जीविका का आधार खत्म हो जाता है।

वास्तव में, उत्तर भारत के प्रत्येक शहर ने अपने यहां बहने वाली नदी को नष्ट कर दिया है, पाट दिया है अथवा नाले में तब्दील कर दिया है। यह एक पर्यावरणीय संकट तो है ही, सांस्कृतिक संकट भी है। वर्ष 2025 में हम सबने देखा कि ठठ्ठ के ठठ्ठ लोग कुंभ स्नान के लिए चले आ रहे हैं। ऐसा इसलिए ही नहीं है कि प्रयागराज का महत्व है। ऐसा इसलिए भी है कि लोगों के सांस्कृतिक व्यवहार में मेला और देशाटन सदियों से शामिल रहा है और इसमें सबसे बड़ी भूमिका छोटी नदियों की है। प्रत्येक नदी एक सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक दायरे का निर्माण करती है। इसके किनारे मेले लगते हैं। इन मेलों में तरह-तरह के व्यापारी, शिल्पकार, खेल-तमाशे दिखाने वाले लोग शामिल होते हैं और यह प्रक्रिया हजारों सालों से चली आ रही है। धीरे-धीरे यानी पिछले सत्तर-अस्सी सालों में ये मेले कम होते गए। ऐसा क्यों हुआ? क्योंकि छोटी नदियां प्रदूषित हो गईं। उनके किनारे पाट दिए गए और वहां लोगों ने कब्जे कर लिए। इन छोटे-छोटे मेलों का नष्ट होना भारत का बहुत बड़ा सांस्कृतिक घाटा है।

यदि इन छोटी नदियों को पुनर्जीवित किया जाए तो एक नष्ट हुई दुनिया के अवशेष फिर से लहलहा उठेंगे। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने कहा था कि परिचय से प्रेम उपजता है। हमारी पीढ़ी का अपनी नदियों से अपरिचय हो गया है। उसमें नदियों के प्रति सम्मान बहुत कम बचा है। नदियों के इस देश को नदियों के माध्यम से फिर से जानने की आवश्यकता है। केवल बड़ी नहीं बल्कि छोटी नदियों के द्वारा जानने की आवश्यकता है। छोटी नदियां ही इस देश को सांस्कृतिक, सामाजिक और अंततः आर्थिक दारिद्र्य से बचा सकती हैं।

**• हिन्दवी के साथ विशेष अनुबंध के तहत।**

फिल्म 'मुझसे शादी करोगी' में अमरीश पुरी ने की थी जबरदस्त कॉमेडी

# कॉमेडी, जिसने बदल दी 'विलेन' की छवि!

मेरे हिस्से के किस्से

रूमी जाफरी
बॉलीवुड फिल्मों के लेखक और निर्देशक

पिछले हफ्ते मैंने अपना कॉलम अमरीश पुरी जी पर लिखा था। मेरी कलम रुक नहीं रही थी, क्योंकि उनका काम और उनकी शख्सियत एक कॉलम में समा ही नहीं सकती। इसलिए मैंने एक और कॉलम अमरीश जी पर लिखने का तय किया।

पिछले हफ्ते मैंने कॉलम की शुरुआत फिल्म 'मुझसे शादी करोगी' से की थी। उस फिल्म में कर्नल साहब का किरदार आज भी यादगार है। कई बार किसी एक्टर की इमेज फिल्म को कितना फायदा पहुंचाती है, इसकी बड़ी मिसालों में से एक है यह किरदार, जिसे अमरीश पुरी जी ने निभाया था। दरअसल, जब फिल्म की कास्टिंग हो रही थी, तो हमने कर्नल साहब के रोल के लिए किसी और एक्टर के बारे में सोच लिया था। लेकिन एक रात मैं टीवी पर 'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे' देख रहा था। उसे देखते-देखते मेरे मन में ख्याल आया कि इस रोल के लिए तो अमरीश जी ही मुनासिब रहेंगे।

अगली सुबह मैं ऑफिस गया और साजिद व डेविड साहब से कहा कि कर्नल साहब के रोल के लिए हमें अमरीश पुरी जी को ही लेना चाहिए। उन्होंने कहा, 'तू पागल हो गया है? अमरीश पुरी इतने सीरियस एक्टर हैं, उनकी पर्सनैलिटी अलग है, वो विलेन या गंभीर रोल के लिए ही सही हैं।' मैंने उनसे कहा कि मैंने रात को 'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे' देखी। उसमें फिल्म का एक बड़ा हाइलाइट अमरीश जी ही हैं। उनकी आवाज, उनका चेहरा, उनका व्यक्तित्व, सब इतना प्रभावशाली है कि जब शाहरुख खान का किरदार बीयर चुराता है, तो दर्शक सोचते हैं, 'ओह गॉड, इसने अमरीश पुरी की बीयर चुरा ली।' जब काजोल के लिए बात आती है, तो लगता है कि अमरीश पुरी कभी इजाजत नहीं देंगे। इसी इमेज की वजह से जब वे आखिर में काजोल का हाथ छोड़ते हैं, तो थिएटर में तालियां बजती हैं, क्योंकि दर्शकों के मन में अमरीश जी कि इमेज है कि यह आदमी तो अपनी बेटी नहीं देगा।

'मुझसे शादी करोगी' के एक कॉमेडी सीन में अमरीश पुरी।

मैंने कहा कि यही बात 'मुझसे शादी करोगी' में भी होगी। अगर कोई और एक्टर होगा तो कुत्ते के काटने या फुटबॉल लगने वाला सीन सिर्फ कॉमेडी रहेगा। लेकिन जब वही सब अमरीश जी के साथ होगा, तो दर्शक सोचेंगे, 'ओह गॉड, अमरीश जी को लग गई! अब तो सलमान की खैर नहीं!' मेरी बात साजिद और डेविड साहब, दोनों को समझ में आ गई। अमरीश जी अपने रोल के मामले में बहुत सिलेक्टिव थे और इससे पहले वे हमें एक फिल्म के लिए मना कर चुके थे। मैंने कहा, आप चिंता मत कीजिए, मैं उनसे बात करता हूं।

मैं अमरीश जी के पास गया, उन्हें रोल सुनाया और उन्होंने खुशी-खुशी फिल्म साइन कर ली। मुझे आज भी याद है, 'मुझसे शादी करोगी' 30 जुलाई 2004 को रिलीज हुई थी और सिर्फ छह महीने बाद यानी 12 जनवरी 2005 को अमरीश जी हमें छोड़कर चले गए।

इसी बात पर जिगर मुरादाबादी का एक शेर याद आता है :

*'ज़िंदगी इक हादसा है और कैसा हादसा,*
*मौत से भी खत्म जिसका सिलसिला होता नहीं।'*

अमरीश जी का जाना पूरी फिल्म इंडस्ट्री के लिए बहुत बड़ा नुकसान था। जाना तो सबको है, लेकिन जिस तरह से वे गए, उसे याद कर आज भी मन दुखी हो जाता है। वे मनाली में गुड्डू धनोआ जी की फिल्म 'जाल' की शूटिंग कर रहे थे, जिसमें सनी देओल भी थे। एक बाइक सीन था। बाइक को मशीन पर फिक्स कर दिया गया था, जिसमें एक्टर को बैठकर बस एक्टिंग ही करनी थी कि वो बाइक चला रहा है। सामने एक टेम्पो में डायरेक्टर गुड्डू धनोआ और एक्शन मास्टर टीनू वर्मा मौजूद थे। लेकिन रास्ते में एक ढलान पर बाइक को टर्न लेना था। मशीन भारी और फिक्स्ड थी, इसलिए वह संतुलन खो बैठी और पलट गई। सनी देओल और अमरीश जी दोनों गिरे। सनी जी को भी चोट लगी, लेकिन अमरीश जी को ज्यादा गंभीर चोट आई। उनका सिर जमीन से टकरा गया था और एक पत्थर उनकी आंख में जा लगा था। गुड्डू भाई ने तुरंत हेलीकॉप्टर मंगवाया और उन्हें शिमला के अस्पताल ले जाया गया। वहां डॉक्टर ने प्राथमिक इलाज किया। गुड्डू भाई बताते हैं कि जब वे अंदर गए, तो देखा कि अमरीश जी के पूरे मुंह और आंख पर पट्टी बंधी हुई थी। गुड्डू भाई ने उनका हाथ पकड़ा तो समझ गए कि ये गुड्डू है। उन्होंने उनसे कहा, 'तू फिक्र मत कर गुड्डू, मुझे कुछ नहीं होगा। तू देख, मैं फर्स्ट क्लास हो जाऊंगा।' यह सुनकर गुड्डू भाई रो पड़े।

तीन दिन बाद उन्हें दिल्ली लाया गया, फिर इलाज के लिए मुंबई। उनके पोते वर्धन पुरी ने बताया कि शिमला में खून की बहुत कमी थी, बड़ी मुश्किल से एक बोतल ब्लड मिला। बाद में जांच में कहा गया कि उसी ब्लड में कैंसर के सेल्स थे। हालांकि गुड्डू भाई को ऐसा कुछ याद नहीं। लेकिन इतना जरूर है कि उसके बाद सब कुछ बहुत तेजी से हुआ और अमरीश जी हमें छोड़कर चले गए। उनका जाना आज भी खलता है। हम अक्सर सोचते हैं, काश ऐसा होता, काश वैसा होता तो वे आज भी हमारे बीच में होते। मगर नियति पर भला किसका बस चलता है। लेकिन उनकी यादगार परफॉर्मेंस उन्हें हमेशा हमारे बीच जिंदा रखेगी। आज उन्हें याद करते हुए उनकी फिल्म 'चाइना गेट' का यह गाना सुनिए, अपना ख्याल रखिए, खुश रहिए :

*'छम्मा छम्मा बाजे रे तेरी पैंजनिया...'*

• rumyjafrywrites@gmail.com

*लेखक-प्रकाशक के पास सर्वाधिकार सुरक्षित। लिखित पूर्वानुमति के बिना इस लेख के किसी भी हिस्से को ना तो पुनः प्रकाशित किया जा सकता है, ना ही किसी तरह का व्यावसायिक इस्तेमाल किया जा सकता है।*

'मेरे हिस्से के किस्से' कॉलम को अपने मोबाइल पर सुनने के लिए **QR कोड** को स्कैन करें।

## लच्छा पराठे की तरह बनाएं परतों वाली बाटी

रीडर रैसिपी कॉन्टेस्ट

प्रियंका वर्मा
गृहिणी
बदनावर (मप्र)

**भेजिए रेसिपी और जीतिए 5,100 रु. का गिफ्ट**

**दैनिक भास्कर** के इस कॉलम में आप भी अपनी रेसिपी भेजकर हर सप्ताह जीत सकते हैं **5,100 रु.** मूल्य का गिफ्ट। इसके लिए **QR कोड** को स्कैन कीजिए और लिख भेजिए अपनी रेसिपी। साथ में नाम, प्रोफेशन, फोटो, डिश की तस्वीर जरूर भेजें।

राजस्थान और मप्र के अनेक अंचलों में बनने वाली बाटी आपने खाई होगी। लेकिन आज हम बाटी के एक अलग संस्करण से परिचय करवा रहे हैं। इसका नाम है लच्छा बाटी। इसे लच्छा पराठे की तर्ज पर बनाया जाता है। इसका स्वाद इतना लाजवाब होता है कि एक बार खाने के बाद यह लंबे समय तक याद रहता है। इसे बनाना बेहद आसान है और घर पर उपलब्ध साधारण सामग्री से ही तैयार हो जाती है।

**बनाने की सामग्री :**
2 कटोरी गेहूं का आटा, 1 कटोरी धुली मूंग की दाल, साबुत धनिया, लाल मिर्च पाउडर, हल्दी पाउडर, कसूरी मेथी, अदरक, हरी मिर्च, 3 चम्मच तेल, नमक स्वादानुसार।

**बनाने की विधि :**
- सबसे पहले धुली मूंग की दाल को लगभग 2 घंटे के लिए भिगो दीजिए। इसके बाद दाल को बारीक पीस लीजिए। अब इसमें कद्दूकस किया हुआ अदरक, बारीक कटी हरी मिर्च और बारीक कटा धनिया डाल दीजिए।
- फिर नमक, लाल मिर्च पाउडर और हल्दी स्वादानुसार मिलाएं। सभी सामग्री को अच्छी तरह मिलाने के बाद इसमें थोड़ी-सी कसूरी मेथी डालें। अब इसमें 3 चम्मच तेल डाल दीजिए।
- इसके बाद इसमें धीरे-धीरे गेहूं का आटा मिलाएं। आटे को थोड़ा सख्त गूंध लीजिए। अब आटे की लोइयों से गोल-गोल रोटी बेल लीजिए।
- अब इन रोटियों पर हल्का घी लगाकर रोल तैयार करना है। रोल को धागे की मदद से बीच से काट लीजिए। इस कटे हुए रोल में कई परतें रहेंगी, जो लच्छे का काम करेंगी। अब इस कटे हुए हिस्से को ऊपर की ओर रखते हुए हल्का-सा दबाएं और बाटी का आकार दे दीजिए।
- अब इन कच्ची बाटियों को ओवन में धीमी आंच पर सुनहरा होने तक सेंक लीजिए। आपकी स्वादिष्ट लच्छा बाटी तैयार हैं।

## तारे-सितारे

मनीष शर्मा
ज्योतिषाचार्य

व्यापारिक गतिविधियां बढ़ेंगी। तेल, सोना, शक्कर, चांदी, तांबा आदि के दामों में बढ़ोतरी होगी। सेंसेक्स में उठाव रहेगा। उत्तर एवं पश्चिम के क्षेत्रों में गर्मी बढ़ेगी। वायरल रोग भी बढ़ सकते हैं। हालांकि किसी बड़ी परेशानी के आने की आशंका नहीं है।

• jyotish.sansar@gmail.com

**मेष**
अष्टम चंद्र रहेगा। कार्य समय पर होंगे। मंगल एवं बुधवार को अनावश्यक दिक्कतें समाप्त हो सकती हैं। गुरु एवं शुक्रवार को कार्य की अधिकता रहेगी। शनिवार को रमणीय जगह पर जाने का मौका प्राप्त होगा।

**वृषभ**
समय पूर्णतः पक्ष का बना हुआ है। बुधवार को चिंताएं बढ़ सकती हैं। गुरुवार भी परेशानी करने वाला दिन रहेगा। शुक्रवार एवं शनिवार को स्थितियां पुनः अनुकूल हो जाएंगी। विवादों में विजय की प्राप्ति होगी।

**मिथुन**
रविवार एवं सोमवार को विरोधी हावी होने का प्रयास करेंगे। मंगल एवं बुधवार को यात्राएं ज्यादा होंगी। शुक्र एवं शनिवार को परेशानियां आ सकती हैं। शत्रु हावी हो सकते हैं। निकट के लोग भी नाराज हो सकते हैं।

**कर्क**
चंद्र पंचम रहेगा। मंगल एवं बुधवार को ज्यादा एक्टिव रहेंगे। धैर्य की कमी भी रहेगी। तीव्र प्रतिक्रिया देने से नुकसान हो सकता है। शुक्रवार एवं शनिवार को किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति से मिलने का अवसर प्राप्त होगा।

**सिंह**
रविवार एवं सोमवार को भावनात्मक एवं आर्थिक सुरक्षा की जरूरत महसूस होगी। बुधवार को भी दिन अच्छा व्यतीत होगा। गुरुवार को यात्रा का योग बनेगा। शुक्रवार एवं शनिवार को पुनः तनाव महसूस करेंगे।

**कन्या**
रवि एवं सोम को पराक्रम श्रेष्ठ रहेगा। मंगल को परिवार से खुशियां प्राप्त होंगी। बुध एवं गुरुवार को अचानक बड़ा काम बन सकता है। शुक्र एवं शनिवार को संतान अनुकूल रहेगी। कार्यस्थल पर प्रसन्नता रहेगी।

**तुला**
आज एवं सोमवार का दिन उत्तम रहेगा। मंगल की शाम से चंद्रमा तृतीय रहेगा। प्रसन्नतादायक सूचनाएं प्राप्ति का योग बनेगा। गुरु एवं शुक्रवार को अनचाहे कार्य करने पड़ सकते हैं। शनिवार को आय प्राप्त होगी।

**वृश्चिक**
रविवार की सुबह कठिनाई आ सकती है। मंगल एवं बुध को लाभ में वृद्धि होगी। गुरु एवं शुक्रवार को राहत महसूस होगी। शनिवार का दिन भी उत्तम होगा, किंतु शाम के समय सावधान रहें। अकेले कहीं नहीं जाएं।

**धनु**
द्वादश चंद्रमा से खर्चे ज्यादा रहेंगे। मंगलवार से कार्य में सुधार होगा। बुध एवं गुरुवार को कार्य की अधिकता होगी। शुक्र एवं शनिवार को चंद्र का गोचर कुछ मनचाहे कार्य बना सकता है। परिवार का साथ मिलेगा।

**मकर**
रविवार की आरंभिक कठिनाई के बाद लाभ के आसार बनेंगे। मंगल को परिश्रम ज्यादा करना पड़ सकता है। बुधवार से धन की आवक बनेगी। गुरु एवं शुक्रवार सबसे अच्छे दिन व्यतीत होंगे। शनिवार भी अनुकूल रहेगा।

**कुंभ**
दशम चंद्रमा रहेगा। सहयोग की प्राप्ति होगी। संपत्ति से लाभ होगा। गुरु की दोपहर के बाद में चंद्रमा के द्वादश होने से व्यय बढ़ सकते हैं। शुक्रवार भी व्यस्त रहेगा। शनिवार को आय में वृद्धि के साथ संतान अनुकूल रहेगी।

**मीन**
पूरा सप्ताह आनंददायक बना रहेगा। कार्य समय पर होंगे एवं सहयोग भी प्राप्त होगा। बुध एवं गुरु को धन की आवक अच्छी बनेगी एवं निराशा समाप्त होगी। आय के मामले में शुक्र एवं शनिवार सबसे अच्छे दिन रहेंगे।

# मेरा पैसा

सुझाव और प्रतिक्रिया इस पते पर भेज सकते हैं- business.bhaskar@dbcorp.in

## मैनेजमेंट गुरु

एन. रघुरामन

### इस 'समर चैलेंज' को जीतकर बनें विजेता

गर्मी के इस सीजन में सिर्फ तापमान नहीं बढ़ रहा, बल्कि घर के खर्चों में भी उछाल आ रहा है। जिन लोगों ने नए एयर कंडीशनर या स्टेबलाइजर्स की 'पैनिक बाइंग' से खुद को बचा लिया था, अचानक उन्हें नए खर्च ने घेर लिया है। इंडक्शन चूल्हा और उसके अनुकूल बर्तनों की अचानक खरीदारी बढ़ गई है। गैस सिलेंडर की कमी की वजह से मजबूरी में लोगों को बिजली से खाना पकाने के विकल्प अपनाने पड़े। इसने महीने के बजट को शुरू में ही बिगाड़ दिया है। इससे बिजली का बिल तो बढ़ ही रहा है, असली मार उन छोटे दैनिक खर्चों से पड़ती है जिन्हें हम अक्सर नजरअंदाज कर देते हैं।

इन तपिश वाले दिनों में कोल्ड ड्रिंक्स, जूस और ग्लूकोज का इस्तेमाल हमारे घरों में बढ़ जाता है। इस बीच आम जैसे फलों के ऊंचे दाम भी बजट बिगाड़ रहे हैं। दोपहर की लू से बचने के लिए एक साधारण ऑटो-रिक्शा की जगह एसी कैब का चुनाव भी हमारी जेब का बोझ बढ़ा रहा है। बढ़ती गर्मी में कॉटन कपड़े अब लग्जरी नहीं, बल्कि जरूरत बन गए हैं, जो बजट का एक बड़ा हिस्सा मांगते हैं।

इस बार मौसमी महंगाई के साथ-साथ आर्थिक माहौल भी चुनौतीपूर्ण होता जा रहा है। खाने की चीजें, कंज्यूमर ड्यूरेबल्स और एफएमसीजी गुड्स की बढ़ती कीमतें आम आदमी को पिछले साल के मुकाबले 'गरीब' महसूस करा रही हैं। 5-7% की अनुमानित महंगाई दर बजट बनाने के निर्णयों पर भारी पड़ेगी। इससे आज के खर्च और कल की बचत के बीच एक कठिन चुनाव करना होगा। ऊपर से पश्चिम एशिया में बढ़ता तनाव आग में घी का काम कर रहा है। यदि यह संघर्ष तीन महीने से अधिक खिंचता है, तो ईंधन और सप्लाई चेन पर पड़ने वाला असर हर घर की रसोई तक पहुंचेगा। हालांकि मंदी का तत्काल कोई खतरा नहीं है, लेकिन बाजार की सुस्ती से इनकार नहीं किया जा सकता।

गर्मी से बचने के लिए कई लोग सोचते हैं कि वे मॉल जाकर 'मुफ्त' एसी का आनंद लेकर बिजली बचा रहे हैं। लेकिन यह रणनीति अक्सर उल्टा वार करती है। जैसे ही आप मॉल में घुसते हैं, बिना सोचे-समझे खरीदारी का मनोविज्ञान हावी हो जाता है। 'एंड ऑफ सीजन सेल' और महंगे आइसक्रीम संडे के चक्कर में, वह 'मुफ्त' एसी घर के पूरे दिन के बिजली बिल से भी महंगा पड़ता है।

**मैनेजमेंट टिप:**
डगमगाते बाजार और अप्रत्याशित महंगाई के बीच हमारी जेब ढीली होना तय है। अब वह समय आ गया है जब हमें 'छाछ भी फूंक-फूंक कर' पीनी चाहिए। यानी हर छोटे खर्च को लेकर बेहद सतर्क रहने की जरूरत है।

## इन्वेस्टमेंट गाइड

गौरव का सवाल है- हर महीने 5,000 की 8 अलग-अलग एसआईपी है। तीन साल की अनुशासित बचत और फिर भी पोर्टफोलियो की कुल वैल्यू 1 लाख रुपए नीचे है। क्या निवेश रोकना चाहिए?

# 8 म्यूचुअल फंड में निवेश जोखिमभरा

विजय माहेश्वरी
फाउंडर, स्टॉकटिक कैपिटल

**गौरव जी,** अनुशासित निवेश के बावजूद जब नतीजे उम्मीद के मुताबिक नहीं मिलते, तो सवाल उठता है कि क्या पैसा डूब रहा है? लेकिन इस मोड़ पर एसआईपी रोकना गलत फैसला होता है। बाजार से जुड़े निवेश कम अवधि में स्वाभाविक रूप से अस्थिर होते हैं, खासकर तब जब आपका निवेश मिडकैप और स्मॉलकैप फंड्स की ओर अधिक झुका हो। शुरुआती कुछ वर्षों में एसआईपी का रिटर्न (XIRR) प्रदर्शन का सही पैमाना नहीं होता। यह बेहद संवेदनशील आंकड़े की तरह है जो बाजार की छोटी सी गिरावट को भी बड़ा करके दिखाता है। ध्यान रखें कि यदि बाजार में 18% गिरावट आती है, तो एक शुरुआती एसआईपी का रिटर्न 35% तक गिर सकता है। यह इसलिए नहीं होता कि आपने गलत फंड चुना है, बल्कि इसलिए होता है कि अभी आपकी जमा पूंजी छोटी है। यह गणित का स्वभाव है, निवेश की विफलता नहीं। आइए, इसे गहराई से समझते हैं...

### जानिए आपका पोर्टफोलियो लाल क्यों है?

**बाजार का चक्र:** अगर निवेश बाजार की ऊंचाई पर शुरू हुआ, तो बाद में गिरावट से रिटर्न कुछ वर्षों तक निगेटिव रह सकता है।
**ज्यादा जोखिम वाले फंड:** मिडकैप, स्मॉलकैप में उतार-चढ़ाव ज्यादा होता है। इनमें छोटी अवधि में नुकसान आम बात है।
**बिखरा पोर्टफोलियो:** इस केस में यह बड़ी वजह हो सकती है। 8 फंड्स में 5,000 बांटने से हर फंड में औसत 625 रुपए निवेश। यह विविधता नहीं, बल्कि ओवर-फ्रैगमेंटेशन है। इतने कम निवेश से किसी भी एक फंड की ग्रोथ का आपके पूरे पोर्टफोलियो पर कोई खास सकारात्मक असर नहीं पड़ता।

**ओवर-डाइवर्सिफिकेशन** का नुकसान यह है कि यह आपके रिटर्न को औसत बना देता है। मान लीजिए 8 में से 2 फंड्स ने 25% से अधिक का शानदार रिटर्न दिया। बाकी 6 का प्रदर्शन औसत रहा। शानदार प्रदर्शन करने वाले फंड्स में निवेश (सिर्फ 625) बहुत कम था, इसलिए पोर्टफोलियो में इम्पैक्ट नहीं होता। यह एसआईपी की विफलता नहीं है, स्ट्रक्चर की समस्या है।
- वित्तीय जगत नए फंड, नई थीम्स, नए निवेश से आपको व्यस्त रखना चाहता है। पर कम्पाउंडिंग में आप एक सही निर्णय लें और सालों तक उस पर टिके रहें।

**क्या 3 साल एसआईपी परखने के लिए काफी हैं?**
इक्विटी एसआईपी का असली परिणाम कम से कम 5 से 7 साल में दिखता है। बाजार के हर चक्र में ऐसे दौर आते हैं जब 3 साल का रिटर्न फ्लैट या निगेटिव रहता है। 1979 से अब तक के आंकड़ों को देखें तो जिन निवेशकों ने सबसे बुरे समय में भी अपनी एसआईपी जारी रखी, उन्हें निराशा हाथ नहीं लगी।

### तो क्या एसआईपी बंद करनी चाहिए?

**नहीं। पर पोर्टफोलियो सुधारें। गिरावट में एसआईपी रोकना दो गलतियां एक साथ करना है।**

1. नुकसान में एसआईपी बंद करना = घाटे को पक्का करना। यानी कम कीमत पर रुपी कॉस्ट एवरेजिंग का मौका गंवाना।
2. बाजार ऊपर जाने पर फिर से निवेश शुरू करना।

**सही रास्ता :** गिरावट में एसआईपी जारी रखना। इससे ज्यादा यूनिट मिलती हैं। लंबे समय में यही रिकवरी को मजबूत बनाता है। यानी आपका यह अनुशासन ही असली रिटर्न है।

**आगे क्या करें? तीन जरूरी कदम**
- **पहला :** 8 फंड्स को 3–4 में लाएं। फ्लेक्सी-कैप/इंडेक्स फंड में निवेश केंद्रित कर पोर्टफोलियो में स्थिरता की नींव रखें। ग्रोथ के लिए मिड-कैप फंड में दांव लगाइए। स्मॉल-कैप फंड में निवेश तभी कारगर होता है, जब लक्ष्य 10 साल से ज्यादा का हो।
- **दूसरा:** जोखिम को लक्ष्य से जोड़ें। लक्ष्य 5 साल से कम का है, तो इक्विटी एक्सपोजर घटाएं। 10 साल का है, तो निवेश जारी रखें।
- **तीसरा:** आमदनी इजाजत दे, तो एसआईपी धीरे-धीरे बढ़ाएं। आप 1000 रुपए हर माह 20 साल तक निवेश करते हैं, तो अनुमानित 15% के सालाना रिटर्न से फंड 15 लाख बनेगा, लेकिन अगर हर साल मासिक निवेश में 500 रुपए जोड़ते हैं तो फंड इससे तीन गुना ज्यादा 54 लाख रुपए बनेगा।

**एसआईपी वाकई कब बंद करनी चाहिए?**
तीन परिस्थितियों में उचित है। वित्तीय लक्ष्य बदल गए हों, तत्काल पैसों की सख्त जरूरत हो, या फंड की गुणवत्ता ही खराब हो। सिर्फ निगेटिव रिटर्न देखकर एसआईपी रोकना सही कारण नहीं है।

**निष्कर्ष** मौजूदा दौर में घबराएं नहीं और धैर्य बनाए रखिए। पोर्टफोलियो को व्यवस्थित करें। सही एलोकेशन करें। यह बात ध्यान रखें कि निवेश की अवधि जितनी लंबी होगी, पैसे पर कम्पाउंडिंग का प्रभाव उतना ही अधिक होगा। गिरावट के दौर में निवेश जारी रखना ही ऊंचे दीर्घकालिक रिटर्न की असली वजह बनता है।

## बैंकिंग: अब लोन बंद करने पर पेनल्टी नहीं लगेगी, हर हफ्ते अपडेट होगा क्रेडिट स्कोर

अमित कुमार | नई दिल्ली

आरबीआई द्वारा बैंकिंग प्रणाली में कई महत्वपूर्ण बदलाव किए जा रहे हैं। ये सभी नवंबर 2025 से जुलाई 2026 के बीच चरणबद्ध तरीके से लागू हो रहे हैं।
- **प्रीपेमेंट चार्ज खत्म:** 1 जनवरी 2026 के बाद मंजूर या रिन्यू होने वाले फ्लोटिंग रेट रिटेल लोन (होम, कार, पर्सनल, एजुकेशन) को समय से पहले बंद करने पर कोई पेनल्टी नहीं लगेगी।।
- **साप्ताहिक क्रेडिट स्कोर अपडेट:** 1 जुलाई 2026 से क्रेडिट स्कोर हर महीने के बजाय हर हफ्ते अपडेट होगा। इससे अच्छी वित्तीय आदतों का फायदा स्कोर पर तुरंत दिखेगा, लेकिन किस्त में देरी का नुकसान भी जल्दी दर्ज होगा।
- **ब्याज दर में मोल-भाव:** क्रेडिट स्कोर जल्दी अपडेट होने से ग्राहक अपने बेहतर स्कोर के आधार पर बैंकों से ब्याज दरें कम कराने के लिए अधिक प्रभावी ढंग से मोल-भाव कर सकेंगे।
- **चार नॉमिनी की सुविधा:** 1 नवंबर 2025 से बैंक खातों और लॉकर में अधिकतम चार नॉमिनी जोड़ने की अनुमति मिल गई है। इससे उत्तराधिकार की प्रक्रिया पहले के मुकाबले सरल होगी और पारिवारिक विवादों में कमी आएगी।

## गोल्ड लोन: मार्जिन कॉल का खतरा, नीलामी से बचने के लिए वैल्यू का 60% ही लें कर्ज

हिमाली पटेल | मुंबई

सोना रिकॉर्ड स्तर से 18.5% टूट चुका है। इससे उन ग्राहकों के लिए 'मार्जिन कॉल' का खतरा बढ़ गया है जिन्होंने ऊंचे भाव पर गोल्ड लोन ले रखा है। रेसरजेंट इंडिया के एमडी ज्योति प्रकाश के मुताबिक, 'जब कीमतें गिरती हैं तो गिरवी रखे सोने की वैल्यू कम हो जाती है। 'लोन-टू-वैल्यू' (एलटीवी) रेशियो बढ़ जाता है। 1 लाख के सोने पर 75,000 रुपए का लोन (75% एलटीवी) लिया गया। दाम 18.5% गिरे तो गिरवी सोने की वैल्यू 81,500 रुपए रह गई। एलटीवी 92% हो गया, जो मार्जिन कॉल ट्रिगर कर देगा। ऐसे में बैंक और सोना मांगेगा या थोड़ा लोन चुकाने को कहेगा।

- **नीलामी से पहले कितना समय?**
मार्जिन कॉल के बाद एलटीवी सुधारने के लिए 7 से 30 दिन मिलते हैं। समय सीमा खत्म होने पर बैंक 'प्री-ऑक्शन' नोटिस भेजते हैं। बैंक या एनबीएफसी नीलामी शुरू करने से पहले 7-14 दिन का अतिरिक्त समय देते हैं।
- **सुरक्षा के लिए क्या करें?**
बैंक बाजार डॉट कॉम के सीईओ आदिल शेट्टी का कहना है कि वैल्यू का 50-60% उधार लेने में समझदारी है, ताकि कीमतों में गिरावट होने पर भी आपके पास बफर रहे।

## भास्कर Q&A

### जॉइंट प्रॉपर्टी की बिक्री और टैक्स सेविंग की बारीकियां समझिए

**■ मेरा एक 15 साल पुराना फ्लैट है जो मेरे, पत्नी और बेटे के नाम पर है। अब हम इसे बेचना चाहते हैं। बेंगलुरु में नया फ्लैट खरीदना चाहते हैं। इस बिक्री को इनकम टैक्स रिटर्न में कैसे दिखाया जाए? साथ ही, क्या बहू के नाम पर नया फ्लैट ले सकते हैं?- विपिन शर्मा**
तीनों सह-मालिक अपने-अपने हिस्से का लाभ आईटीआर में दिखाएं। प्रॉपर्टी 15 साल पुरानी है (23 जुलाई 2024 से पहले खरीदी), 20% इंडेक्सेशन सहित या 12.5% बिना इंडेक्सेशन का विकल्प चुन सकते हैं। दोनों की गणना करें और कम टैक्स वाला विकल्प चुनें। धारा 54 के तहत हर सह-मालिक को अलग-अलग छूट मिलेगी। नई प्रॉपर्टी बिक्री से 1 साल पहले या 2 साल बाद तक खरीदें, या 3 साल में बनाएं। समय पर निवेश न हो सके तो आईटीआर की नियत तारीख से पहले राशि कैपिटल गेन्स अकाउंट स्कीम में जमा करें। पंजाब-हरियाणा, दिल्ली उच्च न्यायालय सहित अनेक आयकर अपीलीय न्यायाधिकरण ने माना है कि यदि बेटे की बिक्री राशि नई प्रॉपर्टी में लगाई, तो बहू या संयुक्त नाम पर फ्लैट खरीदने पर भी धारा 54 की छूट मिलती है। आयकर विभाग इसे चुनौती दे सकता है, इसलिए संयुक्त नाम सबसे सुरक्षित विकल्प है।

**■ मैंने 10 लाख रुपए का कार लोन इस महीने लिया है? ईएमआई करीब 16 हजार रुपए है? मैं कितना एक्स्ट्रा भुगतान करूं ताकि समय से पहले लोन खत्म हो जाए और ब्याज बचा सकूं?- राखी**
मान लेते हैं कि आपने 7 साल के लिए लोन लिया है। इस हिसाब से 9.25% की ब्याज दर पर करीब 16 हजार ईएमआई बन रही है। आप पूरी अवधि के दौरान 3.44 लाख रुपए का ब्याज भरेंगी। आप हर साल एक अतिरिक्त ईएमआई (16 हजार रुपए) की रणनीति अपनाती हैं तो लोन 11 महीने पहले खत्म हो जाएगा। कुल ब्याज 2,87,200 जाएगा। यानी करीब 56,800 रुपए बचेंगे। अगर आप हर महीने 5 हजार रुपए अतिरिक्त जमा करते हैं तो आपका लोन करीब एक साल 10 महीने पहले खत्म हो सकता है और 96 हजार का ब्याज बचेगा। हमेशा ध्यान रखिए कि बैंक ब्याज का बड़ा हिस्सा शुरुआत में काटते हैं। जितना जल्दी और जितना ज्यादा एक्स्ट्रा पैसा देंगे, उतना ज्यादा ब्याज बचेगा। पहले 2-3 साल सबसे अहम होते हैं। कुछ बैंक ईएमआई के साथ अतिरिक्त राशि सीधे स्वीकार नहीं करते हैं। प्रीपेमेंट के लिए अलग से अप्लाई करना पड़ता है।

**■ क्या हरियाणा सरकार द्वारा मृतक कर्मचारी के परिवार के सदस्य को दी जाने वाली मासिक अनुकंपा वित्तीय सहायता आयकर के दायरे में आती है? - माही पाल**
हरियाणा सरकार द्वारा मृतक कर्मचारी के परिवार को दी जाने वाली 'मासिक अनुकंपा वित्तीय सहायता' कर-मुक्त है। आमतौर पर सीबीडीटी के परिपत्र 573 और 776 को एकमुश्त भुगतान से जोड़कर देखा जाता है। लेकिन मासिक सहायता के मामले में आईटीएटी दिल्ली बेंच का निर्णय (श्रीमती महिन्द्रो देवी बनाम AO, करनाल) एक मील का पत्थर है। इस फैसले में स्पष्ट किया गया कि कोई अनुकंपा राशि हर महीने मिल रही है, सिर्फ इस आधार पर उसे 'आय' नहीं माना जा सकता। यदि भुगतान की प्रकृति 'कल्याणकारी राहत' की है, तो वह टैक्स-फ्री रहेगी। कई बार विभाग नियम के पालन में इस राशि पर टीडीएस काट लेते हैं। ऐसे में परिवार को अपना आईटीआर दाखिल करना चाहिए और रिफंड क्लेम करना चाहिए।

आपके मन में बचत, निवेश और टैक्स जैसे पर्सनल फाइनेंस से जुड़े कोई भी सवाल हों, तो यह क्यूआर कोड स्कैन करके भेजें। एक्सपर्ट इनके जवाब देंगे।

सजा का असली मकसद बुराई को रोकना होना चाहिए, न कि जोश में आकर लिया जाने वाला बदला। -अल्बर्ट हबर्ड

कांगो के पहले लोकतांत्रिक ढंग से चुने गए नेता पैट्रिक लुमुम्बा को सत्ता से हटाना और 1961 में हुई उनकी हत्या शीत युद्ध के सबसे बड़े अपराधों में से एक था। यह एक ऐसी साजिश थी, जिसमें व्हाइट हाउस के अधिकारी, सीआईए के जासूस, संयुक्त राष्ट्र के राजनयिक, कांगो के अलगाववादी और हां, बेल्जियम के दूत भी शामिल थे। इसने एक युवा और करिश्माई नेता की जिंदगी को असमय ही खत्म कर दिया। उसकी जगह एक भ्रष्ट तानाशाह को बिठा दिया गया।

# शीत युद्ध, एक हत्या और कई किरदार

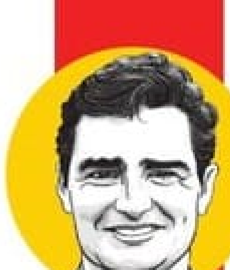

स्टुअर्ट ए रीड
द न्यूयॉर्क टाइम्स

हाल ही में, ब्रसेल्स की एक अदालत ने बेल्जियम के पूर्व राजनयिक 93 वर्षीय एटियेन डेविग्नन को, कांगो के पहले लोकतांत्रिक ढंग से चुने गए नेता पैट्रिक लुमुम्बा की 1961 में हुई हत्या से जुड़े युद्ध अपराधों के लिए मुकदमे का सामना करने का आदेश दिया। मानवाधिकार समूहों ने इस फैसले का स्वागत किया। लुमुम्बा परिवार ने इसे 'उस हिसाब-किताब की शुरुआत' बताया, जिसकी मांग इतिहास लंबे समय से कर रहा था। दशकों की टालमटोल के बाद, अंततः बेल्जियम अपने औपनिवेशिक अतीत का सामना करने को तैयार नजर आया। काश, यह इतना आसान होता!

लुमुम्बा को सत्ता से हटाना और उनकी हत्या करना शीत युद्ध के दौरान हुए सबसे बड़े अपराधों में से एक था। यह एक ऐसी साजिश थी, जिसमें व्हाइट हाउस के अधिकारी, सीआईए के जासूस, संयुक्त राष्ट्र के राजनयिक, कांगो के अलगाववादी और हां, बेल्जियम के दूत भी शामिल थे। इसने एक युवा और करिश्माई नेता की जिंदगी को असमय ही खत्म कर दिया। उसकी जगह एक भ्रष्ट तानाशाह को बिठा दिया गया। उसने डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कांगो को बर्बादी के ऐसे रास्ते पर धकेल दिया, जिससे वह आज तक पूरी तरह उबर नहीं पाया है। कांगो के लोगों के अलावा और किसी को इसकी कभी कोई कीमत नहीं चुकानी पड़ी। न तो अमेरिका और न ही संयुक्त राष्ट्र ने औपचारिक रूप से माफी मांगी है। 2002 में, बेल्जियम के विदेश मंत्री ने यह कहकर पल्ला झाड़ लिया कि यह 'सरकार के कुछ सदस्यों और उस समय के बेल्जियम के कुछ लोगों' का दोष है। बेल्जियम की अदालत का फैसला असली न्याय का एक कमजोर विकल्प है।

पैट्रिक लुमुम्बा

आरोपी 93 वर्षीय डेविग्नन, इन सबमें एक छोटी-सी भूमिका निभाने वाले व्यक्ति थे। वह करीब एक दर्जन बेल्जियम अधिकारियों की उस सूची में अकेले जीवित बचे हैं, जिन पर लुमुम्बा परिवार ने हत्या के लिए जिम्मेदार होने का आरोप लगाया है। लुमुम्बा की हत्या के बाद बीते 65 वर्षों में, उनके देश पर भ्रष्ट और गैर-जिम्मेदार नेताओं ने अक्सर विदेशी संरक्षकों के समर्थन से शासन किया है। कांगो की आबादी का एक बहुत बड़ा हिस्सा रोजाना तीन डॉलर से भी कम पर गुजारा करता है। बाहरी ताकतें आज भी इसे हिंसा और बदहाली के एक स्रोत से ज्यादा कुछ नहीं मानतीं। साथ ही, खनिजों के एक स्रोत के तौर पर भी, जिनके मामले में कांगो बेहद समृद्ध है।

लुमुम्बा की मौत उन्हें सत्ता से हटाने के लिए किए गए एक सुनियोजित और बड़े पैमाने पर विदेशी प्रयासों का ही परिणाम थी। वह एक अडिग राष्ट्रवादी थे, जिनकी पार्टी ने कांगो के पहले स्वतंत्र और लोकतांत्रिक चुनाव जीते थे। वह जून, 1960 में इस नव-स्वतंत्र देश के प्रधानमंत्री बने। कुछ ही हफ्तों के भीतर, सेना में विद्रोह और बेल्जियम-समर्थित खनिज-समृद्ध प्रांत कातांगा के अलग होने से कांगो संकट में घिर गया। अमेरिका में आइजनहावर प्रशासन को इस बात की चिंता थी कि लुमुम्बा सोवियत संघ के साथ हाथ मिला रहे हैं, इसलिए उसने प्रधानमंत्री की हत्या करने की सीआईए की योजना को मंजूरी दे दी। सीआईए का एक केमिस्ट जहर लेकर कांगो गया, पर यह साजिश कभी पूरी नहीं हो पाई। इसकी एक वजह यह भी थी कि तब तक, एक दूसरी योजना पर काम शुरू हो चुका था। पांच सितंबर, 1960 को राष्ट्रपति जोसेफ कासावुबू, जो लुमुम्बा के मुख्य प्रतिद्वंद्वी थे, ने घोषणा की कि उन्होंने लुमुम्बा को पद से हटा दिया है। इसके नौ दिन बाद, देश के 29 वर्षीय सेना प्रमुख कर्नल जोसेफ मोबुतु ने सीआईए-समर्थित एक तख्तापलट के जरिये सत्ता पर कब्जा कर लिया, और इस तरह दशकों तक चलने वाले कुशासन की शुरुआत हुई। आखिरकार, लुमुम्बा को राजधानी लियोपोल्डविल के बाहर एक सैन्य शिविर में हिरासत में ले लिया गया। लेकिन 1960 के अंत तक, देश के पूर्वी हिस्से में उनके समर्थक अपनी ताकत बढ़ा रहे थे, और आने वाला केनेडी प्रशासन अमेरिका की नीति को नरम बनाने की दिशा में आगे बढ़ता दिख रहा था। केनेडी प्रशासन एक ऐसी नीति बनाना चाहता था, जिसमें शायद लुमुम्बा के शासन को बहाल करने वाला कोई समझौता भी शामिल हो सकता था। जैसे ही कर्नल मोबुतु के गुट ने लुमुम्बा को किसी ऐसी जगह भेजने की योजना बनाई, जहां उनकी हत्या होना तय था, सीआईए के स्टेशन चीफ ने उसे हरी झंडी दे दी। 17 जनवरी, 1961 को कर्नल मोबुतु के सुरक्षा प्रमुख ने लुमुम्बा को सैन्य हिरासत से हटाकर कातांगा ले जाने का इंतजाम किया। उसी शाम, कई घंटों की यातना के बाद, बेल्जियम के अधिकारियों के नेतृत्व में कांगो के सैनिकों की एक टुकड़ी ने उन्हें गोली मारकर मौत के घाट उतार दिया। बाद में उनके शव को सल्फ्यूरिक एसिड से भरे एक बैरल में गला दिया गया। इस अत्याचार में डेविग्नन की भूमिका सीमित थी। 1960 की गर्मियों में, वह लियोपोल्डविल स्थित बेल्जियम दूतावास में 27 वर्षीय प्रशिक्षु राजनयिक थे। हालांकि, पद में कनिष्ठ होते हुए भी उनकी कांगो के राजनीतिक नेताओं तक सीधी पहुंच थी।

> आइजनहावर प्रशासन को इस बात की चिंता थी कि लुमुम्बा सोवियत संघ के साथ हाथ मिला रहे हैं, इसलिए उसने प्रधानमंत्री की हत्या करने की सीआईए की योजना को मंजूरी दे दी। सीआईए का एक केमिस्ट जहर लेकर कांगो गया, पर यह साजिश कभी पूरी नहीं हो पाई।

जब लुमुम्बा जेल में कष्ट भोग रहे थे, तब डेविग्नन ब्रसेल्स लौट चुके थे और बेल्जियम के विदेश मंत्रालय में 'कांगो सेल' के एक महत्वपूर्ण सदस्य बन चुके थे। रिकॉर्ड से पता चलता है कि डेविग्नन को मालूम था कि लुमुम्बा को ऐसी जगह भेजा जा रहा है, जहां उनकी हत्या निश्चित थी। अगर इस बात का कोई सबूत है कि डेविग्नन की भूमिका इससे कहीं ज्यादा थी, तो वह अब तक सामने नहीं आया है। इसका मतलब यह नहीं है कि डेविग्नन की कोई जिम्मेदारी नहीं है। कम से कम, वह उस मशीन का एक पुर्जा तो थे ही, जिसने एक निर्वाचित प्रधानमंत्री को सत्ता से हटाने और उन्हें मौत के घाट उतारने में मदद की। या जैसा कि लुमुम्बा के परिवार ने कहा-उस जंजीर की एक कड़ी।

पैंसठ साल बीत जाने के बाद भी, लुमुम्बा की मृत्यु में एजेंसी की भूमिका से जुड़े सीआईए के दस्तावेजों में रिश्वत, सहयोगियों और अन्य महत्वपूर्ण जानकारियों से संबंधित कई हिस्से अब भी छिपे हुए हैं। लुमुम्बा की बेटी जुलियाना ने एक बार मुझसे कहा था कि बेल्जियम की तरफ से मिली आधी-अधूरी माफियों के बाद, उनसे अक्सर यह पूछा जाता है कि उन्हें और क्या चाहिए। उनका जवाब था-'हमें सच चाहिए।'

## जानना जरूरी है
संस्कृति के पन्नों से

आशुतोष गर्ग
लेखक एवं अनुवादक

> ययाति ने पुरु को समझाया, 'क्रोध करने वाले से महान वह है, जो क्रोध नहीं करता। असहनशील से सहनशील श्रेष्ठ है, और मूर्ख से विद्वान। माता-पिता, विद्वान, तपस्वी और क्षमाशील व्यक्ति का अपमान नहीं करना चाहिए।'

# ययाति ने अपने पुत्र को क्या उपदेश दिया

**नहुष** के पुत्र राजा ययाति ने शुक्राचार्य के शाप के बाद अपनी वृद्धावस्था अपने सबसे छोटे पुत्र पुरु को देकर उससे उसका यौवन ले लिया था। लेकिन अनेक वर्ष भोग-विलास करने के बाद भी ययाति की कामनाएं तृप्त नहीं हुईं, तो उन्होंने पुरु को उसका यौवन लौटा दिया।

फिर वह पुरु की पितृ-भक्ति से प्रसन्न होकर उसे राज्य सौंपकर तपस्या करने वन चले गए। वानप्रस्थ आश्रम का पालन करते हुए वह दीर्घकाल तक तपस्या में लीन रहे। वह प्रतिदिन देवताओं और पितरों का तर्पण करते, अग्निहोत्र करते और शास्त्रों के अनुसार जीवन व्यतीत करते थे।

धूप आने दो

राजा ययाति ने शिलोंछवृत्ति अपनाई, अर्थात जो अन्न यज्ञ के बाद बचता, उसी से अपना निर्वाह करते थे। पहले अतिथियों को फल-मूल देकर तृप्त करते, फिर स्वयं भोजन ग्रहण करते। इस प्रकार तप और संयमयुक्त जीवन जीते हुए एक हजार वर्ष बीत गए।

इसके बाद उन्होंने और भी कठोर तप किया। वह तीन वर्षों तक केवल जल पीकर रहे, फिर एक वर्ष तक केवल वायु पर जीवन बिताया। आगे चलकर एक वर्ष तक पांच अग्नियों के बीच बैठकर तपस्या की। फिर छह महीने तक एक पैर पर खड़े होकर केवल वायु का सेवन करते रहे। इस कठिन तप के प्रभाव से उनका यश पृथ्वी और आकाश में फैल गया और अंततः वह स्वर्गलोक को प्राप्त हुए।

स्वर्ग में देवताओं ने उनका अत्यंत सम्मान किया। देवगण, मरुद्गण और वसुओं ने उनका आदर किया। वह देवलोक से लेकर ब्रह्मलोक तक विचरण करते हुए दिव्य सुखों का अनुभव करते रहे।

**एक दिन वह देवराज इंद्र के पास पहुंचे। इंद्र ने उनसे पूछा, 'राजन ! आपने पुरु को राज्य सौंपते हुए उसे क्या उपदेश दिया था?' ययाति ने उत्तर दिया, 'देवराज! मैंने प्रजा की सहमति से पुरु का राज्याभिषेक किया।'**

**मैंने पुरु से कहा, 'बेटा! गंगा और यमुना के बीच का यह मध्यदेश तुम्हारे अधीन रहेगा। तुम इसके राजा होगे और तुम्हारे भाई सीमांत प्रदेशों के शासक होंगे।' इसके साथ ही मैंने उसे धर्म और नीति का उपदेश भी दिया।**

इसके अलावा, मैंने पुरु से कहा, 'मनुष्य को कभी दीनता, कपट और क्रोध नहीं करना चाहिए। उसे कुटिलता, ईर्ष्या आदि से दूर रहना चाहिए। माता-पिता, विद्वान, तपस्वी और क्षमाशील व्यक्तियों का अपमान नहीं करना चाहिए। शक्तिशाली व्यक्ति क्षमा करता है, जबकि दुर्बल क्रोध करता है। दुष्ट व्यक्ति साधु से, निर्धन धनवान से, कुरूप सुंदर से और अधर्मी धर्मात्मा से द्वेष करता है। यही कलियुग के लक्षण हैं।' ययाति ने पुरु को समझाया, 'क्रोध करने वाले से महान वह है, जो क्रोध नहीं करता। असहनशील से सहनशील श्रेष्ठ है, और मूर्ख से विद्वान श्रेष्ठ होता है। जो अपमान सह लेता है, उसका धैर्य ही अपमान करने वाले को जलाता है और उसका पुण्य भी उसी को प्राप्त होता है।' ययाति ने आगे कहा, 'कभी किसी के हृदय को चोट पहुंचाने वाले शब्द नहीं बोलने चाहिए। कठोर वाणी मनुष्य को पतन की ओर ले जाती है। जो व्यक्ति दूसरों को दुख पहुंचाता है, वह वास्तव में दुर्भाग्यशाली होता है। उसके मुख से निकले शब्द कांटों के समान होते हैं, जो दूसरों के हृदय को घायल करते हैं।' इसके बाद ययाति ने मधुर व्यवहार का महत्व बताते हुए कहा, 'मनुष्य को चाहिए कि वह सभी प्राणियों के प्रति दया और मैत्री का भाव रखे। दान करे और मधुर वाणी बोले। ये तीनों गुण ऐसे हैं, जिनसे समस्त जगत को वश में किया जा सकता है।' अंत में वह पुरु से बोले, 'सदा श्रेष्ठ पुरुषों के आचरण का अनुसरण करना चाहिए। दुष्टों की कटु बातों को सह लेना चाहिए और अपने व्यवहार को ऐसा बनाना चाहिए कि हर परिस्थिति में लोग सम्मान करें। दूसरों को देना सीखो, पर स्वयं कभी किसी से कुछ न मांगो।'

इस प्रकार धर्म, संयम, त्याग और मधुर व्यवहार का उपदेश देकर ययाति ने अपने जीवन को महान बनाया। साथ ही, आने वाली पीढ़ियों के लिए भी एक आदर्श स्थापित किया, ताकि समाज में शांति, सद्भाव और धर्म की मर्यादा बनी रहे।

अविश्रान्तो वातो दहन इव
सोऽयं जनयति
प्रसक्तं सातत्याद्दलयति
कुलाद्रीनपि जलम्।
प्रसूते कृत्येषु व्यवसितिरनिर्व्यूढसुदृढा
फलावाप्तिं लोके प्रतिकलमसंभाव्यविभवाम्॥

अविराम गति से चलता हुआ पवन अग्नि का काम कर देता है और लगातार बहता हुआ पानी बड़े-बड़े पर्वतों में भी छेद कर देता है। इसी प्रकार संसार में तन्मयता के साथ किया हुआ कार्य व्यक्ति को अकूत वैभवसंपन्न बना देता है और असंभव सिद्धि भी सुलभ कर देता है।
-कल्हण विरचित राजतरंगिणी (8.2551)

*प्रस्तुति* : शास्त्री कोसलेंद्रदास

# कोशिकाओं में छिपा लंबी जिंदगी का राज

डाना जी स्मिथ
द न्यूयॉर्क टाइम्स

> माइटोकॉन्ड्रिया को कोशिकाओं का पावर हाउस यों ही नहीं कहा जाता। यह जागते और सोते वक्त भी हमारे शरीर को स्वस्थ बनाए रखने की जंग लड़ता रहता है।

पिछली गर्मियों में एक मशहूर व्यक्ति ने कहा था कि वह किसी व्यक्ति को देखकर बता सकते हैं कि उसे माइटोकॉन्ड्रिया संबंधी समस्याएं हैं। लंबी उम्र के लिए बाजार में उपलब्ध कई सप्लीमेंट्स के बारे में कहा जाता है कि वे माइटोकॉन्ड्रिया को बेहतर बनाते हैं। माइटोकॉन्ड्रिया का अध्ययन करने वाले वैज्ञानिक इससे हैरान होने के साथ उत्साहित भी हैं। आखिर माइटोकॉन्ड्रिया है क्या और क्या सचमुच उन्हें स्वस्थ बनाना और इस प्रक्रिया में अपनी जीवन-अवधि बढ़ाना संभव है?

दरअसल, माइटोकॉन्ड्रिया कोशिका के शक्तिगृह (पावर हाउस) होते हैं। वे खाए गए भोजन को एडेनोसिन ट्राइफॉस्फेट (एटीपी) में बदलते हैं, जो कोशिकीय ऊर्जा का प्राथमिक रूप है। वैज्ञानिकों के अनुसार, माइटोकॉन्ड्रिया शरीर की दूसरी बुनियादी प्रक्रियाओं में भी शामिल होते हैं और प्रतिरक्षा तंत्र (इम्यून सिस्टम) के कामकाज में मदद करते हैं। ये ऐसे पेप्टाइड बनाते हैं, जो अंगों के बीच संदेश पहुंचाते हैं, और कोशिकाओं की साफ-सफाई के लिए भी जरूरी होते हैं।

उम्र बढ़ने के साथ, हमारी कोशिकाओं में माइटोकॉन्ड्रिया की संख्या और कार्यक्षमता कम होती जाती है। इसकी वजह यह है कि ऊर्जा बनाने की प्रक्रिया के दौरान, माइटोकॉन्ड्रिया एक विषैला सह-उत्पाद बनाते हैं, जिसे 'रिएक्टिव ऑक्सीजन स्पीशीज' (आरओएस) कहा जाता है। यह माइटोकॉन्ड्रिया और कोशिका के अन्य हिस्सों को नुकसान पहुंचा सकता है। उम्र बढ़ने के साथ आरओएस बनने की मात्रा भी बढ़ती जाती है। साथ ही, कोशिका का रीसाइक्लिंग सिस्टम (जो आरओएस से होने वाले नुकसान को ठीक करता और उसे हटाता है) कम असरदार हो जाता है।

विशेषज्ञों का कहना है कि आपका व्यवहार माइटोकॉन्ड्रिया और आपकी सेहत पर असर डालता है। कसरत करने से माइटोकॉन्ड्रिया का काम बेहतर होता है। आहार भी इसमें एक प्रमुख कारक है, क्योंकि हम जो खाना खाते हैं, वह एटीपी में बदल जाता है। इसलिए, फाइबर से भरपूर कार्बोहाइड्रेट और अच्छी गुणवत्ता वाले वसायुक्त आहार को प्राथमिकता दें-जैसे फलियां, साबुत अनाज, एवोकैडो और मछली आदि। कुछ सूक्ष्म पोषक तत्व, विशेष रूप से विटामिन बी और एंटीऑक्सीडेंट भी महत्वपूर्ण हैं। पर्याप्त नींद (रात में सात से आठ घंटे) माइटोकॉन्ड्रिया की सफाई के लिए बेहद जरूरी है, क्योंकि सोते वक्त ही माइटोकॉन्ड्रिया क्षतिग्रस्त हुए हिस्से को हटा पाते हैं।

©The New York Times 2026

## अध्ययन कक्ष

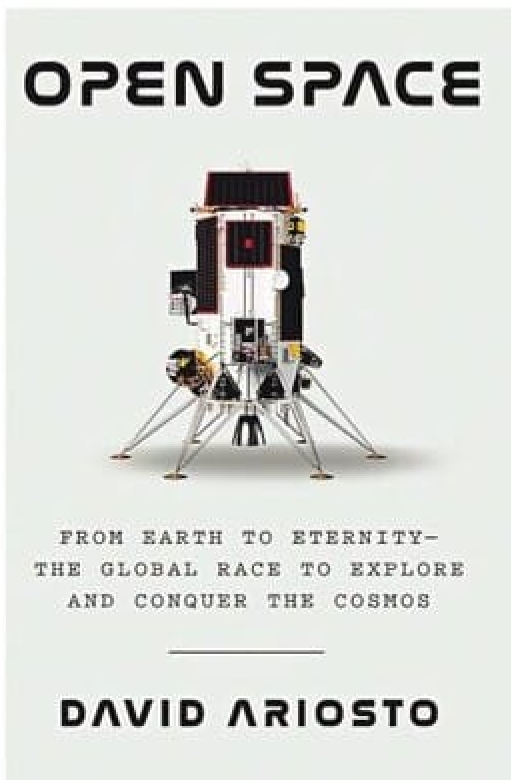


**ओपन स्पेस:**
**फ्रॉम अर्थ टू एटर्निटी-द ग्लोबल रेस टू एक्सप्लोर एंड कॉन्क्वैर द कॉस्मॉस**
लेखक : डेविड अरियोस्टो
प्रकाशक : नॉफ
मूल्य : 3,243 रुपये (हार्डकवर)

# अंतरिक्ष में होड़ की रोमांचक कहानी

हाल ही में, लॉन्च हुई यह किताब अंतरिक्ष के मलबे के खतरों से लेकर मंगल ग्रह पर बस्ती बसाने की संभावनाओं पर चर्चा के साथ उन इंजीनियरों तथा भौतिकविदों से भी मिलवाती है, जो विज्ञान-गल्प को हकीकत में बदल रहे हैं।

पत्रकार डेविड अरियोस्टो अपनी नई किताब *ओपन स्पेस* के जरिये आज की अंतरिक्ष दौड़ का जानकारीपूर्ण विश्लेषण प्रस्तुत करते हैं। उनका कहना है कि यह दौड़ एक निर्णायक मोड़ पर है, जहां तकनीकी क्षेत्र के दिग्गज और प्रतिद्वंद्वी राष्ट्र मिलकर ब्रह्मांड में मानवजाति के भविष्य को निर्धारित करने की होड़ में लगे हैं। उनके अनुसार, अंतरिक्ष फिलहाल 'संभावनाओं का खुला कैनवास' है।

डेविड अमेरिका में निजी कंपनियों द्वारा बढ़ते अंतरिक्ष अन्वेषण की ओर ध्यान दिलाते हैं। वह 2024 में 'इंट्यूटिव मशीन्स' के लूनर लैंडर 'ओडिसीस' का उदाहरण देते हैं, जो किसी निजी कंपनी द्वारा बनाया गया पहला अंतरिक्ष यान था, जिसने सफलतापूर्वक चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के पास उतरने में सफलता हासिल की। इसने अंतरिक्ष उद्यमियों की नई पीढ़ी की महत्वाकांक्षाओं को साकार किया। अरियोस्टो चीन के तियांगोंग अंतरिक्ष स्टेशन की विस्तार योजनाओं और चंद्रमा पर उसकी स्थायी मौजूदगी के प्रयासों का भी जिक्र करते हैं, जो अमेरिका में राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ी चिंताओं को जन्म दे रही हैं। चीन अपने वाणिज्यिक उद्यमों को राष्ट्रीय सुरक्षा से जोड़ रहा है। रूस, भारत, जापान व यूरोपीय संघ भी इस दौड़ में हैं। डेविड मिशन कंट्रोल में लिए गए तुरंत फैसलों और लॉन्च के रोमांचक, सांस रोक देने वाले पलों को बेहद सरल तरीके से बताते हैं। वह उन शोध प्रयोगशालाओं से लेकर, जो पृथ्वी की सुरक्षा के लिए योजनाएं बनाती हैं, एंटीमैटर फैक्टरी और मार्स डेजर्ट रिसर्च स्टेशन तक का सफर करते हैं। वहां वैज्ञानिक यह समझने की कोशिश करते हैं कि पृथ्वी के बाहर कोई बस्ती कैसे जीवित रह सकती है। लेखक की इस वैश्विक यात्रा में, हम उन दूरदर्शी लोगों से मिलते हैं, जो भविष्य के सपने बुन रहे हैं, और उन इंजीनियरों तथा भौतिकविदों से भी, जो विज्ञान-गल्प को हकीकत में बदल रहे हैं।

सैटेलाइट्स हमारी कल्पना से भी कहीं ज्यादा जरूरी हैं। इनकी मदद से लोग अपनी जगह का पता लगा पाते हैं और गूगल मैप जैसे एप्स का इस्तेमाल करके कहीं भी आ-जा सकते हैं। हवाई सफर, खासकर समुद्र के ऊपर से होने वाला सफर, ब्रॉडबैंड-कम्युनिकेशन सैटेलाइट पर निर्भर करता है। मौसम के सटीक पूर्वानुमान भी मौसम संबंधी उपग्रहों पर ही निर्भर रहते हैं। डेविड अरियोस्टो *ओपन स्पेस* में बताते हैं, ये सैटेलाइट्स अंतरिक्ष में तैरते मलबे की चपेट में आ सकते हैं। अभी एक करोड़ से भी ज्यादा, नमक के दाने जितने छोटे टुकड़े अंतरिक्ष की कक्षा में मौजूद हैं। चूंकि, ये टुकड़े 17,500 मील प्रति घंटे की रफ्तार से चलते हैं, इसलिए ये किसी स्पेस सूट में छेद कर सकते हैं या सैटेलाइट को नुकसान पहुंचा सकते हैं। किताब का पहला हिस्सा रोमांचक कहानी के जरिये पाठकों को बांधे रखता है (खासकर चांद पर उतरने की कोशिशों का विस्तृत वर्णन), पर दूसरे हिस्से में कहानी की कोई एक मजबूत कड़ी नहीं है। यह कहानी अंतरिक्ष के मलबे के खतरों से लेकर मंगल ग्रह पर बस्ती बसाने की संभावनाओं और तकनीकी चर्चाओं पर भटकती रहती है।

फिर भी, अंतरिक्ष में दिलचस्पी रखने वालों को इसमें बहुत कुछ दिलचस्प मिलेगा। हजारों सालों तक तारों को निहारने के बाद, अब इन्सान उनके बीच सफर करने के लिए औजार बना रहा है। जोश से भरी, विस्मयकारी और दिल को छू लेने वाली यह किताब इस शानदार सफर को चरम तक ले जाती है और उसमें हमारी जगह तलाशती है।

अभियान

जो यह जानता है कि क्या न बताना ही सबसे अच्छा है, वही सबसे अच्छा शिक्षक है।
- ओटो न्यूरथ

amarujala.com
अमर उजाला

Hindi@mithelesh
■ मिथिलेश बारिया

## गोल चबूतरा

ये दुनिया जब भी मुस्कुराकर मिलती है,
सच कहूं, तुम्हारी कमी बहुत खलती है...

दिल की बच्चों जैसी ख्वाहिशें टालने के लिए,
दिमाग समझाता रहा एक बुजुर्ग की तरह...

इस कदर हालात... नाजुक हैं इश्क के,
हर बात उसकी आखिरी सी लगे...

## ब्रिटेन का हुआ हांगकांग

झरोखा
5 अप्रैल

1843 में आज ही के दिन ब्रिटेन की महारानी क्वीन विक्टोरिया ने आधिकारिक घोषणा की थी कि हांगकांग अब ब्रिटिश साम्राज्य का हिस्सा होगा और इसे एक ब्रिटिश कॉलोनी के रूप में स्थापित किया जाएगा। यह निर्णय एशिया में ब्रिटेन की सामरिक और व्यापारिक शक्ति को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था। इस घोषणा की पृष्ठभूमि ब्रिटेन और चीन के बीच व्यापारिक विवादों के कारण हुए प्रथम अफीम युद्ध में छिपी थी। युद्ध में ब्रिटेन की जीत हुई। उसके बाद 1842 में नानकिंग की संधि पर हस्ताक्षर किए गए, जिसके तहत चीन ने हांगकांग द्वीप ब्रिटेन को सौंप दिया। 1843 में महारानी की घोषणा के बाद हांगकांग में ब्रिटिश प्रशासन, कानून और शासन व्यवस्था लागू की गई। धीरे-धीरे यह क्षेत्र एक महत्वपूर्ण व्यापारिक बंदरगाह और अंतरराष्ट्रीय व्यापार केंद्र के रूप में विकसित हुआ। 1 जुलाई 1997 को हांगकांग का ब्रिटेन से चीन को सत्ता हस्तांतरण हुआ, जिससे वहां 150 से अधिक वर्षों का ब्रिटिश शासन समाप्त हो गया और यह चीन का एक विशेष प्रशासनिक क्षेत्र बना।

■ मंगल यादव, सिरसा

किसान हर बार प्रकृति के आगे बेबस हो जाता है। बेमौसम बरसात और ओलावृष्टि उसकी मेहनत पर पानी फेर देती है। ऐसे में कृषि वैज्ञानिकों से किसी ऐसी तकनीक की दरकार है, जो मौसम से फसलों की सुरक्षा सुनिश्चित कर सके।

# अन्नदाता को चाहिए कोई नई तकनीक

## बेचारा किसान क्या करे

चिट्ठी 1

दिन-रात मेहनत करने के बाद भी फल न मिले, तो उसका दर्द वही समझ सकता है, जिसने उसे झेला हो। आजकल बेमौसम बारिश और ओलावृष्टि ने किसानों की इसी मेहनत पर पानी फेर दिया है। पंजाब सहित कई राज्यों में गेहूं की फसल पकने के अंतिम चरण में है, ऐसे समय में खराब मौसम फसल को भारी नुकसान पहुंचा रहा है। यह स्थिति खासकर छोटे और सीमांत किसानों के लिए बेहद चिंताजनक है, जिनकी आजीविका पूरी तरह खेती पर ही निर्भर होती है।

हमारे देश के अधिकतर किसानों के पास सीमित संसाधन है, ऐसे में फसल खराब होने पर उनका आर्थिक संतुलन बिगड़ना लाजमी है। सरकार ने प्राकृतिक आपदाओं से राहत के लिए कई योजनाएं बनाई हैं, लेकिन इनका लाभ हर जरूरतमंद किसान तक पहुंच पाना अभी भी चुनौती है। बैसाखी नजदीक है। यह गेहूं की कटाई का समय होता है, लेकिन मौसम की अनिश्चितता ने किसानों की चिंता बढ़ा दी है। यदि यही हाल रहा, तो उत्पादन में कमी आएगी, जिसका असर न केवल किसानों की आय पर पड़ेगा, बल्कि देश की अर्थव्यवस्था और जीडीपी पर भी दिखाई देगा।

इस परिस्थिति में कृषि विशेषज्ञों को ऐसी तकनीक विकसित करनी चाहिए जो बदलते मौसम के अनुसार फसलों की सुरक्षा सुनिश्चित कर सके। साथ ही, सरकार को चाहिए कि वह प्रभावित किसानों को उचित मुआवजा दे और उन्हें अगली फसल के लिए आसान ऋण उपलब्ध कराए। संबंधित अधिकारियों को सख्त निर्देश दिए जाने चाहिए कि किसानों को किसी प्रकार की दिक्कत न हो। इसके अलावा, अनाज मंडियों और भंडारण की उचित व्यवस्था भी जरूरी है ताकि किसानों की उपज सुरक्षित रह सके।

■ राजेश कुमार चौहान, जालंधर

## वैश्विक तनाव का असर बिगाड़ रहा जायका

चिट्ठी 2

पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव का असर अब आम लोगों की थाली और जेब पर साफ दिखाई देने लगा है।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कच्चे तेल की कीमतों में उतार चढ़ाव, कच्चे माल की कमी और कमर्शियल गैस सिलेंडरों की बढ़ती लागत ने देश के स्थानीय बाजारों में खान-पान को मंहगा कर दिया है। इसका सीधा असर स्ट्रीट फूड बाजार पर पड़ा है, जहां चाट और नाश्ते के दामों में अचानक बढ़ोतरी ने लोगों का जायका बिगाड़ दिया है। वहीं इस आग से घर की रसोई भी अछूती नहीं रही है। रसोई गैस सिलेंडर और खाद्य तेल के बढ़े दामों ने गृहिणियों को चिंता में डाल दिया है। बाजारों में अब पानी पूरी के शौकीनों को 20 रुपये में केवल चार पानी पूरी मिल पा रही है। वहीं जो समोसा कभी दस रुपये में आसानी से मिल जाता था, उसकी कीमत अब पच्चीस रुपये तक हो गई है।

वर्तमान स्थिति ने यह साफ कर दिया है कि वैश्विक घटनाएं अब सीधे स्थानीय बाजारों को प्रभावित कर रही है। ऐसे में आम लोगों के लिए यह समय आर्थिक रूप से चुनौतीपूर्ण होता जा रहा है, क्योंकि युद्ध का सबसे अधिक असर इन्हीं पर पड़ रहा है। यदि जल्द हालात नहीं सुधरे, तो युद्ध की आंच सचमुच हर घर की रसोई तक और ज्यादा महसूस की जाएगी।

■ शैलेन्द्र कुमार चतुर्वेदी, फिरोजाबाद

## युद्ध समस्या का हल नहीं सिर्फ तबाही का कारण

चिट्ठी 3

इस समय लगभग पूरा विश्व ही युद्ध की विभीषिका झेल रहा है। चाहे अमेरिका-ईरान और इस्राइल के बीच चल रहा युद्ध हो, रूस-यूक्रेन युद्ध हो या पाकिस्तान और अफगानिस्तान के बीच। हर करफ बारूद की गंध है। चीख-पुकार है। और कोई भी झुकने को तैयार नहीं है।

शुरुआत में ईरानी मिसाइल को इस्राइल द्वारा इंटरसेप्ट कर लिया जा रहा था, लेकिन अब ईरान भी ऐसे मिसाइल दाग रहा है, जिसे इस्राइल रोक नहीं पा रहा है। इसका नतीजा वहां के खंडहर में बदल चुकी इमारतों से लगाया जा सकता है। इस युद्ध का असर पूरी दुनिया पर पड़ रहा है। तेल और गैस की कमी के कारण महंगाई बढ़ती जा रही है। इसके अलावा इस युद्ध से जान-माल की भारी क्षति हो रही है, इन सबके बावजूद दुनिया का कोई भी देश खुलकर अमेरिका का विरोध नहीं कर रहा है। अमेरिका और इस्राइल हर हाल में इस जंग को जीतना चाहते हैं, वहीं ईरान भी पलटवार करने में पीछे नहीं है।

ऐसे में इस युद्ध का अंजाम क्या होगा, यह कोई नहीं जानता है। युद्ध का असर सिर्फ जमीन पर ही नहीं, बल्कि पर्यावरण पर भी पड़ रहा है। युद्ध से किसी का भला नहीं होने वाला है, इसे जल्द रुकना चाहिए।

■ मुकेश विग, सोलन

**इनकी चिट्ठियां भी सराहनीय रहीं**

बरेली से सीमा गुप्ता, कुरुक्षेत्र से मुनीष भाटिया, अमरोहा से डॉ. महताब अमरोहवी, मोहाली से अभिलाषा गुप्ता, आजमगढ़ से अवनीश कुमार गुप्ता, अंबाला से डॉ. प्रदीप शर्मा 'स्नेही', श्रीनगर उत्तराखंड से लक्ष्मण पुंडीर, इंदौर से अमृतलाल मारू 'रवि', झाबुआ से अरविंद रावल, बड़वाह से योगेश जोशी, सूरत से कांतिलाल मांडोत।

**हमें लिखें**
abhiyan@amarujala.com

## कुछ अलग

## पड़ोसियों के घर की यात्रा नाव से

**आपने दुनिया के किसी ऐसे गांव के बारे में सुना है, जहां सड़कें हैं ही नहीं। नीदरलैंड में एक गांव है, जहां लोग सड़क नहीं, नहर से सफर करते हैं।**

**नीदरलैंड** का खूबसूरत गांव गिएथूर्न दुनिया के सबसे अनोखे पर्यटन स्थलों में गिना जाता है। इसे अक्सर नीदरलैंड का वेनिस कहा जाता है, क्योंकि यहां सड़कों की बजाय नहरों का जाल बिछा हुआ है। इस गांव की सबसे खास बात यह है कि यहां आपको न तो गाड़ियां दिखाई देंगी और न ही बाइक, पूरा जीवन पानी के रास्तों पर निर्भर करता है।

गिएथूर्न में हर घर के सामने एक छोटी-सी नहर होती है, और लोग एक जगह से दूसरी जगह जाने के लिए नाव का उपयोग करते हैं। नीदरलैंड के गिएथूर्न में नहरें ऐतिहासिक कारणों से हैं। 13वीं शताब्दी में यहां खुदाई की गई, तब ईंधन के रूप में इस्तेमाल होने वाले 'पीट' (एक प्रकार की घास/मिट्टी) को एक स्थान से दूसरे स्थान तक नावों से ले जाने के लिए ये नहरें बनाई गई थीं, जो आज एक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल बन गया है।

यहां की नावें भी खास हैं, क्योंकि वे इलेक्ट्रिक मोटर से चलती हैं, जिससे वातावरण शांत और प्रदूषण रहित बना रहता है। इस वजह से यहां की सैर बेहद सुकून भरी लगती है। कुछ स्थानों पर लोगों ने आने-जाने की सुविधा के लिए लकड़ी के छोटे-छोटे पुल भी बना रखे हैं, जो इस गांव की सुंदरता को और बढ़ाते हैं।

इस गांव का इतिहास भी काफी रोचक है। इसकी स्थापना लगभग 1230 के आसपास मानी जाती है। कहा जाता है कि 1170 में आई एक भीषण बाढ़ के कारण यहां पानी भर गया था। समय के साथ लोगों ने इस पानी को व्यवस्थित करने के लिए नहरों का निर्माण शुरू किया, जो बाद में इस गांव की पहचान बन गई। शायद उस समय किसी ने सोचा भी नहीं होगा कि ये नहरें एक दिन इसे विश्व प्रसिद्ध पर्यटन स्थल बना देंगी।

गांव में लगभग 7.5 किलोमीटर लंबी नहरों का नेटवर्क है, जो इसे बेहद आकर्षक बनाता है। वर्ष 1958 में डच कॉमेडी फिल्म 'फेनफेयर' की शूटिंग यहां हुई, जिसके बाद गिएथूर्न को अंतरराष्ट्रीय पहचान मिली।

■ सुमित पांडेय, नैनीताल

## रफ्तार और कौशल के तीन महारथी

एक पुरानी तस्वीर में एक साथ हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद, उड़नसिख मिल्खा सिंह और पहलवान तथा अभिनेता दारा सिंह।

■ राकेश झा, गाजियाबाद

## छायानट

### 'दिल देके देखो' से दिल में उतर गए

**हास्य** अभिनेता राजेंद्रनाथ ने अपनी अनूठी हास्य शैली से दर्शकों का भरपूर मनोरंजन किया। राजेंद्रनाथ की यात्रा रंगमंच से शुरू हुई थी, जहां उनकी प्रतिभा को काफी सम्मान मिला। फिल्मों में उनकी शुरुआत 1959 में 'दिल देके देखो' से हुई। हालांकि शुरुआती भूमिकाएं छोटी थीं, लेकिन उन्होंने अपनी हास्य प्रतिभा से नासिर हुसैन जैसे दिग्गज निर्देशक का ध्यान अपनी ओर खींचा। गौर करने वाली बात है कि राजेंद्र नाथ सिर्फ एक अभिनेता नहीं थे, उनमें हास्य के साथ गर्मजोशी और संवेदनशीलता को भी शामिल करने की अद्भुत क्षमता थी। टेलीविजन धारावाहिक 'हम पांच' में हमेशा आशावादी पोपट लाल की भूमिका ने उन्हें घर-घर में मशहूर कर दिया और दर्शकों की कई पीढ़ियों तक उनका नाम बना रहा। मनोज कुमार की 'पूरब और पश्चिम' में उनका अभिनय उनकी विविधता का प्रमाण है। उन्होंने अनगिनत महत्वाकांक्षी हास्य कलाकारों को प्रेरित किया और अपने पीछे अविस्मरणीय प्रदर्शनों का खजाना छोड़ गए।

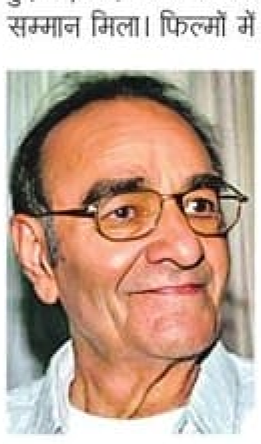

■ रमण शर्मा, जम्मू

# रफ्तार के विरुद्ध धैर्य का उत्सव

**आईपीएल की रफ्तार में यादें ठहरती नहीं, बस गुजरती हैं। टेस्ट क्रिकेट की चाल धीमी है, पर वही ठहराव उसे गहराई देता है। यहां हर दिन, हर सत्र और हर साझेदारी स्मृति में दर्ज हो जाती है।**

रामचंद्र गुहा
जाने-माने इतिहासकार

मैं कर्नाटक राज्य क्रिकेट संघ का सदस्य हूं और चिन्नास्वामी स्टेडियम से कुछ ही दूरी पर रहता हूं। फिर भी इस वर्ष के इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के उद्घाटन मैच के दौरान मैं घर पर था। न तो मैं स्टेडियम गया और न ही टेलीविजन पर मैच देख रहा था। इसके बजाय मैं क्रिकेट पर लिखी एक नई पुस्तक पढ़ रहा था- एक ऐसी पुस्तक, जो आईपीएल की चमक-दमक से बिल्कुल अलग तरह के क्रिकेट की बात करती है। यह पुस्तक थी '500 डिक्लेयर : द जॉयज ऑफ कवरिंग 500 क्रिकेट टेस्ट्स', जिसे स्किल्ड बेरी ने लिखा है।

सबसे पहले 500 टेस्ट मैच देखने का रिकॉर्ड महान रिची बेनो के नाम था, जिनमें से 63 उन्होंने खिलाड़ी के रूप में खेले थे और बाकी उन्होंने पत्रकार और कमेंटेटर के रूप में देखे। स्किल्ड बेरी इस उपलब्धि को हासिल करने वाले दूसरे व्यक्ति हैं और इंग्लैंड के 500 टेस्ट मैचों को कवर करने वाले पहले पत्रकार भी। उन्होंने कई प्रतिष्ठित अखबारों के लिए काम किया है और उनका अनुभव इस पुस्तक में साफ झलकता है।

यह पुस्तक समय के साथ सहजता से यात्रा करती है- 1973 में ट्रेंट ब्रिज पर इंग्लैंड और न्यूजीलैंड के मैच से लेकर 2024 में रावलपिंडी में इंग्लैंड के दौरे तक। इस यात्रा के दौरान लेखक न केवल मैचों के रोमांचक क्षणों को याद करते हैं, बल्कि विभिन्न देशों के दर्शकों, संस्कृतियों और वातावरण का भी जीवंत चित्रण करते हैं। वे सिर्फ क्रिकेट तक सीमित नहीं रहते, बल्कि समाज और संस्कृति पर भी सूक्ष्म टिप्पणियां करते हैं। उदाहरण के तौर पर वे बंगाल की तुलना इटली से करते हैं- दोनों जगहों की साहित्यिक परंपरा और भोजन के प्रति प्रेम को जोड़ते हुए।

बेरी ने अपने कॅरिअर की शुरुआत कैंब्रिज विश्वविद्यालय के दिनों में की थी। उन्होंने 1970 के दशक के इंग्लिश क्रिकेट पत्रकारों के शानदार चित्र खींचे हैं—जिनमें जॉन अर्लाट, जॉन वुडकॉक और ई.डब्ल्यू. स्वांटन शामिल हैं। उनके लेखन में हास्य भी है और आलोचनात्मक दृष्टि भी। वे बाद के दौर के खिलाड़ियों जैसे इयान चैपल, जेफ्री बॉयकॉट, डेविड गॉवर और केविन पीटरसन के व्यक्तित्व और खेल दोनों का संतुलित विश्लेषण करते हैं।

इस पुस्तक की एक खास विशेषता यह है कि लेखक क्रिकेट की तकनीकी बारीकियों को गहराई से समझते हैं। वे बताते हैं कि हेलमेट के आगमन ने खेल को किस तरह बदल दिया। शुरू में हेलमेट तेज गेंदबाजी से बचने के लिए लाए गए थे, लेकिन बाद में उन्होंने स्पिन

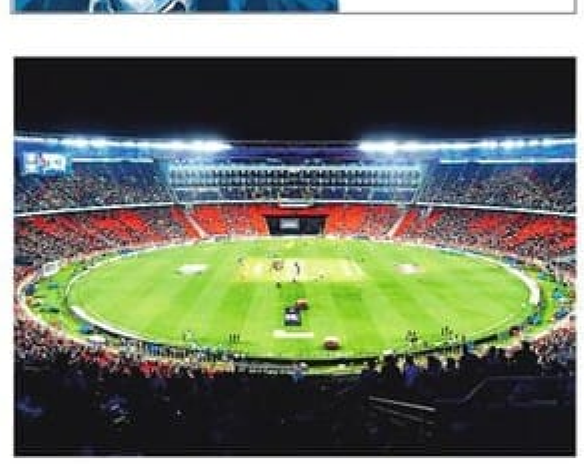

गेंदबाजी के खिलाफ बल्लेबाजों को अधिक आक्रामक बना दिया। पहले बल्लेबाज सिर पर चोट लगने के डर से जोखिम भरे शॉट नहीं खेलते थे, लेकिन ग्रिल और वाइजर लगे हेलमेट आने के बाद उन्होंने स्वीप, रिवर्स स्वीप और अन्य आक्रामक शॉट खेलने शुरू कर दिए।

लेखक की शैली में हास्य भी है। कानपुर के ग्रीन पार्क मैदान के बारे में वे लिखते हैं कि यह शहर के बीचों बीच एकमात्र जगह थी, जो धूल के रंग की नहीं थी। इसी तरह वे इंग्लैंड की टीमों के 'स्थानीय संस्कृति को अपनाने' के दावे पर कटाक्ष करते हुए कहते हैं कि इसका मतलब अक्सर नजदीकी गोल्फ कोर्स तक जाना होता था।

बेरी के विचार संतुलित और सटीक हैं। वे यह भी बताते हैं कि जो लोग खिलाड़ियों के विश्व सीरीज क्रिकेट से पैसा कमाने की आलोचना करते थे, वे खुद पहले से ही समृद्ध थे। उनके विचारों में संवेदनशीलता भी है। उदाहरण के लिए, वे पाकिस्तानी खिलाड़ी मुश्ताक मोहम्मद के बारे में लिखते हैं कि विभाजन के समय की उथल-पुथल के कारण उनकी उम्र के रिकॉर्ड में बदलाव संभव है, और ऐसी परिस्थितियों में एक शरणार्थी को मिलने वाले लाभ को वे उचित ठहराते हैं।

बेरी ने सभी टेस्ट खेलने वाले देशों की यात्रा की है। उन्होंने भारत और पाकिस्तान के बीच राजनीतिक और सामाजिक अंतर पर भी टिप्पणी की है। वे बताते हैं कि भारत में स्वतंत्रता के बाद भूमि सुधार और संस्थागत विकास ने समाज को मजबूत किया, जबकि पाकिस्तान में ऐसे सुधार नहीं हो सके। हालांकि, यह तुलना विवादास्पद भी हो सकती है और यह जरूरी नहीं है कि लेखक के विचारों से सभी सहमत हों।

पुस्तक में इंग्लैंड के एशेज मुकाबलों, खासकर 1981 के वर्ष, पर विशेष जोर दिया गया है। हालांकि कुछ जगहों पर लेखक ने अपने व्यक्तिगत क्रिकेट अनुभवों पर थोड़ा अधिक ध्यान दिया है, फिर भी यह पुस्तक बेहद रोचक और ज्ञानवर्धक है।

इस पुस्तक को पढ़ते हुए मेरे मन में एक सवाल उठा-क्या आईपीएल या टी20 क्रिकेट को कवर करने वाले कमेंटेटर कभी ऐसी ही गहराई और रोचकता वाली पुस्तक लिख सकते हैं? शायद नहीं। टी20 क्रिकेट अपनी तेज रफ्तार और मनोरंजन के बावजूद, खेल की गहराई और चुनौती को पूरी तरह नहीं दर्शाता। छोटे मैदान, सपाट पिच और गेंदबाजों पर लगी सीमाएं इसे बल्लेबाजों के पक्ष में झुका देती हैं। इसके विपरीत, टेस्ट क्रिकेट में पांच दिन और दो पारियों का प्रारूप खिलाड़ियों की असली क्षमता की परीक्षा लेता है। इसमें पिच और मौसम की विविधता भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यही कारण है कि एक सफल टेस्ट खिलाड़ी बनना कहीं अधिक कठिन है।

मुझे अपने बचपन के वे दिन याद आते हैं जब मैं रेडियो पर टेस्ट मैच सुना करता था। 1973 में इंग्लैंड और न्यूजीलैंड के बीच एक रोमांचक मैच का वर्णन आज भी मेरे मन में ताजा है। न्यूजीलैंड को जीत के लिए 479 रन चाहिए थे और उन्होंने संघर्ष करते हुए मैच को अंतिम क्षणों तक रोमांचक बनाए रखा। हालांकि वे अंततः हार गए, लेकिन उनका साहस और संघर्ष अविस्मरणीय था।

आज, पचास साल बाद भी, मुझे उस मैच की हर प्रमुख घटना याद है, लेकिन क्या आज के आईपीएल मैच भी इतने लंबे समय तक याद रहेंगे? शायद नहीं। वे एक के बाद एक आते हैं और जल्दी ही यादों से धुंधले हो जाते हैं।

यही टेस्ट क्रिकेट की असली खूबसूरती है-यह सिर्फ एक खेल नहीं, बल्कि धैर्य, कौशल और चरित्र की परीक्षा है। यह हमें यादें देता है जो समय के साथ और भी मूल्यवान हो जाती हैं।

इस तेजी से बदलती दुनिया में, जहां सब कुछ तुरंत और तात्कालिक हो गया है, टेस्ट क्रिकेट हमें ठहरकर सोचने, समझने और खेल का वास्तविक आनंद लेने का अवसर देता है। यही कारण है कि इसके प्रति प्रेम कभी कम नहीं होगा।

## पचास के बाद जागी पखावज की पुकार

राजेंद्र शर्मा

**खुला आकाश**

*पचास की उम्र में पखावज उठाना साहस और जिद का काम था। 2016 से दोबारा रियाज का सिलसिला शुरू हुआ। वर्ष 2019 में दिल्ली के 'सामापा संगीत सम्मेलन' में उनकी एकल प्रस्तुति ने एक साधक को नया आकाश दिया।*

कुछ साधनाएं जीवन के शोरगुल में दबती तो हैं, पर मरती नहीं। वे भीतर किसी अनसुने आलाप की तरह सही समय की प्रतीक्षा में रहती हैं। वाराणसी के संकट मोचन मंदिर के महंत विश्वंभर नाथ मिश्र की पखावज साधना भी ऐसी ही एक मौन प्रतिध्वनि है, जो वर्षों बाद जब गूंजी, तो पूरे संगीत जगत में उसकी धमक सुनाई दी।

बीएचयू में इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग के प्रोफेसर, महंत और गंगा अभियान के सजग नागरिक, इन तमाम पहचानों के पीछे एक व्यक्तित्व वर्षों स्वयं से ओझल रहा, वह था पखावज का अनथक साधक। अपने साठ वर्षों के जीवन में महंत जी ने सिद्ध किया है कि यदि कला की लौ भीतर जलती हो, तो अवसर मिलते ही वह पुनः प्रज्वलित हो उठती है।

इस कथा की शुरुआत उन्नीस सौ सत्तर के दशक में घर के आंगन से हुई। तत्कालीन महंत पंडित अमर नाथ मिश्र जब पखावज पर उंगलियां साधते, तो बालक विश्वंभर जिज्ञासावश उन हाथों की गति पढ़ता रहता। एक दिन बाबा ने उस मौन श्रवण को पहचानकर उन्हें अपने पास बैठा लिया। यह वही क्षण था, जब एक परंपरा ने अगली पीढ़ी के कंधे पर हाथ रखा।

महंत विश्वंभर नाथ मिश्र

इसके बाद जीवन ने रफ्तार पकड़ी- रुड़की से इंजीनियरिंग, अध्यापन, मंदिर और सामाजिक जिम्मेदारियां। इन सबके बीच पखावज एक कोने में रखा रहा। यह विराम था, विस्मरण नहीं। जब इन्होंने महंत का दायित्व संभाला तो समय और सिमट गया, लेकिन भीतर का स्वर दस्तक देता रहा। पचास की उम्र में यह दस्तक अपने भीतर छूट गए राग को फिर से साधने के निर्णय में बदल गया।

इस उम्र में पखावज उठाना साहस और जिद का काम था। वर्ष 2019 में दिल्ली के 'सामापा संगीत सम्मेलन' में उनकी एकल प्रस्तुति ने इस साधक को नया आकाश दिया। 2025 के 102वें संकट मोचन संगीत समारोह में एक ऐतिहासिक क्षण आया, जब बांसुरी वादक पंडित हरि प्रसाद चौरसिया ने आग्रह किया कि पखावज पर संगत महंत जी ही करें। यही वह क्षण था, जब बांसुरी की सांस और पखावज की थाप के बीच संवाद का एक सूक्ष्म सेतु बना। इस साल 6 अप्रैल से शुरू हो रहे संकट मोचन संगीत समारोह के 103वें आयोजन में पखावज की वह थाप किसके साथ संवाद करेगी? यह देखना दिलचस्प होगा।

## फॅक्टCheck

### कमकुवत पूल बिहारचा नव्हे, तर...?

बिहारमधील कोसळण्याच्या अवस्थेत असलेल्या बांबूच्या एका पुलाचा व्हिडीओ व्हायरल झाला. त्या पुलावरून ई-रिक्षा जाताना या व्हिडीओत दिसत आहे. अशा पुलावरून लोक वाहने चालवून जीव का धोक्यात घालतात, असा प्रश्न नेटकऱ्यांनी विचारला. मात्र हा पूल बिहारमध्ये कोणत्या ठिकाणी आहे हे स्पष्ट होत नव्हते. या व्हिडीओची सत्यता तपासली असता हा पूल बिहारमधील नव्हे तर बांगलादेशातील नरसिंगडी जिल्ह्यातील बत्ताली गावात आहे. बिहारमध्ये अनेक लहान-मोठे पूल कोसळले होते. त्यावरून लोकांची दिशाभूल करण्याचा प्रयत्न झाला.

## सोशलViral

### ७० वर्षांच्या आजी करतात पॉवर लिफ्टिंग

धावपटू व गिर्यारोहण करणाऱ्या अंजली हजारी यांना ऑस्टिओपोरोसिसचे निदान झाले. या आजारात हाडे कमकुवत होतात. त्यांच्यावर काही शस्त्रक्रियाही झाल्या. हाँगकाँगमधील निवृत्त शिक्षिका आणि ट्यूटोरियल कंपनीच्या मालकीण असलेल्या अंजली या मूळच्या महाराष्ट्रातील अमरावती येथील असून, लग्नानंतर त्या हाँगकाँगमध्ये आल्या. आपल्या आजारामुळे निराश न होता त्यांनी पॉवर लिफ्टिंगचे प्रशिक्षण घेतले. आता ७० वर्षांच्या अंजली ११ एप्रिल रोजीहाँगकाँग पॉवर लिफ्टिंग चॅम्पियन स्पर्धेत त्या सहभागी होत आहेत.

## सोशलTrending

### श्वानाच्या करामतींनी नेटकरी झाले खूश

अमेरिकेतील एकाने त्याच्या गोल्डन रिट्रीव्हर श्वानाच्या पिल्लाचा व्हिडिओ इन्स्टाग्रामला शेअर केला आहे. या व्हिडिओ एकदम शांत, सुस्वभावी वाटणारे हे पिल्लूनंतर खूप खट्याळ आहे, असे दिसून आले. 'बाऊर' असे या श्वानाचे नाव असून, त्याला पाहिल्यास तो कोणालाही आवडेल असाच आहे. मात्र, हा व्हिडिओ जसा पुढे सरकतो तेव्हा असे लक्षात येते की तो साऱ्या घरभर नाचत आहेत. अन्न चोरून खाण्यापासून ते चिखलात माखून घेण्यापर्यंत सारे उद्योग तो मालकासमोर बिनधास्त करत आहे. नेटकऱ्यांनी याचे लाड पुरविणाऱ्या मालकालाही दाद दिली

### इराणहून परतलेले ८ जण भूकंपात ठार

**काबुल :** परदेशातील कारवाईमुळे अवघ्या १५ दिवसांपूर्वी इराणमधून मायदेशी परतलेल्या एका गरीब अफगाण कुटुंबावर काळाने भीषण घाला घातला. उत्तर अफगाणिस्तानात शुक्रवारी रात्री झालेल्या ५.८ रिश्टर स्केलच्या भूकंपात या कुटुंबातील ८ जणांचा मृत्यू झाला. या संपूर्ण कुटुंबातून केवळ ३ वर्षांचा एक चिमुरडा सुदैवाने बचावला असून, त्याच्यावर रुग्णालयात उपचार सुरू आहेत. दरम्यान, या नैसर्गिक आपत्तीत देशात एकूण १२ जणांचा बळी गेला असून, घरांचे मोठ्या प्रमाणात नुकसान झाले आहे, असे अफगाण सरकारने स्पष्ट केले आहे. काबुलबाहेरील 'इत्तेफाक' गावात हे कुटुंब एका तंबूत राहत होते. मुसळधार पावसामुळे जमीन मऊ झाली होती. शुक्रवारी रात्री भूकंपाचा धक्का बसताच शेजारची भिंत थेट या तंबूवर कोसळली. ढिगाऱ्याखालून मदतीसाठी येणारे किंकाळ्यांचे आवाज काही मिनिटांतच शांत झाले. मृतांमध्ये आई-वडील, १२ ते २३ वयोगटातील चार मुली आणि दोन मुलांचा समावेश आहे. हिंदूकुश पर्वत रांगांमध्ये या भूकंपाचा केंद्रबिंदू होता.

# इराण अजूनही सक्षम; अमेरिकन फायटर जेट पाडल्याने खळबळ

## अमेरिकेचे विमान पाडणे ही दुर्मीळ घटना, विमानावर खांद्यावरून क्षेपणास्त्र डागल्याची शक्यता

**वॉशिंग्टन :** इराणने अमेरिकेची दोन लष्करी विमाने पाडल्याची घटना गेल्या २० वर्षांतील अत्यंत दुर्मीळ मानली जात आहे. अमेरिकेच्या मते, 'एफ-१५ इ स्ट्राइक ईगल' हे लढाऊ विमान पाडण्यात आले असून, एका जवानाची सुटका झाली आहे, तर दुसऱ्याचा शोध सुरू आहे. तसेच इराणच्या माध्यमांनी 'ए-१० थंडरबोल्ट २' या विमानालाही लक्ष्य केले असा दावा केला आहे. अमेरिकेने इराणची लष्करी क्षमता कमी झाल्याचे सांगितले असले तरी, ही घटना इराण अजूनही प्रभावी प्रतिकार करू शकतो हे दर्शवते. तज्ज्ञांच्या मते, या हल्ल्यासाठी जमिनीवरून हवेत मारा करणाऱ्या क्षेपणास्त्राचा वापर केल्याची शक्यता असली तरी खांद्यावरून क्षेपणास्त्र डागले गेल्याचीही शक्यता नाकारता येत नाही. कारण हल्ल्यानंतर अशी क्षेपणास्त्रे ओळखणे कठीण असते.

**तज्ज्ञ काय म्हणतात?**

एफ-१६ हे अत्याधुनिक विमान चालवण्याचा अनुभव असलेले अमेरिकेच्या हवाई दलातील माजी ब्रिगेडियर जनरल ह्युस्टन कँटवेल यांच्या मते २००३ साली इराक युद्धात ए-१० हे विमान पाडण्यात आले होते. त्यानंतर २० वर्षांनंतर खांद्यावरून डागल्या जाणाऱ्या क्षेपणास्त्राने हे विमान पाडल्याची शक्यता आहे. अमेरिका अनेक बंडखोरांविरोधात आजपर्यंत लढली आहे. पण बहुतांश बंडखोरांकडे खांद्यावर डागली जाणारी क्षेपणास्त्रे नसतात. पण इराणने हे करून दाखवले आहे. बेहनाम बेन टॅब्ल्यू या संरक्षण तज्ज्ञाने इराणची संरक्षण व्यवस्था कमकुवत असली तरी ती पूर्णपणे नष्ट झालेली नाही, असे म्हटले आहे. तर मार्क कॅनसियन या अन्य तज्ज्ञाने पोर्टेबल क्षेपणास्त्रे वापरली गेल्याची शक्यता वर्तविली आहे.

### 'एफ-१५ इ स्ट्राइक ईगल' : दूरवर हल्ला करण्याची क्षमता

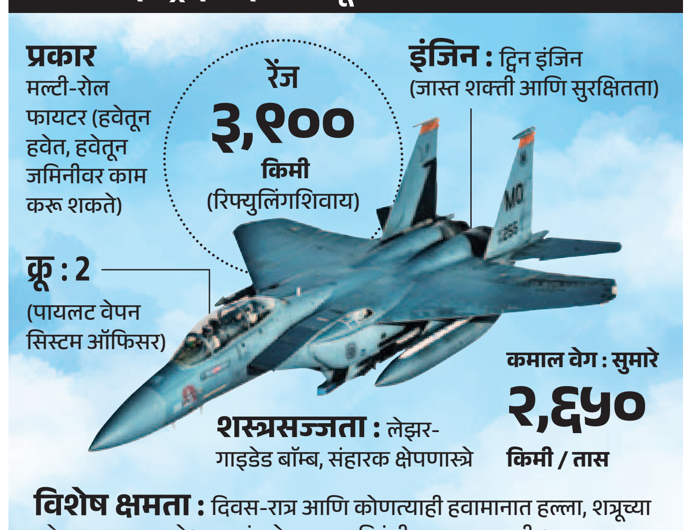

**प्रकार** मल्टी-रोल फायटर (हवेतून हवेत, हवेतून जमिनीवर काम करू शकते)

**रेंज** ३,९०० किमी (रिफ्युलिंगशिवाय)

**इंजिन :** ट्विन इंजिन (जास्त शक्ती आणि सुरक्षितता)

**क्रू : 2** (पायलट वेपन सिस्टम ऑफिसर)

**कमाल वेग : सुमारे** २,६५० किमी / तास

**शस्त्रसज्जता :** लेझर-गाइडेड बॉम्ब, संहारक क्षेपणास्त्रे

**विशेष क्षमता :** दिवस-रात्र आणि कोणत्याही हवामानात हल्ला, शत्रूच्या खोलवर भागात प्रवेश, अत्यंत वेगवान अतिउंचीवरून हल्ल्याची क्षमता.

### 'ए-१० थंडरबोल्ट II' : लक्ष्य अचूक भेदण्याची क्षमता

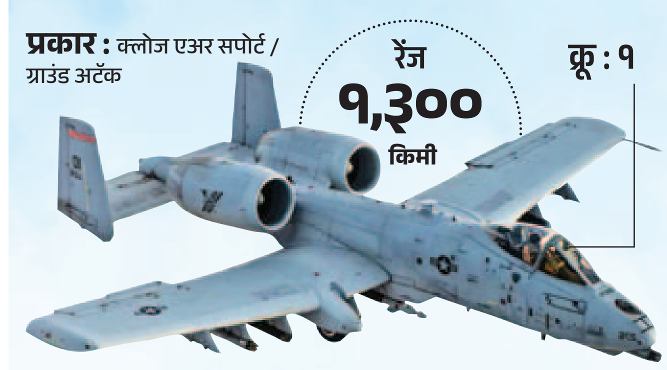

**प्रकार :** क्लोज एअर सपोर्ट / ग्राउंड अटॅक

**रेंज** १,३०० किमी

**क्रू : १**

**इतर शस्त्रे** रॉकेट्स, मिसाइल्स, बॉम्ब

**विशेष क्षमता :** कमी उंचीवर अधिक काळ हवेत राहू शकते. कमी गतीने उड्डाण करत जमिनीवरील लक्ष्य नष्ट करू शकते, गोळीबार सहन करू शकते. याला फ्लाइंग टँक म्हणतात.

**कमाल वेग** ७०६ किमी / तास (फायटरपेक्षा कमी)

### २० वर्षांनी विमान पाडले

अमेरिकेचे शेवटचे लढाऊ विमान दि. ८ एप्रिल २००३ रोजी इराक युद्धात बगदादमध्ये पाडण्यात आले होते. त्या वेळी वैमानिक सुरक्षितरीत्या बाहेर पडून वाचला होता. त्याआधी १९८० मध्ये ऑपरेशन ईगल क्लॉ या अपयशी मोहिमेदरम्यान हेलिकॉप्टर आणि विमानाच्या धडकेत स्फोट होऊन आठ अमेरिकी जवानांचा मृत्यू झाला होता.

### 'हेलिकॉप्टर असुरक्षित'

गेल्या काही दशकांत अमेरिकेची अनेक हेलिकॉप्टर पाडण्यात आली आहेत. २००५ मध्ये अफगाणिस्तानमध्ये एमएच-४७ चिनूक हेलिकॉप्टरवर रॉकेट हल्ला होऊन १६ जणांचा मृत्यू झाला होता. ह्युस्टन कँटवेल यांच्या मते, हेलिकॉप्टर कमी उंचीवर आणि कमी वेगाने उड्डाण करत असल्याने ती अधिक असुरक्षित ठरतात.

### अमेरिकेपुढे राजकीय संकट

बेपत्ता वैमानिकाला शोधण्यासाठी अमेरिकेच्या लष्कराचे शर्थीचे प्रयत्न सुरू आहेत. पण ही एकूण घटना अमेरिका व इस्रायलसाठी राजकीयदृष्ट्या अत्यंत संवेदनशील व धोकादायकही आहे.

**जर इराणला हा वैमानिक सापडला आणि त्याची चित्रफित इराणच्या टीव्हीवर दाखवली गेली तर तो इराणसाठी मोठा प्रचारात्मक विजय ठरेल. दुसरीकडे, अमेरिकेसाठी राजकीय अपमानच असेल. इराणच्या हाती एक 'युद्धबंदी' लागेल. याचा वापर ते पुढील वाटाघाटीसाठी 'बार्गेनिंग चिप' म्हणून करू शकतात. अमेरिकेने इराणच्या लष्कराचा नाश केल्याचा अनेकवेळा दावा केला आहे. प्रत्यक्षात इराण चिवटपणे लढत आहे.**

# पाक, तुर्कीये, इजिप्तचे युद्धबंदीसाठी प्रयत्न सुरू

### इराणच्या परराष्ट्रमंत्र्यांची मध्यस्थांशी चर्चेची तयारी

एआय इमेज

**दुबई :** इराण विरुद्ध अमेरिका-इस्रायल युद्ध थांबवण्याच्या दृष्टीने पाकिस्तान, तुर्कीये आणि इजिप्तने अमेरिका आणि इराणला पुन्हा चर्चा करण्यासाठी प्रयत्न सुरू केले आहेत. हे युद्ध थांबवणे तसेच अत्यंत महत्त्वाची असलेली 'हॉर्मुझची सामुद्रधुनी' पुन्हा खुली करण्यासाठी अमेरिका आणि इराणमध्ये सहमती घडवण्याबाबत हे देश सरसावले आहेत. या तडजोडीचा उद्देश दोन्ही बाजूंना पाकिस्तानात चर्चेसाठी एकत्र आणणे हा आहे. या योजनेत राजनैतिक तोडगा निघेपर्यंत ठराविक काळासाठी शत्रुत्व थांबवण्याचा (युद्धविराम) समावेश आहे. इराणचे परराष्ट्र मंत्री अब्बास अराघची यांनी शनिवारी पाकिस्तानातील चर्चेसाठी तयार असल्याचे पुन्हा सांगितले, परंतु त्यांनी या युद्धाचा निर्णायक आणि कायमस्वरूपी अंत हवा असल्याचा आग्रह धरला आहे.

**इराणचा पाकिस्तानातील शांतता चर्चेला पाठिंबा**

इराणचे परराष्ट्र मंत्री अब्बास अराघची यांनी स्पष्ट केले की, इराणने इस्लामाबादला जाण्यास कधीही नकार दिलेला नाही. ते म्हणाले, "आमच्यासाठी महत्त्वाचे म्हणजे आमच्यावर लादलेल्या या बेकायदा युद्धाचा निर्णायक आणि कायमस्वरूपी अंत होणे होय." पाकिस्तानने गेल्या आठवड्यात म्हटले होते की ते लवकरच अमेरिका आणि इराणमधील चर्चेचे यजमानपद भूषवतील, मात्र या चर्चा नेमक्या कधी होतील हे अद्याप स्पष्ट नाही.

### पुढाकारात अडथळ्याचा आरोप पाकने फेटाळला

१ प. आशियातील संघर्ष संपविण्यासाठी अमेरिका आणि इराण यांच्यात चर्चा घडवून आणण्याचा पाकिस्तानचा पुढाकार अडथळ्यात सापडल्याचे वृत्त पाकिस्तानने शनिवारी फेटाळून लावले आहे.

२ **शांतता प्रस्तावांच्या प्राथमिक देवाणघेवाणीनंतर हा प्रयत्न थंडावल्याच्या बातम्या प्रसारमाध्यमांनी दिल्या होत्या. परराष्ट्र मंत्रालयाच्या एका वरिष्ठ अधिकाऱ्याने पत्रकारांच्या एका विशिष्ट गटाला पाकिस्तानच्या या प्रयत्नांबद्दल माहिती दिली होती, त्यानंतर या चर्चांना उधाण आले होते.**

### अझरबैजानची इराणला मानवतावादी मदत

अझरबैजानच्या 'एझरटॅक' या वृत्तसंस्थेने औषधे, अन्न आणि वैद्यकीय साहित्याने भरलेले १० ट्रक (२०० टन माल) इराणला पाठवल्याचे सांगितले. तर अझरबैजानचे राष्ट्राध्यक्ष इल्हाम अलियेव यांनी दोन्ही देशांत बंधुभावाचे नाते आहे, आता चांगल्या व वाईट काळात पाठीशी आहोत, असे म्हटले.

### होर्मुझच्या प्रस्तावावरून बहरिनकडून मतदान स्थगित

**दुबई :** होर्मुझ सामुद्रधुनीचा मार्ग पुन्हा उघडणे आणि इराणच्या प्रभुत्वाला आळा घालण्याच्या संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषदेतील प्रस्तावावरील मतदान बहरिनने शुक्रवारी स्थगित केले. या महिन्याचा संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषदेचा अध्यक्ष बहरिन असून, रशिया आणि चीनने या प्रस्तावाला तीव्र विरोध केल्यानंतर बहरिनने पुढील आठवड्यात हा प्रस्ताव पुन्हा मतदानासाठी आणला जाईल, असे जाहीर केले. बहरिनने सुरक्षा परिषदेतल्या सर्व १५ सदस्य देशांकडून समर्थन मिळविण्याचा प्रयत्न केला होता. पण, रशिया व चीनच्या ताठर भूमिकेने पुन्हा पेच निर्माण झाला आहे.

# अधिकारासोबत जबाबदारीही येते : सुप्रीम कोर्टाचे मत

### बँक व्यवस्थापकाच्या बडतर्फीवर शिक्कामोर्तब

लोकमत न्यूज नेटवर्क

**नवी दिल्ली :** 'अधिकार मिळतात, तेव्हा त्यासोबत उत्तरदायित्वही येते. पद जितके मोठे, तितकीच जबाबदारी आणि नैतिकतेची अपेक्षाही मोठी असते,' अशा कडक शब्दांत ताशेरे ओढत सर्वोच्च न्यायालयाने एका बँकेच्या वरिष्ठ व्यवस्थापकाच्या बडतर्फीचा निर्णय कायम ठेवला आहे. दिल्ली उच्च न्यायालयाने या व्यवस्थापकाची बडतर्फी रद्द करून त्याला 'सक्तीची सेवानिवृत्ती' देण्याचे आदेश दिले होते, ते सर्वोच्च न्यायालयाने रद्द केले आहेत.

याप्रकरणातील वरिष्ठ व्यवस्थापकाने बँकेतील अन्य एक अधिकारी आणि एका बंदूकधाऱ्याशी (गनमॅन) संगनमत करून ग्राहकांच्या पैशांचा अपहार करून बँकेचे रेकॉर्ड चोरले होते. चौकशीअंती बँक प्रशासनाने वरिष्ठ व्यवस्थापकाला सेवेतून बडतर्फ केले होते. मात्र त्या तुलनेत, इतर दोन सहआरोपींना कमी शिक्षा दिली होती. तर बंदूकधाऱ्यास 'सक्तीने सेवानिवृत्त' करण्यात आले होते. दिल्ली उच्च न्यायालयाने 'समान गुन्ह्यासाठी वेगवेगळी शिक्षा नको' या तत्त्वानुसार व्यवस्थापकाची बडतर्फीची शिक्षा कमी करून त्यास सक्तीची सेवानिवृत्ती देण्याचा आदेश दिला होता.

### 'मॅनेजरची तुलना गनमॅनशी योग्य नाही'

बँकेच्या मॅनेजरची तुलना गनमॅनशी करणे हे तर्काला धरून नाही. मॅनेजरकडे हाताखालील कर्मचाऱ्यांवर देखरेख ठेवण्याचेही अधिकार असतात. उच्च पदावरील व्यक्तीने विश्वासार्हता गमावणे हा गंभीर गुन्हा आहे. त्यामुळे वरिष्ठ व्यवस्थापकाला दिलेली कठोर शिक्षा मुळीच चुकीची नाही, असे न्यायालयाने स्पष्ट केले.

**"शिस्तभंग प्रकरणांत सक्षम प्राधिकरणाने दिलेली शिक्षा जर नैसर्गिक न्यायाच्या विरोधात किंवा कमालीची अन्यायकारक नसेल, तर त्यात न्यायालयाने ढवळाढवळ करू नये," असेही न्यायालयाने निकालात म्हटले. या निकालामुळे बँकिंग क्षेत्रातील वरिष्ठ पदांवरील अधिकाऱ्यांच्या जबाबदारीवर पुन्हा एकदा शिक्कामोर्तब झाले आहे.**

# 'क्योंकि मैं घायल हूँ, इसलिए घातक हूँ'; चढ्ढांचे प्रत्युत्तर

लोकमत न्यूज नेटवर्क

**नवी दिल्ली :** आपने राज्यसभेतील उपनेतेपदावरून हटविलेले खासदार राघव चढ्ढा यांनी त्या पक्षाला प्रत्युत्तर देताना 'धुरंधर' चित्रपटातील 'क्योंकि मैं घायल हूँ, इसलिए घातक हूँ' या संवादाचा आधार घेत मी संसदेत गोंधळ घालण्यासाठी नव्हे तर लोकांचे प्रश्न मांडण्यासाठी जातो असे म्हटले आहे.

आप आणि राघव चढ्ढा यांच्यातील वाद भविष्यात आणखी वाढण्याची शक्यता आहे. ते संसदेत पंतप्रधान नरेंद्र मोदी आणि केंद्र सरकारविरोधात आवाज उठवत नाहीत आणि ते केंद्र सरकारचा कोणालाही पटकन लक्षात येणार नाही अशा पद्धतीने प्रचार करत आहेत असा आरोप आपने केला होता. त्यावर हे आरोप खोटे असून, सत्य उजेडात येईल. असा दावा चढ्ढा यांनी केला आहे.

विरोधकांनी सभात्याग केला तेव्हा मी त्यांना साथ दिली नाही असे एकतरी उदाहरण दाखवा, असे स्पष्ट करत मुख्य निवडणूक आयुक्तांविरोधातील प्रस्तावावर सही करा असे पक्षनेतृत्वाने सांगितले नाही. उलट पक्षातील अनेक खासदारांनीही त्या प्रस्तावावर स्वाक्षरी केलेली नाही. पण मलाच दोषी का धरले असा सवाल त्यांनी केला.

### 'मी संसदेत गोंधळ घालण्यासाठी जात नाही'

राघव चढ्ढा म्हणाले की, मी घाबरलो आहे त्यामुळे निरर्थक मुद्दे उपस्थित करतो असा आपचा आरोप आहे. पण मी संसदेत गोंधळ घालण्यासाठी, ओरडण्यासाठी, माइक तोडण्यासाठी जात नाही. मी पंजाब पाणीप्रश्न, दिल्ली वायुप्रदूषण, सरकारी शाळांची स्थिती अशा मुद्द्यांवर आवाज उठवला आहे.

### साध्या शेतकऱ्याला १४ कोटींची नोटीस

**बदायून :** उत्तर प्रदेशातील बदायून जिल्ह्यातील एका सामान्य कुटुंबातील शेतकऱ्याला आयकर विभागाकडून १४.६६ कोटी रुपयांच्या कराची नोटीस मिळाल्याचा धक्कादायक प्रकार समोर आला आहे. ही नोटीस पाहिल्यानंतर या व्यवहाराशी आपला संबंध नसल्याचा दावा शेतकऱ्याने केला आहे. आपल्या ओळखपत्राचा गैरवापर झालेला असू शकतो, अशी शंका भोला सिंग नामक शेतकऱ्याने व्यक्त केली आहे.

संबंधित प्रकरणाचा तपास करण्यासाठी दोन सदस्यीय समिती गठित करण्यात आली आहे. या समितीत अतिरिक्त जिल्हा दंडाधिकारी (वित्त) व उपायुक्त (जीएसटी) यांचा समावेश आहे, अशी माहिती बदायूनचे जिल्हा दंडाधिकारी अवनीश राय यांनी दिली. तीन ते चार दिवसांत ही समिती अहवाल सादर करणार आहे.

### रशियाचे युक्रेनवर ड्रोन अन् क्षेपणास्त्र हल्ले ५ ठार, ३० जखमी

कीव्ह : संभाव्य युद्धविरामासाठी चर्चा सुरु असताना रशियाने शनिवारी युक्रेनवर केलेल्या क्षेपणास्र व ड्रोन हल्ल्यात ५ ठार तर ३० हून अधिक लोक जखमी झाले. मृतांमध्ये तीन महिला व दोन पुरुष आहेत.ईस्टरनिमित्त युद्धविरामाच्या उद्देशाने युक्रेनचे राष्ट्राध्यक्ष झेलेन्स्की हे इकुमेनिकल पॅट्रिआर्क बार्थोलोम्यू यांची भेट घेणार आहेत. बार्थोलोम्यू हे 'ईस्टर्न ऑर्थोडॉक्स' ख्रिश्चनांचे आध्यात्मिक नेते आहेत.

मस्ट READ

# दरवाज्यात जाताच काम का विसरतो? हा आहे मेंदूचा 'डोअरवे इफेक्ट'; मेंदूची एक स्मार्टगिरी

**वॉशिंग्टन :** एखादे काम करण्यासाठी आपण दुसऱ्या खोलीत जातो आणि तिथे पोहोचताच का गेलो होतो हेच विसरतो, असे प्रत्येकाच्या आयुष्यात कधी ना कधी झालेले असते. पण यात काळजी करण्यासारखे काहीही नाही. ही कोणत्याही आजारपणाची लक्षणे नसून मानवाच्या मेंदूची एक सामान्य आणि स्मार्ट प्रक्रिया आहे, असे शास्त्रज्ञांनी म्हटले आहे. या प्रकाराला विज्ञानाने डोअरवे इफेक्ट, असे नाव दिले आहे.

यासंदर्भात आरोग्य तज्ज्ञांनी केलेल्या संशोधनाच्या निष्कर्षात म्हटले आहे की, जेव्हा आपण एका जागेवरून

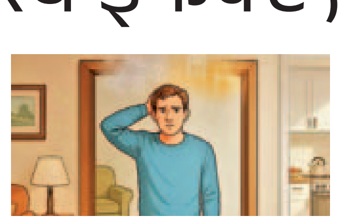

दुसऱ्या जागी जातो, तेव्हा आपला मेंदू त्या बदलाकडे एक नवीन घटना म्हणून पाहतो. मेंदू जुन्या कामाशी संबंधित माहिती मागे ठेवून नवीन वातावरणासाठी स्वतःला तयार करतो. त्यामुळेच आपण नेमकं काय करायला आलो हे विसरतो.विसरभोळे आहोत की काय, असे वाटते. पण तसे मनातही आणू नका.

### आपल्या मेंदूचा 'रीसेट मोड' कसा काम करतो?

मेंदू हा एका स्मार्टफोनसारखे काम करतो. जसे फोनमध्ये अनेक ॲप्स विंडो सुरू असतात. ज्यांची गरज नसते असे ॲप्स आपण बंद करतो. फोन स्लो होऊ नये म्हणून केलेली ही कृती असते. तसेच आपला मेंदूही अनावश्यक माहिती काढून टाकतो. अमेरिकेतील नॅशनल इन्स्टिट्यूट्स ऑफ हेल्थच्या मते डोअरवे प्रक्रियेमुळे कार्यक्षमता सुधारते. त्यामुळे आपला विसराळूपणा ही कमजोरी नसून मेंदूची स्वतःला कार्यक्षम राखण्याची एक पद्धत आहे.

### ही समस्या कधी जाणवू शकते वा वाढू शकते ?

जरी ही एक सामान्य प्रक्रिया असली, तरी काही परिस्थितीमध्ये ती अधिक जाणवू शकते. जसे कामाचा जास्त ताण किंवा थकवा किंवा एकाच वेळी अनेक कामं करणे.

**तसेच झोपेची कमतरता. या अवस्थांमध्ये मेंदू आधीच माहितीच्या माऱ्याने ओव्हरलोड असतो, त्यामुळे नवीन जागी गेल्यावर जुनी माहिती पटकन विसरली जाते. तरीही मेंदूला काही प्रसंग आठवतात.**

# खटल्यापासून स्वतःला दूर ठेवण्याचा न्यायमूर्तींचा निर्णय

लोकमत न्यूज नेटवर्क

**नवी दिल्ली :** सर्वोच्च न्यायालयाचे न्यायमूर्ती के. व्ही. विश्वनाथन यांनी एका महत्त्वपूर्ण प्रकरणाच्या सुनावणीतून स्वतःला बाजूला केले आहे. विशेष म्हणजे, गेल्या महिन्यात या प्रकरणाची सुनावणी पूर्ण होऊन निकाल राखून ठेवण्यात आला होता. मात्र, आपण पूर्वी या प्रकरणात एका पक्षकाराचे वकील म्हणून काम केल्याचे लक्षात येताच न्यायमूर्तींनी हा नैतिक निर्णय घेतला.

'अल्केमिस्ट ॲसेट रिकन्स्ट्रक्शन कंपनी'शी संबंधित एका प्रकरणाची अंतिम सुनावणी न्या. जे. बी. पारडीवाला आणि न्या. के. व्ही. विश्वनाथन यांच्या खंडपीठासमोर झाली होती. १७ मार्च रोजी यावर निकाल राखून ठेवण्यात आला होता. मात्र, त्यानंतर १ एप्रिल रोजी हे प्रकरण खंडपीठासमोर आले असता, आपण पूर्वी या प्रकरणात वकील म्हणून काम केल्याचे न्या. विश्वनाथन यांच्या निदर्शनास आले. कॉर्पोरेट दिवाळखोरी प्रक्रियेदरम्यान आपण अपीलकर्त्याचे वकील म्हणून न्यायालयात बाजू मांडली होती, असे न्या. विश्वनाथन यांनी सांगितले. त्यामुळे त्यांनी सुनावणीतून माघार घेण्याचा निर्णय घेतला.

न्यायदानाच्या प्रक्रियेत कोणताही संघर्ष नको, या भूमिकेतून खंडपीठाने १७ मार्चचा 'निकाल राखून ठेवण्याचा' आदेश मागे घेतला आहे. आता हे प्रकरण सरन्यायाधीशांच्या सूचनेनुसार अन्य पीठाकडे वर्ग करण्यात येईल.

लोकमत सारांश
थोडक्यात... पण सखोल



इन्फोस्टोरी

# नक्षलींचे कर्दनकाळ ‘सी-६०’ नेमके काय?

**राजेश शेगोकार**
वृत्तसंपादक, नागपूर

**घनदाट** जंगलात वर्षानुवर्षे धुमसत राहिलेला गोळ्यांचा आवाज... भीतीने गोठलेली गावं आणि प्रत्येक संध्याकाळी अनिश्चिततेची चादर पांघरलेली माणसं.... गडचिरोलीने हा काळ जिवंतपणी भोगला. आता तोच गडद काळोख विरलाय आणि ‘लाल’ राखेतून आशेच्या नव्या पहाटेने अलगद डोळे उघडले आहेत. या शांततेच्या पहाटेमागे उभे आहेत ‘सी-६०’चे अदृश्य योद्धे... केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह यांनी नक्षलमुक्तीची घोषणा करत ‘सी-६०’ जवानांच्या शौर्याला दिलेली दाद आणि मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस यांनी जाहीर केलेले विशेष पदक, हा केवळ सन्मान नाही; हा त्या असंख्य बलिदानांचा आणि चार दशकांच्या रक्तरंजित इतिहासावर उमटलेला विजयाचा अश्रुपूर्ण ठसा आहे.

### १९८० ते ३१ मार्च २०२६ (महाराष्ट्र)

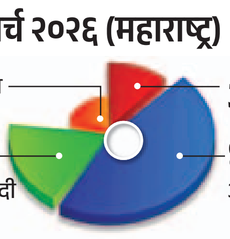

## नक्षलवादमुक्त भारत

**नक्षलवादाचा खात्मा आता भारतात जवळपास झाला आहे. भारतात २०१३ मध्ये नक्षलवादग्रस्त जिल्ह्यांची संख्या १८२ होती. ती आता घटून केवळ छत्तीसगडमधील बीजापूर आणि सुकमा या जिल्ह्यांपुरती मर्यादित राहिली आहे. भारताने गेल्या दशकभरात केलेल्या कठोर प्रयत्नांमुळे नक्षल प्रभावित जिल्ह्यांमध्ये सुमारे ९९% घट झाली आहे.**

### घटत चाललेला लाल दहशतवाद

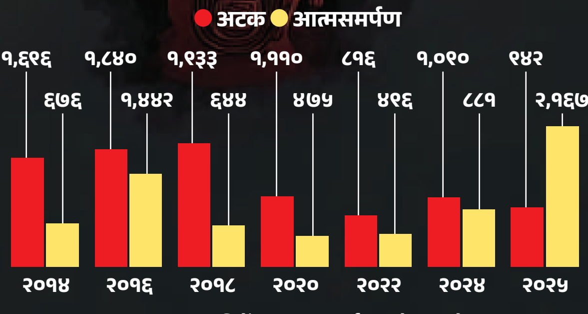


१ डिसेंबर २०२५ पर्यंतचा डेटा ( स्रोत : गृह मंत्रालय)

### मातीशी नाळ

'वीर भोग्या वसुंधरा' (पृथ्वीचा उपभोग केवळ शूरच घेऊ शकतात) ही टॅगलाइन घेऊन प्राणाची बाजी लावणारे सी-६०तील जवान गडचिरोलीतील स्थानिक आदिवासी कुटुंबातील असतात. तिथली भाषा, भौगोलिक स्थितीची माहिती त्यांना असते.

### सी-६०ची ठळक वैशिष्ट्ये

**स्थापना :** १ डिसेंबर १९९०, तत्कालीन पोलिस अधीक्षक के. पी. रघुवंशी यांनी स्थापना केली. या पथकात ६० जवान होते, म्हणून याला 'सी- ६०' म्हणजेच कमांडो - ६० म्हणतात. अशी २४ हून अधिक पथके गडचिरोली पोलिस दलात आहेत.

**गनिमी कावा :** नक्षलवाद्यांच्या शैलीतच प्रत्युत्तर देणारे विशेष प्रशिक्षण

**भाषा :** स्थानिक 'गोंडी' आणि 'माडिया' भाषा अवगत असल्याने स्थानिक लोकांशी संवाद साधणे, गुप्त माहिती मिळवणे सोपे जाते.

**निवड प्रक्रिया :** पोलिस दलातील भरतीनंतर, विशेष प्रशिक्षणासाठी निवड केली जाते. यात त्यांची ‘जंगल वॉरफेअर’ (जंगलातील लढाई) मधील कौशल्ये तपासली जातात.

**कठोर प्रशिक्षण :** हैदराबाद, बिहार आणि नागपूर येथे प्रतिकूल परिस्थितीत (पाणी-अन्नाविना) जंगलात राहण्याचे प्रशिक्षण.

**दुहेरी भूमिका :** कारवाईसोबतच जनजागृती, शरणागतीसाठी प्रेरणा, नक्षलवाद्यांच्या कुटुंबीयांना सरकारी योजनांची माहिती देणे.

नक्षलमुक्तीच्या या यशासाठी २४४ जवानांनी बलिदान दिले, त्यात १९० पेक्षा अधिक ‘सी-६०’चे जवान आहेत.

“ कठोर प्रशिक्षणातून घडलेला आत्मविश्वास, शासनाने दाखवलेला विश्वास, जवानांची जिद्द, शौर्य व अभेद्य मनोबल या संगमातून सी-६० पथक नक्षलवाद्यांचे कर्दनकाळ ठरले. ‘कवच’ व ‘चक्रव्यूह’ अशा विविध रणनीतींनी सी-६० जवानांनी इतिहास घडवला आहे. केवळ शस्त्रांच्या बळावर नव्हे तर विश्वासाच्या धाग्यांनी त्यांनी सामान्य नागरिकांची मनेही जिंकली. त्यामुळेच सी-६० हे केवळ एक पथक नसून, नक्षलविरोधी लढ्याचे सामर्थ्यवान प्रतीक बनले आहे.

**संदीप पाटील,** महानिरीक्षक, नक्षलविरोधी अभियान, महाराष्ट्र राज्य

हॉट-टॉपिक

# ग्राउंड ऑपरेशनचा धोका अमेरिकेला की इराणला?

**आखातातील संघर्ष निर्णायक टप्प्यावर पोहोचला असून, त्याचे रूप अधिक व्यापक आणि भीषण होण्याची चिन्हे दिसत आहेत. अमेरिकेच्या आक्रमक धोरणामुळे जागतिक अस्थिरतेची भीती वाढली आहे. संभाव्य भूदल लष्करी कारवाईचे परिणाम किती दूरगामी ठरू शकतात, याचा हा वेध. अफगाणिस्तानात अमेरिकेने २.५ लाख सैन्य उतरवले होते. त्या तुलनेत आखातातील या कठीण भूप्रदेशात केवळ ५० हजार सैनिकांच्या बळावर अमेरिका इराणवर ताबा मिळवण्याचे स्वप्न पाहत आहे. हे शक्य होईल?**

**डॉ. शैलेंद्र देवळाणकर**
परराष्ट्र धोरण विश्लेषक

आखातामध्ये अमेरिका, इस्रायल आणि इराण यांच्यात सुरू असलेल्या संघर्षाने आता दुसऱ्या महिन्यात प्रवेश केला आहे. आज संपूर्ण जगासमोर एकच कळीचा प्रश्न आहे, तो म्हणजे हा संघर्ष आता शांततेच्या मार्गाने सुटणार की अधिक चिघळत जाणार? अमेरिकेचे राष्ट्राध्यक्ष डोनाल्ड ट्रम्प हे दररोज वेगवेगळी विधाने करत असल्याने याविषयीचा संशयकल्लोळ कमी होण्यापेक्षा अधिकच वाढत चालला आहे. अलीकडे ट्रम्प यांनी केलेली विधाने या युद्धाची पुढील दिशा दर्शवणारी आहेत.

ट्रम्प यांनी १ एप्रिल रोजी केलेल्या वक्तव्यांमध्ये पुन्हा एकदा विजयाचा दावा करतानाच होर्मुझची सामुद्रधुनी उघडली जाईल, तेव्हाच आम्ही इराणच्या युद्धविरामाच्या विनंतीचा विचार करू. ही सामुद्रधुनी उघडली नाही, तर आम्ही इराणचा विनाश करणं सुरूच ठेवू, असे म्हटले आहे. व्हाइट हाऊसच्या ‘क्रॉस हॉल’मधून केलेल्या भाषणात ट्रम्प यांनी इराणमधील अमेरिकन लष्कराची मोहीम आता अंतिम टप्प्यात आहे. येणाऱ्या दोन ते तीन आठवड्यांत आम्ही इराणवर इतके भीषण हल्ले करू की, त्यांना पुन्हा अश्मयुगात जावे लागेल, अशा कठोर शब्दांचा वापर केला आहे. याचा अर्थ अगदी स्पष्ट असून अमेरिका आणि इस्रायलकडून या पुढील काळातही हे युद्ध सुरू ठेवण्यात येणार आहे.

इराणची संपूर्ण आधुनिक व्यवस्था मोडीत निघेल आणि तिथली साडेआठ कोटी जनता पुन्हा पाषाणयुगाच्या स्थितीत ढकलली जाईल, अशा प्रकारचा भयावह हल्ला करण्याची तयारी अमेरिका करत असून ही एका मोठ्या मानवी संहाराची पूर्वसूचना आहे. अमेरिकेकडून अशा प्रकारची टोकाची भूमिका घेतली जाण्याची ही काही पहिलीच वेळ नाही. २००१ मध्ये अमेरिकेवर झालेल्या भीषण दहशतवादी हल्ल्यानंतर तत्कालीन राष्ट्राध्यक्ष जॉर्ज डब्ल्यू. बुश यांनी ‘क्रुसेड’ म्हणजेच धर्मयुद्ध असा शब्द वापरला होता. आज २५ वर्षांनंतर पुन्हा एकदा अमेरिकेच्या नेतृत्वाकडून तशाच प्रकारची आक्रमक आणि धार्मिक संदर्भ असलेली भाषा वापरली जात आहे. इराण हा केवळ एक देश नसून ती एक प्राचीन संस्कृती आहे. यापूर्वीच्या कोणत्याही अमेरिकन राष्ट्राध्यक्षांनी- मग ते बिल क्लिंटन असोत, बराक ओबामा असोत किंवा ज्यो बायडन - इराणवर थेट लष्करी कारवाई करण्याचे धाडस केले नव्हते. त्यांनी नेहमीच चर्चेतून किंवा आर्थिक निर्बंधांच्या माध्यमातून इराणवर नियंत्रण मिळवण्याचा प्रयत्न केला. कारण इराणसारख्या देशाला लष्करी बळावर नमवणे हे आजवर ‘मिशन इम्पॉसिबल’ मानले गेले आहे. मात्र, डोनाल्ड ट्रम्प यांनी हे सर्व संकेत धुडकावून लावत थेट युद्धाचा मार्ग स्वीकारला आहे. हा संघर्ष चिघळला तर दुसऱ्या महायुद्धानंतर आली होती तशी जागतिक आर्थिक महामंदी पुन्हा एकदा जगाला कचाट्यात घेईल.

### ट्रम्प हा धोका का पत्करत आहेत?

**अमेरिकेचा मुख्य उद्देश इराणवर संपूर्ण ताबा मिळवणे हा नसून, ‘खर्ग आयलंड’वर ताबा मिळवणे आहे. हे बेट इराणच्या अर्थव्यवस्थेचा कणा आहे. जगातील २०% तेलाचा साठा इराणकडे आहे. बहुतांश निर्यात याच बेटावरून होते. वर्षाला ६० अब्ज डॉलर्सची कमाई इराणला यातून मिळते. जर अमेरिकन मरीन्सनी हे बेट ताब्यात घेतले, तर इराणसाठी तो मोठा धक्का ठरेल. याउलट ट्रम्प यांना मोठे ‘बार्गेनिंग टूल’ ठरेल.**

**७०%** जनतेचा पाठिंबा इराक, अफगाणिस्तानातील ऑपरेशन्सच्या वेळी अमेरिकन अध्यक्षांना होता.

**६६%** जनता आज ट्रम्प यांच्या लष्करी हस्तक्षेपाच्या विरोधात आहे.

**३६%** पर्यंत ट्रम्प यांचे रेटिंग खाली आले आहे.

### अमेरिका पुन्हा तोंडघशी पडणार का?

१ अमेरिकेने यापूर्वी कोरिया, व्हिएतनाम, सोमालिया, अफगाणिस्तान आणि इराकमध्ये अशाच प्रकारची ‘ग्राउंड ऑपरेशन्स’ केली आहेत. १९५० मध्ये कोरियन वॉरच्या वेळी अमेरिकेने ग्राऊंड फोर्सेस ऑपरेशन राबवले होते. त्या संघर्षातून उत्तर कोरिया आणि दक्षिण कोरिया हे दोन देश तयार झाले. आज या उत्तर कोरियाचे हुकुमशहा किम जोंग ऊन अण्वस्त्रे आणि क्षेपणास्त्रे विकसित करुन जगाला वेठीस धरताहेत. म्हणजेच अमेरिकेने राबवलेल्या या ऑपरेशनमधून फारसे काही निष्पन्न झाले नाही.

**२ १९६० मध्ये व्हिएतनाम युद्धात अमेरिकेचे दुसरे ग्राऊंड ऑपरेशन्स चालले. हा संघर्ष चार ते पाच वर्षे चालला. त्याची प्रचंड मोठी किंमत अमेरिकेला चुकवावी लागली. साधारणतः ५८ हजार अमेरिकन सैनिक या युद्धात मारले गेले. आफ्रिकेतील सोमालिया या देशामध्ये अमेरिकेने अशाच प्रकारचे ऑपरेशन राबवले होते; पण त्याही संघर्षात २२ अमेरिकन नागरिक मारले गेले.**

३ विसाव्या शतकात २००१ मध्ये अफगाणिस्तानातील तालिबानी राजवट उलथवून टाकण्यासाठी अमेरिकेने लष्करी हस्तक्षेप केला होता. साधारणतः २० वर्षे चाललेल्या या मिशनमधूनही फारसे काही हाताशी लागले नाही. कारण २०२१ मध्ये अमेरिकन सैन्य माघारी गेल्यावर तेथे पुन्हा तालिबानचे शासन प्रस्थापित झाले आहे. इराकमध्ये सद्दाम हुसेनचा पाडाव करण्यासाठी अमेरिकन सैन्य घुसवण्यात आले; पण त्यातूनही काही साध्य झाले नाही.

**४ इराणची परिस्थिती या सर्व देशांपेक्षा वेगळी आणि आव्हानात्मक आहे. भौगोलिकदृष्ट्या इराण हा व्हिएतनामपेक्षा पाच पटीने, तर इराक आणि अफगाणिस्तानपेक्षा दुप्पट मोठा आहे. इराणचा भूप्रदेश अत्यंत डोंगराळ आणि कठीण आहे, जो अफगाणिस्तानच्या ‘टेरेन’ची आठवण करून देणारा आहे. हे अमेरिकेला जास्त भारी पडू शकते.**

एआय इमेज

लाइफ हॅक्स

# अनोळखी व्यवहार तर होत नाहीत ना?

**आज** आधार क्रमांकाचा वापर जवळपास प्रत्येक ठिकाणी होतो. बँक, सिम कार्ड, सरकारी योजना, कर्ज, हॉटेल, प्रवास... पण एकदा आधार दिल्यानंतर तो कुठे-कुठे वापरला गेला, याचा आपण क्वचितच विचार करतो. जर कुणी तुमच्या परवानगीशिवाय आधारचा वापर करून प्रमाणीकरण (ऑथेंटिकेशन) केलं, तर तुम्हाला लगेच कळणारही नाही. म्हणूनच यूआयडीएआयने एक महत्त्वाची सुविधा दिली आहे आधार ऑथेंटिकेशन हिस्ट्री तपासण्याची! यामुळे तुम्ही तुमचा आधार गेल्या काही दिवसांत किंवा महिन्यांत कुठे वापरला गेला हे सहज पाहू शकता.

### यामुळे काय प्रश्न सुटतो?

आधारचा अनधिकृत वापर ओळखता येतो. संशयास्पद व्यवहार लगेच लक्षात येतात. ओळख चोरीचा धोका कमी होतो.

### काय करायचं?

यूआयडीएआयच्या अधिकृत संकेतस्थळावर जाऊन आपली आधार ऑथेंटिकेशन हिस्ट्री तपासा.

### कसे कराल?

१) यूआयडीएआय संकेतस्थळ उघडा. मायआधार पोर्टलवर जा.

२) लॉगिन करा. आधार क्रमांक टाका आणि ओटीपीद्वारे पडताळणी करा.

३) ‘ऑथेंटिकेशन हिस्ट्री’ पर्याय निवडा

४) कालावधी निवडा. कोणत्या तारखेपासून कोणत्या तारखेपर्यंतचा डेटा पाहायचा ते ठरवा.

५) तुमचा आधार कुठे-कुठे वापरला गेला, तपशील पाहा. (बायोमेट्रिक / ओटीपी / इतर) याची सविस्तर माहिती दिसेल.

### महत्त्वाची सूचना

जर यादीत तुम्हाला अनोळखी किंवा संशयास्पद व्यवहार दिसला, तर लगेच बायोमेट्रिक लॉक करा. संबंधित संस्थेशी संपर्क साधा.

### लक्षात ठेवा

आधार वापरला जातो तेव्हा तुमची ओळख वापरली जाते. म्हणूनच वेळोवेळी ऑथेंटिकेशन हिस्ट्री तपासणं म्हणजे स्वतःची ओळख सुरक्षित ठेवणं.

एआय इमेज

जगाच्या पाठीवर

# बलोच मराठा! हळदीचा कार्यक्रम अन् पुरणपोळीचा बेत

**सचिन जवळकोटे**
कार्यकारी संपादक, कोल्हापूर

**‘धुरंधर’मुळं ‘बलुचिस्तान’** जगाच्या नजरेत आलेलं. ‘बलोच’ शब्दाचं सर्चिंग शतपटीनं सोशल मीडियावर वाढलेलं. मात्र, हेच बलुचिस्तानी गेल्या अडीचशे वर्षांपासून शोध घेताहेत आपल्याच मावळ प्रांताचा.. कारण तीन लाखांहून अधिक लोकसंख्या असलेल्या मोठ्या समूहाला पाकिस्तानात ओळखलं जातं ‘बलोच मराठा’ म्हणून. होय. अनोख्या इतिहासाची ही विचित्र वाटचाल डोळे विस्फारून टाकणारी.

‘धुरंधर’मध्ये अक्षय खन्नाचा ‘रहमान डकैत’ मूळ बलुचिस्तानातला दाखवलेला. कारच्या बॉम्बस्फोटात मरण्यापूर्वी संजय दत्तचा ‘एसपी अस्लम चौधरी’ फोनवर ‘ए बलोचऽऽ’ म्हणून दम देताना दिसलेला. यामुळं भारतीयांमध्ये पाकिस्तानच्या बलुचिस्तानबद्दल उत्सुकता वाढलेली. त्याचवेळी त्या प्रांतातल्या हजारो नागरिकांनीही या चित्रपटाच्या छोट्या - मोठ्या रिल्सवर कौतुकानं कॉमेंट देण्यास सुरुवात केलेली. यात सर्वाधिक संख्या ‘बलोच मराठा’ नावाची असलेली, कारण त्या मंडळींना ‘बॉलिवूड’बद्दल प्रचंड आकर्षण असलेलं. यातूनच आपल्या पूर्वजांचा शोध घेण्याची धडपड स्पष्टपणे दिसून आलेली. या साऱ्याचं मूळ दोनशे पासष्ट वर्षांपूर्वीच्या कहाणीत असल्याचं लक्षात आलेलं.

सन १७६१ साली ‘पानिपत’च्या युद्धानंतर ‘अब्दाली’ खजिन्याविनाच रिकाम्या हाती अफगाण प्रांतात परतला. त्याला युद्धात सैनिकांची मदत करणाऱ्या मीर नासीरखानला मोबदल्यापोटी त्यानं ‘बंदी दुश्मन’ सैनिकांना बलुचिस्तानात सोडलं. तेव्हा ती संख्या होती जवळपास वीस हजार. तेव्हापासून ते तिथंच राहिले. यातले बहुतांश मूळचे मावळ प्रांतातले. सुपीक-सधन मातीतले. त्यामुळं तिथं ओसाड वाळवंटात जगण्यासाठी त्यांना निसर्गाशी लढावं लागलं. अस्तित्वासाठी राज्यकर्त्यांशीही संघर्ष करावा लागला. काळाच्या ओघात त्यांची ‘भाषा’ बदलली. ‘वेश’ बदलला. ‘संस्कृती’ही बदलली. परंतु, आपल्या मूळच्या ‘चालीरिती’ मात्र त्यांनी हरवू नाही दिल्या. ‘बुगती’ अन् ‘मरारी’ जमातीचा भाग असलेले हे लोक आजही स्वत:ला ‘बलोच मराठा’ म्हणवून घेतात. सातारा राजधानीचे छत्रपती थोरले शाहू महाराज यांच्या नावानं ‘साहू मराठा’ अशी उपाधी हे ‘बुगती मराठे’ लावतात. पेशव्यांच्या संदर्भातूनही बरेच ‘पेशवानी’ नावानं ओळखले जातात.

इराण, पाकिस्तान अन् अफगाणिस्तान सीमेवर आता त्यांची दहावी-अकरावी पिढी जन्माला आलेली. तरीही यांच्यात लग्नावेळी ‘हळदीचा कार्यक्रम’ रंगतो. ‘तांदळाचं माप’ ओलांडूनच वधू-वराचा घरात प्रवेश होतो. अधून-मधून पुरणपोळीही करतात. सैन्यदलात नोकरी, शेती अन् व्यापार हे पोट भरण्याचं माध्यम. यातील बरेच उच्चशिक्षित आता पाकिस्तानच्या सरकारी अधिकारीपदीही कार्यरत. सोशल मीडियावर ‘मराठा ट्राईब’ नावाचा यांचा मोठा ग्रुप सक्रिय. यातील अनेक सदस्यांनी स्वत:च्या नावापुढं अभिमानानं ‘मराठा’ शब्द मिरवलेला. हा ग्रुप तयार करताना त्यांनी सुरुवातीला ‘मराठा’ शब्द टाइप केलेला. नंतर ‘मरहट्टा’ असा बदल केलेला. पुन्हा मूळ ‘मराठा’ वापरलेला. त्यामुळं ‘आपण मूळचे कोण आहोत’, हे त्यांना पिढ्यानपिढ्या माहीत असलं तरी ‘आपली नेमकी ओळख काय?’ या गूढ प्रश्नाचा गुंता त्यांच्यासाठी अद्याप न सुटलेला.

एआय इमेज

### थेट साताऱ्याशी नाळ..

‘धुरंधर’मध्ये रणवीरसिंगने रंगवलेला ‘हमजा’ पाहून अनेकांना कुलभूषण जाधव यांची प्रकर्षानं आठवण झालेली. त्यांना २०१६ साली भारतीय एजंट असल्याच्या आरोपाखाली पाकिस्ताननं अटक केलेली. यातही दोन गोष्ट किती नवलाच्या बघा. पहिली म्हणजे जाधव हे मूळचे साताऱ्याचे. आनेवाडीत त्यांचं जुनं घर. दुसरी म्हणजे त्यांना पाकिस्तानी पोलिसांनी पकडलं बलुचिस्तानातच.

**तिथल्या तरुणांना भडकवल्याचा आरोप त्यांच्यावर. म्हणजे २६५ वर्षांनंतरही मराठा माणूस अन् बलुचिस्तान यांचा संबंध काही तुटता तुटेनासा झालेला. राहता राहिला विषय शौर्याचा. ‘धुरंधर’मध्ये ‘एसपी चौधरी’ला उडविणाऱ्या बलुची तरुणाचा प्लॅन अत्यंत चक्रावून टाकणारा. आलं का लक्षात? हाच तो डीएनए. ‘स्वराज्य’साठी लढणाऱ्या ‘गनिमी कावा’चा.**

### तोंडात उर्दू.. कानात मराठी

बलुचिस्तानातल्या ‘मराठा’ समुहाचा आजपावेतो कैक संदर्भग्रंथात उल्लेख आलेला. कैक कांदबऱ्यांची पानंही रंगलेली. यावर ‘बलोच’ नावाचा मराठी चित्रपटही निघालेला. याचे पटकथा-दिग्दर्शक प्रकाश पवार यांनी जेव्हा या नावाची घोषणा केली, तेव्हा सर्वाधिक तिकडच्याच मंडळींनी सोशल मीडियावर उदंड प्रतिसाद दिलेला.

### हिंगलाज देवी ते गडहिंग्लज !

१ पाकिस्तानातील ‘हिंगलाज देवी’चा इतिहास दोन हजार वर्षांपूर्वीचा. एकीकडे अरबी समुद्र तर दुसरीकडे बलुचिस्तानातल्या हिंगोल नदीचं खोरं. किर्थर पर्वतरांगेतील दुर्गम गुहेत पुरातन मंदिर वसलेलं. इथंच स्थायिक झालेला ‘मराठा’ समुदाय दरवर्षी ‘नानी’ यात्रेत मोठ्या श्रद्धेनं सामील होत असलेला.

**२ याच हिंगलाज देवीच्या अनेक उपशाखा महाराष्ट्रात. कोल्हापूर जिल्ह्यातील गडहिंग्लज गावाचं नावही तिच्यामुळेच पडलेलं. तिकडून आलेल्या बलुची हिंग व्यापाऱ्यांनी इथं पूर्वी देवीची प्रतिष्ठापना केल्याचं मानलं गेलेलं.**

३ लगतचा सामानगड किल्ला अन् हिंगलाज मंदिर यावरून ‘गडहिंग्लज’ नाव पडल्याची आख्यायिका. योगायोगाची गोष्ट म्हणजे या ‘बलोच’ चित्रपटाच्या नायिका स्मिता गोंदकर यांची कुलदेवताही थेट तिकडचीच. बलुचिस्तानातली हिंगलाज माता.